गामक जिनगी

गामक जिनगी

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : 978-81-90772-94-5
Price Rs. 200/- (for individual buyers)
US $ 60 for Library and Institutions (India and abroad)

पहिल संस्करण : 2009

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७
Website : http ://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Typeset by Sh. Umesh Mandal

Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor:
AJAY ARTS
4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002.
Telephone: 2328-8341

Gamak Jingi- collection of Maithili short stories
by Jagdish Prasad Mandal

समर्पित

मिथिलाक वृन्दावन सऽ लऽ कऽ बालुक ढेरपर

बैसल फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ

सादर समर्पित

आ नवविहान अननिहारकेँ सेहो।

आमुख

मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मंडलक पदार्पण किछु-किछु ओहिना भेल अछि जेना कहियो विवेकानन्द ठाकुरक भेल छल। जहिना विवेकानन्द ठाकुर अपन जीवनक उत्तरार्धमे बहुत आकस्मिक ढ़ंगे मैथिलीमे प्रगट भेलाह, तहिना जगदीश प्रसाद मंडल एकबैग अपन अनेक कथा आ उपन्यास लऽ कऽ उपस्थित भेल छथि। विवेकानन्द ठाकुरक काव्यमे पाठककेँ ग्रामीण परिवेशक जेहन टटका बिम्ब आ नव सुआद भेटल छलनि, जगदीश प्रसाद मंडलक कथामे ओहने टटका चित्र आ नव आस्वाद भेटतनि। दुनू रचनाकार मिथिलाक ग्राम्य-जीवन संस्कृतिसँ मोहाविष्ट छथि। दुनुक शैली वर्णनात्मक अछि।

लेकिन आगमन, विषयवस्तु, दृष्टि आ शैलीमे समानता होइतहुँ दुनूमे क्यो ने तँ ककरो अनुकरण कएने छथि, ने एक दोसरासँ प्रभाव ग्रहण कएने छथि। दुनुक अपन स्वतंत्र लेखकीय व्यक्तित्व छनि।

ठेलाबला, रिक्शाबला, चूनवाली, इन्जीनीयर, डॉक्टर इत्यादि शीर्षकसँ लागत जेना जगदीश प्रसाद मंडल वर्ग संघर्षक कथाकार हेताह। लेकिन ओ जनवादी या प्रकृतिवादी कथाकार नहि छथि, जीवन-संघर्षक कथाकार छथि।

हुनक कथाक सन्दर्भमे जे सर्वाधिक उल्लेखनीय बात अछि से ई जे हुनक सभ कथामे औपन्यासिक विस्तार अछि। वर्तमान समएमे प्रचलित आ मान्य कथासँ हुनक कथा भिन्न अछि। हुनक कथा घटना बहुलता आ ऋजुसँ युक्त अछि।

जगदीश प्रसाद मंडल जीवनमे प्राप्य जिजीविषा, मानवीयता एवं आदर्शकेँ सुदृढ़ आ पुनर्प्रतिष्ठित करबाक उद्देश्यसँ अनुप्राणित छथि।

-सुभाष चन्द्र यादव

क्रम

गामक जिनगी

भैँटक लावा

पछिला बाढ़ि। मोन पड़ितहि देह भुटुकि जाइत अछि। रोइयाँ-रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। बाढ़िक विकराल दृश्य आँखिक आगू नाचए लगैत अछि। घोड़ोसँ तेज गतिसँ पानि दौगैत। बाढ़ियो छोटकी नहि, जुअनकी नहि, बुढ़िया। बुढ़िया रुप बना नृत्य करैत। ककरा कहू बड़की धार आ ककरा कहू छोटकी, सभ अपन-अपन चिन्ह-पहचिन्ह मेटा समुद्र जेकाँ बनि गेल। जेम्हर देखू तेम्हर पाँक घोराएल पानि, निछोहे दछिन मुहेँ दौगल जाइत। कतेक गाम-घर पजेबाक नहि रहने घर-विहीन भऽ गेल। इनार, पोखरि, बोरिंग, चापाकल पानिक तरमे डुबकुनियाँ काटए लगल। एहन भयंकर दृश्य देखि लोककेँ डरे छने-छन पियास लगलोपर पीबैक पानि नहि भेटैत। जीवन-मरण आगूमे ठाढ़ भऽ झिक्कम-झिक्का करैत बुझाए। घर खसल, घरक कोठी खसल, कोठीक अन्न भसल। जेहने दुरगति घरक तेहने गाइयो-महीसि, गाछो-बिरीछ आ खेतो-पथारक।

घरक नूआ-बिस्तर आ आनो-आन समानक मोटरी बान्हि माथपर लऽ अपनो डाँड़मे दू भत्ता खरौआ डोरी बान्हि आ बेटोक डाँड़मे बान्हि आगू-आगू मुसना आ पाछू-पाछू घरवाली जीबछी, बेटी दुखनीकेँ कोरामे लऽ कन्हा लगौने पोखरिक ऊँचका महार दिशि चलल। एखन धरि ओ महार बोन-झाड़ आ पर-पैखानाक जगह छल। जाहिमे साँप-कीड़ा बसेरा बनौने, बाढ़ि ओकरा घरारी बना देलक। जहिना इजोतमे छाँह लोकक संग नहि छोड़ैत, तहिना बरखा बाढ़िक संग छोड़ए लेल तैयार नहि। निच्चाँ पानिक तेज गति आ ऊपरसँ बरखाक नमहर बुन्न। महारपर मुसनाकेँ पहुँचैसँ पहिने बीस-पच्चीस गोटे अप्पन-अप्पन धिया-पूता, चीज-बस्तु आ माल-जालक संग पहुँचि चुकल छल। महारपर पहुँचि मुसना रहैक जगह हियाबए लगल। शौच करैक ढ़लान लग खाली जगह देखि मुसना मोटरी रखलक। मोटरी राखि बिसनाइरिक डाढ़ि तोड़ि खरड़ा बनौलक। ओहि खरड़ासँ खरड़ए लगल। एक बेर खरड़ि कऽ देखलक तँ मनमे पड़पन नञि भेलइ।

फेर दोहरा कऽ खरड़ि चिक्कन बनौलक। चिक्कन जगह देखि दुनू बेकतीक मनमे चैन भेलै। मोटरी खोलि मुसना एकटा बोरा निकालि चारिटा बत्तीक खूँटा गाड़ि, खरौआ जौरसँ चारु खूट बान्हि, बत्तीमे बान्हि कऽ घर बनौलक। दोसर बोरा निच्चाँमे ओछा धियो-पूतोकेँ बैसौलक आ मोटरियोक समान रखलक। चिन्तासँ दुनू परानीक मूँह सुखाएल रहै। एक दिशि दुनू बच्चाकेँ मुसना देखए आ दोसर दिशि गनगनाइत बाढ़ि। माथपर दुनू हाथ दऽ जीबछी मने-मन कोसी-कमला महरानीकेँ गरिऐबो करैत आ जान बचबै लेल निहोरो करैत। दुनू बच्चो कखनो कऽ बाढ़ि देखि हँसैत तँ कखनो जाड़े

कनैत।

बाढ़िक वेगमे एकटा घर भसिआएल अबैत देखि मुसना बाँसक टोन आ कुड़हरि लऽ दौगल। पानिमे पैसि हियाबे लगल जे कोन सोझे घर आओत। ठेकना कऽ हाँइ-हाँइ पाँचटा खुट्टा ठोकलक। आस्ते-आस्ते घर आबि कऽ खुट्टामे अड़कल, खूटामे अड़ल घर देखि घरवालीकेँ सोर पाड़ि कहलक- "हाँसू नेने आउ। घरक समचा सभ उघि-उघि लऽ जाउ।"

घरक ऊपरमे एकटा कुकूर सेहो भसैत आएल। ओ लोकक सुन-गुन पाबि कूदि कऽ महारपर चलि गेल। ठाठक बत्तीमे जहाँ मुसना हाँसू लगौलक आकि एकटा साँप लप दऽ हाथेमे हबक मारि देलकै। घरक भार थालमे गरल खुट्टा नहि सम्हारि सकल। पाँचो खुट्टा पानिमे गिर पड़लै। घर भसि गेलै। खूब जोरसँ मुसना कनबो करैत आ हल्लो करैत जे हौ लोक सभ, दौड़ै जाइ जा हौ, हमरा साँप काटि लेलक। मुसनाक कानब सुनि घरवाली सेहो बपहारि काटए लागलि। बपहारि कटैत घरवालीकेँ मुसना कहलक- "हे गए दुखनी माए, नाग डसि लेलकौ। छाती लग बिख आबि गेल। कनिये बाकी अछि कंठ छुबै ले। धिया-पुताकेँ सोर पाड़ि कनी मूँह देखा दे। आब नै बचबौ।"

जीबछी हल्लो करै आ घरबलाक बाँहि पकड़ि उपरो करैत। महारक किनछरिमे पहुँचि जहाँ उपर हुअए लगल आकि दुनू गोटे पिछड़ि कऽ तरे-उपरे निच्चाँमे खसल। दुनू परानी भीजल तँ रहबे करै, आरो नहा गेल। मुदा तइयो ओरिया-ओरिया कऽ उपर भेल। महारपर आबि जीबछी चूनक कोहीसँ चून निकालि दाढ़मे लगौलक। साँपक बिख झाड़निहार गाममे एकोटा नहि। मुदा रौदिया एहि बेर दसमीमे चनौरा गहबरमे चाटी सिखने छल। सभ कियो रौदियाक खोज करए लगल। ओ रौदिया माछ मारए लेल सहत लऽ कऽ बाध दिशि गेल छल। एक गोरे ओकरा बजा अनलक। अबिते रौदिया सहत कातमे रखि हाथ-पएर धोए मुसना लग आबि बाजल- "हौ भाय, हमर चाटी सिद्ध नहि भेल अछि, किएक तँ हम एखन धरि गंगा स्नान नै केलहुँहें। मुदा तइयो बिसहाराकेँ सुमरि देखै छिऐ।"

मुसनाकेँ आगूमे बैसा रौदिया हाथेसँ जगहकेँ झाड़ि चाटी रखलक। सभ रौदिया दिशि देखैत। मुदा चाटी चलबे ने कएल। बाढ़िक दुआरे आन गामसँ झाड़निहार आ चट्टिवाहकेँ बजाएब महाग मोसकिल रहै। सभ निराश भऽ गेल। छाती पीटि-पीटि जीबछी कनबो करै आ देवी-देवताकेँ कबुलो करै। मुदा ढ़ोढ़ साँप कटने रहए तँ बिख लगबे ने केलै।

गोसाइ लुक-झुक करए लगल। गामक ढ़ेरबा, बूढ़ि आ जुआन स्त्रीगण, चंगेरीयो आ चंगेरोमे काँच माटिक दिआरी लऽ पोखरिक घाट लग जमा भऽ कमला महरानीकेँ साँझ दऽ गीत गाबए लागलि। बच्चा सभ जए-जएकार करैत। तहि बीच लुखिया कमला महरानीकेँ पाठी कबुला केलक, सुबधी एक सेर मधुर। दोसरि साँझ धरि गीत-गाबि सभ घुरि कऽ आंगन आएल।

एक रफ्तारमे बाढ़ि पाँच दिन रहल। मुदा पोह फटितहि छठम दिन पानि कमए

लगल। बाढ़िक पानि जहिना हुहुआ कऽ अबैए, तहिना जाइए। बेर झुकैत-झुकैत घर-अंगनाक पानि निकलि गेलै। मुदा थाल-खिचार रहबे करै। सातम दिनसँ लोक घर ठाढ़ करए लगल। बाढ़ि सटकितहि लोक परदेश दिशि पड़ाए लगल। गाममे ने एक्कोटा धानक गब बँचल आ ने खेत रोपए लेल बिरार। नारक टाल सभ कतए भसि कऽ गेल तेकर ठेकान नहि। गहुमक भुस्सी भुसकाँरेमे सड़ि-सड़ि गोबर बनि गेल। मनुक्खसँ बेसी दिक्कत माल-जालकेँ भऽ गेलै। आमक पात, बाँसक पात आन-आन गाछ सबहक पात काटि-काटि माल-जालकेँ खुआबए लगल। आन-आन गामसँ नार, भुस्सी कीनि-कीनि आनए लगल। मुदा माल-जाल तइयो अन-धुन मुइलै। जे बँचल रहै, ओहो सुखा कऽ संठी जेकाँ भऽ गेलै। तइ परसँ रंग-बिरंगक बीमारी सभ सेहो आबि गेलै। ककरो खुरहा तँ ककरो पेटझड़्डी। किछु गोटे अपन सभ मालकेँ कुटमैती सभमे दऽ आएल।

चारिक अमल। पिसुआ भांग पीबि श्रीकान्त मैदान दिशिसँ आबि दलानपर बैसि चाह पीबैत रहथि। सोगसँ अधमरु जेकाँ भेल। मने-मन सोचथि जे महाजनी तँ चलिये गेल आब अपनो साल भरि की खाएब? अगते धान सबाइ लगा देलहुँ। बड़ पैघ गलती भेल जे एक्को बखारी पछुआ कऽ नहि रखलौं। मुदा एक बखारी रखनहि की होइत। के ककरा मदति करत। ठीके कहब छै जे सभकेँ अपना भरोसे जीबाक चाही। भने दुआर परक बखारीक धान सठि गेल। कियो दरबज्जापर आओत तँ देखा देबै। मुदा अपनो तँ जरुरत अछि, से कतए सँ आनब। लऽ दऽ कऽ घरक कोठीमे चाउर अछि, ओतबे अछि। एक्को धुर धान नञि बँचल अछि जे अगहनोक आशा होइत। आब अबाद कएल नै हएत। आगू रब्बीयेक आशा। जे सभ दिन कीनि-बेसाहि कऽ खाइत अछि ओकरा तँ कोनो नै, मुदा हमरा लोक की कहत? चाह पीबिते-पीबिते श्रीकान्तकेँ चौन्ह आबए लगलनि। मन पड़लनि जे बाबा कहने रहथि जे दरबज्जापर जँ क्यो दू-सेर वा दू-टका मांगए लेल आबए तँ ओकरा ओहिना नहि घुमबिहक। ओहिसँ लछमी पड़ाइ छथि। जीबछीकेँ अबैत देखि श्रीकान्त सोर पाड़लखिन। सालो भरि जीबछी हुनके कुटाउन कऽ गुजर करैत छलि। चाउर-चूड़ा कुटैमे जीबछी गाममे सभसँ बेसी लुरिगर। श्रीकान्तक लग आबि जीबछी हँसैत कहलकनि- ''एत्ते किए सोगाइल छथि कक्का, हिनका एत्ते छनि तखन एते दुख होइ छनि, हमरा तँ किछु ने अछि तँ कि मरि जाएब।''

जीबछीक बात सुनि भखरल स्वरमे श्रीकान्त कहलखिन- ''जहिना सभ किछु बाढ़िमे दहा गेल तहिना जँ अपनो सभ तुर भसि जइतहुँ, से नीक होइत। जाबे परान छुटैत, ततबे काल ने दुख होइत। आगू तँ दुख नहि काटए पड़ैत।'' मुस्की दैत जीबछी बाजलि- ''एक्केटा बाढ़िमे एत्ते चिन्ता करै छथि काका, कनी नीक की कनी अधलाह, दिन तँ बितबे करतनि।''

चीलम पीबैत मुसना ओसारपर बैसल। कसि कऽ दम खींचि मने-मन सोचए लगल जे दू मास अगहन-पूस मुसहनि खुनि-खुनि गुजर करै छलहुँ। दस सेर जमो भऽ जाइ छल आ गुजरो कऽ लैत छलहुँ। ओहो चलि गेल। ने एक्को गब कतौ धान

बँचल आ ने गाममे एकोटा मूस। दोसर दम खींचि धूँआकेँ घोटितहि मनमे एलै जे मूसक तीमन आ धुसरी चाउरक भात जँ जाड़क मासमे भेटए तँ एहिसँ नीक दोसर की हएत। एहेन खेनाइ तँ रजो-महरजोकेँ सिहिन्ते लागल रहतनि। ओ-हो-हो, भगवान गरीबेक सुख छीनि लेलनि।

मुसनाक पहिलुका नाम मकसूदन छल। मुदा मूस आ मुसहनिसँ बेसी सिनेह रहने लोक ओकरा मुसना कहए लगल। जीबछी आंगनक चुल्हिपर रोटी पकबैत। इनारपर हाथ-पएर धोय मुसना लोटामे पानि नेने आंगन आबि जलखै करै लऽ बैसल। टिनही छिपलीमे रोटी-नून जीबछी घरबलाक आगूमे देलक। अंगनामे दुखबाकेँ नहि देखि मुसना जोरसँ शोर पाड़लक। पिताक अवाज सुनितहि दुखबा दौगल आबि धुराइले हाथे-पएरे खाइले बैसि रहल। दुनू बापुत खाए लगल। चुल्हिये लगसँ मुस्की दैत जीबछी बाजलि- "ककरो किछु होउ, जकरा लूरि रहतै ओ जीबे करत। ऐठाम तँ देखै छिऐ जे एक्के दहारमे किदनि बहारक खिस्सा अछि। सभ हाकरोस करैए।"

मुँहक रोटी मुसना हाँइ-हाँइ चिबा जीबछी दिशि देखि कऽ बाजल- "तते ने माछ भसि-भसि आएल अछि जे खत्ता-खुत्तीमे सह-सह करैए। कने पानि तँ कम होउ। जखने पानि कम भऽ उपछै जोकर भेल आकि मछबारि शुरु कऽ देब। खेबो करब आ बेचबो करब। सदिखन दू पाइ हाथेमे रहत।"

अपन नहिराक बात मन पड़ितहि जीबछी कहए लागलि- "हमरा नैहरमे पूबसँ कोशी आ पछिमसँ गंडकक बाढ़ि सभ साल अबैत छल। एहि बीच जे धार अछि ओकर पानि तँ घुमैत-फिरैत रहिते छल। सगरे गाम साउनेसँ जलोदीप भऽ जाइ छल। टापू जेकाँ एकटा परती टा सुखल रहैत छल। ओहिपर सौँसे गामक लोक बरसाती घर बना कऽ रहैत छल। कातिक अबैत-अबैत खेत सभ जागए लगैत छलै। तकर बाद लोक खेती करैत छल। गहिंरका खेत आ खाधि-खुधिमे भैँटक गाछ सोहरी लागल जनमै छल। अगहन बीतैत-बीतैत ओ तोड़ैबला हुअए लगैत छल। हम सभ ओहि भैँटकेँ तोड़ि-तोड़ि आनी, ओकरे दाना निकालि सुखा कऽ लावा भूजी। तते लावा हुअए जे अपनो खाइ आ बेचबो करी। काल्हि गिरहत कक्काक ओहिठाम जाएब आ कहबनि जे चौरीमे मनसम्फे भैँट जनमल अछि, ओ हमरा दऽ दिअ।"

एखन धरि दुनू परानी मुसना, चाउर आ चूड़ाक कुट्टी करैत छल, सेहो ढ़ेकीमे। किएक तँ गाममे एक्कोटा छोटको मशीन धनकुटियाक नहि छल। अधिकतर परिवार अपन-अपन ढेकी-उखड़ि रखैत छल। मुसना सेहो कुट्टीक दुआरे अपन ढेकी-उखड़ि रखने अछि। नीक चाउर बनबैमे जीबछीक लोहा सभ मानैए। एहि बेरि तँ धनकुट्टी चलत नहि। मुदा बाढ़िमे आन गामसँ तते भैँट दहा कऽ चौरीमे आएल जे सापरपिट्टा गाछ सौँसे चौरीमे जनमि गेल अछि। तँ जीबछी मने-मन चपचपाइत। दोसरकेँ भैँटक भाँज बुझले नहि छलै।

सभ दिन नहाइ बेरिमे जीबछी चौरी जा भैँट देखि-देखि अबैत छलि। चौरगर-चकरगर पात सौँसे चौरीकेँ छेकने। गोटि-पङरा फूल हुअए लगलै। फूल देखि जीबछीक मनमे होइ जे एत्तेटा फुलवारी इन्द्रो भगवानकेँ हेतनि की नहि। पाँचे दिनमे

साँसे चौरी फूल फुला गेल। अगता फूलक पत्ती झड़ि-झड़ि खसए लागल, फूलमे नुकाएल फड़ निकलए लगल। गोल-गोल, हरियर-हरियर। फड़ देखि जीबछी आमदनी बुझि, चौरी कातमे बैसि, नव-नव योजना मने-मन बनबए लागलि। अइ बेर एकटा खूब निम्मन महीस कीनब। जँ महीस जोकर आमदनी नै हएत तँ दूटा गाऐ कीनि लेब। अप्पन तँ सम्पति भऽ जाएत। ओकरे खूब चराएब-बझाएब। ओहीसँ तँ चारु परानीक गुजर चलत। जिनगी भरि तँ कुटौने करैत रहलहुँ मुदा एहि बेर कमलो महरानी आ कोसियो महरानी दुख हेरि लेलथि। मने-मन जीबछी दुनूकेँ गोड़ लगलकनि। अपन धन हएत, तइ परसँ मेहनत करब तँ कोन दरिदराहा दुख आबि कऽ हम्मर सुख छीनि लेत? मजगूत घर बान्हब, बेटा-बेटीक बिआह करब। नाति-पोता हएत, बाबा-दादी बनि कऽ जते दिन जीबी ओ कि देवलोकसँ कम भेलै। अही लए ने सभ हेरान अछि। कएलासँ सभ किछु होइ छै, बिनु केने पतरो फुसि।

घनगर गाछ देखि जीबछीक मनमे अएलै जे बीच-बीचमे सँ जँ गाछ उखारि देबै तँ सौरखियो करहर भऽ जाएत आ छेहर गाछ रहने फड़ो नमहर हएत। जइसँ दानो नीक हएत। एखनेसँ आमदनी शुरु भऽ जाएत। उत्साहित भऽ जीबछी कमठौन शुरु केलक। मुदा करहर उखारैमे तते डाँड़ दुखाइ जे हूबा कमि गेलै। कमठौन छोड़ि देलक। देखते-देखते फड़मे लाली पकड़ए लगलै।

अगता फूल अगता फड़ भेल। नमहर-नमहर, पोछल-पोछल, गोल-गोल पुष्ट। रंगल फड़ देखि जीबछी बुझि गेल जे आब ई तोड़ैबला भऽ गेल। दोसर दिनसँ फड़ तोड़ैक विचार जीबछी मने-मन कऽ लेलक।

दोसर दिन भोरे जीबछी रोटी पका, दुनू बच्चो आ अपनो दुनू परानी खा प्लास्टिकक बोरा लऽ फड़ तोड़ैले बिदा हुअए लगल आकि धक दऽ मन पड़लै जे बोरामे तँ फड़ राखब, मुदा पानिमे तोड़ि-तोड़ि कतए राखब। फड़ तोड़ैले तँ झोराक जरुरत हएत। झोरा तँ अपना अछि नहि! आब की करब? लगले जीबछी पुरना साड़ीकेँ फाड़ि दूटा झोरा सीलक। झोरा सीबि बोरो आ झोरोकेँ चौपेत एकटा झोरामे राखि, दुनू बच्चो आ दुनू गोटे अपनो चौर दिशि बिदा भेल।

फड़क रुप-रंगसँ जीबछीक मन गद-गद। मुदा अनभुआर काज बुझि मुसना तर्क-वितर्क करैत। चौरक कात पहुँचि उपरका खेत जे सुखाएल छल मे दुनू बच्चो, बोरो आ रोटी-पानिकेँ रखि दुनू परानी भेँट तोड़ैले पानिमे पैसल। पानिमे पैसितहि जीबछीक नजरि भेँटक फड़क उपरे-ऊपर नाचए लगल। जहिना ककरो रुपैआक थैली भेटलासँ खुशी होइ छै, तहिना जीबछीक मनमे भेलै। एक टकसँ देखि जीबछी दुनू हाथे हाँइ-हाँइ फड़ तोड़ए लागलि। खिच्चा फड़ देखि जीबछी पतिकेँ कहलक- "जुएलके फड़ टा तोड़ब। अजोहा एखन छोड़ि दियौ। पछाति तोड़ब।"

भरिते जीबछी ऊपर आबि-आबि बोरामे रखैत। मुसनो सएह करैत। दुनू बोरा भरि गेल। ऊपर आबि जीबछी पतिकेँ कहलक- "कनी काल सुस्ता लिअ। पानिमे निहुड़ल-निहुड़ल डाँड़ो दुखा गेल हैत। अहाँ एत्तै रहू, हम एक बेर अंगनासँ रखने

अबै छी।''

जीबछी एकटा बोरा उठा आंगन बिदा भेलि। एक तँ पानिक भीजल, दोसर ओजनगर बस्तु। मुदा जीबछी भारी बुझबे ने करए। किएक तँ सम्पत्तिक मोटरी रहै किने। आंगन आबि ओसारपर बोरा रखि पुनः जीबछी चौर दिशि रमकल विदा भेलि। चौर पहुँचि पतिकेँ कहलक- ''हम बोरा लै छी, अहाँ दुनू बच्चो आ डोलोकेँ सम्हारने चलू।''

गू-आगू मुसना बेटीकेँ कोरामे दोसर हाथमे डोल आ बेटाकेँ लऽ चलल। पाछू-पाछू जीबछी माथपर बोरा लेने। थोड़े दूर बढ़लापर जीबछी पतिकेँ कहलक- ''भगवान दुःख हेरि लेलनि।''

मुदा स्त्रीक बात सुनि मुसनाकेँ ओ खुशी नञि एलै जे जीबछीकेँ रहै। आंगन आबि जीबछी पहिलुके बोरा लग दोसरो बोरा रखि भानसक ओरियान करै लागलि।

चारिम दिन पहिलुके खेप भैँट तोड़ै काल मुसनाकेँ एकटा ठेंगी बाँहिमे पकड़ि लेलकै। जे ओ देखबे ने केलक। मुदा जखन ठेंगी भरि पोख खून पीबि भरिया गेलै, तखन मुसनाक नजरि पड़लै। ठेंगीकेँ देखितहि ओकर परान उड़ि गेलै। थर-थर कापए लगल। खूब जोरसँ घरवालीकेँ कहलक- ''बाप रे बाप! देहक सभटा खून ठेंगी पीबि लेलक। कोन पाप लागल जे अइ मौगियाक भाँजमे पड़लौं। एक तँ बाढ़िक मारल छी जे भरि पोख अन्न नै होइए। सुखा कऽ संठी भेल छी। तइपर जेहो खून देहमे छलए सेहो ठेंगिये पीबि गेल। झब दे आउ ने तँ हम पानियेमे खसि पड़ब।''

मुसनाक बातकेँ अनठबैत जीबछी हाँइ-हाँइ फड़ो तोड़ैत आ मने-मन बजबो करैत- ''जना नाग डसि नेने होइ, तहिना अड़राइए। भभटपन ने देखू। एहने-एहने पुरुख बुते परिवार चलत?''

दुन झोरा भरिते जीबछी मुसना लग आबि हाथेसँ ठेंगी पकड़ि एकटा चिचोरमे बान्हि देलक। मुदा जइ ठाम ठेंगी पकड़ने रहै तइ ठामसँ छड़-छड़ खून बहैत। अपन दहिना औँठासँ जीबछी दाबि देलक। कनिये कालक बाद खून बन्न भऽ गेलै। जीबछी फेर फड़ तोड़ैले पानिमे पैसल। तोड़ि कने काल बाद जीबछी कहलक- ''आउ ने, आब किछु ने हएत।''

जीबछीक बात सुनि मुसना आँखि गुड़रि कऽ बाजल- ''ई मौगिया जान मारैपर लगल अछि। जे कहुना मरि जाए। हमरा की दुनियामे सैँएक कमी छै? दोसर कऽ लेब। दुनू बच्चा दिशि देखैत बाजल- मुदा अइ टेल्हुक सभक की हेतै? बिलटि कऽ मरत की नहि?'' पति दिशि देखि पत्नी मुस्की दैत बाजलि- ''नञि तोड़ब तँ नञि तोरु। ओतै बैसि बच्चा सभकेँ खेलाउ।''

दुनू बोरा भरि जीबछी आंगन अनलक। सभकेँ सम्हारने मुसना सेहो आएल। आंगन आबि जीबछी चुल्हि पजारि, भानस कऽ दुनू बच्चो आ अपनो दुनू परानी खेलक। खा कऽ जीबछी हाँसू लऽ भैँटक फड़ चीरि-चीरि दाना निकालए लागलि। लाल-लाल, गोल-गोल। मुसना सेहो दाना निकालए लगल। दुनू बच्चा दुनू भाग बैसि

दूटा फड़कैँ गुड़कबैत। दानाकैँ एकटा चटकुन्नीपर थोपि-थोपि रखैत जाए। मुदा कनियेे काल बाद मुसनाकैँ चीलम पीबैक मन भेलै। ओ उठि कऽ चुल्हि लग जा आगियो तपए लगल आ चीलमो पीबए लगल। दानाक ढ़ेरी देखि जीबछी गर अँटबए लागलि जे एत्ते कत्तऽ कऽ राखब। गुनधुन करैत। एकाएक नैहरक बात मन पड़लै। मन पड़िते मूहसँ हँसी फुटलै। जीबछीकैँ हँसैत देखि मुसना अह्लादित भऽ कहलक- ‘‘ऐँ गै, कोन सोनाक तमघैल तोरा भेटि गेलौहेँ जे एना खिखिआइ छेँ।’’

मुदा पाशा बदलैत जीबछी बाजलि- ‘‘एखैन तँ अन्हार भऽ गेलै, काल्हि भोरे एकटा खाधि टाटक कात अंगनेमे खुनि देबै।’’

भोरे मुसना ढ़क जेकाँ गोल-मोल खाधि खुनलक। जीबछी दू-लेब कऽ कऽ लेबि, सुखौलक। ओहिमे भैँटक दाना सुखा-सुखा रखैत गेल। ऊपरसँ टाटक झँपना बना मुसना दऽ देलक।

मास दिनक मेहनतिसँ जीबछीक आंगन भैँटक दानासँ भरि गेल। अनभुआर चीज तँ चोरी-चपाटीक डरे नहि। भरल आंगन देखि जीबछीक मनमे समुद्रक लहरि जेकाँ खुशी हिलकोर मारए लगलै। कनडेरिये आँखिये मुसना दिशि देखि जीबछी मुस्किया देलक। घरवालीक मुस्की देखि मुसना खिसिया कऽ बाजल- ‘हमरा देखि-देखि तोरा हँसी लगै छौ। हँसि ले, जते हँसमे से हँसि ले। जाबे जीबै छियौ ताबे। भगवान केलखुन आ मरलियौ तखैन तोहर हँसी नगरक लोक देखतौ।’’

मुदा जीबछीक लेल धैन-सन। किएक तँ खुशीसँ मन एते भरल रहै जे घरबलाक बात ओहिमे पैसिबे ने केलै। मने-मन जीबछी लावा भुजैक विचार करए लागलि। लावा भुजै लेल एकटा नम्हर खापड़ि चाही। बालु रखै लेल एकटा कोहा चाही। लारनि तँ अपनो खरहीसँ बना लेब। बाउलो नदी कातसँ लऽ आनब। जखन कुम्हनि ओहिठाम जाएब तँ कचकुह ताकि कऽ एकटा नमहर तौला लऽ लेब। ओकरे खापड़ि बना लेब। बालु धिपबैले मझोलको कोहासँ काज चलि जाएत। एकटा सरबाक काज सेहो पड़त। किएक तँ बालु जे देबै से तँ हाथसँ नञि हएत। ओइमे एकटा बत्तीक डाँट लगबए पड़त। लगा लेब। मुसनाकैँ कहलक- ‘‘लाबा भुजै लेल जारनक ओरियान करए पड़त।’’

लावाक नाम सुनि मुसनाक मनमे खुशी भेलै। मुस्कुराइत उत्तर देलक- ‘‘एखन टेंगारी सुढ़िया लै छी। बेरु पहर गिरहत कक्काक गाछीसँ बाँझियो आ सुखल ठौहरियो सभ आनि देब।’’

भरि दिनमे दुनू परानी जीबछी सभ कथूक ओरियान कऽ लेलक।

लावा भुजब जीबछी शुरु केलक। दू चुल्हिया चुल्हि। एक मूहमे खापड़ि, दोसरमे कोहा। खापड़िमे भैँटक दाना भुजैत आ कोहामे बालु धिपैत। पहिल घानी भुजि जीबछी एक चुटकी चुल्हिमे दऽ दोसर घानी भुजब शुरु केलक। दोसर घानीक लावा देखि जीबछीक मन तर-उपर करए लागल। पहिलुका घानीक लावा चंगेरीमे लऽ दुनू बच्चो आ घरोबलाकैँ आगूमे देलक। आगूमे लावा देखि मुसना मने-मन सोचए लगल जे ई मौगिया बड़ लुरिगर अछि। एहन स्त्री भगवान सभकैँ देथुन। कहू जे एखैन तक

हम जे बुझितो ने छलौं से आइ खाइ छी। धिया-पुताकें पोसब कोन बड़का भारी बात छिऐ, समाजो लेल लोक बहुत किछु कऽ सकैत अछि।

लावाक गमक पुरबा हवामे मिलि गामकें सुगंधित कऽ देलक। सुगंध पाबि टोलोक आ गामोक स्त्रीगण सभ लावा कीनैक लेल एक्के-दुइये जीबछीक आंगन आबए लगल। मुदा एक्केटा जबाब जीबछी सभकें दैत- 'पहिने गिरहत कक्काकें खुएबनि, तखन ककरो देब। भरि दुपहर जीबछी लाबा भुजलक। दू छिट्टा। दुनू छिट्टा लावा घरमे रखि ओहिमे सँ एक मुजेला लऽ साड़ीसँ झाँपि जीबछी मुसनाकें कहलक- "हम गिरहत कक्का ओहिठाम जाइ छी। अहाँ अंगनेमे रहब।" कहि जीबछी माथपर मुजेला लेने श्रीकान्त ऐठाम बिदा भेल।

जीबछीक माथपर मुजेला श्रीकान्त गौरसँ देखि मुस्कुराइत कहलखिन- "बड़ खुशी देखै छी लछमी महरानी। मुजेलामे की चोराकऽ अनलहुँहें। कने हमरो देखए दिअ?"

अनसुनी करैत जीबछी मुस्की दैत आंगन जा गिरहतनीक आगूमे मुजेला रखि कहलकनि- "काकी, थोड़े कऽ लाइ बना लिहथि। अखन थोड़े नोन-मरीच-तेल मिला कऽ देथु। जे कक्काकें दऽ अबै छिएनि।"

छिपलीमे लावा नेने जीबछी दरबज्जापर जा श्रीकान्तक आगूमे देलकनि। ओ छिपलीमे उज्जर-उज्जर रमदानाक लावा जेकाँ लावाकें निहारि-निहारि देखए लगलाह। जीबछी कहलकनि- "काका, की निङहारै छथिन, पहिने एक मुट्ठी मुँहमे दऽ कऽ देखथुन ने। भैंटक लावा छिऐ।"

एक मुट्ठी उठा श्रीकान्त मुँहमे देलखिन। लावाक कोमलता आ सुआद बुझि श्रीकान्त पत्नीकें सोर पाड़ि कहलखिन- "एत्ते सुन्नर वस्तुकें एखन धरि जनितहुँ नहि छलहुँ। धन्य अछि जीबछीक ज्ञान आ लूरि जे एहेन सुन्नर हराएल बस्तुकें ऊपर केलक। साक्षात् देवी छी जीबछी। जाउ, सन्दुकमे सँ एक जोड़ साड़ी आ आंगी निकालने आउ। जीबछीकें अपना ऐठामसँ पहिरा कऽ बिदा करब। गरीब-दुखियाक देवी छी जीबछी।"

सभ दिन जीबछी लावा भुजैत छलि आ अंगनेसँ लोक सभ कीनि-कीनि लऽ जाइत। पनरह दिनक जमा कएल रुपैयो आ फुटकुरियो जीबछी मुसनाकें गनै लेल आगूमे देलक। पाइ देखि मुसनाक मन उड़ि गेल। मूहसँ ठहाका निकलल। एक टकसँ मुसना जीबछी दिशि देखि, कैँचा गनए लगल।

बिसाँढ़

पछिला चारि सालक रौदी भेने गामक सुरखिये बेदरंग भऽ गेल। जे गाम हरियर-हरियर गाछ-बिरीछ, अन्नसँ लहलहाइत खेत, पानिसँ भरल इनार-पोखरि, सैकड़ो रंगक चिड़ै-चुनमुनी, हजारो रंगक कीट-पतंगसँ लऽ कऽ गाए महीस आ बकरीसँ भरल रहैत छल ओ मरनासन्न भऽ गेल। सुन-मसान जेकाँ। बीरान। सबहक मनमे एक्केटा विचार अबैत जे आब ई गाम नै रहत। जँ रहबो करत तँ खाली माटियेटा। किएक तँ जहि गाममे खाइक लेल अन्न नहि उपजत, पीबैक लेल पानि नहि रहत, तहि गामक लोक की हवा पीबि कऽ रहत? जहि मातृभूमिक महिमा अदौसँ सभ गबैत अएलाह ओ भूमि चारिये सालक रौदीमे पेटकान लाधि देलक। मुदा तैयो लोकक टूटैत आशाक वृक्षमे नव-नव फुलक कोढ़ी टुस्साक संग जरुर निकलि रहल अछि। किएक तँ आखिर जनकक राज मिथिला छियै की ने। जहि राज्यमे बारह-बर्खक रौदीक फल सीता सन भेटल तहि राजमे, हो न हो, जँ कहीं ओहने फल फेर भेटए। एक दिशि रौदीक सघन मृत्युवाण चलैत तँ दोसर दिशिसँ आशाक प्रज्वलित वाण सेहो ओकर मुकाबला करैत। जेकर हसेरियो नमहर। एहनो स्थितिमे दुनू परानी डोमनक मनमे जीबैक ओहने आशा बनल रहल, जेहने सुभ्यस्त समएमे। कान्हपर कोदारि नेने आगू-आगू डोमन आ माथपर सिंगही माछ आ बिसाँढ़सँ भरल पथिया नेने पाछु-पाछु सुगिया, बड़की पोखरिसँ आंगन, जिनगीक गप-सप्प करैत अबैत। चानिक पसीना दहिना हाथसँ पोछि, मुस्कुराइत सुगिया बाजलि- 'जकरा खाइ-पीबैक ओरियान करैक लूरि बुझल छैक ओ कथीक चिन्ता करत?'', पत्नीक बात सुनि डोमन पाछू घुरि सुगियाक चेहरा देखि बिनु किछु बजनहि, नजरि निच्चाँ केने आगू डेग बढ़बए लगल। किएक तँ खाइक ओते चिन्ता मनमे नहि, जते पानि पीबैक।

....

डोमनकेँ अपन खेत-पथार नहि। मुदा दुनू बेकती तेहन मेहनती जे नहियो किछु रहने नीक-नहाँति गुजर करैत। गिरहस्तीक सभ काजक लूरि रहितहुँ ओ कोनो गिरहस्तसँ बन्हाएल नहि, ओना समए-कुसमए अपना काज नहि रहने बोइनो कऽ लैत। अपना खेत नहि रहने खेती तँ नहिये करैत मुदा दस कट्ठा मडुआ सभ साल बटाइ रोपि लैत, जाहिसँ पाँच मन अन्नो घर लऽ अबैत। मडुआ बीआ उपजबैमे बेसी मिहनत होइत अछि। सभ दिन बीआ पटबए पड़ैत अछि। शुरुहे रोहणिमे बड़की पोखरिक किनछरिमे डोमन बीआ पाड़ि लैत। लगमे पानि रहने पटबैयोक सुविधा। आरु बीरार तँ बीओ नीक उमझैत। पनरहे दिनमे बीआ रोपाउ भऽ जाइत। मिरगिसियामे पानि होइतहि अगते मडुआ रोपि लैत। मुदा एहि बेर से नञि भेलै। बरखा नहि भेने बीआ

बीरारेमे बुढ़हा गेल। एक्को धुर मड़ुआक खेती गाममे नहि भेलै। आ ने कियो अखन धरि धानक बीरारक खेत जोतलक आ ने बीआ बाओग केलक। रौदीक आगम सबहक मनमे हुअए लगल। मुदा तैयो ककरो मनमे अन्देशा नहि! किएक तँ ढ़ेनुआर नक्षत्र सभ पछुआइले अछि।

जहिना रोहणि-मिरगिसिया फोंक गेल तहिना अद्रो। समए सेहो खूब तबि गेलै। दस बजेसँ पहिनहि सभ बाधसँ आंगन आबि जाएत। किएक तँ लू लगैक डर सबहक मनमे। मड़ुआ खेती नहि भेने दुनू परानी डोमनक मनमे चिन्ता पैसए लगल। बड़की पोखरिसँ दुनू परानी पुरैनिक पातक बोझ माथपर नेने अंगना अबैत। बाटमे सुगिया बाजलि- "अइ बेर एक्को कनमा मड़ुआ नञि भेल। बटाइयो केने आन साल ओते भऽ जाइत छल जे सालो भरि जलखै चलि जाइ छलाए। अइ बेर तँ जलखइओ बेसाहिये कऽ चलत।"

माथ परक पुरैनिक पातक बोझसँ पानि चुबैत। जे डोमनो आ सुगियोकेँ अधभिज्जु कऽ देने। नाक परक पानि पोछैत डोमन उत्तर देलक- "कोनो कि हमरेटा नञि भेल आकि गामेमे ककरो नै भेलै। अनका होइतै आ अपना नै होइत तखन ने दुख होइत। मुदा जब ककरो नै भेलै तँ हमरे किअए दुख हएत। जे दसक गति हेतै से हमरो हएत। अपना तँ पुरैन-पातक बिक्रीक रोजगारो अछि आ जेकरा इहो ने छै?"

डोमनक उत्तर सुनि मिरमिरा कऽ सुगिया बाजलि- 'हँ, से तँ ठीके। मुदा ठनका ठनकै छै तँ कियो अपने माथपर ने हाथ दै अए। तखन तँ ई रौदी इसरक डाँग छी, लोकक कोन साध।"

अखन धरिक समए कियो रौदी नहि बुझलक। सबहक मनमे यएह होइत जे ई तँ भगवानक लीले छियनि। जे कोनो साल अगतेसँ पानि हुअए लगैत तँ कोनो साल अंतमे होइत। कोनो साल बेसिओ होइत तँ कोनो साल कम्मो। कोनो-कोनो साल नहिये होइत। जहि साल अगते बिहरिया हाल भऽ जाइत ओहि साल समएपर गिरहस्ती चलैत मुदा जहि साल पचता पानि होइत तहि साल अधखड़ू खेती भऽ जाइत। मुदा जखन हथिया नक्षत्र धरि पानि नहि भेल तखन सबहक मनमे आबए लगल जे अइ बेर रौदी भऽ गेल। ओहिना जोतल- बिनु जोतल खेतसँ गरदा उड़ैत। घास-पातक कतौ दरस नहि। मुदा तँ कि लोक हारि मानि लेत। कथमपि नहि। सभ दिनसँ गामक लोकमे सीना तानि कऽ जीबैक अभ्यास बनल अछि ओ पीठ कोना देखाओत? भऽ सकैत अछि जे इन्द्र भगवानकेँ कोनो चीजक दुख भऽ गेल हेतनि। जाहिसँ बिगड़ि कऽ एना केलनि। तँ हुनका बौँसब जरुरी अछि। जखने फेर सुधरि जेताह तखनेसँ सभ काज सुढ़िया जाएत। यएह सोचि कियो भुखल दुखलकेँ अन्न दान तँ कियो कीर्तन-अष्टयाम-नवाह तँ कियो यज्ञ-जप चंडी, विष्णु तँ कियो महादेव पूजा लिंग इत्यादि अनेको रंगक बौँसैक ओरियान शुरु केलक। जनिजाति सभ कमला-कोशीकेँ छागर-पाठी कबुला सेहो करए लगलीह। किएक तँ जँ हुनकर महिमा जगतनि तँ बिनु बरखोक बाढ़ि अनतीह। बाढ़ि आओत पोखरि-झाखड़िसँ लऽ कऽ चर-चौरी, डीह-डाबर सभ भरत। रौदी कमत। अधा छिधा उपजो हेबे करत।

बरखाक मकमकी देखि नेङरा काका महाजनी बन्न कऽ लेलनि। ओ बुझि गेलखिन जे अइ बेरक रौदी अगिला साल बिसाएत। मुदा सोझमतिया बौकी काकीक सभ चाउर सठि गेलनि। ओना बौकी काकीक लहनो छोट। सिर्फ चाउरेक। सेहो पावनिये-तिहार धरि समटल। हुनकर महाजनी मातृ-नवमी, पितृपक्षसँ शुरु होइत। पाहुन-परकक लेल दुर्गापूजा, कोजगरा होइत दिवाली परेब, गोवर्धनपूजा, भरदुतिया, छठि होइत सामा धरि अबैत-अबैत सम्पन्न भऽ जाइत छलनि। किएक तँ सामाकेँ सभ नवका चूड़ा खुआबैत। खुएबे टा नहि करैत संग भारो दैत। ताधरि कोला-कोली धानो पकि जाइत। मुदा से बात बौकी काकी वुझबे ने केलखिन जे अइ बेर रौदी भऽ गेल। तँ अपनो खाइ ले किछु नहि रखलथि। जहिना बोनिहार, किसान तहिना महाजन बौकियो काकी भऽ गेलीह।

अगहन अबैत-अबैत सभकेँ बुझि पड़ए लगलैक जे अपने की खाएब आ माल-जालकेँ की खुआएब। किएक तँ कातिक धरिक ओरियान -अपनो आ मालो-जालक लेल- तँ अधिकांश लोक पहिनहि सँ कऽ कऽ रखैत। जे नेङरा काका छोड़ि सबहक सठि गेलनि। धानोक बीआ सभ कुटि-छाँटि कऽ खा गेल। धानक कोन गप जे हालक दुआरे रब्बियो-राइ हएब कठिन। सबहक भक्क खुजल। भक्क खुजितहि मनमे चिन्ता समाइ लगल। जेना-जेना समए बीतैत तेना-तेना चिन्तो फौदाइत। एक तँ ओहिना चुल्हि सभ बन्न हुअए लगल तइ परसँ सुरसा जेकाँ समए मुँह बाबि आगूमे ठाढ़। चिन्तासँ लोक रोगाइ लगल। भोर होइतहि धिया-पूताक बाजा सौंसे गाम बाजए लगैत। मौगी पुरुखकेँ करमघट्टू तँ पुरुख मौगीकेँ राक्षसनी कहए लगल। जाहिसँ धिया-पूताक बाजाक संग दुनू परानीक नाच शुरु भऽ जाइत। मुदा एहन समए भेलोपर दुनू परानी डोमनक मनमे एक्को मिसिया चिन्ता नहि। किएक तँ जूरे-शीतलसँ पुरैनिक पातक कारोबार शुरु केलक। कारोबार नमहर। बावन बीघाक बड़की पोखरि। जहिमे सापर-पिट्टा पुरैनिक गाछ। बजारो नमहर। निरमली, घोघरडिहा, झंझारपुर स्टेशनो आ पुरनो बजार। असकरे सुगिया कते बेचत। पुरैनिक पात कीननिहार हलुआइसँ लऽ कऽ मुरही-कचड़ीवाली धरि। तइपर सँ भोज-काजमे सेहो बिकाइत। तँ आठ दिनपर पार लगौने रहए। भरि दिन डोमन पत्ता तोड़ि-तोड़ि जमा करैत। एक दिनकेँ सुगिया पत्ता सरिअबैत, गनि-गनि तेसरा दिन भोरुके गाड़ीसँ बेचैले जाइत। जे पात उगड़ि जाय ओकरा डोमन सुखा-सुखा रखैत। किएक तँ सुखेलहो पातक बिक्री होइत।

निरमलीसँ पात बेचि कऽ सुगिया आबि पतिकेँ कहलक- "रौदी भेने अपन चलती आबि गेल।"

चलतीक नाम सुनि मुस्की दैत डोमन पुछलक- "से की?"

"सभ पात बेचिनिहार बेपारी थस लऽ लेलक। सभ गामक पोखरि सुखि गेलै जाहिसँ सबहक कारेबार बन्न भऽ गेलै। अपने टा पात बजार पहुँचैए। आइ तँ जहाँ गाड़ीसँ उतड़लहुँ आकि दोकानदार सभ सभ-पात छानि लेलक। टीशनेपर छुहुक्का उड़ि गेल।"

डोमन- "अहाँकेँ लूरि नञि छलए जे दाम बढ़ा दितिऐ, एकक दू होइत।"

सुगिया- “अगिला खेपसँ सएह करब। आब तँ बड़िड़यो जुआइत हएत की ने?”

डोमन- “गोटे-गोटे जुआएलहें। मुदा बीछि-बीछि तोड़ए पड़त। तेँ पाँच दिन आरो छोड़ि दै छिऐ।”

तेसर साल चढ़ैत-चढ़ैत गामक एकटा बड़की पोखरि आ पाँचटा इनार छोड़ि सभ सुखि गेल। नमहर आँट-पेटक बड़की पोखरि। किएक तँ दैतक खुनल छी की ने? लोकक खुनल थोड़े छिऐ। देव अंश अछि। तेँ ने गामक सभ अपन बेटाकेँ उपनयनो आ बिआहोमे ओही पोखरिमे नहबैए। ततबे नहि छठिमे हाथो उठबैए। हमरा इलाकाक पृथ्वीओक बनाबटि अजीब अछि। बुझू तँ माटिक पहाड़। पाँच फुटसँ निच्चाँ धरि ने बाउल अछि आ ने पानि। शुद्ध माटि। जाहिसँ ने एक्कोटा चापाकल आ ने बोरिंग गाममे। पानिक दुआरे गामक-गाम लोककेँ पराइन लगि गेल। माल-जाल उपटि गेल। चाहे तँ लोक बेचि लेलक वा खढ़ पानिक दुआरे मरि गेल। अधासँ बेसी गाछो-बिरीछ सुखि गेल। चिड़ै-चुनमुनी इलाका छोड़ि देलक। जे मूस अगहनमे अंग्रेजी बाजा बजा सत-सतटा विआह करैत छल ओ या तँ बिलेमे मरि गेल वा कतऽ पड़ा गेल तेकर ठेकान नहि। हमरो गामक अधासँ बेसिये लोक पड़ा गेल। मुदा तैयो जिबठगर लोक गाम छोड़ैले तैयार नहि। पुरुख सभ गाम छोड़ि परदेश खटैले चलि गेल। मुदा बालो-बच्चा आ जनि-जातियो गाममे रहल। पोखरि-इनारकेँ सुखैत देखि, पानि पीबैक लेल बड़कियेे पोखरिक कतबाहिमे कुप खुनि-खुनि लेलक। अपन-अपन कुप सभकेँ। पानिक कमी नहि। तीन सालक जे रौदी परोपट्टाक लेल वाम भऽ गेल वएह डोमनक लेल दहिन भऽ गेल। काज तँ आने साल जेकाँ मुदा आमदनी दोबर-तेबर भऽ गेलै। गामक जमीनोक दर घटल। जाहिसँ डोमन खेत कीनए लगल। ओना सुगियाक इच्छा खेत कीनैक नहि। किएक तँ मनमे होए जे एहिना रौदी रहत आ खेत सभ पड़ता रहत। तँ अनेरे खेत लऽ कऽ की करब। मुदा मालो-जाल तँ घास-पानिक दुआरे नहिये लेब नीक हएत। डोमनक मनमे आशा रहए जे जहिना लुल्हियो कनियाँ बेटा जनमा कऽ गिरथाइन बनि जाइत, तहिना तँ पानि भेने परतियो खेत हएत की ने।

योगी-तपस्वीक भूमि मिथिला अदौसँ रहल। जे अपन देह जीव-जन्तुक कल्याणक लेल गला लेलनि। ओ कि एहि बातकेँ नहि जनैत छलथिन। जनैत छलथिन। तेँ ने गाममे अट्ठारह गण्डा माने ७२ टा पोखरि, सत्ताइस गण्डा माने १०८ टा इनारक संग-संग चौरीमे सैकड़ो कोचाढ़ि-बिरइ खुनि पानिक बखारी बनौने छलाह। सोलहो आना बरखे भरोसे नहि, अपनो जोगार केने छलाह।

तीन साल तँ दुनू परानी डोमन चैनसँ बितौलक। मुदा चारिम साल अबैत-अबैत बेचैन हुअए लगल। गामक सभ पोखरि-इनार तँ पहिनहि सुखि गेल छल। लऽ दऽ कऽ बड़की पोखरि टा बँचल। तहूमे सुखैत-सुखैत मात्र कट्ठा पाँचेमे पानि बचल। सुखल दिशि पुरैनियो उपटि गेल। बीचमे जे पानि, ओहीमे पुरैनिक गाछ रहए, मुदा जाँघ भरिसँ उपरे गादि। पैसब महा-मोसकिल। पाएर दइते सरसरा कऽ जाँघ भरि गड़ि जाइत। के जान गमबए पैसत। निराशाक जंगलमे डोमन बौआ गेल। मनमे हुअए लगलै जे जहिना गामक लोक चलि गेल तहिना हमहूँ चलि जाएब। जानि कऽ

परानो गमाएब नीक नहि। जिनगी बचत, समए-साल बदलतै तँ फेर घुरि कऽ आएब नहि तँ कतौ मरि जाएब। जहिना गामक सभ कुछ बिलटि गेल, समाजक लोक बिलटि गेल, तहिना हमहूँ बिलटि जाएब।

पतिकेँ चिन्तित देखि सुगिया पुछलक- ''किछु होइए? एना किअए मन खसल अछि?''

पत्निक प्रश्न सुनि डोमन आँखि उठा कऽ देखि पुनः आँखि निच्चाँ कऽ लेलक। आँखि निच्चाँ करितहि सुगिया दोहरा कऽ पुछलक- ''मन-तन खराब अछि?''

नजरि उठा डोमन उत्तर देलक- ''तन तँ नहि खराब अछि मुदा तनेक दुख देखि मन सोगाएल अछि। जइ आशापर अखन धरि खेपलहुँ ओ तँ चलिये गेल। जे अगिलोक कोनो आशा नहि देखै छी। की करब आब?''

सुगिया- ''अपना केने किछु ने होइ छै। जे भगवान जनम देलनि, मुँह चीड़ने छथि अहारो तँ वएह ने देताह। तइ लेल एत्ते चिन्ता किअए करै छी?''

डोमन- ''गामक सभ कुछ बिलटि गेल। एहेन सुन्दर गाम छल, सेहो उपटि रहल अछि। सिर्फ माटि टा बँचल अछि। की माटि खुनि-खुनि खाएब? बिना अन्न-पानिक काए दिन ठाढ़ रहब?''

''चिन्ता छोड़ू। जहिया जे हेबाक हेतै से हेतै। अखन तँ पानियो अछिये आ अन्नो अछिये। जाधरि एहि धरतीपर दाना-पानी लिखल हएत ताधरि भेटबे करत। जहिया उठि जाएत तहिया ककरो रोकने रोकेबै। तइ लेल एत्ते चिन्ता किअए करै छी।''

कहि सुगिया भानसक ओरियान करए लागलि। पत्नीक बात सुनि डोमन मने-मन सोचए लगल जे हमरा तँ मरैयोक डर होइए मुदा ओकरा कहाँ होइ छै। ओ तँ मरइयो लेल तैयारे अछि। फेर मनमे उठलै जे जीवन-मृत्युक बीच सदासँ संघर्ष होइत आएल अछि आ होइत रहत। तहिसँ पाछू हटब कायरता छी। जे मनुष्य कायर अछि ओ कोन जिनगीक आशामे अनेरे दुनियाँकेँ अजबारने अछि। पुनः अपना दिश तकलक। अपना दिश तकितहि मनमे एलै जे जीबैक बाट हरा गेल अछि। तँ एते चिन्ता दबने अछि। तमाकुल चुना कऽ मुँहमे लेलक। तमाकुल मुँहमे लइते अपन माए-बापसँ लऽ कऽ पछिला पुरखा दिशि घोड़ा जेकाँ नजरि दौड़लै। मुदा कतौ रुकलै नहि। जाइत-जाइत मनुष्यक जड़ि धरि पहुँचि गेल। पुनः घुमि कऽ आबि नजरि माए लग अटकि गेलै। मन पड़लै माएक संग बितौलहा जिनगी। मन पड़लै माइयक ओ बात जे दस बर्खक अवस्थामे रौदी बितौने छल। रौदी मन पड़ितहि बड़की पोखरिक बिसाँढ़ आ अन्है माँछ आँखिक सोझमे आबि गेलै। कने काल गुम्म भऽ मन पाड़ए लगल।

मन पड़लै, अही पुरैनिक जड़िमे तँ बिसाँढ़ो फड़ैत अछि। अल्हुए जेकाँ। जहिना माटिक तरमे अल्हुआक सिरो आ अल्हुओ रहै छै तहिना पुरैनिक जड़िमे सिरो आ बिसाँढ़ो रहैत अछि। अनायास मुँहसँ निकललै- ''बाप रे, बाबन बीघाक पोखरिमे तँ कते ने कते बिसाँढ़ हेतै। ओकरे खुनैमे माछो भेटत। खाधि बना-बना सिंही-मांगुर

रहैए। एक पंथ दू काज। मनमे खुशी अबिते पत्नीकेँ सोर पाड़ि कहलक- ''भगवान बड़ी टा छथिन। जहिना अरबो-खरबो जीव-जंतुकेँ जन्म देने छथिन तहिना ओकर अहारोक जोगार केने छथिन।''

पतिक बात सुनि सुगिया अकबका गेल। बुझबे ने केलक। मुँह बाबि पति दिशि देखैत रहलीह। पुनः डोमन कहलक- ''चुल्हि मिझा दिऔ। घुरि कऽ आएब तखन भानस करब।''

पतिक उत्साह देखि सुगिया मने-मन सोचए लगली जे मन ने तँ सनकि गेलनिहेँ। अखने मुरदा जेकाँ पनिमरु छलाह। आ लगले की भऽ गेलनि। दोसर बात परखैक खियालसँ चुप-चाप ठाढ़ रहली।

डोमन फेर बाजल- ''की कहलौं ? पहिने आँच मिझा दिऔ। फटक लगा छिट्टा लऽ कऽ संगे चलू।''

सुगिया पुछलक- 'कत्तऽ।'

''बड़की पोखरि।''

'किअए?'

''एहन-एहन सइओ रौदी कटैक खेनाइ पोखरिमे दाबल अछि। आनैले चलू।''

सवाल-जबाव नहि कऽ सुगिया आगि पझा, फटक लगा छिट्टा लऽ तैयार भेलि। घरसँ कोदारि निकालि डोमन बिदा भेल। आगू-आगू डोमन आ पाछु-पाछु सुगिया। बड़की पोखरिक महारपर पहुँचि डोमन हाथक इशारासँ पत्नीकेँ देखबैत बाजल- ''जते पोखरिक पेट सुखल अछि ओहिमे तते खाइक वस्तु गड़ाएल अछि जे ने खाइक कमी रहत आ ने पीबैक पानिक। जेना-जेना पानि सुखैत जेतै तेना-तेना कुपकेँ गहींर करैत जाएब। जते पुरैनिक गाछ सुखाएल अछि ओहिमे घुरछा जेकाँ बिसाँढ़ फड़ल हएत।''

पोखरि धँसि डोमन तीन डेग उत्तरे-दछिने आ तीन डेग पूबे पछिमे नापि कोदारिसँ चेन्ह देलक। एक धुर। उत्तरबरिया पूबरिया कोनपर कोदारि मारलक। माटि तते सक्कत जे कोदारि धँसबे ने कएल। दोहरा कऽ फेर जोरसँ कोदारि मारलक। कोदारि फेर नै धँसल। आगू दिशि देखि हियाबए लगल जे किछु दूर आगूक माटि नरम हएत। खुनैमे असान हएत। मनक खुशी उफनि कऽ आगू खसल- ''अए ढ़ोरबा माए, हम पुरुख नञि छी। देखियौ हमरा माटि गुदानबे ने करैए। अहाँ हमरासँ पनिगर छी, दू छअ मारि कऽ देखियौ।''

सुगिया- ''हमर चूड़ी-साड़ी पहीर लिअ आ हमरा धोती दिअ। तखन कोदारि पाड़िकेँ देखा दै छी।''

मुस्की दैत दुनू आगू मुँहे ससरल। एक लग्गा आगू बढ़लापर माटि नरम बुझि पड़लै। कोदारि मारि कऽ देखलक तँ माटि सहगर लगलै। एक धुर नापि डोमन खुनए लगल। पहिले छअमे एकटा बिसाँढ़क लोली जगलै। लोल देखितहि उछलि कऽ बाजल- ''हे देखियौ। यएह छी बिसाँढ़।''

सुगिया- ''लोल देखने नञि बुझब। सौँसे खुनि कऽ देखा दिअ।''

पत्नीक बात सुनि डोमनकेँ हुअए लगल जे हो न हो कहीं अधेपर सँ ने कटि जाए। से नहि तँ लोल पकड़ि डोला कऽ उखाड़ि लै छी। मुदा नै उखड़ल। कने हटि दमसा कऽ दोसर छअ मारलक। छअ मारितहि एक बीतक देखलाहा आ चारि-चारि ऑंगरीक दूटा आरो देखलक। तीनूकेँ खुनि दुनू परानी निङहारि-निङहारि देखए लगल।

उज्जर-उज्जर। नाम-नाम। लठिआहा बाँस जेकाँ गोल-गोल, मोट। हाथी दाँत जेकाँ चिक्कन, बीत भरिसँ हाथ भरिक। पाव भरिसँ आध सेर धरिक।

सुगिया दिशि नजरि उठा कऽ डोमन देखलक तँ पचास वर्षक आगूक जिनगी बुझि पड़लै। पति दिशि नजरि उठा कऽ सुगिया देखलक तँ चूड़ीक मधुर स्वर आ चमकैत मांगक सिनदुर देखलक।''

छिट्टा भरि विसाँढ़ आ सेर चारिएक सिंही माछ नेने दुनू परानी विदा भेल।

पीरारक फड़

गोल-गोल हरियर-हरियर भुआ जेकाँ सोहरी लगल डारिमे जेहने हरियर पात तेहने फड़, वएह थिक पीरारक फड़। पाँचेटा पुरान गाछ गाममे, बड़का-बड़का आम, जामुन सीसो गाछक जन्म ओ पाँचो पीरारक गाछ देखने। सए बरखक करिया बाबा कहैत जे जहियासँ मोन अछि ओ पाँचो गाछ ओहिना बुझि पड़ैत अछि। एते ठनका खसल, बिहाड़ि आएल मुदा ओइ पाँचो गाछक रुइयाँ भग्न नहि भेलै। दस गजसँ नमहर नहि, ने मेघडम्मर जेकाँ बहुत पसरल आ ने छिड़िआएल। छोट-छीन बरखाकेँ रोकि पानिक बुन्नकेँ माटिक मुँह नहि देखै दैत घनगर पात सजा कऽ सजल। सहतक कोथी जेकाँ चोखगर काँट, डारि रुपी पहरुदारकेँ सजौने। छड़गर-छड़गर डारिमे चौरगर-चौरगर पात जेना इन्द्रकमल वा तगड़ फूलक होइत। तहिना फूलो।

पाँचो पीरारक गाछ सइयो बिहाड़ि, हजारो बरखा, नमहरसँ छोट धरि सइयो बेर पाथरक चोट खेलक, बाढ़ि रौदीकेँ हँसैत-हँसैत सहलक। जहिना गामक उत्तरबरिया बाधमे एक्के आड़िपर पतिआनी लगा पाँचो गाछ ठाढ़। देखबोमे पाँचो एक्के रंग। ने नमहर ने छोट डारि, जे एक-दोसरसँ हक-हिस्सा लेल झगड़ैत। पाँचोमे अटूट प्रेम। जखन पाँचो फूलसँ सजैत तखन बुझि पड़ैत जे एक-दोसरक जुआनीक रंग देखि हृदयसँ खिलखिला-खिलखिला हँसैत होअए। एतेक नमहर जिनगीमे ने कियो जड़िकेँ तामि-कोड़ि पानि देलक आ ने ठारिकेँ छकड़ि-छुकड़ि गाछकेँ सुन्दर बनौलक। सोलहो आना देखभाल भगवानेक उपर। तेँ पाँचो गाछ स्वाभिमानसँ भरल जे ककरो एहसान रुपी कर्ज जिनगीमे नहि लेलौं। सदिखन पाँचो हँसैत-इठलाइत मन्द हवामे झुमैत।

पहिने पाँचो गाछक फूल फुला कऽ फड़ बनि झड़ि जाइत। बादमे फड़ पूर्ण जिनगीक सुख भोगि अंतिम अवस्थामे पकलापर पवन रुपी न्योतहारीकेँ पठा चिड़ै-चुनमुनीकेँ बजा अपन शरीर दान करैत, यएह पाँचो गाछक जिनगी भरिक धर्म रहल।

ओहि गाछसँ हटिये कऽ लोक सभ खेतक जोत-कोर कऽ उपजबैत। जे ओहि गाछपर सुगवा साँप रहैत छैक। सुगवा साँप लोककेँ देखैमे अबिते ने छैक ओ हरियर-लत्ती जेकाँ रहैत छैक। जकरा कटलासँ स्वर्ग-नरकक द्वार अनेरे खुजि जाइत छैक। बीचमे कतौ कोनो रुकावट नहि होइत छैक।

उत्तरवारि बाधक रखबारि रतना करैत छल। दू साल पहिने दुनू परानी मरि गेल। दू सालसँ क्यो बाधक रखबारि करैले तैयारे ने होइत। डर होइत जे पीरारक गाछपर सुगवा साँप रहैत छैक तेँ के अपन जान गमौत, दू-चारि सेर अन्न सालमे हेतै की नहि।

साल भरि पहिने पिचकुन नोकरी करैले मोरंग गेल। रौदियाह समए भेने किसानोक दशा नीक नहि। जन-बोनिहारक चर्चे की। साँझक-साँझ चुल्हि नहि पजरैत। गरीब-गुरबा गाए-बकरी बेचि-बेचि मोरंग, सिलीगुड़ी, आसाम नोकरी करए गेल। पिचकुनमा सेहो रखवारीवाली नवकी कनियासँ पनरह रुपैआ कर्जा लऽ गेल रहए। अखन धरि गाममे पिचकुनमाकेँ बकलेले-ढहलेले बुझैत छल। जते गोटेक मेड़िया नोकरी करए गेल छल ओहिमे सँ किछु गोटे विराटनगर, किछु गोटे रंगैली, किछु गोटे सिलीगुड़ी आ किछु गोटे आसाम गेल। पिचकुनमाकेँ बकलेल बुझि सभ छोड़ि अपन-अपन गर लगबै गेल। असकरे पिचकुनमा इटहरी चौकसँ थोड़े आगू जा एकटा गाछक निच्चाँमे बैसि चूड़ा आ घुघनी खाए लगल। खाइते छल आकि दू गोटेकेँ उत्तर मुँहे जाइत देखि चूड़ा-घुघनीकेँ गमछाक खोंचड़ि बना खाइते संगे बिदा भेल। खेबो करै आ गप्पो-सप्प करै।

जाइत-जाइत धनकुटासँ कोस भरि पाछुए पहुँचल। जहि दुनू गोड़ेक संग रहै ओ दुनू किसान। एक गोटे मंगत राम पिचकुनकेँ नोकरी रखि लेलक। मरद-मौगी मिला पचासोटा जन मंगतराम खटबैत। सखुआक तीन महला घर बनौने। किछु खेत पहाड़ोपर रहै। जइमे मडुआ, सामी-कौनी उपजैत। नेबो सनतोला सभक गाछ सेहो रहैक। पहाड़क उपरमे रौद देखि पिचकुन उजड़ा पहाड़ बुझै। छोट-छोट गाछसँ लऽ कऽ पैघ-पैघ गाछक जंगल। छोट-छोट पहाड़सँ लऽ कऽ नमहर-नमहर पहाड़ देखि पिचकुन मने-मन सोचए जे दोसर दुनियाँमे चलि एलौं। मुदा रास्ताक ठेकान रहने भरोस रहै जे तीन दिनमे अपन गाम चलि जाएब। बड़का-बड़का बखारी, नारक टाल देखि पिचकुन मने-मन खुशी होइत जे मालिक खूब धनिक अछि। कहियो नोकरीसँ हटाओत नहि। जब गाम जाइक मन हएत छुट्टी लऽ कऽ चलि जाएब आ फेरो चलि आएब। रस्तो तँ देखले अछि।

साल भरि नोकरी केलाक बाद पिचकुनकेँ गाम अबैक मन भेलै। जहियासँ पिचकुन नोकरी कऽ रहल एक्को पाइ घर नहि पठौलक। पठबिते कोना? ने डाकघरक ज्ञान रहै आ ने ककरो अबैत-जाइत देखै। एकटा थारुनसँ पिचकुनकेँ लाट-घाट भऽ गेलै। अठारह-उन्नैस बरखक ओ थारुन। मंगते रामक जन। ओकर नाम धनिया। पिचकुनक संग अबैले धनिया राजी भऽ गेलि। साल भरिक बाद पिचकुन गाम आओत तेँ माए लेल ऊनी स्वीटर, चद्दरि आ अपनो लेल फुलपेंट भरि बाँहिक स्वीटर चद्दरि सेहो कीनि लेलक। समाज सभ लेल सनतोला किनलक। कपड़ा, सनातोलाक मोटरी बान्हि, रुपैआकेँ फुलपेंटक जेबीमे लऽ मोटरीमे सेहो बन्हलक। बटखरचा लेल मुरही लऽ लेलक। धनिया अपन धएल-धड़ल रुपैआ कपड़ा सभ बान्हि रातियेमे तैयार भऽ गेलि। जंगल-झारक दुआरे रातिमे नहि निकलल। भुरुकवा उगिते दुनू गोटे अपन-अपन मोटरी लऽ चुपचाप बिदा भऽ गेल। जही रस्तासँ पिचकुन गेल रहए ओही रस्तासँ विदा भेल। इटहरी आबि दुनू गोटे बस पकड़लक। बससँ बथनाहा आबि पएरे बिदा भेल। कोसीमे नाओपर पार भऽ निरमली तक पएरे आएल। निरमलीमे गाड़ी पकड़ि गाम आएल।

फुलपेंट कमीज, पएरमे चप्पल पहिरने, बाबरी उनटौने कान्हपर मोटरी लेने आगू-आगू पिचकुन आ पाछू-पाछू धनिया आबि माएकेँ गोड़ लगलक। टोल-पड़ोसक लोक पिचकुनकेँ चिन्हबे ने करैत। पिचकुन माएकेँ गोड़ लागि ओलतीमे चप्पल रखि माएकेँ घर लऽ जा मोटरी खोलि रुपैआक गड्डी चुपचाप देखौलक। ऊसरमे दूबि जनमि गेल। रुपैआक गड्डी देखि माएक मोन उड़ि गेलै। हसोथि-पसोथि कऽ सभ कपड़ा समेटि, रुपैया तरमे घोंसिया मोटरी बान्हि धरैनपर रखलक। धनिया ओसारपर बैसलि। धनियाक संबंधमे माए पिचकुनकेँ पूछलक- "ई कनियाँ के छथुन?"

मुसकी दैत पिचकुन कहलक- "तोरे पुतोहु। ओतै बिआह कऽ लेलौं।"

एक्के-दुइये टोलक जनिजाति आबए लागलि। पिचकुनक माए सभकेँ एक-एकटा सनतोला देलक। एकटा दसटकही जेबीसँ निकालि पिचकुन माएकेँ दैत कहलक- "माए भूख लागल अछि। जो दोकानसँ बेसाहि सभ कुछ लऽ आन। पहिने भानस कर। ताबे हम नहा लै छी। तीन दिनक रस्ताक झमारल छी, ओंघीसँ देह भसिआइत अछि।"

पुतोहु देखि पिचकुनक माए मुनेसरी सौंसे टोल पुतोहु देखैले हकार देलक। जातिकेँ भोजो गछलक।

सातम दिन पिचकुन दुनू परानी साँझकेँ सोमनी दादी ऐठाम गेल, आंगनमे बिछान बिछा सोमनी दादी पोता-पोती सभकेँ खेलबैत रहथि। दादीकेँ पिचकुन गोड़ लागि इशारासँ धनियाकेँ सेहो गोड़ लगै लऽ कहलक। धनिओ दादीकेँ गोड़ लगलक। ओछाइनिक कोनपर बैसि पिचकुन आँखिक इशारासँ दादीकेँ जाँतै लेल कहलक। धनिया सोमनी दादीकेँ जाँतए लागलि। पिचकुन सोमनी दादीकेँ कहए लगल- "दादी, गाममे तँ सभ बकलेले-ढहलेल बुझैत छलाए। साल भरि पहिने मोरंग गेलौं। कमेबो केलौं आ ओतै बिआहो कऽ लेलौं। आब गाममे रहब। गाममे अहाँ सभसँ पैघ छी दुनू परानीकेँ असिरबाद दिअ।"

उत्तरवारि बाधमे, सभसँ बेसी खेत सोमनी दादीक। जहि बाधमे दू सालसँ रखवार नहि। पिचकुनकेँ दादी उत्तरवारि बाध रखवारि करैले कहलक। संगे पाँच कट्ठा खेत बटाइओ करैले कहलक। रोजी देखि पिचकुन गछि लेलक। पिचकुनकेँ खोपड़ी बन्हैले दादी दूटा बाँस, एक बोझ खढ़ आ एक मुट्ठी सावे गछलक।

दोसर दिन पिचकुन दुनू परानी उत्तरवारि बाध जा कऽ खोपड़ी बन्हैक जगह टेबलक। एकटा उचगर परती छल जहिपर बरसातोमे पानि नहि अटकै। धनियाक नजरि पीरारक गाछपर पड़लै, गाछ लग जा धनिया गाछमे फड़ तजबीज करए लागलि। फड़ देखि धनिया साड़ी कऽ फाँड़ बान्हि गाछपर चढ़ि गेलि। गाछमे लुबधल पीरारक फड़ देखि धनियाक मोन चपचपा गेलै। तीमन करैले दसटा तोड़िओ लेलक। जना ककरो माटिमे गड़ल रुपैआक तमघैल भेटलासँ खुशी होइत तहिना धनियाक मोन खुशी। पिचकुन कोदारिसँ परतीकेँ छिलए-बनबए लगल। मने-मन धनिया एक मनसँ उपरे फड़ एक-एकटा गाममे ठिकलक। खुशीसँ धनियाक मुहसँ गीत निकलए लगल। गीत गुनगुनाइत पिचकुनकेँ सोर पाड़ि धनिया कहलक- "तकदीर जागि गेल। देखै

छिऐ गाछमे कोंकची लागल फड़ छै। काल्हिसँ तोड़ि हाट लऽ जाएब। खूब महग बिकाएत।''

पिचकुनकेँ बुझले ने। धनियाक बातपर बिस्वासे ने करै। खिसिया कऽ पिचकुन पुछलक- ''अहाँ चिन्है छिऐ जे की छिऐ? जँ लोक खइतै तँ एहिना लुधकी लगल रहितै?''

पीरार देखि मने-मन धनिया अपन गरीबीकेँ खुशहाली दिशि बढ़ैत देखति। गरीबी मनमे अमीरीक ज्योति अबैत देखलक। धनियासँ रक्का-टोकी नहि कऽ पिचकुन बाजल- ''हमरा हाट-बजार करैक लूरि नै अछि। केना बेचब?''

धनिया नैहरोमे हाट-बाजार करैत छलि। खेतीक सभ काजक लूरि सेहो रहै। हाँस-बत्तक पोसबो करै आ हाट जा बेचबो करै। निर्भीक भऽ धनिया कहलक- ''एकटा कड़चीक लग्गी बना कऽ सभ दिन तोड़बो करब आ बेचबो करब। अहाँ संगमे रहब।''

आसिन आबि गेल। बरखा ठमकल। सबारी समए। अधिक बरखा भेने खेत सभमे धान उपरा-उपरी। जत्ते धरि नजरि जाइत तते धरि एकरंग हरिअर धान बुझि पड़ैत। बेर टगिते धानक पातपर ओसक बुन्न चमकए लगैत। जहिना कोनो बाला हरियर साड़ी हरियर आंगी पहिर माथमे मंगटीका पहिर देखबामे लगैत तहिना खेत रुपी बाला देखैमे लगैत। पुरबाक मन्द-मन्द हवा चलए लगल। जेतै बैसू तेत्तै आलस आबि जाइत। बाधमे तीन ठाम पानिक बहावक कटारि। जाहिसँ उपरका खेतक पानि निचला खेत दिशि बहैत। पिचकुन तीनू कटारिकेँ दुनू भागसँ बान्हि अपिआरी बनौलक। अपिआरीक पानि उपछिते अनेरुआ माछ कूदि-कूदि आबए लगल। धनिया अपिआरियो ओगरै आ माछो बिछै। पिचकुन छिट्टामे लऽ हाटो जा बेचै आ गामोमे घूमि-घूमि बेचए लगल। दोसर-दोसर माछ बेचनिहार पिचकुनकेँ एकटा साइकिल कीन लै लेल कहलक। माथपर माछक छिट्टा लऽ घुमने देहो महकै। साइकिलक नाम सुनि पिचकुनक सुतल मन फुरफुरा कऽ उठल। मुदा साइकिल चढ़ब नहि आबि पिचकुन थतमतमे पड़ि गेल। मने-मन पिचकुन सोचलक जे जखन साइकिल भऽ जाएत तखन चढ़ब सिखबो करब आ जाबे सीखल नै हएत ताबे पैछला सीटपर छिट्टा राखि गुरकाइये कऽ घूमि-घूमि बेचब। हाटसँ घुमैत काल पिचकुन धनियाकेँ कहलक- ''अधपुराने एकटा साइकिल कीनि लेब।''

आमदनीक खुशी धनियाकेँ रहबे करै। मुस्कुरा कऽ कहलक- ''जखन साइकिले कीनब तँ अधपुरान किऐक कीनब? नबके कीनि लिअ।''

जितिआ पावनि। मडुआ रोटी माछक पावनि। एक दिन पहिने पिचकुनकेँ माछक बेना लोक सभ दऽ गेल। सुतली रातिमे पिचकुन चहा-चहा कऽ उठै आ घरवाली धनियाकेँ कहै- ''अपिआरीक सभ माछ बीछि लेलक।'' कहि सपना बुझि फेरि सुति रहै। अन्हरोखे दुनू परानी पिचकुन टौहकी छिट्टा लऽ अपिआरी लग गेल। अन्हार रहने माछ देखबे ने करै। एकटा अपियारी लग पिचकुन बैसल। दोसर लग धनमा। बीड़ी लगा-लगा पिचकुन पीबैत। फरिच्छ होइते एकटा मे पिचकुन आ दोसरमे धनिया

माछ बिछए लागलि। माछ हएत की नहि तइ दुआरे लोक-सभ अपिआरिये लग पहुचए लगल। तराजू-बटिखारा नहि रहने पिचकुन अन्दाजेसँ बेचए लागल। छिट्टासँ उपरे माछ बिक गेलै। बचलाहा माछ दुनू परानी आंगन नेने आएल। अधासँ बेसिये अंगनोमे बिकल। पावनिक दिन रहने हाटक भरोसे रहब पिचकुन नीक नहि बुझि धनियाकेँ कहलक- "झब दे जलखै बनाउ। अखने माछ बेचए जाएब।"

हाँइ-हाँइ कऽ धनिया रोटी पका माछक सन्ना बनौलक। साइकिलपर छिट्टा लादि पिचकुन अंगने-अंगने माछ बेचए लगल। बारह बजैत-बजैत सभटा माछ बिक गेलै।

रउदो तीखर। पिचकुन माछ बेचि पसीखाना पहुँच गेल। पसीखाना ताड़ी पिआकसँ भरल। दुनू परानी पासी गैहिकी सम्हारैमे तंग-तंग रहै। बैसैक जगह नहि देखि पिचकुन पासी लग जा एक बम्मा ताड़ी लऽ ठाढ़े-ठाढ़ पीबि कैंचा दऽ साइकिलपर चढ़ि बिदा भेल। धनियाकेँ भाँज लगि गेलै जे पिचकुन ताड़ी पीबैत अछि। दूरेसँ पिचकुनकेँ साइकिलपर अबैत देखि धनिया ओसारपर ओछाइन ओछा सुजनी ओढ़ि कुहरै लागलि। आंगन अबिते पिचकुन धनियाकेँ कुहरैत देखलक। धनियाक लगमे जा पिचकुन पुछलक- "की-इ-इ होइ-इ-इ अए-ए-ए?"

पिचकुनक बोली सुनि धनिया आरो जोर-जोरसँ कुहरए लागलि। धनियाक मुँह उघारि पिचकुन फेर पुछलक। नकिआइत धनिया बाजलि- "मरि जाएब। बड़का दुख पकड़ि लेलक। छाती दुखाइत अछि। जाउ दोकानसँ कडू तेल नेने आउ। सगरे देह मालिस करू, तखने छूटत।"

लटपटाइते पिचकुन शीशी लऽ दोकानसँ तेल आनि धनियाकेँ मालिस करै लगल। कर घूरि-घूरि धनिया पिचकुनसँ भरि पोख मालिस करौलक। जखन पिचकुनकेँ हाथ दुखा गेलै तखन धनिया बाजलि- "कन्नी कऽ मन हल्लुक लगै अए।"

मन हल्लुक सुनि पिचकुनक मनमे आशा जगै। पुनः मालिस करै लगै। धीरे-धीरे पिचकुनोक निशाँ उतड़ै आ धनियोक तामस कमै। पिचकुन खुशी जे घरवाली बँचि गेलै आ धनिया ख़ुशी जे ताड़ी पीबैक नीक सजा देलिअनि।

आसिन कातिकक आमदनीसँ पिचकुनक जिनगीक नींव पड़ल, पीरारसँ लऽ कऽ माछ तकमे नीक कमेलक। जहि पिचकुनक जिनगी गरीबीसँ जर्जर छल जे जानवरोसँ बत्तर जिनगी जीबैत छल। जहिना मनुख जानवरक विकसित रुप छी तहिना पिचकुनो जानवरक जिनगी टपि मनुखक जिनगीमे प्रवेश केलक। जहिना हमर पूर्वज खोपड़ी बना रहैत छलाह आ धीरे-धीरे आइ नीक मकानमे रहैत छथि तहिना पिचकुन माटिक भीतक देवालक घर बनबैक विचार केलक। ओना पानियोक अपना कोनो उपाए नहि अछि जेकरा लेल आगू साल जोगार करैक विचार दुनू परानी मिलि केलक। सिर्फ घरे आ पानियेक दिक़्क़त पिचकुनकेँ नहि। ने घरमे सुतैक लेल चौकी आ ने भानस करैले बरतन छलै जे सभ रसे-रसे जोगार करैक विचार केलक।

सौँसे बाधमे धान फुटि लबल। हरियर उज्जर लाल कारी शीशसँ बाध चमकए लगल। दुनू परानी पिचकुन घर-आंगन छोड़ि भरि-भरि दिन बाधेमे रहए लगल। जँ

बाधमे नहि रहैत तँ साँढ़-पाड़ाक उपद्रव, घसवहिनीक उपद्रवसँ गिरहस्तक मुँहे फज्झति सुनैत।

साँझू पहरकैँ धनिया सोमनी दादी लग जा खेतमे लुबधल धानक प्रशंसा करैत। सोमनी दादी हृदएसँ धनियाकेँ असिरवाद दैत। सामा पाबनि भऽ गेल। गोट-पङरा खेतक धान सेहो पाकए लगल। बैसारी देखि धनिया पिचकुनकेँ कहलक- ''पीरारक गाछक जड़िकेँ तामि-कोड़ि कऽ सरिआ दिऔ जे आगू नीक-नहाँति फड़त।''

धनियाक बात सुनि पिचकुन बढ़ियाँ जेकाँ पीरारक गाछक जड़िकेँ तामि बकरी भेरारी मिलल छाउर पाँचो गाछमे चारि-चारि पथिया दऽ दू-दू घैल पानि सेहो देलक। पनरहे दिनक बाद पाँचो गाछक रंग बदलि हरियर-कचोर भऽ गेलै। सभ मूड़ीमे नवका कलश सेहो भेलै। जहिना मनुख अपन बच्चाकेँ सेवा करैत, तहिना दुनू परानी पिचकुन पीरारक गाछकेँ करए लगल। अपन सेवा देखि पाँचो पीरारक गाछ हृदएसँ दुनू परानी पिचकुनकेँ असिरवाद देमए लगल।

अनेरुआ बेटा

तेसरि साँझ। अन्हरियाक चौठ रहने चान तँ नञि उगल छै मुदा पूब दिशि धाही छिटकए लगल छलै। सुनसान अन्हार देखि किछु क्षण पहिनहि एकटा कुमारि, समाजमे लोक-लाज बँचबैक खियालसँ दस दिनक जनमल बच्चाकेँ रस्ताक किनछरिमे राखि अढ़े-अढ़ आंगन चलि गेलि। बच्चाकेँ नओ दिन तँ झाँपि-तोपि कऽ बीमारीक बहाना बना रखलक। मुदा घटना खुलैक दुआरे दसम दिन जी-जाँति कऽ फेकलक नहि, रस्ताक कातमे ओरिया कऽ रखि देलक। पाँचे-सात मिनटक पछाति गंगाराम हाटसँ घर अबैत रहए। जनमौटी बच्चाक जे रुदन गंगाराम सुनलक, एकाएक ओकर पएर अस्थिर भऽ गेलै। बीच बाटपर ठाढ़ भऽ ओ अवाज अकानए लगल। ई अवाज तँ कोनो जानवर वा जन्तुक वा चिड़ैक तँ नहि थिक। मनुक्खक बच्चाकेँ बोली बुझि पड़ैत अछि। मुदा एहिठाम मनुक्खक बच्चाकेँ बोली भऽ कोना सकैत अछि? तहूमे ककरो देखबो ने करै छिऐ। बाँसक गारल खूँटा जेकाँ गंगाराम बीच बाटपर ठाढ़। कने काल ठाढ़ रहि ओ आस्ते-आस्ते बच्चा दिशि पएर बढ़बए लगल। झल-अन्हार रहने अधिक दूर देखबो ने करैत छल। खेतमे जेना कीड़ी-मकोड़ी। क्यो अपन माए-बापकेँ सोर पाड़ैत तँ क्यो अरामसँ गीत गबैत। तहिसँ साँसे बाध अनघोल होइत रहै। बच्चाक लग पहुँचि गंगाराम बैसि बच्चाकेँ निहारै लगल। एकटा मन कहलकै- ई तँ मनुक्खक बच्चा छी। मुदा दोसर मन कहलकै- एहिठाम बच्चा आएल कोना? तरकारीक झोरा दूबिपर रखि, दहिना हाथ बच्चाक देहपर दऽ हसोथै लगल। देह सिहरि गेलै। रोंइयाँ-रोंइयाँ ठाढ़ भऽ गेलै। मुदा मनमे खुशी उपकलै। मन थीर कऽ बच्चाकेँ दुनू हाथे उठा लेलक। उठा कऽ बच्चाकेँ पेटमे साटि, वामा हाथे बच्चाकेँ थाम्हि दहिना हाथे खढ़-पात पोछए लगल। बच्चा ओहिना पूर्ववते कनैत रहए। खढ़ पोछि गंगाराम कान्हपर सँ गमछा उतारि बच्चाकेँ लपेट लेलक। तरकारीक झोरा कान्हमे टाँगि छाती लगौने बच्चाकेँ अपना ओहिठाम अनलक।

आंगन आबि गंगाराम हँसैत घरवालीकेँ कहलक- ''आइ भगवान खुश भऽ एकटा बेटा देलनि।''

पतिक बात सुनि अकचकाइत भुलिया लगमे दौगल आबि पतिक कोरासँ बच्चा अपना कोरामे लैत पुछलक- ''कतए ई बच्चा भेटल ? आ-हा-हा, बच्चा तँ बड़ दीव अछि।''

''हाटसँ घुमैत काल बाटपर भेटल। एकर सेवा करु। जँ अप्पन बनि कऽ आएल हएत तँ जीवे करत नञि तँ जहिना रस्ते-रस्ते आएल तहिना चलि जाएत।''

पतिक बात सुनि भुलिया मने-मन सोचए लागलि जे अपना तँ ने गाए अछि आ ने बकरी, जेकर दूध पिया बच्चाकेँ पालितहुँ। अपने तँ दूध हेबे नञि करत किएक तँ बुढ़ाढ़ीमे सभ अंग सुखा गेल। निराश मनमे भुलियाक आशा जगलै। मनमे अएलै जे अपन ने छाती सुखि गेल मुदा पितिऔत दियादनी तँ चिलकौर अछि। मन पड़ितहि भुलिया भगवानकेँ धन्यवाद दैत बाजलि- "जहिना भगवान सुखाएल बोनमे फूल फुलौलनि तहिना ओकर अहारोक ओरियान तँ वएह करथिन।"

पचास बर्खक गंगाराम। अड़तालीस बर्खक भुलिया। मुदा जते थेहगर गंगाराम तहिसँ कम भुलिया। अड़तालीस बर्खक भुलिया साठि बर्खसँ उपर बुझि पड़ैत छलि। झुनकुट बूढ़ि जेकाँ। बूढ़िक सभ लक्षण भुलियामे आबि गेल छलै मुदा कोरामे बच्चा देखि भुलियाक शरीरमे जुआनीक खून दौड़ए लगलै। नव उत्साह, नव-जीवन। आनन्दसँ विह्वल नजरिसँ भुलिया पतिकेँ देखैत आ गंगाराम पत्नीकेँ। दुनूक मनमे खुशीक हिलोर उठैत रहै। पानिक गुब्बारा जेकाँ खुशी मुँहसँ निकलए चाहैत रहै। बच्चाकेँ चुप रहै दुआरे भुलिया अपन छातीमे बच्चाकेँ लगा लेलक। कनी काल बच्चा छातीमे लगि मुँह बन्न केलक मुदा दूध नहि भेटने फेर ओहिना कानए लगल।

गंगारामक घरक बगलेमे पितिऔत भाए रुपलालक घर। बच्चाकेँ छाती लगौने भुलिया रुपलालक आंगन पहुँचलि। रुपलालक स्त्री कबूतरी अपना बच्चाकेँ दूध पीयबैत रहए। तीन मासक बच्चा रहै कबूतरीक। भुलियाक कोरामे बच्चाकेँ कनैत देखि अपना बच्चाकेँ ओछाइनपर सुता भुलियाक कोरासँ बच्चाकेँ कोरामे लैत दूध पीयबए लागलि। भुखल बच्चा, हपसि-हपसि दूध पीबए लगल। बच्चाकेँ दूध पीबैत देखि भुलिया कबूतरी दियादनीकेँ कहलक- "भगवान तोरा सात गो बेटा आउरो देथुन।"

भुलियाक बातकेँ हँसीमे उड़बैत कबूतरी बाजलि- "चारियेटा मे तँ अकछि गेलौं आ सातटा आरो पोसब पार लागत। अपन असिरवाद घुमा लौथु। जेतबे अछि तेकरे निमेरा होए तेहीसँ बहुत हएत। फेर बात बदलैत बाजलि- दीदी, बुढ़ाढ़ियोमे जे हिनका बेटा भेलनि से केहेन पोरगर छनि। हिनके जेकाँ आँखि, मुँह, नाक लगै छनि। भैया जेकाँ किछु ने बुझि पड़ैए।"

भुलिया- "सभ दिन तू एक्के रंग रहि गेलैं। कहियो तोरा बजै-भुकैक लूरि नञि भेलौ। जेठ-छोटक विचार तँ बुझबे ने करै छीही। ककरो किछु कहि दै छीही। कोनो गत्तरमे लाज-सरम तँ छौहे नै।"

हँसैत कबूतरी दोहरबैत बाजलि- "एँह दीदी, हिनका अखन की भेलनिहेँ, एकटा के कहाए जे जोड़ो लगि जेतनि।"

कबूतरीक बातसँ भुलियाकेँ तामस नै उठै। बच्चाक आनन्द हृदएकेँ पानि जेकाँ कोमल बना देने छलै। भुलिया- 'तोरे भैयाकेँ हाटसँ अबै काल रस्तामे ई बच्चा भेटलै।"

कबूतरी- "भेटुआ बच्चाक मुँह हिनका मुहसँ किअए मिलै छै। ई हमरासँ छिपबै छथि।"

खौंझा कऽ भुलिया बाजलि- ''अच्छा हो, हमरे भेल। आब तँ मनमे सबुर भेलौ।''

बात बदलैत कबूतरी बाजलि- ''दीदी, जहिना एकटा बच्चाकेँ दूध पीयबै छी तहिना अहू बच्चाकेँ दूध पिया देबनि। कोनो कि हमरा घरमे मौसरी नै अछि जे बच्चाकेँ दुधकट्टू हुअए देबनि। लोकेक काज समाजमे लोककेँ होइ छै किने। हिनका अन्हार घरमे दीप जरलनि। तइसँ कि हमरा खुशी नञि होइए।''

कबूतरीक बात सुनि भुलियाक मन गद-गद भऽ गेलै। भुखाइल बच्चाकेँ पेट भरिते निन्न आबि गेलै। बच्चाकेँ बिछौनपर सुतबैत कबूतरी बाजलि- ''दीदी, बच्चाकेँ एतै रहए देथुन। राति-विराति जखैन भुख लगतै पिया देबै।''

'बड़बढ़िया'' कहि भुलिया अपना आंगन आबि पतिकेँ कहलक- ''आब बच्चा जीबे करत। बड़ दूध गोधनपुरवालीकेँ होइ छै। दुनू बच्चाकेँ पालि लेत।''

बच्चाक लेल गंगारामक मन कनैत। मुदा भुलियाक बात सुनि मन हरिया गेलै। मनमे एकटा शंका जरुर उठलै- ''बच्चाकेँ अपना अंगना किअए ने नेने अएलहुँ? आन तँ आने छी।''

पतिकेँ चोहटैत भुलिया कहलक- ''अहाँ पुरुख छी, तँ की बुझबै? माएक की मासचर्ज होइ छै से स्त्रीगणे बुझि सकैए। जे माए एक दिन बच्चाकेँ छातीसँ लगा लेत ओ जिनगीमे कहियो ओहि बच्चाक अधला नै सोचत।''

गंगाराम चुप भऽ गेल। मुदा एकटा बात मन पड़लै। बाजल- ''अपने दुनू गोरे ने ओकर बाप-माए हेबै, तँ कोनो नाम तँ रखि देबै कि ने।''

पतिक बात सुनि भुलियाक मनमे छठियारक दृश्य आबि गेलै। मुस्की दैत बाजलि- ''आन बच्चाकेँ तँ स्त्रीगण सभ मिलि कऽ नाआँ रखै छै। मुदा से तँ अइ बच्चाकेँ नै भेलै। अपने दुनू गोरे मिलि कऽ नाम रखि दियौ।''

भुलियाक विचार सुनि पति बिहुँसैत बाजल- ''मंगल नाम रखि दिऔ।''

सात मासक उपरान्त बच्चाक मुँहमे दाँतो जनमए लगल आ ठाढ़ भऽ कऽ डेगा-डेगी चलौ लगल। अन्न सेहो चाटए लगल आ पानि सेहो पीबए लगल। बच्चाक सिनेह एते अधिक दुनू परानीमे रहै जे कखनो आँखिक परोछ होअय, से नहि चाहए। भुलिया बोइन करब छोड़ि देलक। अंगना-घरक काज सम्हारि साबेक जौर ओसारेपर बैसि बाँटए लागलि। ओकरे बेचि-बेचि दू पाइ कमा लैत छलि। अपना तँ साबे नहि रहै मुदा अधियापर बँटैक लेल गामसे साबे भेटै। दुनू परानी गंगारामकेँ एते उत्साह बढ़ि गेलै जते दस बर्ख पहिने छलै। भरि-भरि दिन काज करैत मुदा थाकनि बुझिये ने पड़ै। भुलियाकेँ जैखन मंगल माए कहए तैखन आनन्दसँ ओ उन्मत भऽ जाए।

पाँच बर्खक अवस्थामे मंगलक नाम पिता स्कूलमे लिखा देलक। मंगल पढ़ए लगल। पाँचे किलास तक पढ़ाइ गामक स्कूलमे होइत रहै। पँचमा तक मंगल पढ़ि लेलक। दस बर्खक भइयो गेल। मुदा दुनू परानीमे गंगारामक देह एत्ते अब्बल भऽ गेलै जे काज करैले लोक अढ़ौनाइ छोड़ि देलकै। कहुना-कहुना दुनू परानी जौर बाँटि-बाँटि गुजर करए। जिनगी भारी लागए लगलै। मुदा दसे बर्खक मंगलमे ज्ञानक उदए कनी-मनी भऽ गेलै। जहिना बच्चेमे हनुमान बाल सुर्जकेँ गीरि गेल छलाह,

तहिना। मंगल बापकेँ कहलक- "बाबू अहाँ दुनू गोरे काज करै जोकर नै रहलौं। हमरा मन होइए जे चाहक दोकान खोली। अपने डेढ़ियापर एकटा एकचारी बान्हि दिअ, ओहिमे हम दोकान खोलब।"

गंगारामक मनमे जँचलै। मुदा चाह तँ गामक लोक पीबैत नहि अछि, तखन दोकान चलतै कोना? मुदा तइयो एकचारी बान्हि देलक। बाड़ीमे एकटा जीमरक गाछ रहै ओकरा पच्चीस रुपैयामे बेचि, चाह बनबैक बरतन-वासन मंगल कीनि लेलक।

चाहक दोकान मंगल शुरु केलक। नव वस्तुक दोकान गाममे। मुदा पहिल दोकानकेँ तँ मोनोपोली माने एकाधिकार होइ छै। शुरुमे तँ गामक लोक नव चीज पेय बुझि सेहन्ते पीनाइ शुरु केलक। मुदा धीरे-धीरे दोकान जमि गेलै। जइसँ एत्ते कमाइ हुअए लगलै जे कहुना-कहुना गुजर चलऽ लगलै। तीन साल बीतैत-बीतैत दुनू परानी गंगाराम मरि गेल। जाधरि गंगाराम जीबैत छल ताधरि गाममे मंगलक प्रति कोनो तरहक घिरना नञि छलै मुदा गंगारामक मरलाक बाद लोकमे धिरना जागए लगलै। मुदा तइयो दोकानक बिकरीमे कमी नञि अएलै, किएक तँ समाजक लोक चाह-पानि पीयब शुरु कऽ देने छल।

चाहक दोकान केलाक उपरान्तो मंगलक मनमे पढ़ैक जिज्ञासा जीबिते रहै। खाइ-पीबैसँ जे पाइ उगड़ै ओइसँ ओ किताब, कागज, कलम कीनि-कीनि पढ़बौ करए आ लिखबो करै। मरै काल गंगाराम मंगलकेँ जन्मक इतिहास सुना देने रहै। जाहिसँ मंगलमे समाजक कुरीति, कुव्यवस्था जे करमी लत्ती जेकाँ छाड़ने अछि, ओहि बिन्दुपर नजरि पहुँचि गेल छलै। तँ किताबक अध्ययनक संग-संग समाजोक बेबहारक अध्ययन करए लागल। चाहक दोकान चलबैत तँ दस गोटेक संग गप-सप्प करैक लूरि सेहो सीखि लेलक। ततबे नहि रुपचन गामक खिसक्कर। मुदा बड़ गरीब। साँझू पहरकेँ एक झोंक चाहक बिकरी खूब होइ, बादमे गहिकी पतरा जाइ। जखन गहिकी पतरा जाइ तखन रुपचन मंगलक दोकानपर अबै। दू गिलास चाह पिया मंगल रुपचनक दिमाग साफ कऽ दै। दू-चारिटा पछुऐलहा गहिकियो रहै, तहि बीच रुपचन पुरना खिस्सा उठाबै। एक घंटा, दू घंटा, तीनि-तीनि घंटा तक रुपचन खिस्सा कहै। खिस्सा सभ दिन बदलि-बदलि कऽ कहै। कहियो राजा-रानी, तँ कहियो रानी सरंगा तँ कहियो रजनी-सजनीक। कहियो गोनू झा तँ कहियो डाकक। कहियो अल्हा-रुदल तँ कहियो दीना-भद्री। कहियो लोरिक तँ कहियो सलहेसक।

एहि रुपे मंगलक बुद्धिक बखारीमे किताबक ज्ञान, समाजक ज्ञान आ खिस्साक ज्ञान जमा हुअए लगलै। रातिमे जे खिस्सा सुनै ओ दिनमे जखन समए भेटै, लिखि लिअए। लिखैत-लिखैत पाँतियो सोझ-साझ हुअए लगलै आ जिज्ञासो बढ़ए लगलै।

एक दिन बेरि टगैत, एक गोटे मंगलक ऐठाम चाह पीबए आएल। देह-दशासँ बिल्कुल साधारण। हाथमे एकटा चमड़ाक बैग। ओ आदमी 'भारत जागरण' पत्रिकाक सम्पादक। गामक दशा-दिशाक अध्ययन करैक लेल गाम दिशि आएल छल। मंगलसँ गप-सप्प करैत ओ सम्पादक हेरा गेलाह। उन्मत्त भऽ गेल। जेना मंगलक हृदए आ सम्पादकक हृदए एक ठाम भऽ कतौ सफरमे निकलल हुअए, तहिना।

भक्क टुटितहि दुनू गोरे हँसए लगल। सम्पादक कहलखिन- 'बौआ, अहाँ चाह बनाउ। एखन धरि हमहुँ आइ चाह नै पीने छलौं। आइ हम रहब। निचेनसँ गप-सप्प करब।'

मंगल चाह बनबए लगल। चाह बनल। दुनू गोटे पीलक।

खेला-पीलाक बाद, रातिमे दुनू गोटे एक्के बिछानपर बैसि गप-सप्प करए लगल। जे किछु खिस्सा-पिहानी मंगल लिखने छल ओ हुनका -सम्पादककेँ- आगूमे रखि देलक। उनटा-पुनटा सम्पादक जी देखए लगलथि। भाषा-शैली तँ नहि जँचलनि मुदा विषए-वस्तु हृदएकेँ पकड़ि लेलकनि। हँसैत बजलाह- "बड़ सुन्दर वस्तु सभ अछि। एकरे तकैले हम आएल छी।"

कहि बैग खोलि किछु पत्रिका आ किछु किताब दैत कहलखिन- "एहिमे लिखैक तौर-तरीका निर्धारित कएल अछि। एकरा ठीकसँ पढ़ि जे आधार निर्धारित अछि, ओहि अधारपर लिखब। हम सम्पादक छी। मासिक पत्रिका चलबैत छी। अहाँक एक-एक कथा सभ मासक पत्रिकामे छापब। एक कॉपी अहूँकेँ पठा देल करब।'

तीन-चारि घंटा धरि सम्पादक जी मंगलकेँ बुझबैत रहलखिन। भोरे सुति उठि चाह पीबि ओ चलि गेलाह।

मंगलक कथा पत्रिकामे मासे-मास छापए लगल। मंगलक अनेको पाठकमे एकटा लड़की सेहो। नाम सुनएना। दर्शन शास्त्रसँ एम.ए.मे पढ़ैत। पाँचम मासक पत्रिकामे सम्पादकजी मंगलक परिचएमे एकटा उपन्यासक चरचा सेहो कऽ देलखिन, नाम छलै 'मरल गाम'। सुनएनाक पिता वकील। सुनएनाक मन 'मरल गाम' नाम पढ़ि नाचए लागल। मनमे आबए लगलै जे हमर देश तँ गामक देश छी। जखन गामे मरल अछि तखन देशकेँ की कहबै? ई विचार सुनएनाक मनमे उड़ी-बीड़ी लगा देलक। जे सुनएना पिताक सोझाँमे भरि मुँह बजैत नहि ओ सुनएना आइ पितासँ डिस्कस करैले तैयार भऽ गेलि।

कोर्टसँ आबि वकील सैहेब चाह पीबि टहलैले गेलाह। टहलि-बूलि कऽ दोसर साँझमे आबि कौल्हुका केसक तैयारीक लेल फाइल निकाललनि। पत्नी चाह आनि कऽ देलखिन। चाह पीबि, पान खा वकील सहाएब फाइल खोलैत रहथि आकि सुनएना आबि कऽ आगूक कुरसीपर बैसि बाजलि- "बाबूजी, एकटा सवाल मनमे घुरिया रहल अछि। ओ कने बुझा दिअ?"

'की?'

'आइ पत्रिकामे पढ़ने छलहुँ जे सचमुच गाम मरल अछि? जँ गाम मरल अछि तँ देश गामक छी। देशकेँ की कहबै?'

सुनएनाक प्रश्नक गंभीरतापर नजरि नहि दऽ वकील सैहेब कहलखिन- 'ई साहित्यकार लोकनिक समझ छिअनि, तेँ एहिपर किछु नहि कहि सकै छिअह।'

साहित्यकारो तँ अही समाजक लोक होइ छथि। हुनको आने लोक जेकाँ जिनगी छनि। तखन ओ एहन विचार किअए लिखलनि?'

'साहित्यकारक बात साहित्यकारे बुझि सकैत छथि। हम तँ बकील छी कानूनक बात बुझै छिऐ। एखन तूँ जा, हम एकटा केसक तैयारी करब।'

सुनएना उठि कऽ चलि गेलि। अपना कोठरीमे बैसि कऽ विचार करए लागलि। जहि देशक गाममे ने पानि पीबैक ओरियान छै, ने खाइक लेल सभकेँ संतुलित भोजन भेटै छै, ने भरि देह कपड़ा भेटै छै, ने रहैक लेल घर छै, ओहि देशकेँ मरल नै कहबै तँ की कहबै। एखनो लोक सरल पानि पीबैत अछि, कहुनाकेँ किछु खा दिन कटैत अछि, गाछक निच्चाँमे आगि तापि समए बितबैत अछि, हजारो रंगक रोग-व्याधिसँ घेरल अछि, ओहि देशकेँ की कहबै? हजारो बर्खक मनुक्खक इतिहासमे एखनो धरि सरस्वतीक आगमन सभ मनुक्ख धरि नै भेल अछि, ओहि देशकेँ की कहबै? ढेरो प्रश्न सुनएनाक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल रहए। मन घोर-घोर हुअए लगलै। अचेत जेकाँ सुनएना कुरसीपर ओंगठि सोचए लागलि। सोचैत-विचारैत अंतमे एहि प्रश्नपर आबि अटकि गेलि जे किताबक भाँज लगा कऽ पढ़ी। मुदा किताब भेटत कत्तऽ। फेर मन एलै जे किताब लिखनिहारे लग पहुँचि किताबक भाँज लगाबी। पत्रिका निकालि लेखकक पता पुरजीपर लिखलक।

दोसर दिन सुनएना मंगलक भाँज लगबै बिदा भेलि। नओ बजेक समए। भिनसुरका गहिकीकेँ सम्हारि मंगल केतली, टोपिया, ससपेन, गिलास इत्यादि बरतन दोकानक आगुमे रखि, चुल्हिसँ छाउर निकालि चुल्हि निपैत। सुनएना चाहक दोकानपर एहि दुआरे पहुँचल जे एहिठामसँ सौंसे गामक लोकक भाँज लगि सकैए। दोकानपर पहुँचि मंगलकेँ पुछलक- "एहि गाममे मंगल नामक एक व्यक्ति छथि, हुनकर घर बता दिअ।"

अपन नाम सुनि मंगल चौंकि गेल। मुदा चुप्पे रहल। जेना मने-मन गाममे मंगलकेँ तकैत रहए। सुनयनो सएह बुझलक। कनी काल गुम्म रहि बाजल- "बहीन जी, अगर मंगल एहि गाममे हएत तँ जरुर भाँज लगा देब। मुदा एखन हमरा ऐठाम आएल छी, तँ बिनु खेने-पीने कोना जाएब? ई तँ मिथिला छिऐ। जहिना घरवारीक लेल स्वागत करब अनिवार्य अछि तहिना तँ अतिथियो लेल।'

मंगलक बात सुनि सुनएनाक मनमे जेना पियासलकेँ शीतल पानि भेटि जाइत, तहिना भेल। बाँसक फट्टाक बनौल बेंचपर सुनएना बैसि गेलि। हाथ धोए मंगल सस्पेन अखारि, चुल्हि पजारि चाह बनबए लगल। ब्रेंच परसँ उठि सुनएना चुल्हि लग जाए चाहलक आकि कुर्तीक निचला कोन फट्टीमे फँसि गेलै, जइसँ फटि गेलै। मुदा तेकर चिन्ता नहि कऽ सुनएना मंगल लग बैसि गेल। लगमे सुनएनाकेँ बैसैत देखि पुछलक- 'मंगलसँ कोन काज अछि?'

सुनएना- "मंगल साहित्यकार छथि। हुनकर लिखल एकटा उपन्यास 'मरल गाम' छनि। ओहि पोथीक भाँज हम बजारमे लगेलहुँ मुदा कतौ नहि भेटल। तँ लिखिनिहारेक भाँज लगबए एलहुँ।"

सुनएनाक बात सुनि मंगल नमहर साँस छोड़ि बाजल- "मंगलकेँ अहाँ कोना जनैत छी?"

सुनएना- “हुनकर लिखल कथा हम ‘भारत जागरण’ मे पढ़ैत छी ओहिमे ‘मरल गाम’ उपन्यासक चरचा देखलिऐक। जकरा पढ़ैक इच्छा मनमे भेल। तँ एलहुँहें।”

मंगल बुझि गेल। खुशीसँ मन ओलरि गेलै। मनमे अएलै जे पियासलकेँ पानि देब ओहने आवश्यक होइत अछि जेना भूखलकेँ अन्न। मुदा हमरा तँ एक्के कॉपी अछि जे लिखने छी। जँ ई कॉपी दऽ देबै तँ अपन साल भरिक मेहनत चलि जाएत। मुदा नहि देब तँ आरो महापाप हएत। फेर मनमे अएलै जे अपना ऐठाम पढ़ैले दऽ दियै आ कहि दियै जे जहिया हमर दिन-दुनियाँ घुरत तहिया छपाएब। छपेलाक उपरान्त अहाँकेँ देब। ताबे एहिठाम रहि पढ़ि लिअ।”

तहि बीच चाह बनल। दुनू गोटे पीलक। चाह पीबि सुनएना बाजलि- “मंगलक भाँज लगा दिअ।”

विस्मित भऽ मंगल बाजल- “हमरे नाम मंगल छी। हमहीं उपन्यास लिखने छी। मुदा छपाओल नहि अछि। सिर्फ लिखलेहे टा अछि। तँ हम आग्रह करब जे एहिठाम रहि पढ़ि लिअ। जहिया छपाएब तहिया अहाँकेँ एक कॉपी जरुर देब।”

मंगलक बात सुनि सुनएना अचंभित भऽ गेलि। पएरसँ माथ धरि मंगलकेँ निङहारए लागलि। आगिक धुँआ, चुल्हिक कारीखसँ मंगल बेदरंग भेल। देहक वस्त्र परसौतीक वस्त्र जेकाँ, साँसे देहसँ गरीबी झक-झक करैत। मंगलक बगए देखि सुनएनाक आँखि नोरा गेलै। नोर पोछैत सुनएना बाजलि- “एहिठाम रहि कऽ हम उपन्यास नहि पढ़ि सकब। किएक तँ कोनो पोथी पढ़ैक मतलब होइत अछि जे ओहि पोथीक विषए-वस्तुकेँ नीक जेकाँ बुझब। से धड़-फड़मे कोना संभव अछि?”

सुनएनाक विचारमे गंभीरता देखि मने-मन मंगल सोचए लगल। आत्माक उत्साह बढ़ए लगलै। सुनएना दिशि तकलक। सुनएनाक आँखिमे पढ़ैक भूख जोर पकड़ने देखलक। मनमे एलै जे हमहूँ तँ अनके लेल लिखने छी। तखन छपौलासँ हजारो हाथ जेतै मुदा एखन तँ एक्के हाथ जा रहल अछि। मनमे सबुर अएलै जे कमसँ कम एक्कोटा पढ़निहारक हाथ तँ जाएत। तहि बीच सुनएना बाजलि- “जहिना हम कॉपी एहिठामसँ लऽ जाएब तहिना पढ़लाक बाद घुमा देब। तँ पोथी हरेबाक कोनो संभावने नै अछि। एहिठाम रहि पढ़ैमे हमरो लाचारी अछि। लाचारी ई अछि जे भरि दिन तँ हम कतौ रहि सकै छी मुदा सूर्यास्तक बाद घर पहुँचब जरुरी अछि।”

मंगलक विचारमे कने स्नेह एलै। बाजल- “बड़बढ़ियाँ, हम अहाँकेँ पोथी दऽ दै छी। आगूक बात अहाँ जानी।”

हाथमे पोथी अबिते सुनएनाक मनमे खुशी अएलै। एक टकसँ पोथी देखि मंगल दिशि ताकि मुस्किया देलक। मने-मन मंगल सुनएनाकेँ पढैत आ सुनएना मंगलकेँ। सुनएना हँसैत बिदा भऽ गेलि।

सुनएना एम.ए. नीक जेकाँ पास केलक। नारी अधिकारक सर्मथक वकील साहेब। मुदा मन ओतए ओझरा जानि जेतए देखथि जे नारी सिर्फ एक्के-आध बिन्दुपर नहि, जीवनक सभ क्षेत्रमे जकड़ल अछि। जेकरा मेटाएब धिया-पुताक खेल नहि। कठिन संघर्षसँ हएत। कतौ वैचारिक संघर्ष करै पड़त तँ कतौ बलक। एहि विचारमे

वकील साहब कुरसीपर बैसि सोचैत रहथि। साँझक समए। पत्नी चाह बनौने ऐलखिन। टेबुलपर चाह राखि, बगलक खाली कुरसीपर बैसि कहलखिन- "अपना सबहक पढ़ल-लिखल समाजक परिवारमे सुनएना अछि तँ ने मुदा जँ एहेन बेटी किसानक घरमे रहतै तँ लोक ओकरा एना उन्मुक्त रहए दैतै !" चाहक चुसकी लैत वकील साहेब पुछलखिन- "अहाँ की कहए चाहैत छी, कने खोलि कऽ बाजू।"

"सुनएनाक बिआह कऽ लिअ। तखन तँ मनोज रहत की ने ओ तँ बेटा धन छी। बेटा-बेटीक बिआह करब माए-बापक अनिवार्य कर्तव्य छी। मुदा हमरा मनमे एकटा नव विचार अछि। ओ ई जे सुनएनाकेँ सेहो पूछि लिऐ।"

सुनएनासँ पूछैक बात सुनि पत्नी ढोढ़ साँप जेकाँ हनहनाइत बाजलि- "लोक की कहत? आइ धरि ककरा देखलिऐ जे माए-बाप बेटा-बेटीसँ पूछि कऽ बिआह करैत अछि।"

पत्नीक विचार सुनि वकील साहेब मने-मन सोचए लगलाह जे नारीकेँ मात्र पुरुखे नहि नारियो दाबि कऽ रखै चाहैत अछि। अजीब घेरा-बंदीमे नारी फँसल अछि। मुदा अपन विचारकेँ मनेमे राखि सुनएनाकेँ सोर पाड़लखिन। अपना कोठरीसँ निकलि सुनएना आएलि। कुरसीपर बैसलि। सुनएना माए दिशि देखए लागल। तामसे माए पति दिशि देखैत। वकील साहेब सुनएनाकेँ कहलखिन- "बाउ, आब तूँ एम.ए. पास कइये लेलह। माए-बापक दायित्व होइत छैक बेटा-बेटीक बिआह करब। तँ हमहूँ अपन भार उतारए चाहै छी। तोरो किछु बजैक छह।"

पिताक बात सुनि सुनएनाक देहमे कँप-कँपी आबि गेलै। मनमे थोड़े ओज। मुदा असथिरसँ बाजलि- "बाबूजी, विआह तँ सभ पुरुष-नारीक लेल अनिवार्य प्रक्रिया छिऐ। जाहिसँ सृष्टिक विकास प्रक्रियामे सहयोग होइ छै। रहल बात जे विआह केहेन होअए। एखन जे देखि रहल छी ओ नब्बे-पनचानबे प्रतिशत अनमेल बिआह होइत अछि। कतौ धनक मिलानीसँ तँ कतौ दहेजक चलैत, कतौ कुल-मूलक चलैत तँ कतौ किछु। मुदा हमरा विचारसँ बिआह हेबाक चाही मनक मिलानीसँ। जे टिकाउएटा नहि आनन्दमय सेहो हएत।"

सुनएनाक बात सुनि माए उत्तेजित होइत बाजलि- "बेटी, हमरा सबहक मिथिलाक परम्परा रहल अछि जे ई विआह काज माए-बापक विचारसँ होइ नै की बेटा-बेटीक विचारे। किन्तु जँ बेटा-बेटीक विचारसँ बिआह हएत तँ समाज ढनमना जाएत।"

सुनएना बाजलि- "बड़ सुन्नर बात कहलीही माए मुदा परम्पराक भीतर जे दुरगुण छैक ओहूपर नजरि देमए पड़तौ।"

मुँहपर हाथ देने वकील सहाएब चुप-चाप सुनैत रहथि। सुनएनाक तर्कक आगू माए कमजोर पड़ैत गेलीह। मुदा तैयो चुप होइले तैयारे नहि छलीह। सामंजस्य करैत वकील सैहेब सुनएनाकेँ कहलखिन- "बाउ, तूँ अप्पन विचार दएह?"

सुनएना बाजलि- "अहाँ खर्च कत्ते करए चाहै छी बाबूजी?"

खर्चक नाम सुनि वकील सहाएब चौंकि गेलाह। मुदा अपनाकेँ स्थिर राखि कहलखिन- "बाउ, अप्पन की ओकाइत अछि से तोहूँ जनिते छह। मुदा जे ओकाइत

अछि ओहिमे हम कंजूसी नै करबह। दू भाए-बहीन छह। ई सम्पत्ति तँ तोरे सबहक छिअह।''

सुनएना बाजलि- ''बाबूजी, मनुक्ख देहे आ धने पैघ नहि होइए, पैघ होइए ज्ञान आ कर्तव्ये। सभ स्त्री चाहैए जे हमर जीवन-संगी बुधियार आ कर्मठ हुअए। एखन हम अहाँकेँ अंतिम निर्णए नहि दऽ रहल छी मुदा एते जरुर कहब जे सोनपुरमे मंगल नामक एकटा चाहक दोकानदार अछि। ओकरा कियो ने छै। मुदा ओकर जे काज आ बुद्धि छैक ओ ओकरा एक दिन महान साहित्यकारक रुपमे दुनियाँक बीच अनतै। एखन ओकरा गरीबी जरजर बनौने छै। गरीबीक जालमे ओ एना ओझरा गेल अछि जाहिसँ निकलब कठिन छैक। किन्तु जँ ओकरा ओहि गरीबीक जालसँ निकालल जाए तँ ओ जरुर उगैत सूर्य जेकाँ अकासमे चमकए लगत।''

वकील सहाएब कहलखिन- ''बाउ, यदि तूँ हृदएसँ ओकरा चाहैत छह तँ हमरा दिशिसँ कोनो आपत्ति नहि। मुदा एखन समए रहैत विचारि लैह।''

सुनएना बाजलि- ''अनेक विषमता रहितो हमरा दुनू गोटेक बीच आत्माक समता अछि। हमहूँ नारीक संबंधमे किछु लिखए चाहै छी। किएक तँ अपना एहिठाम नारीक प्रति जे अदौसँ अखन धरि अन्याय होइत रहल अछि ओ हमरा हृदएकेँ दलमलित कऽ देने अछि। दुनियाँक सुन्दरसँ सुन्दर वस्तु हमरा फीका लगि रहल अछि।''

वकील सहाएब कहलखिन- ''बाउ, हम तोहर विचारकेँ मानि लेलियह। तूँ अपनेसँ जा कऽ देखि आबह जे कते मदतिसँ ओ मंगल उठि कऽ ठाढ़ हएत। हम ओते मदति कऽ देबै।''

पिताक विचार सुनि सुनएना हँसैत अपना कोठरी दिशि बिदा भेलि। सुनएनाक विचारपर वकील सहाएब मने-मन गौर करए लगलथि। मुदा पत्नीक मनक तामस आरो बढ़िते गेलनि।

दूटा पाइ

हलहोरिमे फेकुओ दिल्लीक रैलीमे जाइक विचार केलक। परसू सौझुका गाड़ी सभ पकड़त। दिल्लीक लड्डूक बात फेकुआकेँ बुझल। तँ खाइक मन रहै। अबसर भेटल छलै। किएक तँ ने गाड़ीमे टिकट लागत आ ने संगबेक कमी। मात्र चारि दिनक खेनाइ टा अपन खर्च। गाड़ीमे लोक बेसी खाइतो नहि अछि किएक तँ पेशाब-पैखानाक समस्या रहै छै। फेकुआ माएकेँ कहलक- ''माए, परसू दिल्ली जेबउ। बटखरचाक ओरियान कऽ दिहैँ?''

माए बाजलि- ''की सभ लेबही?''

फेकुआ कहलक- ''दू सेर चूड़ा लऽ कऽ डॉक्टर सहाएब नागेंद्र जी चलैले कहलखिनहेँ। हमरो दू सेर चूड़ा कूटि दिहैँ।''

फेकुआक बातक विश्वास माएकेँ नहि भेलै। मने-मन सोचलक जे दू सेर चूड़ा तँ एक दिनमे लोक खाइत अछि। चारि दिन कोना पुरतै? फेर मनमे एलै जे दू सेर चूड़ो आ चारि-दुना आठटा रोटियो पका कऽ दऽ देबै। कहुना भेलै तँ रोटी सिद्ध अन्न भेलै।

गाड़ी अबैसँ पहिनहि जुलूसक संग फेकुआ स्टेशन पहुँचल। जिनगीक पहिल दिन फेकुआ गाड़ीमे चढ़त। प्लेटफार्मपर भीड़ देखि फेकुआक मन घबड़ेबो करै आ उत्साहो जगै जे एत्ते लोक चढ़त से हेतै आ हमरा बुत्ते की नहि चढ़ि हएत। निरमली-सकरीक बीच छोटी लाइन। गाड़ियो छोटकिये। मुदा सकरीसँ दिल्लीक लेल गाड़ियो बड़की आ लाइनो बड़की। गाड़ीमे चढ़ि फेकुआ सकरी पहुँचल। दिल्लीक गाड़ी लगले रहै। हाँइ-हाँइ कऽ निरमलीक गाड़ीसँ उतरि दिल्लीवाली गाड़ीमे सभ चढ़ल। गाड़ी खुजल।

ओना सकरीसँ दिल्ली जाइक लेल चौबीस घंटा लगैत। मुदा आइ से नहि भेल। चालीस घंटामे पहुँचल। मुदा चालीस घंटा कोना बीतल से फेकुआ बुझबे ने केलक। हलहोरियेमे पहुँचि गेल। ने एक्को बेर खेलक आ ने पानि पीलक। मुदा तैयो भुख बुझिये ने पड़ए। गाड़ीसँ उतड़ै काल फेकुआ खिड़की देने प्लेटफार्म दिशि तकलक, जेरक-जेर सिपाही घुमैत। मुदा फेकुआक नजरि कतौ नहि अँटकि, मोटका सिपाहीपर अँटकल। ओकर मनही पेटपर नजरि गेलै। तइ परसँ छअ आंगुर चाकर ललका बेल्ट। जे बेर-बेर निच्चाँ ससरैत। चानि परसँ पसीनाक टघार। दस किलोक बन्दुक कान्हमे लटकल। मुदा तखने नागेन्द्र जी सेहो अपन छबो संगीक संग हाथसँ सभकेँ उतड़ैक इशारा दैत। धड़फड़ा कऽ फेकुओ उतड़ल।

प्लेटफार्म टपि जहाँ फेकुआ मुसाफिर खाना प्रवेश करए लगल आकि ममिऔत भायपर नजरि गेलै। ममिऔत भाय रतना चरिपहिया गाड़ीक ड्राइवर। अपना मालिककेँ

गाड़ी पकड़बैले आएल। भायपर नजरि पड़ितहि फेकुआ गोर लगलक। गोर लागि लालकिला मैदान दिसक रास्ता धेलक। पाछूसँ झटकि कऽ आगू बढ़ि रतना फेकुआसँ घरक कुशल पूछलक। कुशलक जबाब नहि दऽ फेकुआ कहलक- "काल्हि साँझ धरि लाल किला मैदानमे रहब तँ ओतै अबिहह। अखैन नै रुकबह।"

"कनी चाहो पीबि ने ले?"

"नै अखैन कुछो नै पीबह।"

फेकुआ बढ़ि गेल। मुदा रतनाकेँ पाछू घुमैक डेगे ने उठै। फेकुए दिशि तकैत। मने-मन विचारए लगल जे हो न हो काल्हि भेँट नहि हुअए। ओत्ते लोकमे के कत्तऽ रहत तेकर कोन ठीक। तहूमे सौझुका बात कहलक। दिल्ली छिऐ। कोन ठीक जे बिजलीक इजोत रहतै की नहि। एत्ते लोकमे तँ दिनोमे अन्हरायले रहत। एक्को दिन मेजमानियो ने करौलिऐ। गाममे दीदी सुनत तँ की कहत ? ओ की कोनो दिल्लीकेँ दिल्ली बुझैत हएत। ओ तँ गामे जेकाँ बुझैत हएत। जहिना गाममे सभकेँ सभ चिन्है छै तहिना। मुदा ई तँ दिल्ली छी। भाड़ाक एक कोठरीमे सोहर गाओल जाइत छैक आ दोसरमे कन्नारोहट होइ छै। विचित्र स्थितिमे रतना पड़ि गेल। आइ धरि रतनाक बुद्धिपर एहन भार कहियो नहि पड़ल। एकाएक मनमे एलै जे कौल्हुका छुट्टी लऽ कऽ भोरे फेकुआक भेँट करब। भेँट भेलापर लालकिला, जामा मस्जिद देखा देबै।

दोसर दिन भोरे रतना फेकुआक भेँट करै बिदा भेल। लाल किला मैदान पहुँचते भेँट भऽ गेलै। भेँट होइतहि दुनू भाइ गामेक बसिया रोटी खा पानि पीलक। भरि दिन संगे, रैली समाप्त कऽ दुनू गोटे डेरापर आएल। पैघ सेठक ड्राइवर रतना, तँ डेरो नीक। सभ सुविधा। मुदा रतनाक डेरासँ फेकुआक मनमे खूब खुशी नहि भेलै। मन पड़ि गेलै माइक ओ बात जे सदिखन बजैत- "अनकर पहीरि कऽ साज-बाज छीनि लेलक तँ बड़ लाज।" अपना जएह रहए ओहिसँ सबुर करी। मुदा माइयक बात फेकुआक मनमे बेसी काल नहि अँटकल। किएक तँ तीन दिनसँ नहाएल नहि छल। जहिसँ देहमे लज्जतिये ने बुझि पड़ै। रतनाकेँ कहलक- "भैया, पहिने हम नहेबह। बिना नहेने मन खनहन नै हएत। ओना ओँघियो लागल अछि। तँ नहा कऽ खेबह आ भरि मन सुतबह।"

फेकुआकेँ रतना बाथ रुम देखा देलक। बिजली जरैत। पानि चलैत बाथ रुम देखा रतना गैस चुल्हि पजारि भानस करए लगल। भरि मन फेकुआ नहाएल। मन शान्त भेलै। मनमे उठलै जखन दिल्ली आबि गेलहुँ तँ किछु लैये कऽ जाएब। रतना लग आबि बैसल। भानसमे देरी देखि रतना कहलकै- "बौआ देखही, ई दिल्ली छिऐ। ऐठाम लोक सोलह-सोलह घंटा खटैत अछि। दरमाहाक संग ओभरटाइमोक पाइ भेटै छै। मुदा जिनगी जीबैक लुरि नहि रहने सभ चलि जाइ छै। ने गामक कर्जसँ मुक्ति होइ छै आ ने अही ठाम चैनसँ रहैत अछि। भुतलग्गु जेकाँ सदिखन बुझि पड़ैत छै। तोरा एहि दुआरे कहि दै छिऔ जे तूँ अपन छोट भाए छियेँ।"

रतनाक बात सुनि कने-काल गुम रहि फेकुआ कहलक- "भैया, तूँ सभ तरहे पैघ छह। जखन तोरा लग छी तँ तोँही ने हमर नीक-बेजाए बुझबहक।"

फेकुआक बातसँ रतनाकेँ अपन जिम्माक भार बुझि पड़लै। बाजल- ''देखही बौआ, अखन जे कहलिऔ से स्टील फैक्ट्रीक स्टाफक बात कहलिऔ। मुदा सभ एहने अछि सेहो बात नहि छै। एहनो लोक अछि जे अपन मेहनत आ लुरिसँ गरीब रहितो अमीर बनि गेल। अपने इलाकाक ढ़ोरबा छी। जेकरा हम तँ ढ़ोरबे कहै छिऐ मुदा ओ ढोढ़ाइ बाबू बनि गेल। जखन गामसँ आएल तँ बौआ-ढहना कऽ चारि दिनक बाद ऐठीन आएल। ओकरा शैलूनमे नोकरी लगा देलिऐ। किछु दिन तँ काज करैमे लाज होए। किएक तँ ओ धानुक छी। मुदा किछुए दिनक पछाति तेहेन हाथ बैसि गेलै जे नौओ कऽ उन्नैस करए लगल। अपनो खूब मन लगए लगलै। दरमहो बढ़ि गेलै। तीन सालक बाद जेना ओकरा ऐठीनसँ मन उचटि गेलै। सोचलक जे जखन लुरि भऽ गेल अछि तखन कतौ कमा कऽ खा सकै छी। से नहि तँ गामेक चौकपर दोकान खोलब। अपना जँ दू पाइ कम्मो हएत तइसँ की, समाजक उपकार तँ हेतै। सएह केलक। ले बलैया, गामक लोक कियो ठाकुर तँ कियो नौआ तँ कियो हजमा कहए लगलै। घरक जनिजातिकेँ नौआइन कहए लगलै। सभसँ दुखद घटना तखन भेलै जखन कथा-कुटुमैती आ जातिक काजसँ अलग कएल गेलै। मुदा ओहो कर्म-योगी। गामकेँ प्रणाम कऽ अपन परिवारक संग दिल्ली शहर चलि आएल। वाह रे वनक फूल, ऐठाम आबि कऽ अपन शैलूनक कारोबार ठाढ़ कऽ लेलक। छह टा स्टाफ रखने अछि। बहिनीक बिआह इंजीनियरसँ केलक। हमहूँ बिआहमे रहिऐ।''

फेकुआ बाजल - ''हमरो कोनो लाज-सरम नै हएत। जे काजमे लगा देबह, हम पाछु नै हटबह।''

रतना- ''परसू रवि छिऐ। हमरो छुट्टी रहत। ताबे दू दिन अरामे कर।''

फेकुआ- ''हमरा ओते सुतल नीक नै लगतह। चलि जेबह बुलैले।''

रतना- ''रौ बुड़िबक! गाममे लोक खिस्सा कहै छै जे फल्लां तेहेन काबिल छै जे एक्के पाइमे बेचि लेतउ। मुदा अइठीन सभ काबिले छै। तैं देखबिही जे अइठीन सभसँ पैघ कारबार मनुक्खेक खरीद-बिक्रीक छैक। देहाती बुझि कोइ ठकि कऽ बेचि लेतउ। कहतौ जे हवा-जहाजक नोकरी धड़ा देबउ आ चलि जेमए आन देश।''

रतनाक बात सुनि फेकुआ क्षुब्ध भऽ गेल। मुदा मनमे एलै जे जेना हम बेदरा रही तहिना भैया कहैए। मुदा किछु बाजल नहि। दम साधि कऽ रहि गेल।

तीन दिनक उपरान्त फेकुआ कपड़ा सिलाइक दोकानमे काज शुरु केलक। दू हजार रुपैया दरमाहा। भिनसर छअ बजेसँ राति नअ बजे धरिक डयूटी। बीचमे एक बेरि अधा घंटा जलखै करैले आ एक घंटा खाइ बेर छुट्टी। फेकुआक मनमे उठल जे ड्यूटी तँ बीसो घंटा कऽ सकै छी मुदा सुतैक जे आठ घंटा छै से कना पुरत। मुदा फेर मनमे एलै जे जखन दू पाइ कमाए चाहै छी तखन तँ सभ सुख-भोग कमबए पड़त। दोकानमे आठटा कारीगर। आठो नोकरे। फेकुआ अनारी, तँ दोकानक झाड़-बहारसँ काज शुरु केलक। कपड़ा काटब आ सिलाइ मशीन चलौनाइ सेहो कने-कने सीखए लगल।

दुइये माए-बेटा फेकुआ। दस साल पहिनहि बाप मरि गेल। अपने दिल्ली धेलक आ माए गाममे। मुदा माइयो थेहगरि। पुरुखे जेकाँ बोनि-बुत्ता करैत। नोकरी होइतहि फेकुआकेँ माए मन पड़लै। माइये नहि गामो मन पड़ल। मन पड़ल गामक स्मृति। माइक ममता जगि मनकेँ खोरए लगलै। मनमे उठए लगलै- परदेशियाक परिवारमे गेटक-गेट कपड़ा.....राशि-राशिक चीज-बौस.. रेडियो, घड़ी, टी. वी, मोबाइल इत्यादि। ककरा नहि नीक वस्तुक सेहन्ता होइ छै। मुदा ओहन सिहन्ते की जेकरा पुरबैक ओकातिये ने रहै। दू हजार महीना रुपैआक गरमी फेकुआक मनमे तरे-तर चढ़ि गेल। कोना नहि चढ़ैत? मुदा आमदनियेक गरमी चढ़ल, खर्चक पानि परबे ने कएल। सोचलक जे सभसँ पहिने माएकेँ चिट्ठी लिखि जना दिऐ।

आठ दिनक बाद फेकुआ रतनाकेँ कहलक- "भैया, हमरा तँ लिखल-पढ़ल नै होइए। मुदा जखन नोकरी लागि गेल तँ माएकेँ जनतब देब जरुरी अछि। किएक तँ ओकरा होइत हेतै जे कत्तऽ बौआइ-ढ़हनाइए। रतनोक मनमे जँचल। वी. आइ. पी. बैगसँ पोस्ट-कार्ड निकालि रतना चिट्ठी लिखैले तैयार भेल। पुछलक- "बाज की सभ दीदीकेँ लिखबीही?"

फेकुआ लिखबए लगल-
स्थान- दिल्ली
ता.- ०५.०६.२००७

माए,
गोर लगै छिऔ

भगवानक दया आ तोरा सबहक असीरवादसँ तेहेन नोकरी भेटल जे कहियो मनमे नै आएल छल। दू हजार रुपैआ महीनाक तलब। अपना कते खर्च हएत। जे उगड़त से मासे-मास पठा देबउ। बेङबा कक्काकेँ कहिअनि जे चिमनीपर जा कऽ ईंटाक दाम बुझि अबैले। पहिने घर बना लेब। अपना चापा-कलो नै छौ, सेहो गड़ा लेब। घरक आगू जे मलिकाबाक चौमास छै, ओहो कीनि लेब।

तोहर फेकुआ

सात बजे भिनसर। मेघौन समए। कखनो कऽ सुरुज देखि पड़ैत आ फेर झपा जाइत। झिहिर-झिहिर पुरबा हबा चलैत। पान-छअ गोटेक संग फेकुआक माए रामसुनरि धन-रोपनी करए बिदा भेलि। किछुए आगू बढ़लापर डाक-प्यूनकेँ देखलक। मुदा आन स्त्रीगण जेकाँ रामसुनरि नहि जे दिनमे दू बेर मोबाइलसँ तीन पन्नाक चिट्ठी आ तइ परसँ जे समदिया भेटल ओकरा दिया समाद पठौत। मनमे कोनो हलचल नहि। रामसुनरिक आगूमे आबि हँसैत डाकप्यून कहलक- "काकी, फेकुआक चिट्ठी एलौहेँ।" कहि झोरासँ निकालि पोस्ट कार्ड देलक। छबो स्त्रीगण डाकप्यूनकेँ चारु

भागसँ घेरि कऽ ठाढ़ भेलि। हाथमे पोस्ट-कार्ड अबितहि रामसुनरिक मन बिहाड़िमे उड़ैत ओहि सुखल पात जेकाँ जे सरंगोलिया उठि अकासमे उड़ैत, तहिना उड़ि गेल। जिनगीक पहिल पत्र। मनमे एलै जे पहिने ककरोसँ पत्र पढ़ा ली। ओना डाकप्यून लगमे सँ चलि गेल। मुदा तेकर अफसोस नहि भेलै। किएक तँ जाधरि प्यून लगमे छल ताधरि पत्र पढ़ेबाक विचार मनमे आएलो नहि छलैक। फेर मनमे एलै जे काज कामै नै करब। अखन खूँटमे बान्हि कऽ रखि लै छी आ जखन निचेन हएब तखन पढ़ा लेब। सएह केलक।

गोसाँइ डुबैत रामसुनरि निचेन भेलि। निचेन होइतहि चिट्ठी पढ़बै लऽ श्याम ओहिठाम बिदा भेलि। श्यामोक घर लगे। पोस्ट-कार्ड हाथमे लऽ श्याम सत्यनारायण कथा जेकाँ पढ़ए लगल। मुदा दोसरे पाँती- दू हजार रुपैआ महिना तलब- मे रामसुनरि ओझरा गेलि। मने-मन सोचए लागलि जे छौँड़ाकेँ घरक सोह एलै। बुद्धियो फुटैक उमेर भेल जाइ छै। आब कहिया चेतन हएत। अगिला साल तक बिआहो कइये देबै। असकरे राकश जेकाँ अंगनामे रहै छी। लगले विचार बदलि गेलै। बुदबुदाए लागलि- कोना लोक कहै छै जे मसोमातक बेटा दुइर भऽ जाइ छै। विचारमे डूबल रामसुनरि। तहि बीच श्याम बाजल- ‘‘सभ बात बुझलिऐ ने काकी?’’

श्यामक पुछबसँ रामसुनरिक भक्क खुजल। बाजलि- ‘‘बौआ, चिट्ठी पढ़ल भऽ गेलह। की सभ छौड़ा लिखने अछि?’’

काकीक मनक बात नहि बुझि श्याम खौंझा गेल। मुदा किछु बाजल नहि। चिट्ठीकेँ निच्चाँमे रखि श्याम ओहिना मुँहजबानिये कहए लगलनि। मुदा पोस्ट-कार्डकेँ निच्चाँमे राखल देखि बेचारी रामसुनरिकेँ भेलै जे अपने दिशिसँ कहैए। जाहिसँ विश्वासे ने भेलै। मुदा झगड़ो करब उचित नहि बुझलक। किएक तँ बेटाक पहिल चिट्ठी छी तँ अशुभ व्यवहार नीक नहि।

दोसर दिन एकटा पोस्टकार्ड कीनि रामसुनरि चिट्ठी पढ़बैयो आ लिखबैयो लेल सोहन ऐठाम गेलि। दुनू पोस्टकार्ड- लिखलहो आ सौदो- रामसुनरि सोहनकेँ दैत कहलक- ‘‘बौआ, पहिने पढ़ि कऽ सुना दएह। तखन लिखियो दिहह।’’

पत्र पढ़ि कऽ सोहन सुना देलकनि। समाचार सुनि रामसुनरिक मन खुशीसँ उत्साहित भऽ गेलै। बाजलि- ‘‘बौआ आब चिट्ठी लिखि दियौ। सोहन चिट्ठी लिखए लगल-

परमानपुर
ता. ०३.०७.२००७
फेकू।

असीरवाद।

अखन हम अपने थेहगर छी तँ हम्मर चिन्ता जुनि कर। रहैले घरो अछिये। एक घैल पानि इसकूल बला कल परसँ लऽ अबै छी वएह भरि दिन

चलैत अछि। तैँ पानियोक दिक्कत नहिये अछि। नहाइले धारो आ पोखरियो अछि। कहियो-काल बरखोमे नहा लै छी। तैँ अइ सभले तूँ चिन्ता किए करै छैँ? अखन खाइ-खेलाइक उमेर छौ। तैँ कमा कऽ जे मन फुड़ौ से करिहेँ। अगिला साल धरि अबिहेँ, बिआहो कऽ देबउ। असकरे अंगनामे नीक नै लगैए।

माए, रामसुनरि

साल भरि बीति गेल। जहिना गाममे रामसुनरि अपना काजमे हेरा गेलि तहिना दिल्लीमे फेकुओ। साले भरिमे फेकुआ कपड़ा सिलाइक कारीगर बनि गेल। अपना देहक कपड़ा-लत्ता कीनैत-कीनैत फेकुआक सालो भरिक दरमाहा सठि गेल। माइक जिनगी तँ जहिनाक तहिना रहल मुदा फेकुआक जिनगीमे बदलाब आएल। दुब्बर-दानर फेकुआ फुटि कऽ जुआन भऽ गेल। कपड़ा सिआइक लुरि भेने आत्मबलो मजबूत भेलै। मुदा गामक जिनगी आ दिल्लीक जिनगीक बीचक संघर्ष फेकुआक मनमे चलितहि रहल।

रवि दिन। रतनो आ फेकुओक छुट्टी रहै। सुति उठि दुनू ममियौत-पिसियौत विचारलक जे साल भरिसँ बगेरी नहि खेलहुँ। से नहि तँ आइ बगेरिये आनब। तहि बीच रोडपर देखलक जे पुलिसक गाड़ी इम्हरसँ ओम्हर कऽ रहल छै। दुनू भाँइकेँ कोनो भाँजे नहि लगै। कोठरीसँ निकलि रतना चाहबलासँ पुछलक। चाहबलासँ भाँज लगलै जे महल्लासँ एकटा जुआन लड़की आ एकटा सेठक बेटाक अपहरण रातिमे भऽ गेलै। समाचार सुनि दुनू भाँइ डरा गेल। बगेरीक विचार छोड़ि गामक गप-सप्प करए लगल।

रतना बाजल- ''बौआ, तोरा साल लगि गेलह। एक बेर गाम जा सभक भेँट केने आबह।''

गामक नाम सुनितहि फेकुआक मन उड़ि कऽ दोसर दुनियाँ पहुँचि गेलै। मन पड़लै- चिमनीक ईंटा....चापाकल....घरक आगूक चौमास। मन गामक सीमापर अटकि गेलै। सीमा परसँ अंगना पहुँचैक साहसे ने होए। किएक तँ बाटेपर माएकेँ ठाढ़ भेल देखए। की कहैत हएत माए ? साल भरि भऽ गेलै, ने एक्कोटा पाइ पठौलक आ ने एक्को खण्ड साड़ी। कहियो काल जे अस्सक पड़ैत हएत तँ के दवाइयो आनि कऽ दैत हेतै। पौरुकाँ जे चिट्ठी आएल, तइ दिनसँ दोसर चिट्ठियो ने आएलहेँ। हमहूँ तँ नहिये पठौलिऐ। छुच्छे चिट्ठिये लिखने की हेतै। मने-मन बुढ़िया सरापैत हएत। कहैत हएत जे छौंड़ा ढ़हलेलक ढ़हलेल रहिये गेल। मुदा हमहीं की करब ? छुच्छे हाथे गामे जा कऽ की करब ? टिकटो जोकर पाइ नञि अए। चिन्ता आ सोगसँ फेकुआक मन दबा गेल। कोनो बाटे ने सुझैत। मनक भीतर बिरड़ो उठि गेलै। बिरड़ोक हवामे फेकुआक मन सोंगक तरसँ निकलि गेल। मनमे एलै जे गाम तँ गाम छी। जहिठाम लोक माघक शीतलहरी आगि तापि कऽ काटि लैत अछि। बिना कम्मल-सीरकक जाड़ बिता लैत अछि, गाछ तर जेठक रौद काटि लैत अछि। मुदा दिल्लीमे से हएत ?

साल भरिक कमाइ साल भरिक मौसमक अनुकूल कपड़ेमे चलि गेल। नहि लैतहुँ तँ सेहो नहि बनैत। लेलहुँ तँ गाम छुटि गेल। जहिना घनघोर बादलक फाँटसँ सूर्यक रोशनी छिटकैत, तहिना फेकुओक मनमे भेल। रतनाकेँ कहलक- "भैया, एकटा चिट्ठी लिखि दएह।"

लगेमे रतनाकेँ सभ कुछ छलै। पोस्ट-कार्ड निकालि लिखैले तैयार भेल। फेकुआ लिखबए लगल-

दिल्ली
ता. ११.०८.२००८

माए,

गोड़ लगै छिऔ।

मनमे बहुत छल हेतौ जे तोरो बेटा दिल्लीमे नोकरी करैत छौ। मुदा सभ हरा गेल। सिर्फ एक्केटा चीज बँचल जे ऐठाम -दिल्लीसँ, ओइठाम-गाम धरि जीबैक रस्ता धरा देत। तँ खुशी अछि। हाथ खाली अछि। गाम कोना आएब?

फेकुआ

चारिये दिनमे चिट्ठी माएक हाथ पहुँचल। चिट्ठी हाथमे अबितहि रामसुनरि निङहारि-निङहारि देखए लगलीह। छौँड़ा कतौ अछि जीबैत तँ अछि। बेटा धन छी। कतौ रहह। आब तँ फुटि कऽ जुआन भऽ गेल हएत। जहिना चाह-पान खा-पी बड़का लोकक धोधि फुटि जाइ छै, तहिना तँ फेकुओकेँ भेल हएत। किएक तँ ओहो ने चाह-पान खाइत-पीबैत हएत। गोराइयो गेल हएत। मोछो-दाढ़ी भऽ गेल हेतै। जहिना भगवान घरसँ पुरुख उठा लेलनि, तहिना तँ फेरि दैयो देलनि। जुआन बेटापर नजरि पहुँचतहि रामसुनरिक मन खुशीसँ नाचि उठलै। मने-मन बुदबुदाए लगलीह- दस बर्खसँ घरमे पुरुख नञि छल तँ की कोनो पुरुखक घरसँ हमर घर अधला चलल। संतोषे गाछमे मेबा फड़ैत छै। परसुका बात मन पड़लै। चाहक दोकानपर परसू पंडी जी कहैत रहथिन जे अइ बेर शुरुहे अगहनसँ घन-घनौआ लगन अछि। हमहूँ फेकुआक बिआह कइये लेब। बिआह मनमे अबिते सोचलक जे बहुत दिनसँ पाँच गोटेक अंगनामे हाथो नै धुऐलौं। सेहो कइये लेब। समाजक भोजमे तँ नै सकब मुदा जहाँ धरि सकड़ता हएत, तइमे पाछुओ नै हटब। लोक ई नै बुझै जे मसोमातक बेटाक बिआह होइ छै। डफरा-बौसली हवागाड़ी सेहो लइये जाएब। अनका जेकाँ एक ढ़कियाक मुँह नै पसारब। अपना बेटी-जमाएकेँ जे देत से देत। हम किए मंगिऔ। जे आदमी पोसि-पालि कऽ एकटा मनुक्ख देबे करत तेकरासँ फेर की मंगिऔ? किछु नञि मंगबै। लुरि रहत तँ कामधेनु बना कऽ राखब नहि तँ माटिक मुरुत रहत। एकाएक रामसुनरिक नजरि चिट्ठीपर पहुँचल। पोस्ट-कार्ड निकालि हियासि-हियासि देखए लगलीह। फुटा-फुटा करिया अक्षर तँ नहि बुझैत मुदा कृष्ण जेकाँ कारी मुरुत जरुर बुझि पड़ैत।

चिट्ठी पढ़ाबै लऽ रामसुनरि बिदा भेलि। अंगनासँ निकलितहि मनमे उठलनि आब की कोनो पहिलुका जेकाँ लोककेँ बारह बर्ख कटिया सोन्हबए पड़ै छै। आब तँ साले भरिमे लोककेँ धिया-पूता भऽ जाइत छैक। कहुना भेल तँ हमरो फेकुआ शहरे-बजारक भेल की ने। एते बात मनमे अबितहि मुँहसँ हँसी निकलल। असकरे। तँ कानकेँ सुनै दुआरे तेना रामसुनरि जोरसँ बजैत जेना दोसरकेँ कहैत होइ। फुसिओहोक बेटी युग जितलक। भाग तँ मुँह-कान नीक नञि छै। नञि तँ युगमे भूर करैत। बिआहक आठमे मासमे बेटी भऽ गेलै। ई तँ धन्यवाद एहि समाजकेँ दी जे एक सूरे सभ बाजल जे सतमसुआ बच्चा छिऐ। जँ एना बिआहक विदागरीमे हएत तँ केहेन होएत? मुदा ओ बच्चा सतमसुआ नहि। समाज झूठो बाजि ओकरा सतमसुआ बच्चाक पालन-पोसनसँ बचेलक।

रविक दरबज्जा लग अबितहि रामसुनरिक नजरि चिट्ठीपर पहुँचल। रवि दरबज्जेपर बैसि किछु लिखैत छल। रामसुनरिकेँ लग अबितहि रबि उठि कऽ चौकीपर बैसबैत पुछलक- “काकी फेकू भाइक बिआह कहिया करबीही ? हमहूँ बरिआती जेबउ ?”

रविक बात सुनितहि रामसुनरिक मन बृन्दाबनक रास लीलापर पहुँचि गेलनि। कनिये काल कृष्णक रास-लीला देखि घुरि कऽ आबि चिट्ठी पढ़बो आ लिखबो लेल रबिकेँ कहलक। चिट्ठी पढ़ि कऽ रबि सुना देलकनि। पत्र लिखैले तैयार होइत बाजल- “की सभ लिखब?”

रामसुनरि लिखबए लागलि-
परमानपुर
ता. १५.०८.२००८

बौआ फेकू।

हम तोरा कमाइक कोनो आशा केने छी, जे पाइ नै छौ तँ गाम कोना ऐमे? ककरोसँ पैंच-खोंइच लऽ कऽ चलि आ। तीन भुरकुरी धान-गहूम रखने छी, वएह बेचि कऽ दऽ देबै। आब तोहूँ चेतन भेलैं। लोक कलंक जोड़त। हमरो आब अइ दुनियामे नीक नै लगैए। तँ सोचए छी जे अपन काज जल्दी पुरा ली। अगते अगहनमे चलि अबिहैं। ताबे कनियाँ ठेमा कऽ रखबौ। अखैन हमहूँ थेहगर छी मुदा अइ जिनगीक कोन ठेकान छै। आब ई परिवारो आ दुनियो तोरे सबहक ने हेतौ। समएपर चलि अबिहैं, जइसँ काज बिथुत ने होउ।”

माए ।

माएक पत्र सुनि फेकुआ मने-मन खूब खुशी भेल। मनमे भेलै जे हमरो काज एहि दुनियाँ, एहि समाजमे छैक। मुदा मनमे खुशी बेसी काल टिकल नहि। लगले माघक कुहेस जेकाँ बुद्धि अन्हरा गेलै। कोन मुँह लऽ कऽ गाम जाएब। साल भरिक कमाइ माइयक हाथमे की देबै। ई बात सत्य जे हमरा भरोसे माए नहि जीबैत अछि। मुदा

हमरा ओकर कोनो दायित्व नहि अछि, सेहो तँ नहि। हे भगवान कोनो गर सुझाबह।

पनरहे दिनक पछाति एकटा घटना घटल। फेकुआक नोकरी छुटि गेल। ओना नओ गोटेक संग फेकुआ काज करैत। मुदा आठो गोटे पुरना कारीगर समयानुसर अपनाकेँ बदलैत जाइत, नव-नव डिजानिक कपड़ा सिबैक लूरि सिखैत जाइत। फेकुआ अनाड़ी, तेँ शुरुहसँ सिलाइक काज सिखए पड़लै। साल भरिमे कहुना कऽ पुरना दिल्लीक कारीगर बनल। मुदा फैशनमे बिहाड़ि एने फेकुआ उड़ि कऽ कातमे खसल। ओना मालिकोक मनमे बेइमानी घोसिआएल रहै। बेइमानीक कारण छल पाइबलाक चसकल मन। एकटा अट्ठारह बर्खक लड़की कारीगर दू हजार दरमाहामे भेँट गेलै।

सवा बर्खसँ शहरमे रहैत-रहैत फेकुओक सुतल बुद्धि जगि कऽ करोट लिअए लगलैक। जहिसँ आत्मबलोक जन्म भऽ चुकल छलैक। मुदा खिच्चा। सक्कत बनिये रहल छलैक। जहिना मालिक नोकरीसँ हटैक बात कहलकै तहिना फेकुआ हिसाब मंगलक। हिसाब लऽ फेकुआ डेरा बिदा भेल। पाइ रहबे करै। रस्तेमे कॉफी पीबि डेरा आएल। डेरा आबि पंखा खोलि पलंगपर ओँघरा गेल। ओँघराइते मनमे अबै लगलै- ई शहर छी, गाम नहि। शहरमे जाहि तेजीसँ मशीन, फैशन आ जीवन-शैली बदलि रहल अछि, ओहिमे हमरा सन-सन मुरुखक कोन बात जे पढ़लो-लिखल लोक ओँघरनियाँ देत। नवका मशीन पुरना इंजीनियरकेँ धक्का देत। पुरना बुद्धिकेँ नवका बुद्धि धक्का देत। मुदा नीक-अधलाह के बुझत ? सभ भोग-विलासक जिनगीक पाछु आन्हर बनि गेल अछि। बाप रे, ई तँ भुमकमक लक्षण छी। फेर मनमे एलै, भरिसक हमर माथ, नोकरी छुटने तँ ने चढ़ि गेलहेँ। ओह, अनका विषएमे अनेरे ओझराइ छी। जेकरा भोगए पड़तै ओकरा सुआस बुझि पड़ै छै, तँ हमरे की। ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ लऽ साहोर-साहोर करैत अछि। फेर मनमे एलै जे हमहूँ तँ जूड़िशीतलक नढ़िये जेकाँ भेल छी। एक दिशि चारु भागसँ कुकूर दाँतसँ पकड़ि-पकड़ि तीड़ैत अछि तँ दोसर दिशि शिकारी सभ लाठी बरिसबैत अछि। गामक लूरि सीखलहुँ नहि, सीखि लेलहुँ शहरक लूरि। तँ आब लिअ। क्वीन्टलिया बोरामे भरि-भरि रखने जाउ। फेकुआक मन औनाए गेल। दुबट्टियेमे हरा गेल। तिनबटिया-चारिबट्टिया तँ बाँकिये अछि। माएपर तामस उठलै। बुदबुदाए लगल- ''ई बुढ़िया गछा लेलक जे शुरुहे अगहनमे चलि अबिहेँ। कनियाँ ठेमा कऽ रखबौ। बिआह कइये देबउ।''

एक दिशि केँचुआइल कनियाँक बदलैत रुप तँ दोसर दिशि माइयक सिनेह। समुद्रक पानि जेकाँ फेकुआक मनकेँ अस्थिर कऽ देलक। सोचए लगल जे माए नीक छोड़ि कहियो अधलाह नहि केलक आ ने कहियो सोचलक, ओकरापर आँखि उठाएब अनुचित छी। काल्हिये गाम चलि जाएब। बिआहो कइये लेब। दू गोटे पति-पत्नी ओहन लोक एकठाम होएब जे किछु कऽ सकैत अछि। 'दू पाइ' क आशा हृदएमे समेटि सौझुका गाड़ी पकड़ि, तेसर दिन गाम पहुँचि गेल।

बोनिहारिन मरनी

छोट-छीन गाम छतौनी। तीनिये जातिक लोक गाममे। साइये घरक बसतियो। छेहा बोनिहारक गाम। ओना पास-परोसक गामक लोक छतौनीकेँ प्रतिष्ठित गाम नहि बुझैत। किऐक तँ ओहि गाम सबहक लोकक विचारे प्रतिष्ठित गाम ओ होइत जहिमे छत्तीसो जातिक लोक बसैत। जाहिसँ समाजक सभ तरहक जरुरतक पूर्ति गामेमे होइत। मुदा से छतौनीमे नहि। तेँ छतौनी जमाबंदी गाम भऽ सकैत अछि, प्रतिष्ठित नहि। मुदा एहि विचारकेँ छतौनीक लोक मानै लए तैयारे नहि। छतौनीक लोकक कहब जे जहियासँ हमर गाम बनल तहियासँ ने कहियो अपनामे झगड़ा-झंझट भेल आ ने मारि-पीट। जहिसँ ने कहियो कियो कोट-कचहरी देखलक आ ने थाना-बहाना। ततबे नहि, तीनि जातिक लोक रहितहुँ सभ मिलि एकठाम बैसि खेबो-पीबो करै छी आ तीन जातिक तीनू देवस्थानोमे पूजो-पाठ आ परसादियो खाइ छी। सभ जातिक लोक संगे-संग कमेबो करै छी आ एक-दोसराकेँ, मौका-मुसीबत पड़लापर, संगो पूरै छी। आन-आन गामबला हमरा गामकेँ अहि दुआरे गाम नै मानैए जे ओ सभ बहरवैया छी आ हमरा सबहक पूर्वज अदौसँ रहल अछि।

छतौनीक वासी सभ दिनसँ बोनिहारे नहि रहल अछि। पहिने ओकरो सभकेँ अपन-अपन खेत-पथार छलै। खेत-पथार गेलै कोना? एहि संबंधमे छतौनीक बूढ़-पुरान लोकक कहब छनि जे हमरा सबहक पूर्बज, रौदीक चलैत, खेतक बाकी मालगुजारी राज दरभंगाकेँ समएपर नहि दऽ सकलनि, तेहिसँ ओ सभ जमीन निलाम कऽ अबधिया, छपरिया हाथे बेचि लेलक। हमरा सबहक जमीनक मलिकाना हक खतम भऽ गेल। ओ अबधियो आ छपरियो राजमे नोकरी करैत छल जे एहि इलाकामे आबि जमीनो हथिया लेलक आ मुखियो सरपंच बनि मेनजनी करैत अछि। मुदा एकटा चलाकी ओ सभ जरुर केलक जे जेना अंग्रेज आबि सत्ता हथिऔलक तेना चलि नहि गेल, बल्कि मुगल जेकाँ बसि गेल।

जहियासँ देश अजाद भेल आ सत्ताले भोट-भाँट शुरु भेल, तहियासँ ने एक्कोटा कोनो पार्टीक नेता भोट मंगैले एहि गाम आएल आ ने एक्को बेरि गौँआ भोट खसोलक। किएक तँ आइ धरि एहि गाममे भोटक बूथ बनबे ने कएल। तेँ नेतो किअए आओत? गाममे ने चरिपहिया गाड़ी चलैक रास्ता छै आ ने सार्वजनिक जगह स्कूल, अस्पताल। जहिठाम भाषण-भुषण हएत। जहि गाममे छतौनीक बूथ बनैत ओहि गामक लोक सभ छतौनियोक भोट खसा लैत। छतौनीक लोकक जिनगियो छोट। ने पढ़ै-लिखैक झंझट, ने चोर-चहारक झंझट, ने रोग-व्याधिक झंझट। किएक तँ गामक सभ बुझैत जे जेकरा कपारमे विद्या लिखल रहत ओ डूबियो-मरि कऽ पढ़िये लेत। चोर-चहार एबे

कथीले करत। रोग-बियाधिक लेल पूजो-पाठ आ झाड़ो-फूक अछिये। तहूसँ पैघ बात जे, जे एहि धरतीपर रहैले आएल अछि ओ जीबे करत। पानि, पाथर, ठनका ओकर की बिगाड़ि लेतै। आ जे नञि रहैबला अछि ओकरा फूलोक गाछपर साँप काटि लेतै आ मरि जाएत। तैँ की, छतौनीबलाकेँ भगवानपर बिसवास नै छै? जरुर छै। जँ से नञि रहितै तँ देवस्थानमे सालमे एक बेर एत्ते धुमधामसँ पूजा किअए करै अए? उपास किअए करैए? दसनमो स्थान -देवस्थान- आ अपनो-अपनो घरमे गोसाउनिक पीड़ी किअए बनौने अछि? साले-साल कामौर लऽ कऽ बैजनाथ किअए जाइए?

सभ अभाव रहितहुँ छतौनीक लोक हँसी-खुशीसँ जीवन बितबैत अछि। अगर जँ कियो गाममे मरैत वा साँप-ताँप कटैत वा आगि-छाइ लगैत तँ सभ कियो दासो-दास भऽ लगि जाइत। पचास बर्खक मरनी सेहो तहिमे सँ एक। जे अपना आँखिसँ अपन पति, बेटा आ पुतोहूकेँ गाछक तरमे खून बोकरि कऽ मरैत देखने। आइ बेचारी पाँच बर्खक पोता आ आठ बर्खक पोतीक बीच आशाक संग जीबि रहल अछि। कारी झामर एक हड़डा देह, ताड़-खजुरपर बनाओल चिड़ैक खोंता जेकाँ केश, आंगुर भरि-भरिक पीअर दाँत, फुटल घैलीक कनखा जेकाँ नाक, गाइयक आँखि जेकाँ बड़का-बड़का आँखि, साइयो चेफड़ी लागल साड़ी, दुरंगमनिया आंगी फटलाक बाद कहियो देहमे आंगीक नसीब नहि भेल, बिना साया-डेढ़ियाक साड़ी पहिरने। यएह छी मरनी।

चारि साल पहिने सुबध, मनोहर आ तौनकी धान रोपए बाध गेल। जाधरि तौनकीकेँ दोसर सन्तान नहि भेल ताधरि मरनिये पति सुबध आ बेटा मनोहरक संग काज करए जाइत। धनरोपनी, धनकटनी, कमठाउन, रब्बी-राइ उखारै-काटैले संगे जाइत। पुतोहू तौनकी- अंगनाक काज सम्हारैत। मुदा जखन दूटा पोता-पोती भेलै तहियासँ मरनी अंगनाक काज सम्हारए लागलि। अंगनोमे कम काज नहि। भानस-भात करब, पोता-पोती खेलाएब, खूँटा परक बाछीक सेवा करब। आने परिवार जेकाँ मरनियोक परिवार भरल-पूरल।

दस आँटीक जोड़ा तीन-तीन जोड़ा बीआ उखाड़ि सुबध आ मनोहर पटैपर टंगलक आ राड़ीक जुन्ना बना तौनकी बीआक बोझ बान्हि माथपर लऽ कदबा खेत पहुँचल। कदबा एक दिन पहिने गिरहत करा देने। तैँ तीनू गोटेक मनमे खुशी होइत जे सबेर-सकाल रोपि कऽ चलि जाएब। आन दिन कदबे दुआरे अबेर भऽ जाइ छलै। मने-मन सुबध सोचैत जे बेरु पहर अपनो जे कट्ठा भरिक खेत अछि ओहो सभ तूर मिलि कऽ हाथे-पाथे रोपि लेब। कदबामे बीआ रखि सुबध आड़िपर बैसि, तमाकुल चुनबए लगल। मनोहर आ तौनकी खेतमे बीआ पसारए लगल। सौँसे खेत बीओ पसरि गेलै आ सुवधो तमाकुल खा लेलक। तीनू गोटे एक-एक आँटी खोलि खुज्जा पसारि एक-एक खुज्जा रोपैले वामा हाथमे रखलक। आड़िक कात पछिमसँ तौनकी बीचमे मनोहर आ पूबसँ सुवध पाहि धेलक। एक पाँती रोपि दोसर धेलक आकि पूब दिशि एक चिड़की मेघ उठैत देखलक। मेघक छोट टुकड़ी देखि ककरो मनमे पानिक शंका नै उठलै। कने-कने सिहकी सेहो चलए लगलै। जहिना-जहिना हवा तेज होइत जाइत,

तहिना-तहिना करिया मेघक टुकड़ी सेहो उधिया-उधिया उपर चढ़ए लगलै। उपर चढ़ि-चढ़ि ओ टुकड़ी एक-दोसरमे मिलए लगल। मुदा पछिम दिशि रौद उगलै। कनियेकालक बाद सुरुज झपा गेल। हबो तेज हुअए लगलै। बिजलोका चमकए लगलै। बुन्दा-बुन्दी पानि पड़ए लगलै। जते मेघ सघन होइत जाइत तते पानियोक बुन्न जोर पकड़ैत। संगे बिजलोको बेसिआइल जाइत। घन-घनौआ बरखा हुअए लगल। पानिमे भीजै दुआरे तीनू गोरे दौड़ि कऽ आमक गाछ लग पहुँचल। खेतसँ बीघे भरि हटि कऽ आमक गाछ। खूब झमटगर। चारि हाथ उपरेमे दू फेंड़ भऽ गेल। सरही आम। गाछक पँजरेमे पछिमसँ तौनकी बैसलि आ पूबसँ सुवध आ मनोहर। तौनकी साड़ी ओढ़ि दुनू हाथक मुट्ठी बान्हि काँखमे लऽ लेलक। मुदा सुवधो आ मनोहरो छुछे देहे। गमछाक मुरेठा बान्हि लेलक। मुदा तैयो जाड़े दुनू बापूत थर-थर कपैत। नमहर-नमहर बुन्न सेहो देहपर खसै। सौँसे देहक रुइयाँ भुलकि कऽ ठाढ़ भऽ गेलै। मुदा की करत? कोनो उपाए नहि। पछिमो मेघ पकड़ि बरिसए लगल। जाहिसँ दूर-दूर धरि बरखा हुअए लगलै। रहि-रहि कऽ मेघो गरजै आ बिजलोको चमकै। एक बेर खूब जोरसँ बिजलोका चमकलै। मुदा आन बेरक चमकलहासँ बिजलोकाक रंग बदलल। आन बेर पिरौंछ इजोत होइत जखनि कि एहि बेर लाल टुह-टुह। दुरकाल समए देखि तौनकी मने-मन खौंझा भगवानकेँ कोसैत जे कोनो काजक समए होइ छै। अखैन पानिक कोन काज छै। जहिना तगतगर लोक सदिखन बलउमकी करैत अछि तहिना ई टिकजरौना इन्द्रो भगवान करैए। अनेरे काजकेँ बरदा जाड़े कठुअबैए। लोक सभ कहै छै जे देवता-पितरकेँ बड़का-बड़का आँखि होइ छै जे एक्के ठीन बैसल-बैसल सगरे दुनियाँ देखैए। से आँखि अखैन कतऽ चलि गेलै। देवियो-देवता गरीबे-गुरबाकेँ जान मारै पाछु लागल रहै अए। जन-बोनिहारक काज करैक दू उखड़ाहा होइए। भिनसुरका आ दुपहरिया। भिनसुरका उखड़ाहामे जँ एगारहो बजे पानि भेल वा कोनो बाधा भेल तँ गिरहत थोड़े बोइन देत। अगर जँ जलखै भऽ गेल रहलै तँ बड़बढ़िया नञि तँ जलखैइयो पार। यएह तँ ऐठामक चलनि छै। ई टिकजरुआ भगवान गिरहतेकेँ मदति करै छै।

जाड़सँ कपैत सुवध मनोहरकेँ कहलक- ‘बौआ, सोचै छलौं जे आन दिन रोपैन करैमे अबेर भऽ जाइ छलै जइसँ अपन काज नञि सम्हरै छलै मुदा आइ सबेरे-सकाल रोपैन होइत तँ अपनो बाड़ीक खेत रोपि लइतौं। से सभ भंगठि गेल। कखैन पानि छुटत कखैन नै सेहो ठीक नहि। दुनू बापूत गप-सप्प करिते छल आकि तड़-तड़ा कऽ ठनका ओहि गाछपर खसल। जइठीनसँ दुनू डारि फुटल छलै तकरा चिड़ैत माटिमे चलि गेल। चिड़ा कऽ गाछ दुनू भाग खसल। एक फाँकक तरमे तौनकी आ दोसर फाँकक तरमे दुनू बापूत पड़ि गेल।

पानि छुटल। सौँसे गाममे हल्ला हुअए लगलै जे बाधमे जे आमक गाछ छलै से खसि पड़लै। भरिसक ओहीपर ठनका खसलै। एक्के-दुइये लोक देखैले जाइ लगल। कातेमे ठाढ़ भऽ भऽ लोक देखैत। गाछोपर आ गाछक निच्चोमे जमीनोपर तते घोरन पसरि गेलै जे लोक गाछक भीर जाइक हिम्मते ने करैत। मुदा जीवठ बान्हि करिया

गाछक जड़ि देखै बढ़ल। घोरन तँ खूब कटै मुदा तइयो हिम्मत कऽ करिया जड़ि लग पहुँचल। ठनकाक आगिक चेन्ह ओहिना दुनू फाँकमे छल। जड़ि लग ठाढ़ भऽ ओ हिया-हिया देखए लगल। देखैत-देखैत मनोहरक टाँगपर नजरि पड़लै। टाँगपर नजरि पड़िते हल्ला करए लगल जे एक गोरे तरमे पिचाइल अछि। दौड़ि कऽ अबै जाइ जा, एकरा बहार करह? करियाक बात सुनि चारु भरसँ लोक बढ़ल। देखैत-देखैत तीनू गोरेपर नजरि पड़लै। हल्ला करैत करिया कुड़हरि अनए घरपर दौगल। तीनू खून बोकरि-बोकरि मरल। मुदा तैयो सभ बचा-बचा कऽ डारि काटए लगल। डारि काटि सील उनटौलक तँ तीनू थकुचा-थकुचा भेल। पहिने तँ कियो नै चिन्हलक, किऐक तँ तीनू बेदरंग भऽ गेल। मुदा भाँज लगौलापर पता चललै जे दुनू बापूत सुवध कक्का छी आ पुतोहु छिऐ।

अखन धरि मरनी, अंगनेमे दुनू बच्चाकेँ खेलबैत। गौरिया आबि कऽ कहलकै- 'दादी तोरे अंगनाक सभ, गाछक तरमे दबि कऽ मरि गेलौ।'

गौरियाक बात सुनितहि मरनी अचेत भऽ खसि पड़ल। दुनू बच्चा सेहो चिचियाए लगलै। मरनीकेँ अचेत देखि अलोधनी मुँहपर पानि छीटि बिअनि हौँकए लागलि। कनिये कालक बाद होश भेलै। होशमे अबितहि मरनी फेर बपहारि कटए लगल।

बच्चाकेँ कोरामे लऽ मरनीक संग अलोधनी देखैले बिदा भेलि। गाछ लग पहुँचते तीनू गोरेकेँ मुइल देखि मरनी ओंघरनियाँ कटए लागलि। ओंघरनियाँ कटैत देखि करिया पजिया कऽ पकड़ि मरनीकेँ कात लऽ गेल। मरनीक दशा देखि सभ सांत्वना दिअए लगल। मुदा मरनीक करेज थीरे ने रहै। विचित्र स्थितिमे पड़ल। एक दिशि परिवारकेँ नाश होइत देखए तँ दोसर दिशि दुनू बच्चाक मुँह देखि कनी-मनी आशा मनमे जगै।

चारि साल पहिलुका नहि, आब नव मरनीक जन्म भेल। जहिना आगिमे तपैसँ पहिने सोनाक जे रंग रहैत तपलापर जहिना चमकि उठैत तहिना। ओना समाजोक बेवहार जे पहिलुका छलै अहूमे बदलाव एलै। कियो खाइक बौस दऽ जाइत तँ कियो बच्चो आ मरनियो लए नुआ-बस्तर। जखन ककरो भाँजमे कोनो काज अबै तँ ओ मरनियोकेँ संग कऽ लैत। जहिना परिवारमे बूढ़ आ बच्चाक प्रति जे सिनेह होइत, ओहने सिनेह मरनीक प्रति समाजोक बीच हुअए लगलै। अपनो जीबैक आशा आ बच्चोक, मरनीकेँ नव स्फूर्ति पैदा केलक। एते दिन मरनीक हाथमे पुरने खेतीक औजार टा रहै छलै ओ आब बढ़ि कऽ दोबर भऽ गेल। हँसुआ, खुरपी, टेंगारी, कोदारिक संग-संग हथौरी, गैंचा सेहो आबि गेलै।

समए आगू बढ़ल। देशक विकासक गति सेहो, बहुत तेज नहि मुदा किछु गति तँ जरुर पकड़लक। गाम-गाममे बान्ह-सड़क, पुल-पुलिया, स्कूल, अस्पताल सेहो बनए लगल। जाहिसँ खेतिहर बोनिहारक सेहो काज बढ़ल। मरनियो छिट्टामे माटि उघब, पजेबा उघब, गिट्टी फोड़ब, सुरखी कुटब सीखि लेलक। जाहिसँ बेकारी मेटाएल। रोज कमेनाइ रोज खेनाइ धरि गरीबो पहुँचि गेल। भलेहीं जिनगीमे बहुत अधिक उन्नति नञि एलै मुदा जीबैक आशा जरुर जगलै। मुदा ई सभ काज छतौनीमे नहि,

पास-पड़ोसक आन-आन गाममे हुअए लगलै। जहिमे छतौनियोक बोनिहार सभ काज करए लगल।

छतौनियोक दिन घुरलै। सात किलोमीटर पक्की पीच सड़क जे एन.एच.सँ लऽ कऽ रेलवे स्टेशनकेँ जोड़ैत, छतौनिये होइत बनैक शुरु भेल। जहियेसँ 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाक' छतौनी होइत बनैक चरचा भेल तहियेसँ छतौनीक लोकक मनमे खुशी अबए लगलै। गामक लोकक तँ ओहन दशा नहि जे बस, ट्रक कीनैक विचार करैत। मुदा तैयो एते बात जरुर एलै जे बरसातमे जे घरसँ बहराएब कठिन छलै ओ आब नै रहतै। किछु गोटेक मनमे ई बात जरुर होइत जे एते दिन बिना जूत्तो-चप्पलक काज चलैत छल, से आब नै चलत। आड़ि-धुर माटिपर चललासँ, बेसीसँ बेसी काँट-कुश गरैत छल मुदा पीच भेने शीशाक टुकड़ी, लोहाक टुकड़ी सेहो गरत। जाहिसँ पएरक नोकसान बेसी हएत। मुदा फेर मनमे अबै जे एते दिन कम आमदनी रहने जुत्ता-चप्पल नै कीनि पबै छलौं से आब नै हएत। नञि बेसी तँ एक्को जोड़ा जरुरे कीनि लेब। जैसँ पएरमे बेमाइयो ने फटत।

प्रधानमंत्री योजनाक सड़क बनए लगल। मुदा जते आशा बोनिहार सभकेँ छलै तते नै भेलै। किएक तँ माटिक काज शुरु होइते रंग-बिरंगक गाड़ी सभ पहुँचए लगल। जे माटिक काज बोनिहार करैत ओ ट्रेक्टर करए लगल। ओना काजक गति तेज रहै मुदा बोनिहारक बेकारी बरकरारे रहलै। सड़कपर माटि पड़िते रौलर आबि सरियाबए लगल। खेनाइ-पीनाइ छोड़ि धियो-पूतो आ जनिजातियो भरि-भरि दिन देखते रहैत। ओना बूढ़ो-पुरान देखैत मुदा घरक चिन्ता खीचि कऽ काज दिशि लऽ जाइत। पनरहे दिनमे सातो किलोमीटर सड़कपर माटिक काज सम्पन्न भऽ गेलै। एकदम चिक्कन, उज्जड़ धप-धप। घर एते ऊँच सड़क बनि गेल।

माटिक सड़क बनिते बड़का-बड़का ट्रक चिमनीसँ ईटा खसबए लगल। ऐँह, अजीब-अजीब ट्रको सभ। एते दिन छह-पहिये ट्रक टा गामक लोक देखने मुदा एहि सड़कक बनने दस पहियासँ लऽ कऽ अट्ठारह पहियाबला ट्रक सभकेँ सेहो देखलक। तीनिये दिनमे सातो किलोमीटरक ईंटा खसा देलक। मुदा ईंटा पसारैक काज तँ इंजन नहि करत। ओ तँ लोके करत। मुदा ओहिक लेल तँ अनुभवी माने एक्सपर्ट लोकक जरुरत हएत। जे छतौनीमे नहि। तँ बाहरेसँ अनुभवी मिसतिरी आओत! मुदा तेहेन बड़का ठीकेदार सड़क बनबैत जे अनेको सड़कक काज एक संग चलबैत। एक्के दिन तते अनुभवी मिसतिरी ईंटा पसारै लऽ आएल जे सभकेँ बुझि पड़लै जे दुइये दिनमे सातो किलोमीटर ईंटा पसारि देत। मुदा ईंटा उघैले तँ मजदूर चाहिऐ। पहिले दिन छतौनीक बोनिहारकेँ काज भेटलै। ईंटा पसरए लगल। धुरझाड़ काज चलए लगल। छतौनीक सभ बोनिहार खुशीसँ काज करए लगल। तहि बीच ईंटापर पसारैले फुटलाहा ईंटा ट्रकसँ आबए लगल। दोहरी काज देखि छतौनीक बोनिहारक मन खुशीसँ नाचए लगल। किएक तँ गिट्टी फोड़ैले गामेक बोनिहारकेँ काज भेटतै। मुदा ठीकेदारक मुनसी, अपने खाइ-पीबै दुआरे सस्ते दरसँ गिट्टी फोड़ैक रेट लगा देलक। एक ट्रेक्टर पजेबा फोड़ैक दर साठिये रुपैया दैले तैयार भेल। एक-दू दिन तँ बोनिहार

लोक गिट्टी फोड़ब बन्न केलक मुदा पेटक आगि मजबुरन सभकेँ लऽ गेलै। मरनी सेहो गिट्टी फोड़ैए लागलि। एक ट्रेक्टर गिट्टी फोड़ैमे बेचारीकेँ चारि दिन लगैत। मुदा की करैत?

एहि सड़कसँ पहिने जे सड़क बनै ओ रिआइत-खिआइत रहि जाइ। माटिक काज भेलापर साल-दू साल ईंटा बैसैमे लगै। जाहिसँ माटि ढ़हि-ढूहि कऽ उबड़-खाबड़ बनि जाए। बड़का-बड़का खाधि सड़कपर बनि जाइ। तहूमे तीन नंबर पजेबा फुटि-भाँगि कऽ गरदा बनि जाइत। गामक धियो-पूतो उठा-उठा खेत-पथारमे फेकि दैत। कोठीक गोरा बनबैले स्त्रीगण सभ निकहा ईंटा उठा-उठा लऽ जाइत। मुदा अइ बेर से नै हएत। दुइये मासमे सड़क बनबैक शर्त ठीकेदारकेँ अछि। जाबे बरखा खसत-खसत ताबे सड़क बनि जएबाक छैक। पचास बर्खक मरनी जे देखैमे झुनकुट बूढ़ि बूझि पड़ैत। साँसे देहक हड्डी झक-झक करैत। खपटा जेकाँ मुँह। खैनी खाइत-खाइत अगिला चारु दाँत टूटल। गांगी-जमुनी केश हवामे फहराइत। तहूमे सड़कक गरदासँ सभ दिन नहाइत। मुदा तइओ मरनी अपन आँखि बचैने रहैत। जखन पुरबा हवा बहै तँ पछिम मुँहे घुरि कऽ गिट्टी फोड़ैए लगैत आ जखन पछवा बहए लगैत तँ पूब मुँहे घुरि जाइत। बीच-बीचमे सुसताइयो लैत आ खैनियो खा लैत। मुदा तैयो ओकर मुँह कखनो मलिन नै होए। किएक तँ हृदएमे अदम्य साहस आ मनमे असीम बिसवास सदिखन बनल रहैत। तँ सदिखन हँसिते रहए।

भिनसुरके उखड़ाहा। करीब नअ बजैत। पूब मुँहे घुरि मरनी गिट्टी फोड़ैत। तहि बीच पच्चीस-तीस बर्खक सुगिया माथ उघारने, छपुआ बनारसी साड़ी आ ओही रंगक आंगी पहिरने, घुमौआ केश सीटि जुट्टी लटकौने, ऍंड़ीदार चमड़ौ-चप्पल आ मोजा लगौने, मुँहमे सौ नम्बर पत्ती देल पान खेने, डोलचीमे नूनक पौकेट, कडू तेलक शीशी, मसल्लाक पुड़िया आ साबुन रखि हाथमे लटकौने आबि कऽ मरनीक लग ठाढ़ भऽ गेल। मरनीक मेहनत आ बगए देखि दिल खोलि मने-मन हँसए लागल। मरनी गिट्टी फोड़ैमे मस्त। किएक किम्हरो ताकत! सुगियाक हृदएक खुशी मुँहसँ हँसी होइत निकलए चाहैत। मुदा मुँहक पानक पीत ठोरक फाटककेँ बन्न केने। तँ पानक पीत फेकब सुगियाकेँ जरुरी भेलै। जइ पजेबाक ढ़ेरीपर बैसि मरनी गिट्टी बनबैत ओहि ढ़ेरीपर सुगिया भरि मुँहक पीत फेकि देलक। पीतक दू-चारि बुन्न मरनीक देहोपर पड़लै। देहपर पड़िते ओ उनटि कऽ तकलक। टटका पीत चक-चक करैत। कनडेरिये आँखिये मरनी सुगियाक मुँह दिशि तकलक। सुगियाकेँ पान चिबबैत देखि मरनीक मनमे आगि पजड़ि गेलै। पजेबाक ढ़ेरी देखलक। साँसे थूक पड़ल। मने-मन सोचलक जे आब केना गिट्टी फोरब। ढ़ेरियो आ देहो अँइठ कऽ देलक।

आँखि गुड़ारि कऽ मरनी सुगियाकेँ कहलक- 'गै रनडिया, तोरा सुझलौ नै जे ढेरीपर थूक फेकलेँ?'

गरीब मरनीक कटाह बात सुनि सुगिया तमकि कऽ उत्तर देलक- 'तोरे बान्ह छिऔ जे हम थूक नै फेकब।'

सुगियाक बोलकेँ दबैत मरनी बाजलि- 'एतेटा बान्ह छै, तइमे तोरा कतौ थूक फेकैक जगह नै भेटिलौ जे ऐठाम फेकलैं।'

सुगिया- 'जदी एतै फेकलिऐ तँ तू हमर की करमे?'

मरनी- 'की करबौ। आँइ गै निरलज्जी, तोरा लाज होइ छौ जे सात पुरखाकेँ नाक-कान कटौलही। जेहने कुल-खनदान रहतौ तेहने ने चाइल चलमे।'

सुगिया- 'अपन देह-दशा नै देखै छीही?'

मरनी- 'की देखबै। ई देह बोनिहारनिक छिऐ। तोरा जेकाँ की हम कहियो बमैबला छौँड़ा सेने तँ कहियो डिल्लीबला छौँड़ा सेने बौआइ छी। एक चुरुक पानिमे डूमि कऽ मरि जो। तीमन चिक्खी नहितन। जहिना सात घरक तीमन चिक्खै छँ तहिना सातटा मुनसा देखै छँ। हमर पड़तर सातो जिनगीमे हेतौ। जेकरा संगे बाप हाथ पकड़ा देलक, सहि-मरि कऽ तै घरमे छी। छुछुनरि कहीं कऽ। आगि लगा ले अइ फुललाहा देहमे।'

मरनीक बातसँ सुगिया सहमि गेलि। मनमे डर पैसि गेलै जे हो न हो कहीं मारबो ने कराए। मुँह सकुचबैत, मूड़ी गोति बिदा भेलि। सुगियाकेँ जाइत देखि मरनी साड़ीक खूँटसँ तमाकुल-चून निकालि चुनबए लागलि। मुदा तैयो मन असथिर नञि भेलै। मूड़ी उठा-उठा सुगियो दिशि देखै आ मने-मन बजबो करए 'देह केहेन सीटने अछि, उढ़ढ़ी। जेना रजा-महराजाक बोहू हुअए। हाथ-पएरमे लुलही पकड़ने छनि जे कमा कऽ खेतीह। जेहने छुछुनरि छौरा सभ तेहने छौरी सभ।'

तमाकू खा मरनी ईंटा फोड़ैले घुमल आकि दादी-दादी करैत पोता दौगल आबि दुनू हाथे दुनू जाँघ पकड़ि ठाढ़ भऽ गेल। पाछूसँ पोतियो एलै। पोताकेँ कोरामे उठा मुँहमे चुम्मा लऽ पोतीकेँ कहलक- 'दाइ, बौआकेँ रोटी नै देलही। दुनू गोरे चलि जाउ, मोरामे रोटी रखने छी, लऽ कऽ दुनू गोरे खाए लेब। हम अखैन काज करै छी। कनीकालमे आबि कऽ भानस करब।'

पोता-पोती, आंगन दिशि बिदा भेल। पूब मुँहे घुरि कऽ मरनी गिट्टी फोड़ए लगल। चारिटा बन्दूकधारी बड़डी-गार्डक संग सड़कक ठीकेदार उत्तरसँ दछिन मुँहे सड़क देखैत जाइत। आगू-आगू ठीकेदार पाछु-पाछु बन्दूकधारी। ठिकेदारक नजरि मरनीपर पड़ल। मरनीपर नजरि पड़िते ठिकेदारक डेग छोट-छोट हुअए लगल। ठिकेदारक आँखि मरनीपर अटकि गेल। डेग तँ आगू मुँहे बढ़बैत मुदा आँखिक ज्योति हृदएमे ढुकि कऽ हृदएकेँ हड़बड़बै लगलै। मनमे अन्हर-तूफान उठए लगलै। जाहिसँ मने-मन विचारए लगल जे जेकरा कमाइपर हमरा चारिटा बड़डी गार्ड अछि, करोड़ो-अरबोक आमदनी अछि, तेकर ई दशा छैक। ओ तँ हमर ओहन समांग अछि जे कमासुत अछि, ओहन तँ नहि जे ऐश-मौजक जिनगी बना कमेलहे सम्पत्तिकेँ भोगैत अछि। मुदा अँटकल नहि। आगू मुँहे बढ़िते रहल। किछु दूर आगू बढ़लापर जेना मरनीक आत्मा आगूसँ रोकि देलकै। बिचहि सड़कपर ओ ठीकेदार ठाढ़ भऽ गेल। ठाढ़ भऽ एकटा सिपाहीकेँ कहलक- 'ओइ गिट्टी फोड़िनिहारिकेँ कने बजौने आउ?'

ठीकेदारक बात सुनि एकटा सिपाही मरनी दिशि बढ़ल। मरनी लग जा ओहि सिपाहीकैं कहलक- 'मालिक बजबै छथुन। से कने चल?'

गिट्टी फोड़ब छोड़ि मरनी उनटि कऽ सिपाही दिशि तकलक। सिपाहीकैं देखि मने-मन सोचै लगल जे ने हम कोनो मेमलामे फँसल छी आ ने कोनो बैंकक करजा नेने छिऐ, तखैन किअए हमरा सिपाही बजबए आएल। मन सक्कत कऽ कऽ कहलक- 'तूँ नै देखै छहक जे अखैन हम काज करै छी। जेकर बोइन लेबै ओकर काज नै करबै। अखैन जा। काजक बेरि उनहि जेतै तब ऐबह।'

मरनीक बात ठीकेदारो आ सिपाहियो सुनैत। एक-दोसरकैं देखि आँखि निच्चाँ कऽ लिअए। मुदा ठीकेदारक मन पीपरक पात जेकाँ डोलैत। कखनो मरनीक इमानदारीपर मन नचैत तँ कखनो ओकर अवस्थापर। जहि देशक श्रमिक एते श्रममे बिसवास करैत अछि ओहि देशक विकास जँ बाधित अछि तँ जरुर कतौ नै कतौ संचालनकर्ताक बेइमानी छैक। ई बात मनमे अबिते ठीकेदार अपना दिशि घुरि कऽ तकलक, तँ अपन दोख सामने आबि ठाढ़ भऽ गेलै।

सिपाही कड़कि कऽ मरनीकैं कहलक- 'नञि जेबही तँ पकड़ि कऽ लऽ जेबौ?'

सिपाहीक गर्म बोली सुनि मरनी कहलक- 'तोहर हम कोनो करजा खेने छिअह जे पकड़िकैं लऽ जेबह। अपन सुखलो हड्डीकैं धुनै छी, खाइ छी।'

मरनीक बात सुनि सिपाहियोक मन उनटए-पुनटए लगलै। एक दिशि मालिकक आदेश दोसर दिशि मरनीक विचार। आखिर, एहेन लोकक बीच एहेन सक्कत विचार अबैक कारण की छै? अनका देखै छिऐ जे सिर्फ सिपाहीक बरदी देखि डरा जाइत अछि, भलेहीं ओ सरकारक सिपाही नहियो रहए। मुदा हमरा तँ सभ कुछ अछि तैयो अइ बुढ़ियाकैं डर नै होइ छै। फेर मनमे एलै जे हम किछु छी तँ नोकर छी मुदा ई किछु अछि तँ स्वतंत्र बोनिहारिन। स्वतंत्र देशक स्वतंत्र श्रमिक। जे देशक आधार छी। आखिर देश तँ एकरो सबहक छिऐ।

सिपाहीकैं ठाढ़ देखि ठीकेदारे पाछू ससरि कऽ मरनी लग आएल। मरनियो सभकैं देखैत आ मरनियोकैं सभ। ठीकेदार मरनीक आँखि देखैत। आँखिमे सुरुजक रोशनी जेकाँ प्रखर ज्योति। ललाटसँ आत्म-विश्वास छिटकैत। मधुर स्वरमे ठीकेदार पुछलक- 'चाची, अहाँक परिवारमे के सभ छथि?'

ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक आँखिमे नोर अबए लगलै। मन पड़ि गेलै अपन पति, बेटा आ पुतोहुक मृत्यु। टघरैत नोरकैं आँचरसँ पोछि बाजलि- 'बौआ, हमर घरबला, बेटा आ पुतोहु ठनकामे मरि गेल। अपने छी आ पिलुआ जेकाँ दूटा पोता-पोती अछि।'

ठिकेदार- 'बच्चा सभ स्कूलो जाइए?'

नै। एक तँ गाममे इस्कूल नै छै। तहूमे पहिने गरीब लोकक धिया-पूताकैं पेट भरतै तब ने जाएत। ने भरि पेट अन्न होइ छै आ ने भरि देह वस्त्र, ने रहैक घर छै, तखन इस्कूल कना जाएत।'

मरनीक बात सुनि ठीकेदार सहमि गेल। मने-मन सोचए लगल जे आँखिक सोझमे देखै छिऐ ओ झूठ कोना भऽ सकैत अछि। एत्ते भारी काज केनिहारक देहपर कारी खट-खट कपड़ा छै, तोहूमे सइयो चेफड़ी लागल छै, काज करै जोकर उमेर नै छै, तैपर एते भारी हथौरी पजेबापर पटकैत अछि। ठिकेदारक मन दहलि गेलै। जहिना अकास आ पृथ्वीक बीच क्षितिज अछि, जाहि ठाम जा चिड़ै-चुनमुनी लसकि जाइत अछि, तहिना ठीकेदारक मन सुख-दुखक बीच लसकि गेल। जेना सभ कुछ मनक हरा गेलै। शून्न भऽ गेलै। ने आगूक बाट सूझै आ ने पाछुक। मरनीसँ आगू की पूछब से मनमे रहबे ने केलै। साहस बटोरि पुछलक- 'भरि दिनमे कते रुपैया कमाइ छी?' ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक मनमे झड़क उठलै। बाजलि- 'कते कमाएब ! जेहने बैमान सरकार अछि तेहने ओकर मनसी छै। चारि दिनमे एकटा पजेबाक ढ़ेरी फोड़ै छी तँ तीन-बीस रुपैया दैए। अइसँ तीन तूरक पेट भरत? भरि दिन ईंटा फोड़ैत-फोड़ैत देह-हाथ दुखाइत रहैए मुदा एकटा गोटियो कीनब से पाइ नै बँचैए।

ठिकेदारक आँखिमे नोर आबि गेलै। मनुष्यता जागि गेलै। मुदा ई मनुष्यता कते काल जिनगीमे अँटकतै? जिनगी तँ उनटल छै। जाहिमे मनुष्यता नामक कोनो दरस नहि छैक।

हारि-जीत

चारिमे दिन दुनू प्राणी सोमन विचारलक जे आब एहि गाममे जीयब कठिन अछि तँ गामसँ चलिये जाएब नीक हएत। दुनियाँ बड़ी टा छैक। जतए जीबैक जोगार लागत ततए रहब। सामान सभ बान्हि, करेजपर पाथर राखि गामसँ जेबाक लेल दुनू प्राणी तैयार भऽ गेल। भुखल पेट ! सुखाएल मुँह ! निराश मन ! ओसारपर बैसल दुनू प्राणीक आँखिसँ दहो-बहो नोर टघरैत रहै ! दुनियाँ अन्हार देखि, उठैक साहसे नहि होइत छलै। सोमनक मनमे होइत जे की छलहुँ आइ की भऽ गेलहुँ? रंग-बिरंगक विचार, पानिक बुलबुला जेकाँ दुनूक मनमे उठैत आ विलीन भऽ जाइत ! आगूमे मोटरी राखल रहै। जहिना सीमा परहक सिपाही छातीमे गोली लगलासँ घाइल भऽ जमीनपर खसि छटपटाइत, तहिना दुनू प्राणी सोमन दुखक अथाह समुद्रमे डुबैत-उगैत। भिनसरसँ बारह बजि गेलैक।

सहरसा जिलाक गाम मेरचा। पूबसँ कोशी आबि गामक कटनिया करए लागल। गर लगा-लगा गामक लोक जहाँ-तहाँ पड़ाए लगलाह। ओना सरकार पुबरिया बान्हक बाहर पुनर्वासक व्यवस्था सेहो करैत रहए मुदा ओहिसँ बोनिहारकेँ की सुख हएत? ओकरा सबहक तँ रोजगारो छिना गेल।

पत्नी, बेटा-पुतोहुक संग फुलचनो पंडित गाम छोड़ि पछिम मुँहे बिदा भेलाह। घरारी छोड़ि अपना एक्को बीत जमीन-जाएदाद नहि छलनि। मुदा अपन व्यवसाएक सभ लूरि छलनि तँ मनमे चिन्तो ओतेक नहि रहनि। चिन्ता मात्र रहनि ठौर भेटबाक। कखनो-कखनो मनमे होइन जे अपन गाम तँ बुझल- गमल अछि, आन गाम केहन होएत केहन नहि? मुदा उपाइये की? जीबैक लेल तँ मनुष्य सभ किछु करैत अछि। पछबरिया बान्हसँ मील भरि पाछुये रहथि आकि बान्हपर नजरि पड़लनि। बान्ह देखितहि आशा जगलनि। किएक तँ ओइ बान्हक पछिम कोनो धार-धुर नहि अछि। मुस्कुराइत फुलचन पत्नीसँ पुछलक- "भगवान रामक खिस्सा बुझल अछि?"

फुलचनक मुँह दिशि देखि मुनिया बजलीह- "बहुत दिन पहिने सुनने छेलौं, आब ओते धियान नै अए।"

"जहिना अपना सभ गाम छोड़ि कऽ जा रहल छी तहिना ओहो सभ गेल रहथि। अपना सभकेँ तँ बटखरचो अछि, हुनका सभकेँ तँ सेहो नै रहनि।"

तहि बीच फुलचनक पुतोहु कपली सासुक बाँहि पकड़ि पाछु मुँहे घुमा कहलक- "ऐँड़ीकेँ डोका काटि देलक। खुन बहैए। कनी कतौ बैसथु जे लत्ता बान्हि देबै।"

ऐँडी देखि मुनिया कहलखिन- "कनियाँ, कतौ गाछो ने देखै छिऐ जे कनी सुस्ताइयो लैतौं। हमरो पियासे कंठ सुखैए।"

सासु-पुतोहुक बात सुनि फुलचन बाजल- “कनियाँ, जानिये कऽ तँ दैवक डाँग लागल अछि, तखन तँ कहुना कऽ बान्ह धरि चलू। एक तँ रौदाइल छी तइपर सँ जत्ते काल अँटकब तते रौदो बेसिये लागत।”

बान्हपर पहुँचतहि सभ निसाँस छोड़लनि। बान्हक पछिमसँ एकटा आमक गाछ रहै। छाहरि देखि सभ केओ गाछ तर पहुँचए गेलाह। एकटा बटोही पहिनहिसँ तौनी बिछा पड़ल छल। कने काल सुस्तेलाक बाद बटोहीकेँ फुलचन पुछलखिन- “भाय, तमाकू खाइ छह?”

जेबीसँ चुनौटी निकालि फुलचनक आगूमे फेकैत ओ बटोही बाजल- “कोन गाम जेबह?”

कोन गामक नाओ सुनितहि फुलचनक हृदए सिहरि गेलनि। मिरमिरा कऽ कहलखिन- “भाय, कोन गाम जाएब तेकर तँ ठेकान नहि अछि। मुदा मेरचासँ एलौंहेँ। धारमे गाम कटि रहल अछि। तेँ गाम छोड़ि जा रहल छी। जइ गाममे कुम्हार नञि हएत तइ गाममे बसि जाएब।”

कुम्हारक नाओ सुनितहि बटोही उठि कऽ बैसैत कहलखिन- “हमरो गाममे कुम्हार नै अछि। चलह, हमरे गाममे रहि जइहह।”

आशा देखि सोमन पुछलकनि- “ऐठामसँ कत्ते दूर अहाँक गाम अछि?”

“अढ़ाइ कोस। हमहूँ बहीनिये अइठीनसँ अबै छी। गामे जाएब।”

बेर झुकैत पाँचो गोटे बिदा भेलाह। लछमीपुर पहुँचतहि बटोही रतीलाल फुलचनकेँ कहलक- “भाइ, यएह हमर गाम छी।”

गाछी बँसबाड़ि देखि फुलचन पंडित मने-मन खुश! मने मन आकलन कएलनि जे जारनक अभाव कहियो नहि हएत। गाममे प्रवेश करितहि बीघा दुइयेक पोखरि देख फुलचन मने-मन तँइ कएलनि जे नहि कतहुँ रहैक ठौर भेटत तँ पोखरिक महार तँ अछि। पोखरिक बगलेमे सभ क्यो रुकि जाइ गेलाह। रत्तीलाल आगू बढ़ि गेलाह।

जहिना गाममे नट-किच्चककेँ अबितहि धिया-पूता देखए अबैत तहिना फुलचनो सभ तुरकेँ देखए गामक धिया-पूता आबए लागल। गाममे कुम्हार अएबाक समाचार पसरल। थोड़े कालक बाद फुलचन पंडित बेटा सोमनकेँ हाथ पकड़ि कहलखिन- “बौआ, तूँ सभ एतै बैसह। हम कने गामक बाबू-भैया सभसँ भेँट केने अबै छी।”

कहि फुलचन गाम दिशि बिदा भेलाह। इजोरिया पख रहै तँ सूर्यास्त भेलोपर दिने जेकाँ लगै। जाधरि फुलचन घुरि कऽ अएबो नहि कएलाह तहिसँ पहिनहि गामक पनरह-बीस टा नवयुवक पहुँच गेल। सबहक मनमे नव उत्साह रहै। किएक तँ एखन धरि जे अभाव कुम्हारक गाममे रहल ओ पूर्ति भऽ रहल अछि। जहिना आवश्यकताक वस्तु पूर्ति भेलासँ किनको मनमे खुशी होइ छै, तहिना फुलचनक अएलासँ गामक लोकक मनमे खुशी रहै। पोखरिसँ थोड़े हटि कट्ठा तीनियेक परती छलै। सभ युवक विचारलक जे ओहि परतीपर बसाओल जाए। ताधरि गाम घुरि कऽ फुलचनो अएलाह। फुलचन दुनू बापुत परती देखलनि। परती देखि सोमन पिता दिशि घुमि बाजल- “कुम्हारक बसै जोकर परती अछि, मात्र पिऐबला पानिक दिक्कत अछि।”

तइपर पिता फुलचन पंडित जबाव देलनि- "एखन ने पानिक दिक्कत अछि मुदा जखन अपने इनार खुनैयोक आ पाटो बनबैक लूरि अछि तखन दिक्कत किए रहत?"

घरारी पसन्द होइतहि हो-हा करैत युवक सभ बाँस काटए बिदा भेलाह। जे जेहन बाँसबला, तिनकामे तहि हिसाबसँ बाँस काटि पच्चीसटा बाँस जमा केलनि। इहो दुनू बापुत संग दैत रहथिन। हाथे-पाथे सभ घरक काजमे जुटि गेलाह। रातिक बारह बजैत-बजैत तेरह हाथक घर ठाढ़ भऽ गेलैक।

प्रात भेने दुनू बापूत विचारलनि जे एक तँ नव गाम, तहूमे नव बाँस। काज तँ बहुत अछि। तँ काजकेँ सोझरा कऽ चलए परत। रहै जोकर घर भलेहीं नहि भेल मुदा दिन कटै जोकर तँ भइये गेल। घर-आंगन बनबैसँ लऽ कऽ कारोबार धरिक काजमे हाथ लगबए पड़त। फुलचन सोमनसँ पुछलखिन- "बौआ, मेरचासँ कोन-कोन समान अनने छह?"

सोमन कहलक- "बाबू, सोचलहुँ जे आन गाममे लगले सभ कुछ थोड़े भऽ जाएत। तँ चाक बनबैक शिला, तख्ता, फट्टा, जौर, बेलक कील सभ किछु अनने छी।"

खुशीसँ गद-गद होइत फुलचनक मुँहसँ निकलल- "बाह-बाह। चाकक ओरियान तँ भइये गेलह। आरो की सभ अनने छह?"

"चकैठ, हथमैन, पिटना, पीरहुर, मजनी, छन्ना सेहो अनने छी।"

मुस्कुराइत फुलचन बाजल- "काजक तँ सभ किछु अछिए। आइए चाको बनबैमे हाथ लगा दहक। एक गोरे पात खरड़ि अनिहह। एक गोरे घरक लेबिया-मुनियामे हाथ लगा दहक। हमरा तँ समचे सभ ओड़िअबैमे समए बीति जेतह।"

दस दिनक मेहनतिसँ रहै जोकर एकटा घर बनि गेलै। चाको सुखा गेल। जारनोक ओरियान भऽ गेलैक। चाक गारि, माटि बना सोमन चाक लग बैसल। जहिना उद्योगपतिकेँ नव कारखानाक उद्घघाटन दिन मनमे खुशी रहै छै, आइ तहिना सभ प्राणी फुलचनोकेँ रहनि। हँसैत फुलचन पंडित बेटा दिशि देखैत बजलाह- "बौआ, जते सामान बनबैक लूरि अछि, सभ सामान बना, पका कऽ खरिहानमे पसारि, साँँझे गौवाँकेँ हकार दऽ देखा देबनि। जिनगीक परीक्षा छी।"

आबा उघारि चारु गोटे खल लगा-लगा सभ वस्तु- कूड़, हाथी, ढकना, कोशिया, दीप, पाण्डव, गणेश, लक्ष्मी, मटकूर, छाँछी, डाबा, घैल, सामा-चकेबा, पुरहर, अहिबात, कोहा, फुच्ची, सरबा, सीरी, भरहर, आहूत, धुपदानी, पातिल, तौला, मलसी, बसनी, उन्नैसमासी, कोही, लाबनि, कलश, कराही, रोटिपक्का, अथरा, कसतारा, लग्जोरी, धिया-पूता खेलैक जाँत, नादि, लोइट, माँट, टारा, टारी, बधना इत्यादि चारि-चारि खल पावनिक, बिआहक, उपनयनक, श्राद्धक, पोखरिक यज्ञ-कीर्तनक आ घरैलू काजक वस्तु सभ अलग-अलग सजा कऽ राखल। फुलचन दुनू बापूत जा गौवाँकेँ देखैक हकार देलनि।

चारु प्राणी फुलचनकेँ अपना लूरिक ठेकान नहि छलन्हि किऐक तँ सभ काजक लेल एकबेर सभ समान कहियो नहि बनौने छलाह। मुदा आइ सभटा बना सभकेँ ई

विश्वास भऽ गेलनि जे जहिना बड़का व्यापारिक दोकानमे अनेको किस्मक सौदा रहै छै तहिना तँ हमरो अछि!

समए बीतैत गेल। अधिक बएस भेने दुनू प्राणी फुलचन शरीरसँ कमजोर हुअए लगलाह। सोमनोकेँ एकटा बेटा, एकटा बेटी भेलै। परिवार बढ़लै। खरचो बढ़लै।

समए आगू मुँहे ससरैत गेल। दुनू प्राणी फुलचन मरि गेलाह। ....बेटीक बियाह सेहो सोमन कऽ लेलक। सोमनक बेटा रामदत दुर्गापूजा देखए मात्रिक गेल। ओतहिसँ बौर गेल। माटिक बरतनक जगह द्रव्यक बर्तन सभ परिवारमे धीरे-धीरे बढ़ए लगलै। जहिसँ माटिक बर्तनक मांग कमए लगल। घटैत-घटैत माटिक बरतन परिवार छोड़ि देलक। रहि गेल मात्र पावनि, उपनयन, बिआह आ श्राद्ध।

अपन घटैत कारोबार आ टूटैत परिवारसँ दुनू प्राणी सोमन चिन्तित होअए लागल। आगूक जिनगी अन्हार लागए लगलै। कोनो रस्ते नहि देखाइ। सोचैत-बिचारैत सोमनक नजरि एकटा काजपर पड़लै। खपड़ा बनौनाइ। खपड़ापर नजरि पहुँचतहि मुस्कुराइत सोमन पत्नीकेँ कहलक- “एकटा बड़ सुन्दर काज अछि। कमाइयो नीक आ काजो माटियेक।”

अकचकाइत पत्नी कपली पुछलकनि- “कोन काज?”

सोमन- “खपड़ा बनौनाइ।”

कने काल गुम रहि कपली बाजलि- “थोपुआ खपड़ा तँ हमहूँ बना सकै छी मुदा नड़िया नै हएत।”

जोर दैत सोमन बाजल- “हँ, हएत ! चाक परक भलेहीं नञि हूअए मगर मुंगरी परक किअए ने हएत।”

“हँ, से तँ हएत।”

दुनू प्राणी खपड़ा बनबए लगल। लोककेँ बुझल नहि रहै तेँ अगुरबार क्यो खोज नहि केलक। मुदा जखन एकटा भट्ठा लगौलनि तखन गामक लोक देखलखिन। खपड़ो नीक, पाको बढ़ियाँ। गिनतियेक हिसाबसँ खपड़ा बेचए लगल। बढ़िया आमदनी हुअए लगलनि।

बढ़िया कारोबार चलल। मुदा सिमटिक एस्बेस्टस अबितहि खपड़ाक मांग कमए लगल। खपड़ा बनौनिहारकेँ मंदी आबि गेलनि। ओना सोमनक परिवारो छोट रहै। मात्र दुइये गोटे परिवारमे रहै। मुदा तैयो गुजरमे कटमटी हुअए लगलै। फेर जिनगी भारी हुअए लगलै।

हँसी-खुशीसँ जीवन-यापन करैबला परिवार एहन स्थितिमे पहुँचि गेल जे साँझक-साँझ चुल्हि नहि पजरैत। दोसर कोनो लूरि नहि। अपन खसैत जिनगी देखि कपली पतिक मुँह दिशि तकैत बाजलि- “एना कते दिन दुख काटब ? जखन हाथ-पएर तना-उताड़ अछि आ काज करए चाहै छी तखन की अही गामकेँ सीमा-नाङरि छैक? चलू एहि गामसँ।”

पत्नीक विचार सुनि सोमनक आँखि नोरा गेलै। किछु बजैक हिम्मते नहि होइ। मने-मन सोचए लागल जे जाहि लूरिक चलते एखन धरि जीलहुँ ओ लूरि

आब मरि रहल अछि। दोसर लूरि तँ अछि नहि। की करब? असमंजसमे पड़ल पतिकेँ देखि कपली बजलीह- "दुनियाँ बड़की टा छै। जतै पेट भरत ततै रहब। जहिना मेरचासँ आबि लछमीपुरमे एते दिन रहलौं तहिना अइ गाम छोड़ि दोसर गाममे रहब।"

पत्नीक विचारसँ सहमत होइत सोमन बाजल- "अहाँक विचार मानि लेलौं। अइ गामसँ चारिम दिन चलि जाएब। बीचमे जे दू दिन बाँचल अछि तइमे अहूँ आ हमहूँ गाममे टहलि कऽ सभकेँ जना दिअनु जे जहिना एक दिन हँसी-खुशीसँ छाती लगेलहुँ तहिना आब जा रहल छी। चुपचाप गामसँ चलि जाएब नीक नै हएत। गामसँ तँ चुपचाप ओ भगैत अछि जे अधलाह काज केने रहैत अछि।"

दुआरिए-दुआरिए दूनू प्राणी गाममे घुरि सभकेँ कहि देलकै- "गामसँ चलि जाएब।"

प्रात होइतहि दुनू प्राणी घरक सभ सामानक मोटरी बान्हि ओसारपर रखलक। भुखल पेट! सुखाएल मुँह! निराश मन! तँ आगू बढ़ैक डेगे नै उठैत।

ओसारापर बैसल एक-दोसराक मुँहो देखैत आ कनबो करैत। दुनूक करेज छहोछीत भऽ गेल।

सबा बारह बजैत। टहटहौआ रौद। हवा शान्त। साफ मेघ। घामसँ तर-बत्तर, माथपर मोटरी, हाथमे वी.आइ.पी. बैग नेने सोमनक बेटा रामदत आंगन पहुँचल। माए-बापक दशा देखि छाती काँपए लगलैक। मेह जेकाँ आगूमे ठाढ़। सोगे दुनूक आँखि बन्न। बन्न आँखिसँ नोर टघरैत ! दुनू अधीर। करेजकेँ थीर करैत रामदत बाजल- "बाबू।"

बाबू शब्द कानमे पड़ितहि दुनू बेकतीक आँखि खुजलै। मुदा नोर टघरितहि रहै। किन्तु आब नोरक रुप बदलए लगल। एखन धरि जे नोर सोगसँ खसैत ओ स्नेहमे बदलि गेलै। अकचकाइत सोमनक मुँहसँ निकलल- "बौआ।"

बिचहिमे झपटि कपली बाजलि- "बे ट-ट-अ-आ।"

ओसारापर बैग-मोटरी राखि रामदत पिताकेँ गोड़ लगै लए झुकल की तहि बीच कपली उठि कऽ दुनू हाथे पजिया कऽ पकड़ि चुम्मा लैत पुनः बाजलि- "भाग नीक छेलौ बेटा जे हम सभ भेँट भेलियौ, नत्रि तँ तोँ कतऽ रहितेँ आ हम सभ कतऽ रहितौं.......!"

माएकेँ गोड़ लागि रामदत मोटरी खोलि दू किलो भरिक रसगुल्लाक पोलीथिन, किलो भरि कटलेट, किलो भरिक बीकानेरी भुजियाक झोरा निकालि, घुसुका कऽ रखलक। दुनू प्राणीक भुखसँ जरल मन रहै। जहिना गाएक गौजुरा बच्चा माएक थन दिशि आँखि गड़ा देखैत रहैत, तहिना रसगुल्ला, भुजिया दिशि दुनूक नजरि एकाग्र भऽ गेलै। दुनूक लेल नव वस्त्र निकालि फुटा-फुटा रखलक। चमकैत स्टीलक थारी, लोटा, गिलास, बाटी एक भागमे रखलक। चाह बनबैक केटली, कप, छन्ना, आयरन, नारियल तेलक डिब्बा आरो-आरो सामान निकालि चद्दरिकेँ झाड़लक। जहिना चुल्हिक आगिमे उपरसँ थोड़बो पानि पड़लासँ उपर ठंढ़ापन अबै लगैत, तहिना दुनूक नजरि चीज-वस्तु देखि शीतल हुअए लगलै। एकदम स्नानोपरान्तक शीतलता जकाँ! सोमनक

शीतल मनसँ मधुर शब्द निकललै- ''बच्चा गरमाएल छह। पहिने नहा लएह। तखन मन चैन हेतह।''

माए-बापक मुँह देखि रामदत बाजल- ''बाबू हमरो भूख लागल अछि। पहिने कनी-कनी खा लिअ। पछाति नहाएब।''

कहि रसगुल्लाक पोलीथिनक गिरह खोलि दू बाकुट सोमनक आगू स्टीलक थारीमे आ दू बाकुट कपलीक थारीमे दऽ कटलेट, भुजियाक गिरह खोलि बाजल- ''जते मन हुअए तते खाउ। नहाइक कोनो धड़फड़ी थोड़े अछि?''

अपनो मुँहमे रसगुल्ला दैत, बैग खोलि, मनी बैग निकालि रामदत सोमनक आगूमे देलकनि। रुपैआ देखि कपलीक मन टिकुली जेकाँ पहाड़पर चढ़ि गेल। धरतीकेँ गोड़ लगलनि।

खाइत-नहाइत बेर टगि गेलै। पछबरिया घरक छाहरि अधा आंगन पसरि गेल। घरक कोनमे जहिना मोथीक पुरना बिछान बिछौल छल तहिना बिछौले रहै। घरसँ बिछान निकालि कपली पछबरिया ओसार लगा बिछौलक। उपरसँ नवका जाजीम बिछौलक। नवका सिरमा रखलक। तीनू गोटे बैसि गप-सप्प करए लगलाह। सोमन- ''बौआ, तू बौर कोना गेलहक?''

मन पाड़ैत रामदत बाजल- ''बाबू हम बौरुलहुँ कहाँ ! मामा गाममे मुजफ्फरपुरक छलगोरिया दुर्गाक मुरती बनबैले आएल रहै। ओहो कुम्हारे रहए। तीन गोरे रहै। ओकर छोटका बेटा हमरे एतेटा रहै। ओकरासँ हमरा दोस्ती भऽ गेल। ओकरे संगे चलि गेलियह।''

बिचहिमे कपली टपकलीह- ''रौ डकूबा, तोरा चिठियो-पुरजी नञि पठौल भेलौ।''

अपनाकेँ स्मरण करैत रामदत बाजल- ''माए, काज सिखैमे सभ किछु बिसरि गेल रहियौ। तोरो सबहक हालत तँ बँढ़िये रहौ। तखन चिन्ते कथीक करितहुँ।''

सामंजस्य करैत सोमन- ''जहिया जे दुख लिखल छल से भोगलहुँ। यएह तँ भगवानक लीला छिअनि। कखनो दुख तँ कखनो सुख।''

रामदत- ''बाबू एहन दशा भेलह कोना?''

बेटाक बात सुनि सोमनक आँखि भरि गेल, उत्तर देलक- ''बौआ, अखन धरिक जते लूरि-बुद्धि छलए से सभ पुरान भऽ गेल। नवका सिखलौं नै।''

पिताक बात सुनि रामदत नमहर साँस छोड़ि मुस्कुराइत कहलक- ''बाबू, हमरा तँ छुट्टिये नै दैत रहए। बीस-बीस हजार रुपैआ मासमे कमाइ छी। तइपर सँ मूर्ति बनबौनिहारक कतार लागल रहैए।''

बिचहिमे कपली टोकलकनि- ''बेटा, की सभ लूरि छौ?''

मुस्कुराइत रामदत कहए लगलनि- ''माए, माटिसँ लऽ कऽ सिमटी धरिक मुरती, नाच-तमाशाक परदा, घर सभमे चित्र सभ बनबैक लूरि अछि।''

बेटाक बात सुनि सोमनक अहं जगलै। बाजल- ''बौआ, जहन एते कमाइक लूरि छह, तहन नोकरी किए करै छह?''

मुस्कुराइत रामदत कहलकनि- ''एते दिन जे नोकरी केलौं ओ नोकरी नञि भेल।

साल भरि तँ माटिये सनैमे लागि गेल। साल भरि खढ़ बन्हैमे आ पहिल माटि लगबैमे चलि गेल। तेसर साल मुरती बनबैमे लागल। चारिम साल मुरतीक आँखि बनबैमे लागल। एहि साल पाँचम बर्ख, गुरु दैछना चुका अएलहुँहेँ। आब अपन कारोबार करब। जखने अपन कारोबार हएत तखने ने दू-चारि गोटे सिखबो करत!''

अपन मजबूरी देखबैत सोमन कहल- ''बौआ, अपन चिन्ता जते शरीरकेँ नै खेलक तइसँ बेसी तोहर खेलक। किअए तँ हरदम मनमे नचैत रहए जे वंश अंत भऽ गेल। जाबे दुनू परानी छी ताबै धरि....। मुदा आइ सबुर भऽ गेल जे जाबे बीटमे बाँसक चढ़न्त रहै छै, ताबे उन्नैससँ बीस होइत जाइ छै मुदा निच्चाँ मुँहे होइते सरसरा कऽ कोपरो सुखए लगै छै। आशा भऽ गेल जे हमरो वंश एकसँ एक्कैस हएत!''

बेटाकेँ आधुनिक मुर्तिकार रूपमे पाबि सोमन गद्-गद् भऽ गेल। हृदए अह्लादसँ भरि गेलै ! नजरि सहजहि बेटाक नजरिमे गड़ि गेलै। ध्यान बढ़ंत बाँसक बीटमे बिचरण करए लगलै...! मनमे भेलै जे बेटासँ इहो नव गुण सीखत। एखनो ई दुनू व्यक्ति बहुतो काज कऽ सकैए।

ठेलाबला

टाबरक घड़ीमे बारह बजेक घंटी बजितहि भोलाक निन्न टूटि गेलनि। ओछाइन परसँ उठि सड़कपर आबि हियासए लगला तँ देखलनि जे डंडी-तराजू माथसँ कनिये पछिम झुकल अछि। मेघनक दुआरे सतभैयाँ झँपाएल। जेम्हर साफ मेघ रहए ओम्हुरका तरेगण हँसैत मुदा जेम्हर मेघोन रहए ओम्हुरका मलिन। गाड़ी-सबारीसँ सड़क सुनसान। मुदा बिजलीक इजोत पसरल। गस्तीक सिपाही टहलैत। सड़क परसँ भोला आबि ओछाइनपर पड़ि रहला। मुदा मन उचला-चाल करैत रहनि। सिनेमाक रील जेकाँ पैछला जिनगी मनमे नचैत। जहिना चुल्हिपर चढ़ल बरतनक पानि तरसँ उपर अबैत तहिना भोलोक मनक खुशी हृदएसँ निकलि चिड़ै जेकाँ अकासमे उड़ैत। किएक नहि खुशी अओतैक? हराएल वस्तु जे भेटि गेलैक। मन गेलनि परसुका पत्रपर। जे गामसँ दुनू बेटा पठौने रहनि। असंभव काज बुझि विश्वासे नहि होइत रहनि। पत्र तँ नहि पढ़ल होइत रहनि मुदा पढ़बै काल जे पाँती सभ सुनने रहथि, ओहिना आँखिक आगू नचैत रहनि। पत्र उघारि आँखि गड़ा देखए लगलथि। ''बाबू, पाँच तारीखकेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करए जाएब। इच्छा अछि जे घरसँ विदा हेबा काल अहाँकेँ गोर लागि घरसँ निकली। तँ पाँच तारीखकेँ दस बजेसँ पहिनहि अपने गाम पहुँचि जाइ।'' पत्रक बात मनमे अबितहि भोला गाम आ शहरक बीचक सीमापर लसकि गेलाह। मनमे ऐलनि, समाजसँ निकलि छातीपर ठेला घीचि, दूटा शिक्षक समाजकेँ देलिऐक, की ओहि समाजक आरो ऋण बाकी छैक? जँ नहि तँ किएक ने छाती लगाओताह। जहिसँ मनमे खुशी उपकलनि जे जहिना गामसँ धोती गोल-गोला आ दू टाका लऽ कऽ निकलल छलहुँ, तहिना देहक कपड़ा, सनेस, चाह-पानक खर्च छोड़ि किछु नहि एहिठाम लऽ जाएब। चिड़ै टाँहि देलकै, फेर ओछाइन परसँ उठि निकललाह, तँ देखलखिन जे बाँस भरि ऊपर भुरुकबा आबि गेल अछि। चोट्टे घुरि कऽ आबि संगी-साथीकेँ उठा अपन सभ किछु बाँटि देलखिन, अपनाले खाली टिकटक खर्च, सनेस आ पाँकेट खर्च मिला सए रुपैआ राखि, कपड़ा पहीरि, धर्मशालाकेँ गोड़ लागि हँसैत निकलि गेलाह।

जखन आठे बर्खक भोला रहथि तखनहि माए मरि गेलखिन। तीनिये मासक पछाति पिता रघुनी चुमाओन कऽ लेलखिन। ओना पहिलुको पत्नीसँ चारि सन्तान भेल रहनि। मुदा खाली भोलेटा जीवित रहल। सत्माएकेँ परिवारमे ऐने भोलाकेँ सुखे भेलनि। ओना गामक जनिजातियो आ पुरुखोकेँ होइत जे सत्माए भोलाकेँ अलबा-दोलबा कऽ घरसँ भगा देतैक, नहि तँ परिवारमे भिनौज जरुर कराइये देतीह। मुदा सबहक अनुमान गलत भेलनि। भोला घरसँ सोलहन्नी फ्री भऽ गेलाह। फ्री सिर्फ काजे टामे

भेला, मान-दान बढ़िये गेलनि। दुनू साँझ भानस होइतहि माए फुटा कऽ भोलाले सीकपर थारी साँठि कऽ राखि दैत छलीह। भलेहीं भोला दिनुका खेनाइ साँझमे आ रौतुका खेनाइ भोरमे किएक ने खाथि।

परोपट्टामे जालिम सिंह आ उत्तम चन्दक नाच जोर पकड़ने। सभ गाममे तँ नाच पार्टी नहि मुदा एक गाममे नाच भेने चारि कोसक लोक देखए अबैत।

भोलाक गामक विशौलक नाच पार्टी सभसँ सुन्दर अछि। जेहने नगेड़ा बजौनिहार तेहने बिपटा। जाहिसँ पार्टीक प्रतिष्ठा दिनानुदिन बढ़ितहि जाइत। घरसँ फ्री भेने भोला नाचक परमानेंट देखिनिहार भऽ गेलाह। नाचो भरि रौतुका, नहि कि एक घंटा, दू घंटा, तीन घंटाक। जेहने देखिनिहार जिद्दी, तेहने नचिनिहारो। गामक बूढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ छौंड़ा-मारड़ि भरि मन मनोरंजन करैत। मनोरंजनो सस्ता। ने नाच पार्टीकेँ रुपैआ दिअ पड़ैत आ ने खाइ-पीबैक कोनो झंझट। ओना गामक बारह-चौदह आना लोकक हालतो रद्दिये। मुदा जे किसान परिवार छल ओ अपना ऐठाम मासमे एक-दू दिन जरुर नाच करबैत छलाह। ओ नटुआकेँ खाइयोले दैत छलथि आ कोनो-कोनो समानो कीनिकेँ दैत छलखिन। भोलो नाच पार्टीक अंग बनि गेल, डिग्री सेदैक जिम्मा भेटि गेलैक। डिग्री सेदैक जिम्मा भेटितहि काजो बढ़ि गेलैक। घूरक लेल जारनोक ओरियान करए पड़ैत छलै। अपना काजमे भोला मस्त रहए लगल। मुदा एतबेसँ ओकर मन शान्त नहि भेलैक। काजक सृजन ओ अपनोहु करए लगल। स्टेजक आगूमे जे छोटका धिया-पूता बैसि पी-पाह करैत, ओकरो सभपर निगरानी करए लगल। आब ओ चुपचाप एकठाम नहि बैसैत। घूमि-घूमि कऽ महफिलोक निगरानी करए लगल। आरो काज बढ़ैलक। नटुआ सभकेँ बीड़ी सेहो लगबए लगल। बीड़ी सुनगबैत-सुनगबैत अपनो बीड़ी पीब सीखि लेलक। किछुए दिनक पछाति भोला बीड़ीक नमहर पियाक भऽ गेल। किएक तँ एक्के-दू दम जँ पीबए तैयो भरि रातिमे तीस-पैंतीस दम भऽ जाइत छलैक। जहिसँ भरि राति मूड बनल रहैत छलैक।

बीड़ीक कसगर चहटि भोलाकेँ लागि गेलै। रातिमे तँ नटुऐ सभसँ काज चलि जाइत छलैक मुदा दिनमे जखन अमलक तलक जोर करैत तँ मन छटपटाए लगैत छलैक। मूडे भंगठि जाइत छलैक। मूड बनबैक दुआरे भोला बापक राखल बीड़ी चोरा-चोरा पीबए लगल। जहिक चलैत सभ दिन किछु नहि किछु बापक हाथे मारि खाइत। एक दिन एक्केटा बीड़ी रघुनीकेँ रहनि। भोला चोरा कऽ पीबि लेलक। कोदारि पाड़ि रघुनी गामपर अएलाह तँ बीड़ी पीबैक मन भेलनि। खोलिया परसँ आनए गेलाह तँ बीड़ी नहि देखलनि। चोटपर भोला पकड़ा गेलै। सभ तामस रघुनी भोलापर उताड़ि देलखिन। मारि खाए भोला कनैत उत्तर मुँहेक रास्ता पकड़लक। कनिये आगू बढ़ल आकि करिया काकाक नजरि पड़लनि। भोलाक कानब सुनि ओ बुझि गेलखिन जे भीतरिया मारि लागल छै। पुचुकारिकेँ पुछलखिन- "की भेलौ रौ भोला?"

करिया काकाक बात सुनि भोला आरो हिचुकि-हिचुकि कानए लगल। हिचुकैत भोला कनिये जोरसँ काकाकेँ कहलकनि, जे कानबक अवाजमे हरा गेलैक। काका भोलाक बात नहि बुझलखिन। मुदा बिगड़लखिन नहि, दहिना डेन पकड़ि रघुनीकेँ

कहए बढ़लथि। काकाकेँ देखि रघुनियोक मन पघिल गेलैक। काका कहलखिन- ''रघुनी, भोला बच्चा अछि किऐक तँ विआह नञि भेलैए। तँ नीक हेतह जे विआह करा दहक। अपन भार उतड़ि जेतह। परिवारक बोझ पड़तै अपने सुधरत। अखन मारने दोषी हेबह, समाज अबलट्ट जोड़तह जे बाप कुभेला करैत छैक। जनिजातिक मुँह रोकि सकबहक ओ कहतह जे ''माए मुइने बाप पित्ती।''

करिया काकाक विचार रघुनीक करेजकेँ छेदि देलक। आँखिमे नोर आबि गेलैक। अखन धरि जे आँखि रघुनीक करिया काकापर छलैक ओ भोलाक गाल पड़क सुखल नोरक टघारपर पहुँचि अटकि गेलैक। मारिक चोट भोलाक देहमे निजाइये गेलैक जे संग-संग विआहक बात सुनि मनमे खुशियो उपकलै। बुद्धिक हिसाबसँ भलेहीं भोला बुड़िबक अछि मुदा नाचमे मेल-फीमेल गीत तँ गबितहि अछि।

पिताक हैसियतसँ रघुनी करिया काकाकेँ कहलखिन- ''काका, हम तँ ओते छह-पाँच नहि बुझैत छिऐ, काल्हिये चलह कतौ लड़की ठेमा कऽ विआह कइये देबै।''

''बड़बढ़िया'' कहि करियाकाका रास्ता धेलनि।

भोलाक विआह भेला आठे दिन भेल छलैक कि पाँच गोटेक संग ससुर आबि रघुनीकेँ कहलकनि- ''विआहसँ पहिने हम सभ नहि बुझलिऐक, परसू पता लागल जे लड़का नाच पार्टीमे रहैए। नटुआ-फटुआ लड़काक संग अपन बेटीकेँ हम नहि जाए देब। तँ ई संबंध नहि रहत। अपना सभमे तँ खुजले अछि। अहूँ अपन बेटाकेँ बियाहि लिअ आ हमहूँ अपना बेटीक दोसर विआह कऽ देब।'' कहि पाँचो गोटे चलि गेलाह।

ससुरक बात सुनि भोलाक बुद्धिये हरा गेलै। जहिना जोरगर बिरड़ो उठलापर सभ किछु अन्हरा जाइत छैक तहिना भोलोक मन अन्हरा गेल। दुनियाँ अन्हार लगए लगलैक। ओना तीन मास पहिनहि नाच पार्टी टुटि गेल छलैक। एकटा नटुआ एकटा लड़की लऽ कऽ पड़ा गेल छलैक, जाहिसँ गाम दू फाँक भऽ गेलैक। दू ग्रुपमे गाम बँटा गेलैक। सौँसे गाममे सनासनी चलै लगलैक। ताहि परसँ भोला आरो दू फाँक भऽ गेल।

पाण्डु रोगी जेकाँ भोलाक देहक खून तरे-तर सुखए लगलैक। मुदा की करैत बेचारा? किछु फुड़बे नहि करैत छलैक। ग्लानिसँ मन कसाइन होअए लगलैक। मने-मन अपनाकेँ धिक्कारए लगल। कोन सुगराहा भगवान हमरा जन्म देलनि जे बहुओ छोड़ि देलक। विचारलक जे एहि गामसँ कतौ चलिये जाएब नीक होएत।

घरसँ भोला पड़ा गेल। संगी-साथीक मुँहसँ दिल्ली, कलकत्ता, बम्बइक विषएमे सुननहि रहए। जहिसँ गाड़ियोक भाँज बुझले रहए। ने जेबीमे पाइ रहए, ने बटखरचा। सिर्फ दुइयेटा टाका संगमे रहए। अबधारि कऽ कलकत्ताक गाड़ी पकड़ि लेलक।

हबड़ा स्टेशन गाड़ी पहुँचते भोला उतड़ि बिदा भेल। टिकट नहि रहनहुँ एक्को मिसिया डर मनमे नहि रहैक। निरमली-सकरीक बीच कहियो टिकट नहि कटबैत छल। एक बेर पनरह अगस्तकेँ सिमरिया धरि बिना टिकटे घुरि आएल रहए।

प्लेटफार्मक गेटपर दूटा सिपाहीक संग टी.टी. टिकट ओसुलैत। भोलाकेँ देखि टी.टी.क मनमे भेलै जे दरभंगिया छी भीख मंगए आएल अछि। टिकट नहि मंगलकै। सिपाहियोकेँ बुझि पड़लै जे जेबीमे किछु छैक नहि। टिकटेबला यात्री जेकाँ भोलो गेट पार भऽ गेल।

सड़कपर आबि आँखि उठा कऽ तकलक तँ नमहर-नमहर कोठा चौरगर सड़क, हजारो छोटका-बड़का गाड़ी आ लोकक भीड़ भोला देखलक। मनमे भेलै जे भरिसक आँखिमे ने किछु भऽ गेल अछि। जहिना आँखि गड़बड़ भेने एक्के चान सात बुझि पड़ैत तहिना। दुनू हाथे दुनू आँखि मीड़ि फेर देखलक तँ ओहिना। भीड़ देखि मनमे एलै जे जखन एत्ते लोकक गुजर-बसर चलैत छै तँ हमर किएक ने चलत। आगू बढ़ि लोकक बोली अकानए लगल। मुदा ककरो बाजब बुझबे नहि करैत। अखन धरि बुझैत जे जहिना गाए-महीस सभ ठाम एक्के रंग बजैत अछि तहिना ने मनुक्खो बजैत होएत। मुदा से नहि देखि भेलैक जे भरिसक हम मनुक्खक जेरिमे हेरा ने तँ गेलहुँहेँ। फेर मनमे एलै जे लोक तँ संगीक बीच हराइत अछि, असकरमे कोना हराएत। विचित्र स्थितिमे पड़ि गेल। ने आगू बढ़ैक साहस होइ आ ने ककरोसँ किछु पूछैक। हिया हारि उत्तर मूँहे बिदा भेल। सड़कक किनछरिये सभमे खाइ-पीबैक छोट-छोट दोकान पतिआनी लागल देखलक। भुख लगले रहै मुदा अपन पाइ आ बोली सुनि हिम्मते ने होइत। जेबी टोबलक तँ दूटकही रहबे करै। मन पड़लैक मधुबनीक स्टेशन कातक होटल, जहिमे पाँच रुपैये प्लेट दैत। ई तँ सहजहि कलकत्ता छी। एहिठाम तँ आरो बेसी महग हेबे करत। एकटा दोकानक आगूमे ठाढ़ भऽ गर अँटबए लगल जे नहि भात-रोटी तँ एक गिलास सतुऐ पीबि लेब। बगए देखि दोकानदारे कहलक- “आबह, आबह बौआ। ठाढ़ किएक छह?”

अपन बोली सुनि भोला घुसुकि कऽ दोकान लग पहुँचि पुछलक- “दादा, कोना खुआबए छहक?”

“तीन मास पहिने धरि आठे आनामे खुआबै छेलिऐक। अखन बारह आनामे खुआबै छिऐ।”

भोलाक मनमे संतोष भेल। पाइयेबला गहिकी जेकाँ बाजल- “कुरुड़ करैले पानि लाबह।”

भरि पेट खा आगू बढ़ल। ओना तँ रंग-विरंगक बस्तु देखैत मुदा भोलाक नजरि सिर्फ दुइये ठाम अँटकैत। देवाल सभमे साटल सिनेमाक पोस्टरपर आ सड़कपर चलैत ठेलापर। जाहि पोस्टरमे डान्स करैत देखए ओहि ठाम अटकि सोचए जे ई नर्तकी मौगी छी आकि पुरुख। गाम-घरमे तँ पुरुखे मौगी बनि डान्स करैत अछि। फेर मन पड़लै संगीक मुँहे सुनल ओ बात जे कहने रहए सत्य हरिश्चन्द फिल्ममे मर्दे मौगिओक रौल केने रहए। गुनधुन करैत बढ़ल तँ अपने जेकाँ छौड़ाकेँ ठेला ठेलने जाइत देखि सोचए लगल जे ई काज तँ हमरो बुते भऽ सकैत अछि। गाड़ीक ड्राइवरी तँ करए नहि अबैत अछि। बिना सिखने रिक्शो कोना चलाओल

हएत? ततमत करैत आगू बढ़ल। सड़कक बगलेमे एकटा ठेलाबलाकेँ चाह पीबैत देखलक। ओहिठाम जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल। चाह पीबि ठेलाबला पुछलक- "कोन गाँ रहै छह?"

"विशौल।"

"हमहूँ तँ सुखेते रहै छी। चलह हमरा संगे।"

गप-सप्प करैत दुनू गोटे धर्मतल्लाक पुरना धर्मशाला लग पहुँचल, ठेलाकेँ सड़केपर छोड़ि दीनमा भोलाकेँ धर्मशालाक भीतर लऽ जा कऽ कहलक- "समांग असकरे कतौ जैहह नहि। हरा जेबह। हम एक ट्रीप मारने अबै छी।"

टंकीपर हाथ-पाएर धोए भोला दीनमासँ बीड़ी मांगि पीबि, पीलर लगा औँगठि कऽ बैसि गेल। आँखि उठा कऽ तकलक तँ झड़ल-झुरल देवालक सिमटी, तैपर कतौ-कतौ बर-पीपरक गाछ जनमल देखलक। पैखाना कोठरीक आ पानिक टंकीक आगूमे ठेहुन भरि किचार सेहो देखलक मन पड़लैक गाम। नाच-पार्टी टूटि गेल, घरवाली छोड़ि देलक। दू पाटी गाम भऽ गेल। सोचितहि-सोचितहि निन्न आबि गेलैक। बैसिले-बैसल सुति रहल।

गोसाँइ डूबितहि बुचाइ -दोसर ठेलाबला- आबि भोलाकेँ जगबैत पुछलक- "कोन गाम रहै छह?"

आशा भरल स्वरमे भोला बाजल- "बिशौल।"

विशौलक नाओ सुनितहि मुस्की दैत बुचाइ पुछलक- "रुपनकेँ चीन्है छहक?"

"उ तँ हमरा कक्के हएत।"

अपन भाएक ससुर बुझि भोलासँ सार-बहिनोइक संबंध बनबैत कहलक- "चलह, पहिने चाह पीबी। तखन निचेनसँ गप-सप्प करब।"

कहि टंकीपर जा बुचन देह-हाथ धोए, कपड़ा बदलि भोलाकेँ संग केने दोकानपर गेल। आँखिक इशारासँ दोकानदारकेँ दू-दूटा पनितुआ, दू-दूटा समौसा दैले कहलक। दुनू गोटे खा, चाह पीबि पानक दोकानपर पहुँचि बुचइ पान मंगलक। पान सुनि भोला बाजल- "पान छोड़ि दियौ। बीड़िये कीनि लिअ।"

बीड़ी पीबैत दुनू गोटे धर्मशालाक भीतर पहुँचल। एका-एकी ठेलाबला सभ अबए लगलैक। बिशौलक नाओ सुनितहि अपन-अपन संबंध सभ फरियबए लगल। संबंध स्थापित होइतहि चाहक आग्रह करैत। चाह पीबैत-पीबैत भोलाक पेट अगिया गेलै। अखन धरिक जिनगीमे एहन स्नेह भोलाकेँ पहिल दिन भेटलै। ठेलाबला परिवारक अंग भोला बनि गेल। भोलाक सभ व्यवस्था ठेलाबला सभ कऽ देलक। दोसर दिनसँ ठेला ठेलए लगल।

शनि दिनकेँ सभ ठेलाबला रौतुका शो सिनेमा देखए जाइत। ओहि शोमे एक क्लासक कन्सेशन भेटैत अछि। भोलो सभ शनि सिनेमा देखए लगल।

चौदह मास बीतलाक बाद भोला गाम आएल। नव चेहरा नव बिचार भोलाक। घरक सभले कपड़ा अनने अछि। धिया-पूताकेँ दू-दूटा चौकलेट देलक। धिया-पूताकेँ चौकलेट देखि एका-एकी जनिजातियो सभ अबए लगलीह। झबरी दादी आबि भोलाकेँ

देखि बजए लगलीह- "कहू तँ एहिसँ सुन्नर पुरुख केहेन होइ छै जे सौंथ जरौनियाँ छोड़ि देलकै।"

दादीक बात भोलाकेँ बेधि देलक। आँखि नोराए लगलैक। रघुनीक मन सेहो कानए लगलै। दोसरे दिन रघुनी लड़की ताकए घरसँ निकलल। ओना लड़कीक तँ कमी नहि, मुदा गाम-घर देखि कऽ कुटुमैती करैक विचार रघुनिक मनमे रहै। लड़कीक कमी तँ ओहि समाजमे अधिक अछि जहिमे भ्रूण-हत्याक रोग धेने छैक। समयो बदलल। गिरहस्त परिवारसँ अधिक पसन्द लोक नोकरिया परिवारकेँ करैत अछि। बगलेक गाममे भोलाक विआह भऽ गेल।

विआहक तीनिये दिन पछाति कनियाँक बिदागरियो भऽ गेलैक आ पाँचमे दिन अपनो कलकत्ता चलि देलक।

सालक एगारह मास भोला कलकत्ता आ एक मास गाममे गुजारए लगल। गाम अबैत तँ अपनो घरक काज सम्हारि अनको सम्हारि दैत।

तेसर साल चढ़ितहि भेलाकेँ जौँआ बेटा भेलै। नवम् मास चढ़ितहि ओ गाम आबि गेल। मनमे आशो बनले रहैक जे पाइ-कौड़ीक दिक्कत तँ नहिये हएत। सभ ठेलाबला अपन संस्था बना पाइ-कौड़ीक प्रबन्ध अपने केने अछि। मुदा पहिल बेर छी, कनियाँक देखभाल तँ कठिन अछिये। सरकारीक कोनो बेवस्थो नहिये छैक। मुदा समाजो तँ समुद्र थिक। बिनु कहनहुँ सेवा भेटैत अछि। जाहिसँ भोलोकेँ कोनो बेसी परेशानी नहिये भेलैक।

समय आगू बढ़ल। पाँच बर्ख पुरितहि भोला दुनू बेटाकेँ स्कूलमे नाओ लिखौलक। शहरक वातावरणमे रहने भोलोक विचार धिया-पूताकेँ पढ़बै दिशि झुकि गेल रहैक। मनमे अरोपि लेलक जे भलेही खटनी दोबर किऐक ने बढ़ि जाए मुदा दुनू बेटाकेँ जरुर पढ़ाएब। अपन आमदनी देखि पत्नीक ऑपरेशन करा देलक। जाहिसँ परिवारो समटले रहलैक।

पढ़ैमे जेहने चन्सगर रतन तेहने लाल। क्लासमे रतन फस्ट करैत आ लाल सेकेण्ड। सातवाँ क्लास धरि दुनू भाँइ फस्ट-सेकेण्ड स्कूलमे करैत रहल। मुदा हाइ स्कूलमे दुनू भाँइ आर्ट लऽ पढ़ए लगल जहिसँ क्लासमे कोनो पोजीसन तँ नहिये होइत मुदा नीक नम्बरसँ पास करए लगल।

मैट्रिकक परीक्षा दऽ दुनू भाँइ कलकत्ता गेल। अखन धरि आने परदेशी जेकाँ अपनो पिताकेँ बुझैत छल। तेँ मनमे रंग-विरंगक इच्छा संयोगने कलकत्ता पहुँचल रहए। मुदा अपन पिताक मेहनत, -छातीक बले ठेला घीचैत देखि- पराते भने गाम घुमैक विचार दुनू भाँइ कऽ लेलक। पितेक जोरपर तीनि दिन अँटकल। मुदा किछु कीनैक विचार छोड़ि देलक। मेहनतक कमाइ देखि अपन इच्छाकेँ मनेमे दुनू भाँइ दाबि लेलक। मुदा तइयो भोला दुनू बेटाकेँ फुलपेंट, शर्ट, धड़ी, जुत्ता कीनि कऽ देलखिन।

तीन मासक उपरान्त मैट्रिकक रिजल्ट निकललै। दुनू भाँइ-रतनो आ लालो- प्रथम श्रेणीसँ पास केलक। फस्ट डिवीजन भेलोपर आगू पढ़ैक विचार मनमे नहि अनलक। उपार्जनक लेल सोचए लगल। नोकरीक भाँज-भुँज लगबै लगल। नोकरियोक तँ वएह

हाल। गामक-गाम पढ़ल बिनु पढ़ल नौजवानक फौज तैयार अछि। एक काजक लेल हजार हाथ तैयार अछि। जाहिसँ समाजक मूल पूँजी मानवीय- आगिमे जरैत सम्पति जेकाँ नष्ट भऽ रहल अछि।

समए मोड़ लेलक। पढ़ल-लिखल नौजवानक लेल नोकरीक छोट-छीन दरबज्जा खुजल। गामक स्कूलमे शिक्षा-मित्रक बहाली होअए लगलैक। जाहिसँ नव ज्योतिक संचार गामोक पढ़ल लिखल नौजवान्मे भेलैक। ओना समएक हिसाबसँ शिक्षा मित्रक मानदेय मात्र खोराकी भरि अछि, मुदा बेरोजगारीक हिसाबसँ तँ नीक अछिये। बगलेक गामक स्कूलमे रतनो आ लालोक बहाली भऽ गेलैक। पाँच तारीककेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करत।

आगू नहि पढ़ैक दुख जते दुनू भाँइक मनमे नहि रहैक ताहिसँ बेसी खुशी नोकरीसँ भेलैक। कोपर बुद्धिमे कलुषताक मिसियो भरि आगमन नहि भेलैक अछि। दुनू भाँइ बैसि कऽ अपन परिवारक संबंधमे विचारए लगल। रतन लालकेँ कहलक- "बौआ, कोन धरानी बाबू अपना दुनू भाँइकेँ पढ़ौलनि से तँ देखले अछि। अपनो सभ एक सीमा धरि पहँचि गेल छी। तँ अपनो सभक की दायित्व बनैत अछि, से तँ सोचए पड़तह ?"

रतनक बात सुनि लाल बाजल- "भैया, अपना सभ ओहि धरतीक सन्तान छी जाहि धरतीपर श्रवण कुमार सन बेटा भऽ चुकल छथि। पाँच तारीकसँ पहिनहि बाबूकेँ कलकतासँ बजा लहुन। हम सभ ठेलाबलाक बेटा छी, एहिमे कोनो लाज नहि अछि। मुदा लाजक बात तहन हएत जहन ओ ठेला घीचताह आ अपना सभ कुरसीपर बैसि दोसरकेँ उपदेश देबै।"

मूड़ी डोला स्वीकार करैत रतना बाजल- "आइये बाबूकेँ जानकारी दऽ दैत छिअनि जे जानकारी पबितहि गाड़ी पकड़ि घर चलि आउ। पाँच तारीखकेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करए जाएब। दुनू भाँइक विचार अछि जे अहाँकेँ गोर लागि घरसँ डेग उठाएब।"

दुनू भाँइक विचार सुनितहि माएक मन सुख-दुखक सीमापर लसकि गेलनि। जरल घरारीपर चमकैत कोठा देखए लगलीह। आँखिमे नोर छलकि गेलनि। मुदा ओ दुखक नहि सुखक छलनि।

जीविका

शिवरात्रिक प्रात। मध्य मास। जइ डेढ़ मासक शीतलहरीमे सूर्य मरनासन्न भऽ गेल छलाह तइमे जीबैक नव शक्ति सेहो आबि गेलनि। तँ रौदमे धीरे-धीरे गरमी अबैत। चारि बजे भोरमे उमाकान्तक नीन टुटल। निन्न टुटितहि देवाल घड़ीपर नजरि देलक। चारि बजैत। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल अपन आगूक जिनगी दिशि नजरि देलक। ओना काल्हिये दिनमे दुनू दोस्त विचारि नेने छल। विचारि नेने छल जे दुनू गोटे टेम्पू कीनए भोरुके गाड़ीसँ दरभंगा जाएब। बदलैत जिनगीक संकल्प उमाकान्तक मनमे। किएक तँ जिनगी मनुष्यकँ किछु करैक लेल भेटैत अछि। मनमे एलै जे पाँच पचपनमे गाड़ी अछि तँ पाँच बजे घरसँ निकलब। ओना अधे घंटाक रस्ता स्टेशनक अछि मुदा किछु पहिनहि पहुँचब नीक रहत। ओना काहियो कोनो गाड़ी अपना समएपर नहिये अबैए, एकाध घंटा लेट रहिते अछि मुदा तइसँ हमरा की? हम समएपर जाएब। शुभ काज सदिखन समएसँ पहिनहि करैक कोशिश करक चाही। एते बात मनमे अबितहि उमाकान्त ओछाइन छोड़ि उठि गेल। उठितहि मनमे एलै जे हमर ने नीन टुटि गेल मुदा जँ दोस शोभाकान्तक नीन नहि टुटल होए, तखन तँ गड़बड़ होएत। से नहि तँ पर-पैखाना जाइसँ पहिने ओकरो जा कऽ उठा दिऐ। फेर मनमे एलै दतमनि करिते जाए। किएक तँ एकटा काज तँ अगुआइल रहत। हाथमे दतमनि लैतहि मनमे एलै जे किछु खा-पी कऽ घरसँ निकलब। रास्ता-बाटक कोन ठेकान। तहूमे लोहा-लक्कड़क सवारी। कखन नीक रहत कखन बगदि जाएत, तेकर कोन ठेकान। एक बेर एहिना भेल रहए की ने। दरभंगे जाइत रही आकि मनीगाछी लोहनाक बीच गाड़ीक इंजिन खराब भऽ गेलै। भोरुके गाड़ी, तँ सोचने रही जे दरभंगे पहुँचि किछु खाएब-पीब। ले बलैया, दू बजे तक गाड़ी ओतए अटकि गेलै। कखनो गाड़ीक डिब्बामे जा बैसी तँ कखनो उतरि कऽ इंजिन लग पहुँचि ड्राइवरकँ पूछिऐ। ओहू बेचाराक मन घोर-घोर भेल। हमहूँ आशा-बाटीमे रहि गेलहुँ। से जँ पहिने बुझितिऐ तँ गाड़ी छोड़ि बिदेसर चौकपर चलि जैतहुँ आ बस पकड़ि सबेर सकाल दरभंगा पहुँचि जैतहुँ। सेहो नै केलहुँ। तेकर फल भेल जे भूखे-पियासे खूब टटेलहुँ। तँ बिना किछु मुँहमे देने घरसँ नै निकलब। ई बात मनमे अबिते उमाकान्त पत्नीकँ उठबैत कहलक- 'जाबे हम दोस शोभाकान्तक ऐठामसँ अबै छी ताबे अहाँ चारिटा रोटी आ अल्लूक भुजिया बना लेब।'

कहि उमाकान्त शोभाकान्तक ऐठाम दतमनि करैत बिदा भेल। दाँतमे घुस्सो दिअए आ मने-मन बिचारबो करए। मनमे एलै जे काजे एहेन छी जे मनुक्खकँ मनुक्खो बनबैए आ जानवरो। दुनियाँक सभ मनुक्ख तँ किछु नहि किछु करितहि अछि। मुदा कियो

देव बनि जाइत अछि तँ कियो दानव। तँ काजकेँ परिखब सभसँ मूल बात छी। शोभाकान्त ऐठाम पहुँचिते उमाकान्त रस्तेपर सँ बोली देलक- 'दोस छेँ रौ, रौ दोस।'

ओछाइनपरसँ उठैत शोभाकान्त बाजल- 'हँ। दोस छिऐ रौ, हमरो नीन टुटले अछि। अखन तँ अन्हारे छै।'

उमाकान्त- सवा चारि बजै छै। तैयार होइत-होइत पाँच बजिये जाएत। कने पहिले स्टेशन जाएब।'

उमाकान्त आ शोभाकान्त एक्के बतारी। दुनूमे उमेरक हिसाबसँ के छोट के पैघ, से तँ ने अपने दुनू गोरे बुझए आ ने कियो टोले-पड़ोसक। किएक तँ टिपनि दुनूमेसँ ककरो नहि। बच्चेसँ दुनू गोटे, बेसी काल, एक ठाम रहैत तँ समाजोक लोक बिसरि गेल। अपना दुनू गोटेक माइयो-बाप मरिये गेल, आन मने किएक राखत। मुदा दुनू गोटे एहि मौकाक लाभ उठबैत। लाभ ई उठबैत जे दुनू, दुनू गोटेक स्त्रीसँ हँसी-चौल करैत। तइले दुनूमेसँ ककरो मलाल नहि। मुदा गामक बूढ़ो-बुढ़ानुस आ नवकियो कनियाँ दुनू स्त्रीगणकेँ निरलज कहैत। तेकर गम दुनूमे सँ ककरो नहि। किएक तँ सभ स्त्रीगणकेँ होइत जे अधिक सँ अधिक पुरुखक संग गप-सप्प, हँसी-मजाक हुअए।

बच्चेसँ दुनू गोटे- उमाकान्त आ शोभाकान्त- एक्के ठाम गुल्लियो-डंडा खेलए आ गामेक स्कूलमे पढ़बो करए। बच्चामे दुनू गोरे दुनूकेँ नामे धऽ-धऽ बजैत। मुदा चेष्टगर भेलापर, कनगुरिया ओँगरीमे ओँगरी भिरा दोस्ती लगा लेलक। मिडिल तक गामेक स्कूलमे दुनू गोटे पढ़लक। मुदा हाइ स्कूलमे उमाकान्तेटा नाओ लिखेलक। शोभाकान्त गरीब, तँ पढ़ाइ छोड़ि देलक। मुदा उमाकान्तकेँ दू-तीन बीघा खेतो आ पितो गामेक स्कूलमे नोकरी करैत। ओना शोभाकान्त उमाकान्तसँ बेसी चड़फड़ो आ पढ़ैइयोमे नीक। तँ अपना क्लासक मुनिटिराइयो करैत। मुनीटरक बात शिक्षको अधिक मानैत आ चट्टियाक बीच धाखो। पढ़ाइ छोड़लाक बाद शोभाकान्त नोकरी करए पटना गेल। गामसँ तँ यएह सोचि निकलल जे जएह काज भेटत सएह करब। मुदा रस्तामे बिचार बदलि गेलै। विचार ई बदलल जे ने चाहक दोकानमे नोकरी करब आ ने होटलमे। ने कोठीमे काज करब आ ने तारी-दारुक दोकानमे। अगर जँ नोकरी नै हएत तँ रिक्शे चलाएब वा मट्टियेमे काज करब। सरकारी नोकरीक तँ कोनो आशे नहि। किएक तँ उमेरो नै भेलहेँ।

गामसँ शहर शोभाकान्त पहिले-पहिल पहुँचल। मुदा जे आकर्षण शहर-बजार देखि लोककेँ होइत ओ आकर्षण शोभाकान्तकेँ नै होइत। जहिना सोना-चानीक दोकान दिशि गरीबक नजरि नहि पड़ैत, तहिना। स्टेशनसँ उतरि ओ उत्तर दिशक रस्ता धेलक। कोठा-कोठीपर नजरि पड़बे ने करै। किछु दूर गेलापर एकटा साइकिल मिस्त्रीक दोकान देखलक। रस्तापर ठाढ़ भऽ दोकान हियासए लगल। दोकानदारोक नजरि पड़ल। शोभाकान्तपर नजरि पड़ितहि दोकानदारक मनमे आएल जे छोटो-छोटो काजमे अपने बरदा जाइ छी, जाहिसँ नमहर काज पछुआ जाइए। से नञि तँ अइ बच्चाकेँ पूछिऐ जे नोकरी रहत। जँ रहत तँ रखि लेब। हाथक इशारासँ सोर पारि मिस्त्री

पुछलक- 'बाउ, की नाम छी?

'शोभाकान्त।'

'कत्तऽ घर छी?'

'मधुबनी जिला।'

'कत्तऽ जाएब?'

'नोकरी करए एलहुँ।'

'ऐठाम रहब?'

'हँ। रहब।'

जहिना अतिथि-अभ्यागतकेँ दुआरपर अबितहि घरबारी लोटामे पानि आनि आगूमे दैत, खाइक आग्रह करैत, तहिना शोभाकान्तकेँ मिस्त्री केलक। आठ आना पाइ दैत, आंगुरक इशारासँ मुरही-कचड़ीक दोकान देखबैत कहलक जे ओहि दोकानसँ जलखै केने आउ। झोरा रखि शोभाकान्त बिदा भेल। ओना गाड़ीक झमारसँ देहो-हाथ दुखाइत आ भूखो लागल, मुदा नोकरी पाबि देहक दरदो आ भूखो कमि गेलै। मुरही-कचड़ीक दोकानपर बैसितहि, बगए-बानि देखि दोकानदार पुछलक- 'बौआ, अहाँक घर कत्तऽ छी?'

शोभाकान्त- 'मधुबनी जिला।'

'गामक नाम कहू।'

'लालगंज।'

'हमरो घर तँ अहाँक बगलेमे अछि, रुपौली। बीस-पच्चीस बर्खसँ हम ऐठाम रहै छी।'

बिना पाइ नेनहि दोकानदार शोभाकान्तकेँ भरि पेट खुआ देलक। खा कऽ शोभाकान्त साइकिलक दोकानपर आबि मिस्त्रीकेँ पाइ घुमबैत कहलक- 'दोकानदार पाइ नञि लेलक।' मुदा गहिकीक झमेल दुआरे मिस्त्री आगू किछु नहि पुछलक।

साइकिल ट्यूबक पनचर बनौनाइ, छोट-छोट भंगठीसँ शोभाकान्त अपन जिनगी शुरु केलक। छोट-छोट काज भेने दोकानदारोकेँ आगू बढ़ैक अवसर हाथ लगल। साइकिल, रिक्शाक संग मोटर साइकिल आ टेम्पूक मरम्मत केनाइ सेहो शुरु केलक। शोभाकान्तोकेँ मौका भेटलै। उपारजनक लूरि अबए लगलै। दुनियाँकेँ बिसरि शोभाकान्त रिन्च-हथौरीमे मगन भऽ गेल।

छह मास बीतैत-बीतैत शोभाकान्त साइकिल-रिक्शाक मिस्त्री बनि गेल। संगहि मोटर साइकिल आ टेम्पू चलाएब सेहो सीखि लेलक। मेहनत केने शरीरो फौदा गेलै। साले भरिमे जवान भऽ गेल।

ड्राइवरीक लाइसेंस शोभाकान्त बना लेलक। ड्राइवरीक लाइसेंस बनबितहि शोभाकान्तक मनमे द्वन्द्व उत्पन्न हुअए लगल जे ड्राइवरी करी आकि अपन दोकान खोलि मिसतिरिआइ करी। मुदा अपन दोकान खोलैक लेल घर भाड़ाक संग मरम्मत करैक सामानो लिअए पड़त। फेर मनमे एलै जे एक तँ मेनरोडमे घर नै भेटत दोसर पाइयो ओते नञिए जे सामानो कीनब। तइसँ नीक जे ड्राइवरिये करी। सएह केलक।

ड्राइवरीमे दरमहो नीक आ बाइलियो आमदनी। महीना दिन तँ अव्यवस्थिते रहल मुदा दोसर मास बीतैत-बीतैत असथिर भऽ गेल। दरमाहा जमा करए लगल आ बाइली आमदनी घर पठबए लगल।

सालभरिक दरमाहासँ शोभाकान्त टेम्पू कीनि लेलक। टेम्पू कीनि, अपन सभ सामान लादि, शोभाकान्त सोझे गाम चलि आएल।

सेकेण्ड डिबीजनसँ उमाकान्त बी.ए. पास केलक। ओना पढ़लो-लिखल लोक कम मुदा ओहूसँ कम नोकरी। खेती-पथारी आ कारोवार कियो पढ़ल-लिखल करै नहि चाहैत। जाहिसँ गाम-सबहक दशा दिनो-दिन पाछुए मुँहे ससरैत। गामक लोको तेहने जे पढ़ल-लिखल लोककेँ खेती करैत देखि, दिल खोलि कऽ हँसबो करैत आ लाख तरहक लांछना सेहो लगबैत। जाहिसँ गामक पढ़ल-लिखल लोककेँ नोकरी करब मजबूरी भऽ जाइत।

नोकरीक भाँजमे उमाकान्त दौड़-धूप करए लगल। मुदा मनमे संकल्प रखने जे घूस दऽ कऽ नोकरी नञि करब। चाहे नोकरी हुअए वा नहि। दौड़-धूपसँ मन विचलित हुअए लगलै। संकल्प डोलए लगलै। मनमे अनेको प्रश्न औंढ़ मारए लगलै। कखनो मनमे होए जे पाँच कट्ठा खेत बेचि कऽ नोकरी पकड़ि लेब। फेरि मनमे होए जे जखन घूस दऽ कऽ नोकरी लेब तँ घूस लऽ कऽ लोकक काज किअए ने करबै? फेर मनमे होए जे तखन जिनगी केहेन हएत? अछैते जिबने मुरदा बनल रहब। लोक शरीर तियागक बाद मृत्यु धारण करैत अछि आ हम जीबितेमे मरल रहब। फेर मनमे एलै जे पत्नी तँ जीवन-संगिनी छी तेँ एक बेर हुनकोसँ पूछि लिअनि। मनमे कने शान्ति एलै। पत्नीसँ पुछलक- 'बिना घूस-घासक नोकरी भेटब कठिन अछि, से अहाँक की विचार?'

मुस्की दैत पत्नी बाजलि- 'आइक युगमे नोकरी भेटब जिनगी भेटब छी। तेँ हमरो गहना-जेबर अछि आ जँ ओहिसँ नञि पूड़ै तऽ थोड़े खेतो बेचि कऽ नोकरी पकड़ि लिअ। देखते छिऐ जे साले भरिमे लोक की सँ की कए लैत अछि।'

एक तँ ओहिना उमाकान्तक मन घोर-घोर होइत, तइपरसँ पत्नीक बात आरो मरनासन्न बना देलक। जिनगीक आशा टूटए लगल। आँखिक रोशनी क्षीण हुअए लगल। आशाक ज्योति कतौ बुझिये ने पड़ैत। जहिना अन्हारमे सगतरि भूते-प्रेत, चोरे-डकैत, साँपे-छुछुनरि बुझि पड़ैत, तहिना उमाकान्तकेँ हुअए लगल। डूबैत जिनगीक आशामे कने टिमटिमाइत इजोत बुझि पड़लै। इजोत अबिते शक्तिक संचार हुअए लगलै। मनमे संकल्पक अंकुर अंकुरित हुअए लगलै। जाहिसँ दृढ़ताक उदए सेहो हुअए लगलै। मने-मन विचार करए लगल। विचार केलक जे जिनगीक किछु लक्ष्य हेबाक चाही। मनुष्य तँ चुट्टी-पिपरी नहि होइत जे साधारण ककरो पाएर पड़लासँ मरि जाएत। मनुष्य तँ ब्रह्मक अंश छी। ओकरामे विशाल शक्ति छिपल छै। जिनगीमे एहिना हवा-बिहाड़ि अबै छै, तहिसँ की मनुष्य मनुष्यता गमा लेत। मनुष्यते तँ मनुष्यक धरोहर सम्पति छी। जेकरा लोक ओहिना कतौ फेकि देत। कथमपि नहि। मने-मन विचारलक जे हमरा नोकरी नै भेटत। तँ कि हाथपर हाथ दऽ कऽ बपहारि

काटब। एते कमजोर छी। की हमरामे मनुष्यक सभ गुण मरि चुकल अछि। हमरा बुते किछु कएल नै हएत? जरुर हएत।

नोकरी दिशिसँ नजरि हटा उमाकान्त राशनक दोकान चलबैक विचार केलक। विचार एहि दुआरे केलक जे जीबैक लेल अर्थक उपार्जन जरुरी होइत। जिनगीक अधिकांश काज अरथेसँ चलैत। तँ बिना अर्थे जिनगी जिनगी नहि रहि जाइत। हँ ई बात जरुर जे अर्थक उपार्जन आ उपयोगक ढ़ंग नीक हेबाक चाही। राशनक दोकानक जरुरत सभ गाममे अछि, सरकार आ समाजक बीचक कड़ी सेहो छी। ओना डीलरीक लाइसेंसो बनबैमे पाइयेक खेल चलैत। मुदा तइयो जी-जाँति कऽ उमाकान्त लाइसेंस बनबै दिशि बढ़ल।

डीलरीक लाइसेंस बनौलाक उपरान्त उमाकान्त समान उठबैसँ पहिने मिश्रीलालसँ कारोबारक तौर-तरीका बुझैक लेल गेल। मिश्रीलाल पुरान डीलर। मुदा जहिना गाममे अपन इज्जत बनौने तहिना सरकारियो ऑफिसमे। इज्जत बनबैक अपन तरीका। तँ ब्लौकक पैंतालिसो डीलर मिलि ओकरा यूनियनक सेक्रेट्री बनौने। जहिना सभ डीलर मिश्रीलालकेँ मानैत तहिना मिश्रीलालो सभकेँ। यएह बुझि उमाकान्त भेँट करब आवश्यक बुझलक। मिश्रीलाल ऐठाम उमाकान्त पहुँचल तँ देखलक जे चारि-पाँचटा धिया-पुता रजिस्टरपर दसखतो करैए आ निशानो लगबैए। किएक तँ पछिला मासक समान बँटबारा भऽ गेल छल। तँ बिना रजिस्टर तैयार भेने अगिला समान कोना उठत? जरुरी काज बुझि मिश्रीलाल मगन भऽ अपन काज करैत। उमाकान्तकेँ देखतहि मिश्रीलाल रजिस्टरक बीचहिमे, जइ पेजमे निशान आ हस्ताक्षर करबैत, पेनो आ कार्बनो रखि मोड़ैत बेटाकेँ कहलक- 'बौआ, चाह बनबौने आबह?' उमाकान्त दिशि होइत पुछलक- 'किमहर किमहर एनाइ भेलै बौआ।'

निर्बिकार भऽ उमाकान्त बाजल- 'भैया, अहाँ पुरान डीलर छी। डीलरीक सभ कुछ जनै छिऐ। बी.ए. केलाक बाद हम दू साल नोकरीक पाछु बौऐलहुँ मुदा कतौ गर नै धेलक। आब तँ नोकरीक उमेरो लगिचाइले अछि, तँ नोकरीक आशा तोड़ि डीलरीक लाइसेंस बनेलहुँहेँ।'

नोकरीक गर नहि लागब सुनि मिश्रीलाल कहलक- 'बौआ, जहिना कोनो परिवारमे चारि-पाँच भाँइक भैयारी रहैत अछि। सभ कुछ सामिले रहै छै। मुदा सभ भाइक पत्नीकेँ अप्पन-अप्पन सम्पत्ति सेहो छै। जहिमे भाइयो सभ चोरा-नुका शामिल भऽ जाइत अछि। जेकर फल होइ छै घरमे आगि लागब। तहिना नोकरियो सभमे भऽ गेल अछि। जे कुरसीपर अछि ओ अपने सार-बहिनोइक जोगारमे रहैए। कहीं कतौ बिकरियो होइ छै। जेकर परिणाम बनि गेल अछि जे नोकरी केनिहारोक बंश बनि गेल अछि। देशक विकास केहेन अछि से तँ तू पढ़ले-लिखल छह, सभ कुछ जनिते छहक। जँ कनी-मनी एक रत्ती आगूओ बढ़ि रहल अछि तँ ओहिसँ बेसी ओहि नोकरिहाराक वंशमे नोकरी केनिहार बढ़ि रहल अछि। तँ देखबहक जे डाक्टरक बेटा डाक्टरे बनत। इंजीनियरक इंजीनियरे। कते कहबह। जे जत्ते अछि ओ बपौती बुझि ओकरा पकड़ने अछि। तहि बीच तेसरक- जे ओहिसँ अलग अछि- जे गति हेबाक

चाही सएह तोरो भेलह। तहूसँ बेसी जुलुम अछि जे किछु गनल-गूथल लोक अछि जे नोकरियो करैत अछि, खेतो हथिऔने अछि आ जे कोनो सरकारी योजना बनै छै ओकरो हड़पैत अछि। जइसँ देखबहक जे ककरो सम्पत्ति राइ-छित्ती होइए आ कियो सम्पत्ति लेल लल्ल अछि।'

उमाकान्त- 'भैया, दुनियाँ-दारीक गप छोड़ू। अपना काजक विषएमे कहू।'

मिश्रीलाल- 'बौआ, अखन तू जुआन-जहान छह। मुदा जे काज कऽ अपना जीबए चाहै छह ओ गलती भेलह। तोरा सन आदमीकेँ डीलरी नञि करक चाही। हम तँ सभ घाटक पानि पीनाइ सीखि नेने छी। की नीक की अधला, से बुझिते ने छिऐ। बुझह तँ नढ़ड़ा-हेल हेलैत छी। तँ हमर कारबार ठीक अछि। मुदा तोरा बुते नै हेतह?

उमाकान्त- 'किए?'

तहि बीच चाह एलै। दुनू गोटे हाथमे गिलास लेलक। एक घोंट चाह पीबि मिश्रीलाल- 'देखहक, डीलरी दू दुनियाँक सीमा परक काज छी। एक दिशि सत्ताक दुनियाँ अछि आ दोसर दिशि आम लोकक। गड़बड़ दुनू अछि।'

उमाकान्त- 'से की?'

मिश्रीलाल- 'पहिने पब्लिकेक बात कहै छिअह। राशनक वस्तु चीनी मटियातेल, तँ हिसाबेसँ भेटैत अछि। नामे छिऐ कोटा। जँ मनमाफित भेटिते तँ खुल्ला बजार होइतै। से तँ नञि अछि। गाममे किछु एहेन-एहेन रंगबाज सभ बनि गेल अछि जेकरा खाइ-पीबैले नै देबहक तँ भरि दिन अपनो आ अनको उसका-उसका रग्गड़े करैत रहतह। रग्गड़केँ तँ कोनो सीमा नै होइ छै। जँ कहीं गोटे दिन लाठिये-लठौबलि भऽ जेतह तखन तँ लेनीक देनी पड़ि जेतह। दू पाइ कमाइले धंधा करबह आकि कोट-कचहरीक फेरमे पड़बह। बुझिते छहक जे कोट-कचहरी लोकेक पाइपर ठाढ़ अछि। ओइ साला रंगबाज सभकेँ की अछि। अपने किछु करतह नहि आ अनका काजमे सदिखन टांगे अड़ौतह। गामक उत्पातसँ लऽ कऽ थाना-पुलिस, कोट-कचहरीक दलाली भरि दिन करैत रहतह। आब तोंही कहह जे बरदास हेतह? नीक लोकक लेल अइ दुनियाँमे कतौ जगह नहि अछि। ओइ साला सभकेँ की छै, भरि दिन ताड़ी-दारु पीबि ढ़हनाइत रहतह। ने छोट-पैघक विचार करतह आ ने गाड़ि मारिक। तइपरसँ पंचायत मुखियो आ वार्डो-मेम्बर सभकेँ कमीशन चाहबे करियै। पब्लिको तेहने अछि। देखबहक जे कतेक एहेन परिवार अछि जेकरा कोटाक वस्तुक जरुरत नै छै जेना चीनी। मुदा ओहो कोटासँ चीनी उठा दोकानमे किछु नफा लऽ कऽ बेचि लेतह। जखनिकि किछु परिवार एहेन अछि जेकरा कोटाक वस्तुसँ खर्च नै पूड़ै छैक। अपनो आँखिसँ देखबहक जे दस-बीस कप चाह आने पीबैत अछि। की ओकरा सभकेँ फाजिल नै देबहक। जखने एक गोटेकेँ फाजिल देबहक तँ दोसराक हिस्सा कटबे करत। एहेन स्थितिमे डीलरे की करत? आखिर ओहो तँ समाजेक लोक छी।'

उमाकान्त- 'सभ गोटे तँ कोटा उठबितो नै हेतै?'

मिश्रीलाल- 'हँ, सेहो होइए। मुदा ओ तखन होइए जखन कोटाक वस्तुक दाम आ खुल्ला बजारक दाममे अन्तर नै रहैत अछि। मुदा जखन दुनूक दाममे अन्तर रहैत अछि तखन जेकरो ने अपना पाइ रहै छै ओहो दोकानदार सभसँ, अधा-अधी नफापर, पाइ लऽ कऽ समान उठा लै अए आ बेचि लै अए। ततबे नै ओहो चाहतह जे किछु फाजिले कऽ समान भेटए।'

मुँह बिजकबैत उमाकान्त- 'तब तँ बड़ ओझरी अछि।'

उमाकान्तक सोचकेँ गहराइ दिशि जाइत देखि मुस्की दैत मिश्रीलाल- 'बौआ, एतबेमे छगुन्ता लगै छह। ई तँ एक दिसक बात कहलिहह। अहूमे कते ओझरी छुटिये गेलह। जँ सरिया कऽ सभ बात कहबह तँ सैकड़ो ओझरी आरो अछि। आब सुनह ऑफिस, बैंक, एफ.सी.आइ.क गोदामक संबंधमे। दौड़-बरहा जे करै पड़तह ओकरा छोड़ि दै छिअह। किएक तँ मोटा-मोटी यएह बुझह जे एक दिनक काजमे पनरहो दिनसँ बेसिये लगतह। जइमे समएक संग पच्चीस-पचास पौकेटो खर्च हेबे करतह।'

उमाकान्त- 'तब तँ बड़ लफड़ा अछि?'

मिश्रीलाल- 'लफड़ा की लफड़ा जेकाँ अछि। जखने ब्लौक पाएर देबहक आकि गीध जेकाँ चारु भरसँ, अफसरसँ लऽ कऽ चपरासी धरि, नोंचए लगतह। कियो कहतह जे चाह पिआउ तँ कियो कहतह पान खुआउ। कियो कहतह सिगरेट पिआउ तँ कियो मिठाइ खुआउ। सुनि-सुनि मन मोहरा जेतह। मुदा की करबहक? भीखमंगोसँ गेल-गुजरल चालि देखबहक। जेना अपना दरमाहा भेटिते ने होए। मुदा डीलरे की करत? अगर जँ सभकेँ खुशी नै राखत तँ काजे लटपटेतै। काजो तेहेन अछि जे एक्के टेबुलसँ नञि होइ छै। जत्ते टेबुल तते खर्च। अखन हमहू अगुताइल छी, तँ नीक-नहाँति नहि कहि सकबह। देखते छहक जे रजिस्टर तैयार करै छी। ब्लौक जाएब। मुदा तैयो एक-दूटा बात कहि दै छियह। सबहक तड़ी-घटी ने हम बुझै छिऐ।'

उमाकान्त- 'कनी-कनी सबहक बात कहि दिअ?'

मिश्रीलाल- 'अगुताइलमे की सभ बात मनो पड़ै छै। मुदा जे मन पड़ैए से कहि दै छिअह। पहिने बैंकक सुनह। कोरियापट्टीमे दुनियाँलाल डीलर अछि। बेचारा बड़ मुँह सच। जहिना-जहिना समान बिकाइल रहए तहिना-तहिना पाइ रखने रहए। खुदरा समानक बिक्री तँ खुदरा पाइ। जखन बैंकमे जमा करए गेल अगिला कोटाक लेल, तँ खुदरा पाइ देखि बैंकमे लेबे ने केलकै। कहलकै जे ओते हमरा छुट्टी अछि जे भरि दिन तोरे पाइ गनैत रहब। भरि दिन बेचारा छटपटा कऽ रहि गेल। बैंकसँ निकलबो ने करए जे पौकेटमार सभ ने कहीं पाइ उड़ा दिअए। दोसर दिन आबि कऽ हमरा कहलक। तामस तँ बड़ उठल। किएक तँ जेना मोटका पाइ सरकारक होए आ खुदरा नै होए, तहिना। जखन पाइयेक लेन-देन बैंकमे होइ छै तँ गनै ले स्टाफ राखह। मुदा की करितियै। दोसर दिन गेलौं। मनेजरकेँ कहलियै। तखन दू प्रतिशत कमीशनपर फड़िआइल। आब तोंही कहह जे ई दू प्रतिशत कोन बिलमे चलि गेल।

तहिना दोसर बात लाए, सप्लाइ इन्सपेक्टरक। इन्सपेक्टर बदली भेलै। नव इन्सपेक्टर बुझि पनरह-बीस गोटे डीलर ओकरा पाइ नै देलकै। ओना पचास रुपैये प्रति डीलर प्रति मास इन्सपेक्टरकेँ दैत अछि। सभकेँ मनमे भेलै जे नव हाकिम छथि तेँ छओ मास तँ इमानदारी रखबे करताह। ले बलैया, जहाँ डीलर दोसर कोटाक सभ समान उठौलक आकि दोसर दिन भेने विश्वनाथ डीलर ऐठाम पहुँचि गेल। विश्वनाथोकेँ कोनो डर मनमे नहि। किएक तँ समान ओहिना रहए। विश्वनाथकेँ इन्सपेक्टर चीनी काँटा करैले कहलक। ओहो तैयार भऽ काँटा करै लगल। पाँचो बोरा मिला कऽ चौदह किलो चीनी कमि गेलै।

बिच्चहिमे उमाकान्त कहलक- 'चीनी तौलि कऽ नञि नेने रहए?'

मिश्रीलाल- 'ई एफ.सी.आइ. गोदामक खेल छी। एफ.सी.आइ. गोदाम तँ ब्लौके-ब्लौके नै अछि। तेँ देखबहक जे डीलर सबहक नम्बर लगल अछि। सभकेँ धड़फड़ करैत देखबहक। किएक तँ अपन टाएर गाड़ी तँ सभ डीलरक रहै नै छै। अधिक डीलर भड़ेपर गाड़ी लऽ जाइए। तेँ मनमे होइत रहै छै जे जते जल्दी समान हएत तते कम भाड़ा लगत। तेँ कियो समान तौलबै नै अछि। जे कियो पच्चीस रुपैइये बोरा मनेजरकेँ दऽ देने रहलै ओकरा तँ नीक समानो आ पुरल बोरो देलक। जे पाइ नञि देने रहल ओकरा समानो दब आ घटल बोरो देलक। चोरपर चोर अछि।'

छुब्ध होइत उमाकान्त- 'हद लीला सभ अछि।'

मिश्रीलाल- 'आब मार्केटिंग अफसर एम.ओ.क बात सुनह। अखुनका जे एम.ओ. अछि ओ पीआक अछि। ओना काज करैमे भुते अछि। रस्तो-पेरामे मोटर साइकिल लगा फाइलपर लिखि दैत अछि। मुदा ओहिना नहि। पहिले एक बोतल पीआ देबहक, तखन।'

उमाकान्त- 'अफसर भऽ कऽ रस्ता-पेरापर बोतल पीबैए?'

ठहाका मारि हँसि मिश्रीलाल- 'बौआ, तूँ गाम-घरक बात बुझै छहक। गाम-घरमे जे छोट-पइघीक, इज्जत-आबरुक विचार अछि ओ कत्तऽ पेबह। मुदा तइओ ओकरामे दूटा गुण जरुर छलैक। पहिल गुण छलैक जे आन कोनो स्त्रीगण दिशि नहि तकितह। आ दोसर गुण छलै जे ककरोसँ एक्को पाइ नञि लइतह। मुदा एहिसँ पहिलुका एम.ओ. जे रहए ओ भारी पाइखौक। सभ काजक रेट बनौने रहए। जे सभ बुझै। तँ जेकरा जे काज रहै ओ ओइ हिसाबसँ पाइ दऽ दै आ लगले काज करा लिअए।'

मुस्कुराइत उमाकान्त- 'तब तँ पक्का नटकिया सभ अछि।'

मिश्रीलाल- 'नटकिया की नटकिया जेकाँ अछि। रंग-बिरंगक चोर सभ पसरल अछि। कियो धनक चोर अछि तँ कियो धरमक। कियो बुइधिक चोर अछि तँ कियो विवेकक। कते कहबह। तेसराक सुनह। अंदाज करीब पचपन छप्पन बर्खक उमेर ओकर रहए। मुदा फीट-फाटमे जुआनक कान कटैत। जेहने हीरोकट कपड़ा पहिरैत तेहने हिप्पीकट केश रखैत। रंग-बिरंगक तेल आ सेंट लगबै। सदिखन उपरका जेबीमे ककही देखबे करितहक। रातियोमे कैक बेर केश सीटै। चौबीस घंटामे दू बेर दाढ़ी

बनबै। ओ एम.ओ. भारी नंगरचोप जेहने अपने तेहने बहुओ। दिन भरिमे पच्चीसो बेर कपड़ा साड़ी-ब्लाउज आ जूत्ता-चप्पल बदलै। केशमे कते रंगक क्लीप लगबै तेकर ठेकान नहि। भरि दिन रिक्शापर अइ डेरासँ ओइ डेरा, अइ बजारसँ ओइ बजार घुमिते रहैत छलि। संयोगो ओकरा नीक भेटलै। एक्के बेर बी.डी.ओ., सी.ओक बदली भऽ गेलइ। ओकरे दुनू गोटे चार्ज दऽ कऽ गेल। ओही बीच शिक्षा मित्रक भेकेन्सी भेल। लड़की सभकेँ आरक्षण भेटलै। जहिमे जाति प्रमाणपत्रक जरुरत पड़ल।'

अपसोच करैत- 'बौआ की कहबह, ओइ सालाक डेरा बेश्यालय बनि गेल। कखनो ब्लौक ऑफिसमे नञि बैइसै। जखन बैसबो करै तँ आन-आन कागज देखए मुदा एक्कोटा जाति प्रमाणपत्रपर हस्ताक्षर नञि करए।'

उमाकान्त- 'परिवारक कियो किछु ने कहए?'

मिश्रीलाल- 'स्त्रीक विषएमे तँ कहिये देलियह। जेठकी बेटी बी.ए. मे पढ़ैत रहए। ओकरो चालि-ढ़ालि बापे-माए जेकाँ। कओलेजेक एकटा छौंड़ा आदिवासी क्रिश्चन संग चलि गेलै।'

उमाकान्त- 'बाप-माएकेँ लाज नै भेलै?'

मिश्रीलाल- 'लाज तँ तेहेन भेलै जे राता-राती अइठीनसँ भागल।'

उमाकान्त- 'अहूँकेँ बहुत काज अछि आ हमरो मन भरि गेल। आखिरीमे एकटा बात बुझा दिअ।'

मिश्रीलाल- 'की?'

उमाकान्त- 'अहाँ कोना अप्पन प्रतिष्ठा समाजो आ ऑफिसोमे बना कऽ रखने छी?'

मिश्रीलाल मुस्कुराइत बजलाह- 'समाजमे जकरा ऐठाम सराध, बिआह, उपनैन, मूड़न, भनडारा वा आन कोनो तरहक काज होइ छै तँ ओकरा हम जरुर चीनियो आ मट्टियो तेलक पूर्ति कइये दैत छिऐ। भलेहीं अपना लग नहियो रहल तैयो जहाँ-तहाँसँ आनि पुराइये दैत छिऐ। जइसँ समाजक सभ खुशी रहैए। ऑफिसक बात तँ पहिने कहि देलियह।'

उमाकान्त- 'हमरा की करक चाही? किएक तँ जइ हिसाबे अहाँ कहलौं तइसँ हम्मर मन भटकि रहल अछि।'

मिश्रीलाल- 'बौआ, जखन लाइसेंस बना लेलह तखन कमसँ कम एक खेप समान उठा कऽ बाँटि लाए। जइ सँ समाजोक चालि-ढ़ालि आ ऑफिसोक चालि-ढ़ालि देखि लेबहक। बेबहारिक ज्ञान भऽ जेतह। व्यवहारिके ज्ञान असली ज्ञान छिऐ। अखन हम एते मदति जरुर कऽ देबह जे तोरा कतौ अड़चन नै हेतह। मुदा दोसर खेपक भार हम नै लेबह। किएक तँ बुझिते छहक जे बिलाइ जे मूससँ दोस्ती करत तँ खाएत की? तोरो सीखैक अवसर भेटि जेतह।'

उमाकान्त- 'बड़बढ़िया! जहिना अहाँ कहलौं तहिना हम करब।'

मिश्रीलाल- 'बाउ, आब तँ हम बूढ़ भेलहुँ। जहिया हम सोलहे बरखक रही तहियेसँ डीलरी करै छी। मुदा पहिलुका आ अखुनकामे अकास-पतालक अंतर भऽ

गेल अछि। जते धन आ शिक्षाक प्रसार भेल जा रहल छै ओते घटिया मनुक्ख सेहो बढ़ि रहल अछि। पहिने इमानदार लोक बेसी छल मुदा आब आंगुरपर गनए पड़तह। हम तँ डीलरीमे रमि गेलौं। सभ घाटक पानि पीनाइ सीखि नेने छी, तँ नीक छी।'

उमाकान्त- 'चलैत-चलैत किछु........।'

मिश्रीलाल- 'जहिना आमक गाछ होइ छै जे आमक आँठीसँ जनमैत अछि। तहिना तँ मनुक्खोक होइ छै। दुनियाँमे जते मनुक्ख अछि, सभ तँ मुरुखे भऽ कऽ जन्म लैत अछि। मुदा एहिठाम जकरा जेहेन परिवार, समाज, वातावरण भेटैत छैक ओ ओहन बनैत अछि। जहिना आमक छोट-छोट सरही गाछकेँ नीक-नीक कलमी आमक गाछक डारिमे बान्हि कलम लगा नीक-नीक आम बना लैत, तहिना मनुक्खोक होइत। मुदा नीक परिवार, नीक समाज अछिये कतेक। अधिकांश तँ गेले-गुजरल अछि। ने सभकेँ भरि पेट खेनाइ भेटै छै आ ने नीक बात-विचार। तखन नीक मनुष्य बनत कोना? जाधरि नीक मनुष्य नहि बनत ताधरि नीक समाज कोना बनत? तखन तँ जएह अछि तेहिमे अपनाकेँ जते नीक बना जीबि सकी, वएह संतोषक बात। तोहूँ अखन सादा कागज जेकाँ साफ छह, तँ हम चाहब जे गन्दा नहि हुअ। जेहेन विचार, हाथ होइत कर्म निकलतह तेहेन जिनगी हेतह। कियो शरीरांतकेँ मृत्यु बुझैत अछि आ कियो आत्माक हननकेँ। मनुष्यमे असीम शक्ति छिपल छैक, ओकरा जगबैक अछि। जे हमहूँ सरिया कऽ नहिये बुझै छिऐ।'

जहिना तेज हथियार हाथमे एलासँ सक्कत-सक्कत वस्तु कटैक हूबा बनि जाइत तहिना उमाकान्तोकेँ भेल।

ओ विचार केलक जे आब बैलगाड़ीक युग नञि रहल। मशीनक युग आबि गेल। तँ हमहूँ अपना हाथसँ इन्जिने चलाएब।'

रिक्साबला

'ओ रिक्शा, ओ रिक्शा।' - कने फड़िक्केसँ जीबछ जोरसँ बाजल। हाथमे बम्बैया बैग, जिन्स पेन्ट आ शर्ट पहीरिने, दहिना हाथमे चौड़गर घड़ी। फुल जुत्ता, मौजा सेहो लगौने। बम्बैये हिप्पी कट केश, बुच्चा मोछ आ आँखिपर चश्मा। बचनू रिक्शाबला अपन ताशक संगीक संग ताश खेलाइत। ताशो ओहिना नहि खेलैत, एक सेटपर चारु गोटेक चाह-पान खर्च, हरलाहा पार्टीकेँ देमए पड़ैत। पाँचटा लाल बचनूक जोड़ाकेँ। तेँ एक्केटा सेठ होइमे बाकी। एकटा लाल हएत, चाह-पानक जोगार लगत। तेँ एकाग्र भऽ बचनू लालक पाछु दिमाग लगौने। ताशक चौखड़ी लग आबि जीवछ दुइभेपर बैग रखि रुमालसँ मुँह लग हौंकए लगल। कने काल हौंकि रिक्शाबलाकेँ चढ़िअबैत कहलक- 'हौ भाय, हमरा बहुत दूर जाइक अछि, झब दे चलह?'

ताश परसँ नजरि उठा, जीबछ दिशि देखि बचनू बाजल- 'भाय, केहेन सुन्दर ठंढ़ा छै, कनी सुसता लाए। तोरो देखै छिअह जे पसीनासँ तड़-बत्तर भेल छह। हमरो एक्केटा लाल बाकी अछि, दू-तीन खेपमे भइये जाएत। अगर जँ अपन लाल नहियो हएत आ विरोधियेकेँ दूटा कारी भऽ जेतै, तैयो जीत हेबे करत।

बचनूक बात सुनि जीबछ शर्टो आ गंजिओ निकालि कऽ रौदमे पसारि देलक। आसीन मास। तीख रौद। तइ परसँ गुमकी सेहो। रेलबे स्टेशनसँ जीबछ पएरे आएल। किएक तँ स्टेशनक बगलेमे तेहेन खच्चा बाढ़िमे बनि गेल जे रिक्शो आ टमटमोक रास्ता बन्न भऽ गेलै। पएरे लोक कहुना कऽ थाल-पानिमे टपैत। बाढ़ि तँ तेहेन आएल छल जे जँ स्टेशन ऊँचगर जमीनपर नहि रहैत तँ ओहो भसि कऽ कतए-कहाँ चलि जाइत। मुदा तैयो स्टेशनक पूबरिया गुमती, पुल आ आध किलोमीटर रेलबे लाइन दहाइये गेल। रेलवेक दछिन तेहेन मोइन फोड़ि देलक जे गाड़िओ बन्न भऽ गेल। डेढ़ मासमे पुलो बनल आ गाड़ियो चलब शुरु भेल।

गाममे रिक्शा बचनुएटा केँ। जाहिसँ कोनो तरहक प्रतियोगिता नहि। प्रतियोगिता तँ शहर-बजारमे होइत, जहिठाम सैकड़ो-हजारो रिक्शा रहैत। अनेरो रिक्शाबला सभ रिक्शापर बैसि, इमहरसँ उमहर घुमबैत आ बजैत- 'कोट-कचहरी......बैंक.......पोस्ट ऑफिस....... कओलेज.... स्कूल..... स्टेशन..... बस स्टेण्ड...... अस्पताल.... बड़ा बजार..... सिनेमा चौक...... डाकबंगला..... भगतसिंह चौक..... आजाद चौक।

मुदा से तँ गाममे नहि। मुदा तँ कि गामक रिक्शाबलाकेँ कमाइ नहि होइत। खूब होइत। एक तँ गामक कच्ची रस्ता, तइ परसँ जहाँ-तहाँ टूटलो आ गहूम पटौनिहार सभ कटनौ। एहेन सड़कमे दोसर कोन इंजनबला सवारी सकत। तँ गामक सवारी रिक्शा। जाहिसँ गामक बेटी-पुतोहूक विदागरी निमहैत। धन्यवाद तँ रिक्शेबलाकेँ दी जे

बेचारा छातीपर भार उठा, कखनो चढ़ि कऽ तँ कखनो उतरि कऽ पार लगबैत। कठिन मेहनतक पाइ कमाइत।

अखन धरि ताशक खेल नहि फड़िआइल। किएक तँ कखनो लाल कमि जाए तँ कखनो कारी। अगुताइत जीबछ बाजल- 'भाय, ताश नै फड़िऐतह। बहुत दुरस्त जाइक अछि। झब दे चलह। नञि तँ अन्हार भेने तोरो दिक्कत हेतह आ हमरो अबेर भऽ जाएत। कहुना-कहुना तँ ऐठामसँ सुग्गापट्टी पाँच कोस हएत।'

बचनू- 'हँ, से तँ पाँच कोससँ कम नहिये हएत। मुदा तइसँ की? ई की कोनो शहर-बजार छिऐ जे रातिक कोन बात जे दिने देखार पौकेटमारी, डकैती, अपहरण होइ छै। ने रस्तामे भीड़-भड़क्का आ ने कोनो चीजक डर। निचेनसँ जाएब।'

गामक बीचमे चौबट्टी। जहिठाम पान-सातटा छोट-छोट दोकान। जहिसँ गामोक आ आनो गामक लोक चौक कहए लगल। चौकक पछबरिया कोनपर एकटा खूब झमटगर पाखरिक गाछ। जहिपर हजारो चिड़ैक खोँता। दिन भरि चिड़ै सभ चराउर करए बाहर जाइत आ गोसाँइ निच्चा होइतहि पतिआनी लगा-लगा गाछपर अबए लगैत। कतेको रंगक चिड़ै तँ सभ जातिक चिड़ै अपन-अपन संगोर बना-बना अबैत। ततबे नहि, गाछक डारियो बाँटि नेने अछि। एक जातिक चिड़ै एक डारिपर खोँता बनौने अछि। तँ एक जातिक चिड़ैसँ दोसर जातिक चिड़ैक बीच ने कहा-कही होइत आ ने झगड़ा-झंझट। मुदा अपनामे एक जातिक बीच नीक-अधलाक गप-सप्प जरुर होइत। कथा-कुटुमैतीसँ लऽ कऽ रामायण-महाभारतक किस्सा-पिहानी जरुर होइत। पान-पुनक चरचा सेहो करैत। अधला काज केनिहारकेँ डाँटो-फटकार दैत आ जुरमिनो करैत। ओहि गाछक निच्चाँमे बाटो-बटोही रौदमे ठंढ़ाइत आ पानि-बुनीमे सेहो जान बँचबैत। ताशक चौखड़ी सेहो जमैत।

बचनुक बात सुनि जीबछ पेन्टक पैछला पौकेटसँ सिगरेटक डिब्बा आ सलाइ निकाललक। एकटा सिगरेट अपनो लेलक आ एकटा बचनुओकेँ देलक। दुनू गोटे सिगरेट लगा, रिक्शापर चढ़ि बिदा भेल। कनिये आगू बढ़ल आकि बचनू जीबछकेँ पूछलक- 'भाय तूँ बम्बैमे रहै छह?'

'हँ'

'मन तँ हमरो बहु दिनसँ होइए मुदा पलखतिये ने होइए जे जाएब।'

'ओइ ठीन मन तँ खूब लगैत हेतह?'

'ऐँह भाय मन। की कहबह? जखैनिये डेरासँ निकलबह आकि रंग-बिरंगक छौँड़ी सभकेँ देखबहक। उमेरगरो सभ जे कपड़ा लगौने रहतह से देखबहक तँ बुझि पड़तह जे कुमारिये अछि। मुदा छउरो सभ की ओइसँ कम अछि। एक तँ ओहिना जे छउरी सभ दामी-दामी कपड़ा पहीनने अछि आ सौँसे देह झक-झक करै छै। तइपरसँ छउरो सभ करिक्का चश्मा पहीन लेतह आ निङहारि-निङहारि देखैत रहतह। चश्मो की कोनो एक्की-दुक्की रहै छै। जखैनिये आँखिमे लगेबह आकि देहपर कपड़ा बुझिये ने पड़तह।'

'ओहन चश्मा हमरा सभ दिशि कहाँ छै, हौ।'

'ऐँह, ओइ ठीन विदेशी चश्मा सभ बिकाइ छै की ने। देहातमे ओहन चश्मा के कीनत।'

चौकसँ कनिये उत्तर एकटा ताड़ीक दोकान। चारि-पाँच कट्ठाक खजुरबोनी। बीच-बीचमे ताड़क गाछ सेहो। उत्तर-दछिने रास्ता। पछबारि भाग ताड़ीक दोकान। ताड़ीक दोकान देखि जीबछ बचनुक पीठमे आगुरसँ इशारा करैत रोकैले कहलक। बचनुक मनमे भेलै जे भरिसक पेशाब करत। रिक्शा रोकि उतरि गेल। जीबछ बाजल- 'भाय, ताड़ी दोकान देखै छिऐ। चलह दू घोंट पीबि लेब, तखन चलब। हमहीं पाइयो देबै।'

ताड़ीक नाम सुनि बचनू कहलक- 'ओना ताड़ी हमहूँ पीबै छी मुदा ताड़ी पीबि कऽ ने रिक्शा चलबै छी आ ने ताड़ी पीनिहारकेँ रिक्शापर चढ़बै छी। तँ अखैन ताड़ी-दारु बन्न करह। जखैन घरपर पहुँचबह तखैन जे मन हुअह से करिहह।'

'भाय, ओतऽ भेटत की नै भेटत, अखैन तँ आगूमे अछि।'

'तब अखैन नै जाह। ताड़ी कीनि कऽ नेने चलह। गामेपर दुनू गोटे पीबि लेब आ रातिमे रहि जइहह।'

'अइठीन कतऽ रहब?'

'से की हमरा घर-दुआर नै अछि। ओतै रहि कऽ राति बीता लिहह। भोरे पहुँचा देबह।'

'अच्छा, ठीक छै, चलह।'

दुनू गोटे ताड़ी दोकान दिशि बढ़ल। दोकान लग पहुँचते जीबछ घैलक-घैल ताड़ी फेनाइत देखलक। घैलक पतिआनी देखि मने-मन सोचए लगल जे हमरा होइ छलए जे शहरे-बजारक लोक ताड़ी पीबैए। मुदा से नहि गामो-घरक लोक खूब पीबैए। पच्चीस-तीस गोटे दोकानक भीतरो आ बाहरो ताड़क पातक चटाइपर बैसि ताड़िओ पीबैत आ चखनो खाइत। कियो-कियो असकरे पीबैत तँ कियो-कियो दू-दू, तीन-तीन, चारि-चारि गोटेक संगोरमे। कियो खिस्सा कहैत तँ कियो गीत गबैत। कियो अन्हागाहिस गारियो पढ़ैत। सभ उमंगमे। जहिना ताड़ीक फेन उधिआइत तहिना सबहक मन। ताड़ीक खटाइन गंध लगिते जीबछकेँ होए जे कखैन दू गिलास चढ़ा दिऐ।

ताड़ी दोकानसँ कने हटि दूटा बुढ़िया चखनाक दोकान पसारने। एकटा दोकानमे मुरही, घुघनी बदामक कचड़ी आ दोसरमे चारि पाँच रंगक माछक तरुआ। ओँगरिक इशारासँ मझोलका डाबा देखबैत जीबछ बचनूकेँ कहलक- 'भाय, दुइये गोरे पीनिहार छी, तँ वएह डाबा लऽ लाए।'

बचनू- 'पहिने दाम पूछि लहक?'

डाबाक कान पकड़ि जीबछ पासीकेँ दाम पुछलक। तोड़-जोड़ करैत पैंतीस रुपैयामे पटि गेलै। पेन्टक जेबीसँ नमरी निकालि ओ जीबछकेँ देलक। नमरी पकड़ैत दोकानदार कहलकै- 'तारिये टाक दाम कटै छिअह। डाबा घुरा दिहह।'

'बड़बढ़ियाँ' कहि बचनू डाबा उठा लेलक। डाबाकेँ चखना दोकानक आगूमे रखि

बचनू मने-मन सोचए लगल जे औझुका तँ कमाइयो ने भेल। धिया-पूता की खाएत? से नञि तँ तेना कऽ मुरही-कचड़ी कीनि ली जे सभ तुर खाएब। जेहने झुर कऽ कऽ कचड़ी बनौने तेहने माछक कुटिया। एकदम लाल-बुन्द। माछक कुटिया देखि जीबछक मुँहमे पानि अबए लगल। मन चटपटाए लगल। बचनूकेँ कहलक- 'भाय, कते चखना लेबह?'

मने-मन बचनू हिसाब जोड़ए लगल। दू-दूटा कचड़ी आ दू-दूटा माछ दुनू बच्चाले आ अपना सभले चारि-चारिटा। किएक तँ गरम चीज होइ छै, तँ बेसी खराब करतै। बाजल- 'भाय, एक किलो मुरही, एक किलो घुघनी, सोलहटा कचड़ी आ सोलहटा माछक कुटिया लऽ लाए।'

सएह केलक। ताड़ीक डाबा उठा जीबछ विदा भेल। रिक्शा लग आबि बचनू चखनाक मोटरी सेहो जीबछेकेँ दऽ देलक।

चौकक रस्ता छोड़ि बचनू घर परक रस्ता धेलक। लगेमे घर। दुइयेटा घर बचनूकेँ। रिक्शा रखैले एकचारी भनसे घरक पँजरामे देने। एकटा घरमे भानसो करै आ जरनो-काठी रखै। दोसरमे सभतुर सुतबो करै आ चीजो-बौस रखै। अपना दरबज्जा नहि। मुदा घरक आगूमे धुर दसेक परती, जइपर सरकारी चबूतरा बनल। घर लग अबिते बचनू रिक्शा ठाढ़ कऽ आंगन बाढ़नि अनए गेल। बचनूकेँ देखि घरवाली कहलकै- 'आइ जे भाड़ा नै कमेलौं, तँ राति खएब की? अपने दुनू गोरे तँ ओहुना सुति रहब मुदा बच्चा सभ कना रहत?'

बिना किछु उत्तर देनहि बचनू बारहनि लऽ अंगनासँ निकलि गेल। चबुतराकेँ देहरा कऽ बहारलक। चबुतराक बनाबट सुन्दर, तँ बहारितहि चमकए लगल। चबुतराक चमकी देखि जीबछ बाजल- 'भाय, जेहने मजगूत चबुतरा छह तेहने सुन्दर। संगमरमर जेकाँ चमकै छह।'

जीबछक बात सुनि बचनुकेँ ओ दिन मन पड़लै जइ दिन ओ ठीकेदारकेँ गरिऔने रहए। मुस्कुराइत कहलकै- 'भाय, ओहिना एहेन सुन्दर बनल अछि। जे ठीकेदार बनबाबैक ठीकेदारी नेने रहए ओ नमरी चोर। तीन नम्बर ईंटा आ कोसीकातक बाउलसँ बनबए चाहैत रहए। हम गामपर नै रही। जखैन एलौं तँ देखलिऐ। देखिते सौँसे देह आगि लगि गेल। मुदा ऐठाम रहए क्यो ने। दोसर दिन नाओ कोड़ए ठीकेदारो आ जनो एलै। हमरा तँ गरमी चढ़ले रहए। जखने कोदारि लगौलक आकि जऽनक हाथसँ कोदारि छीनि ठीकेदारकेँ गरिअबै लगलौं। जहाँ गारि पढ़लिऐ आकि ठीकेदारो गहुमन साँप जेकाँ हुहुआ कऽ उठल। जहाँ ओ जोरसँ बाजल आकि हमहूँ गरिअबिते दुनू हाथे कोदारिक बेंट पकड़ि कहलिऐ, सार नाओ लइसँ पहिने तोरे काटि देबह। मुदा सभ पकड़ि लेलक। डरे ठीकेदारो थर-थर कँपए लगल। तखन जा कऽ एक नम्मर सभ किछु -ईंटा, सिमटी, बालु आनि बनौलक।'

'जीबछ बाजल- 'बाह।'

बचनू- 'कनी उपर आबि कऽ देखहक जे की सभ बनबौने छी। देखहक ई खेलाइ लऽ पच्चीसी घर छी, कौड़ीसँ खेलाएल जाइए। मुदा ई खेल समैया छी।

एकर चलती सिर्फ आसिने टामे रहैए। कोजगरा दिन तँ लोक भरि राति खेलते रहैए।'

दोसरकेँ देखबैत- 'ई मुगल पैठानक घर छी। हमरा गाममे लोक एकरा मुगल-पैठान कहै छै मुदा आन-आन गाममे एकरा कौआ-ठुट्ठी कहै छै। गोटीसँ खेलाइल जाइ अए।'

तेसर घर देखबैत- 'ई बच्चा सभक छिऐ। एकरा चैरखी-चैरखी घर कहै अए। झुटकासँ खेलल जाइए।'

जीबछ- हौ भाय, तू तँ बड़ खेलौड़िया बुझि पड़ै छह।'

बचनू- 'हौ, जिनगीमे आउर छै की? खाइत-पीबैत, हँसी-चौल करैत बिता ली। सभ दिन कमेनाइ, सभ दिन खेनाइ। कोनो हर-हर, खट-खट नै। धिया-पूताले तँ हम अपने इस्कूल खोलि देने छिऐ। खेती-पथारीक काजसँ लऽ कऽ रिक्शा चलौनाइ, ईंटा बनौनाइ सभ लूरि हमरा अछि। धिया-पूता तँ देखिये कऽ सीखि लेत।'

ओना जीबछ बचनुक गप सुनैत मुदा मन ताड़ीक खटाइन गंधपर अँटकल। होइ जे कखन दू गिलास चढ़ाएब। नै तँ कमसँ कम आंगुरमे भिड़ा नाकोक दुनू पूरामे लगा ली। जीबछकेँ बचनू कहलक- 'भाय, ताबे तूँ सभ कुछ सरिआबह, हम घरमे रिक्शा रखि दइ छिऐ। काजसँ निचेन भऽ जाएब।'

जीबछ सभ समान सरिअबए लगल। रिक्शाकेँ गुरकौने बचनु एकचारीमे रखि आंगन जा दुनू बच्चो आ पत्नियोकेँ कहलक- 'दुनू बाटिओ आ दुनू छिपलियो नेने चलू।'

कहि बचनू आगू बढ़ि गेल। पत्निक मन खुशीसँ झुमि उठल। दुनू बच्चा दुनू बाटी नेने आगू बढ़ल। दुनू छिपली नेने पत्नी डेढ़िया लग ठाढ़ भऽ मुँहपर नुआ नेने कनडेरिये आँखिये दुनूकेँ देखैत। अपना दुनू गोटेले बचनू चारि-चारि पीस माछ, चारि-चारि कचड़ी आ अधा किलो करीब मुरही-घुघनी मिला कऽ रखि, दुनू बच्चाकेँ एक-एक कचड़ी, एक-एक माछक कुटिया आ दू-दू मुट्ठी मुरही-घुघनी मिला कऽ देलक। दुनू बच्चा देखि कऽ चपचपा गेल। अपन-अपन बाटी वामा हाथे उठा दहिना हाथे खाइत बिदा भेल। माए लग पहुँच दुनू बच्चा अपन-अपन बाटी देखए देलक। बाटीमे घुघनीक मिरचाइक टुकड़ी आ कचड़ीमे सटल मिरचाइकेँ देखि माए कहलक- 'बौआ, मिरचाइ बीछि कऽ रखि दिहए। तोरा सभकेँ करु लगतौ।'

तहि बीच बचनू गमछाक एक भागमे मुरही-घुघनीकेँ मिला, चारि-चारिटा कचड़ी आ चारि-चारिटा माछक कुटिया फुटा, दुनू गोटेले रखलक। चबुतरे परसँ बचनू घरवालीकेँ सोर पाड़ि कहलक- 'ई सभ लऽ जाउ।'

अदहा मुँह झपने बचनुक पत्नी सरधा चबुतरापर पहुँच दुनू छिपली बचनुक आगूमे रखि देलक। एकटा छिपलीमे मुरही कचड़ी आ दोसरमे घुघनी-माछ बचनू दऽ देलक। झुर माछक तरुआ देखि सरधाक मन हँसए लगल। मनमे एलै जे कल्हुका जलखै तकक ओरियान भऽ गेल। दुनू छिपली तरा-उपरी रखि दुनू हाथसँ पकड़ि आंगन बिदा भेलि।

दुनू गोटे जीबछ आ बचनू- दुनू भाग बैसि बीचमे ताड़ीक डाबा, गिलास आ चखना रखलक। दुनू गिलासमे जीबछ ताड़ी ढ़ारि, आगूमे रखि आँखि मुनि, ठोर पटपटबैत मंत्र पढ़ए लगल। कनी काल मंत्र पढ़ि, आँखि खोलि तीन बेर ताड़ीमे आंगुर डुबा निच्चाँमे झाड़ि बाजल- 'हुअह भाय, आब पीबह।'

छगाएल दुनू, तँ एक लगाइते तीन-तीन गिलास पीबि लेलक। मन शान्त भेलै। मन शान्त होइतहि जीबछ सिगरेट निकालि एकटा अपनो लेलक आ एकटा बचनुओक हाथमे देलक। दुनू गोटे सिगरेट धरा पीबए लगल। सिगरेट पीबैत-पीबैत दुनूकेँ निशाँ चढ़ए लगल। निशाँ चढ़िते गप-सप्प करैक मन दुनू गोटेकेँ हुअए लगलै। एक मुट्ठी मुरही आ एक टुकड़ी माछ तोड़ि जीबछ मुँहमे लेलक। बचनुओ लेलक। मुँह महक घोंटि जीबछ बाजल- 'भाय, तोरा रिक्शा चला कऽ परिवार चलि जाइ छह?'

कचड़ी तोड़ि मुँहमे लैत बचनू उत्तर देलक- 'किअए ने चलत। हमरा की कोनो कोठा बनबैक अछि जे गुजर नै चलत। तहूमे की हम रिक्शा बारहो मास थोड़बे चलबै छी। भरि बरसात चलबै छी। जहाँ बरखा बन्न भेलै आकि महाकान्त भाइयक चिमनीमे काज करै छी।'

'नोकरियो करै छह?'

'एहेन नोकरी तँ भगवान सभकेँ देथुन।'

अलबेला लोक छथि महाकान्त भाय। हुनकर खाली पूँजी टा छिअनि। असली कारबारी हम दू गोटे छी। सरुप मुनसी आ हम। पजेबाक खरीद-बिकरीसँ लऽ कऽ कोइला मंगौनाइ, ओकर हिसाब बारी केनाइ हुनकर काज छिअनि। आ हमर काज पथेरीक देखभाल केनाइ, समएपर ओकरा दमकल चला, खाधिमे पानि देनाइसँ लऽ कऽ बजारसँ समान कीनि कऽ अननाइ आ चिमनी परसँ घर-परक दौड़-बरहा केनाइ रहैए।'

'तब तँ खूब कमाइ होइत हेतह?'

'कमाइ जँ करए चाही तँ ठीके खूब हएत। मुदा से नै करै छी। एक सए रुपैया रोज होइए। ओ घरवालीक हाथमे दऽ दै छिऐ। बाकी खेलौं-पीलौं। किएक तँ नजाइज पाइ जँ घरमे देबै तँ ओइसँ भाभन्स नै हएत।'

दुनू गोटे डबो भरि ताड़िओ आ चखनो खा-पीबि गेल। एक दिशि निशाँसँ दुनूक देह भसिआइत, दोसर दिस जोरसँ पेशाब लगि गेलै। उठैक मने ने होइ। मुदा पेशाबो जोरे होइत जाइत। दुनू गोटे उठि कऽ पेशाब करै गेल। जाबे पेशाब करै लऽ बैसै ताबे बुझि पड़ै जे कपड़ेमे भऽ जाएत। मुदा कहुना-कहुना कऽ सम्हारि पेशाब करए बैसल। पेशाब बन्ने ने होइ। बड़ी कालक बाद पेशाबो बन्न भेलै आ भक्को खुजलै।

चबुतरापर दुनू गोटे आबि कऽ बैसल। जीबछ कहलकै- 'भाय, हमरा डान्स करैक मन होइए।'

जीबछक बात सुनि बचनू पल्था मारि बैसि, ठेहुनपर दुनू हाथसँ बजबए लगल। मुदा ओहिसँ अबाज नै निकलै। अबाज निकलै मुँहसँ। जहिना-जहिना मुँहसँ बोल निकलइ तहिना-तहिना दुनू ठेहुनपर हाथ चलबै। तहि बीच दुनू बच्चो चबुतरापर आबि

थोपड़ी बजबए लगल। अंगनाक मुहथरिपर सरधा बैसि देखए लगली। जीबछ डान्स करए लगल। थोड़े कालक बाद बचनुक मुँह दुखा गेलै। मुदा जीबछ डान्स करिते। दुनू बच्चो थोपड़ी बजबिते। जहिना बाढ़िक रेतपर हेलनिहार चीत गरे सुति कतौसँ कतौ भसिया कऽ चलि जाइत तहिना बैसल बैसल सरधाक मन भसिआइत। तहि बीच बचनु उठि कऽ आंगन गेल। घैलची परक घैलसँ पानि फेकि नेने आएल। उल्टा कऽ घैल रखि, हाथमे औँठी रहबे करै, दुनू हाथे घैलक पेनपर बजबए लगल। लाजबाब बाजा। नचैत-बजबैत दुनू गोटे थाकि गेल। सुति रहल।

भोर होइते दुनू गोटे उठि, मुँह-हाथ धोए चलि देलक।

अइ बेर आसिन अपन चालि बदलि लेलक। किएक तँ आन साल अधहा आसिनक उपरान्त हथिया नक्षत्र अबैत छल। से अइ बेर नञि भेलै। पहिने हथिये चढ़ल। दू दिन हथिया बितलाक बाद आसिन चढ़ल। ओना बूढ़-बुढ़ानुसक कहब छनि जे दुर्गापूजामे हथिया पड़िते अछि, मुदा से नञि भेलै। आसिनक इजोरिया पखक परीबकेँ दुर्गा पूजा शुरु होइत। अइ बेर अमबसिये दिन हथिया चलि गेल। तहिना बरखोक भेल। जइ दिन आसिन चढ़ल ओहि दिन घनघनौआ बरखा भेल आ तेकर बाद फुहियो ने पड़ल। झाँटक कोन गप। हथियाक लेल ओरिआओल जरनो-काठी आ अन्नो-पानि सबहक घरमे रहिये गेल। मुदा तैयो किसान सबहक मनमे खुशी नै कमल। किएक तँ जँ हथियामे धानक खेतमे ठेंगाक हूर गरत तँ धान हेबे करत। मुदा किछु गोटेक मनमे शंका जरुर होइ जे निचला खेतमे ने पानि लगल अछि मुदा उपरका खेतक धान कोना फुटत? किएक तँ उपरका खेतक पानि टघरि कऽ निचला खेतमे चलि गेल। किछु खेतक पानि काँकोड़क बोहरि देने तँ किछु खेतक पानि मूसक बिल देने बहि गेल। जहिसँ बरखाक तेसरे दिन उपरका खेत सभ सुखि गेल। ओना दसमीक मेलो देखिनिहारक आ मेलामे दोकानो-केनिहारक मनमे खुशी। किएक तँ रुख-सुखमे नाचो-तमाशा जमत आ देखिनिहारोक भीड़ जुटत। ओना पैछला सालक सभ छगाएल। किएक तँ जइ दिन सतमी मेला शुरु भेल ओहि दिन तेहेन झाँट आ पानि भेल जे मेलाक चुहचुहिये चलि गेलै।

सुखाड़ समए रहने महाकान्त ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल सोचए लगल। जहियासँ चिमनी शुरु केलहुँ तहियासँ एहेन समए नहि पकड़ाएल छल। आन साल दिआरीक पछाति चिमनीक काजमे हाथ लगबै छलहुँ, से अइ बेर भगवान तकलनि। कहुना-कहुना तँ दिआरी अबैत-अबैत दू खेप भट्ठा जरुर लगि जाएत। सरकारोक योजना नीक पकड़ाएल। एक दिशि खरन्जाक स्कीम तँ दोसर दिशि इन्दिरा आबासक घर। ततबे नहि स्कूल आ अस्पताल सेहो बनत। ई सभ तँ अपने गामटा मे बनत से नहि, आनो-आन गाममे बनत। सालो भरि ईंटाक महगीये रहत। ओते पुराइये ने पाएब। एते बात मनमे अबिते मुँहसँ हँसी निकलल। तहि काल पत्नी रागिनी बेड टी नेने आबि चुप-चाप सिरमा दिशि ठाढ़ भऽ पतिकेँ मुस्कुराइत देखलनि। पतिक मुस्की देखि रागिनी मने-मन सोचए लागलि जे की बात छिऐ जे ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल मुस्करा रहल छथि। मुदा बिना किछु बजनहि टेबुलपर चाह रखि, ओरिया कऽ नाक पकड़ि

डोला देलक। नाक डोलबितहि महाकान्त उठि कऽ बैसि रहल। आगूमे रागिनीकेँ ठाढ़ देखि चौबन्निया मुस्की दैत आँखिक इशारासँ पलंगपर बइसैले रागिनीकेँ कहलक। पतिक मूड देखि रागिनी ससरिये जाएब नीक बुझलक।

महाकान्त आ रागिनी, संगे-संग कओलेजमे पढ़ने। जहिये दुनू गोटे बी.ए.मे पढ़ैत छल तहिये दुनूक बीच प्रेम भऽ गेल। दुनू सम्पन्न परिवारक। ओना पढ़ैमे दुनू ओते नीक नहि जते दुनूक रिजल्ट नीक होए। दुनूकेँ मैट्रिको आ इन्टरोमे फस्ट डिविजन भेल रहै। तेकर कारण मेहनत नहि पैरबी रहए। नीक रिजल्टक दुआरे संगियो-साथीक बीच आ शिक्षकोक बीच दुनूक आदर होइ। दुनूक बीच संबंध बी.ए. आनर्सक क्लासमे भेलै। किएक तँ आनर्समे कम विद्यार्थी रहने गप-सप्प करैक अधिक समए भेटै। दुनूक बीच संबंध गप-सपसँ शुरु भेल। तेकर बाद किताबक लाथे डेरोमे एनाइ-गेनाइ शुरु भेल। संबंध बढ़िते गेलै। संगे बजार बुलनाइ, किताब-कापी खरीदनाइसँ लऽ कऽ कपड़ा, जुत्ता-चप्पल खरीदनाइ धरि संगे हुअए लगलै। सिनेमा तँ मेटनियो शोमे देखए लगल। जाहिसँ आंगिक संबंध सेहो शुरुह भऽ गेलै। एकटा डबल रुम लऽ दुनू गोटे डेरो एकठाम कऽ लेलक। दुनूक बीचक संबंधक चरचा सिर्फ विद्यार्थिये आ शिक्षके धरि नहि रहि दुनूक पिता धरि पहुँचि गेलै। मुदा दुनूक पिताक दू विचार। तेँ बुझियो कऽ दुनू अनठा देलक। महाकान्तक पिता सुधीर जुआन-जहानक खेल बुझैत तँ रागिनीक पिता रमानन्द सम्पन्न परिवार आ पढ़ल-लिखल लड़का बुझि बेटीक भार उतड़ब बुझैत।

एम.ए. पास केलापर दुनूक विआह भऽ गेलै। सुधीरक परिवार एक पुरखियाह। अपनो भैयारीमे असकरे आ बेटो तहिना। ओना बेटी चारिटा, जे सासुर बसैत। परिवारक काजसँ महाकान्तकेँ कम्मे सरोकार। तँ भरि-भरि दिन चौखड़ी लगा जुओ खेलैत आ शराबो पीबैत। जे पितो बुझैत। महाजनीक कारोबार, तँ भरि दिन सुधीर रुपैयेक हिसाब-बारी आ धानेक लेन-देनमे व्यस्त रहैत। महाकान्तक क्रियाकलाप देखि एक दिन खिसिया कऽ सुधीर कहलखिन- 'बौआ, बड़ कठिनसँ धन होइ छै। एना जे भरि-भरि दिन बौआइल घुमै छह, तइसँ कैक दिन लछमी रहतुहुन। तँ किछु उद्यम करह।'

पिताक बात महाकान्त चुपचाप सुनि लेलक। किछु बाजल नहि। बेटाकेँ चुप देखि फेर कहलखिन- 'पाँच लाख रुपैया दै छिअह, चिमनी चलाबह। उत्तरबरिया बाधमे अपने बीस बीघा ऊँच जमीन छह, ओहिमे चिमनी बना लाए।'

'बड़बढ़ियाँ' कहि महाकान्तो चुप भऽ गेल। पिताक मनमे जे जखने काजमे लगि जाएत तखने चालि-ढ़ालि बदलि जेतै। किएक तँ काज ओहन कारखाना होइत, जहिमे मनुष्य पैदा लैत।

आने साल जेकाँ अपन काज बचनू करए लगल। पथेरीक देखभालसँ लऽ कऽ हाट-बजार आ महाकान्तक घरपर जा रागिनीकेँ ब्राण्डीक बोतल पहुँचबै धरि। महाकान्तो अपन आने साल जेकाँ नियमित काज करए लगल। सबेरे आठ बजेमे

जलखै खा मोटर साइकिलसँ चिमनीपर चलि अबैत। चिमनीपर आबि तीनू गोटे - महाकान्त, सरुप, बचनू- भरि मन गाँजा पीबि महाकान्तक चिमनीक कार्यालयमे सुति रहैत। बारह बजेमे बचनू उठा दैत। उठितहि महाकान्त मुनसीसँ रुपैया मांगि बचनुएकेँ ब्राण्डी कीनैक लेल बजार पठा दैत आ अपने मुँह-हाथ धोए खाइले घरपर बिदा होइत। घरपर पहुँचि धड़-फड़ कऽ खाइत आ चोट्टे घुरि कऽ चिमनीपर आबि सुति रहैत, जे चारि बजे उठैत। बचनुओ बजारसँ शराब खरीद महाकान्तक घरपर जा रागिनीकेँ दऽ दैत। कओलेजे जिनगीसँ दुनू गोटे -महाकान्तो आ रागिनियो- शराब पीबैत। ओना रागिनी ब्राण्डीये टा पीबैत मुदा महाकान्त सभ कुछ खाइत-पीबैत। गाँजा, भाँग, इंग्लीस, पोलीथिन, अफीम, ताड़ी सभ कुछ। जखन जे भेटल तखन सएह।

आइ जखन बचनू ब्राण्डीक बोतल लऽ रागिनी लग पहुँचल तँ रागिनीक नजरिमे नव विचार उपकलै। आन दिन रागिनी बचनूसँ बोतल लऽ रखि लैत। मुदा आइ आदरसँ बचनूकेँ हाथक इशारासँ पलंगपर बइसैक इशारा केलनि। दुनू गोटे, पलंगपर आमने-सामने बैसि गेल।

रागिनी बाजलि- ‘बहुत दिनसँ मनमे छल जे अहाँसँ भरि मन गप करितहुँ। मुदा अहाँ तते धड़फड़ाएल अबै छी जे किछु कहैक मौके ने भेटैए।’

बचनू- ‘गिरहतनी, हम तँ मूर्ख छी। अहाँ पढ़ल-लिखल छी। अहाँक गप्पक जबाव हमरा बुते थोड़े देल हएत।

रागिनी- ‘कोनो की हम अहाँसँ शास्त्रार्थ करब जे जबाव देल नञि होएत। अपन मनक व्यथा कहब। जे सभकेँ होइ छै।’

मनक व्यथा सुनि बचनू मने-मन सोचए लगल जे हम सभ गरीब छी, हरदम एकटा ने एकटा भूर फूटले रहैए। मुदा रागिनी तँ सभ तरहे सम्पन्न छथि। नीक भोजन, दुनू परानी पढल-लिखल। तखन की मनमे बेथा छनि जे हमरा कहती। मुदा तैयो मनकेँ असथिर कऽ रागिनी दिशि देखए लगल। मनमे उत्सुकता बढ़ै। मुदा रागिनीक चेहरामे, डूबैत सूर्य जेकाँ, मलिनता बढ़ैत।

रागिनी- ‘हमरासँ अहाँ बहुत नीक जिनगी जीबै छी।’

अपन प्रशंसा सुनि बचनू गद-गद भऽ गेल। आँखि चौकन्ना हुअए लगलै। मनमे ओहन-ओहन विचार सेहो उपकए लगलै जेहेन आइ धरि मनमे नहि आएल छलै। मुदा किछु बाजै नहि।

बचनूकेँ चौकन्ना होइत देखि रागिनी कहए लागलि- ‘जहिना अकासमे चिड़ैकेँ उड़ैत देखै छिऐ, तहिना अहूँ छी। मुदा हम पिजरामे बन्न चिड़ै जेकाँ छी। जखन पढ़ै छलहुँ तखन यएह सोचै छलहुँ जे कोनो कओलेजमे प्रोफेसर बनि जिनगी बिताएब। से सभ मनेमे रहि गेल। भरि दिन अंगनामे घेराएल रहै छी। ने ककरोसँ कोनो गप-सप्प होइए आ ने अंगनासँ निकलि कतौ जा सकै छी। तहूमे असकरुआ परिवार अछि। लऽ दऽ कऽ एकटा सासु छथि। ने दोसर दियादनी आ ने कियो दोसर। भरि दिन पलंगपर पड़ल-पड़ल देह-हाथ दुखा जाइए। जाधरि पढ़ै छलहुँ ताधरि दुनियाँ किछु आरो बुझाइत छल। मुदा आब किछु आर बुझाइत अछि। कखनो मन होइए तँ किछु

पढ़ै छी नै तँ टी.बी. देखै छी। पढ़िये कऽ की हएत। ने दोसरकेँ बुझा सकै छी आ ने अपना कोनो काज अछि, जहि लेल सीखब। जानवरोसँ बत्तर जिनगी बनि गेल अछि। जहिना गाए-महीस भरि पेट खेलक आ खूँटापर बान्हल रहल तहिना भऽ गेल छी। मुदा मनुक्ख तँ मनुख छी। जाधरि अपना मनक बात दोसरकेँ नहि कहबै आ दोसरक पेटक बात नहि सुनबै, ताधरि नीक लगत। अनेरे लोक किअए पढ़ैए। जँ लकीरक फकीरे बनि जीबैक छैक।

सुखल मुस्की दैत बचनू बाजल- 'गिरहतनी, अहाँकेँ कोन चीजक कमी अछि जे कोनो तरहक दुख हएत?'

रागिनी- 'अहाँ जे कहलहुँ ओ ठीके कहलौं। किएक तँ एहनो बुझिनिहारक कमी नञि अछि। एहनो बहुत लोक अछि जे धनेकेँ सभ कुछ बुझैत अछि। मुदा धन तँ खाली शरीरक भरण-पोषण कऽ सकैत अछि, मनक तँ नहि। तीन सालसँ बेसी ऐठाम ऐला भऽ गेल मुदा ने एक्कोटा सिनेमा देखलहुँ आ ने एक्को दिन कतौ घुमै-फिरैले गेलहुँ। जाधरि बेटी माए-बाप लग रहैए ताधरि सभ कुछ -धन-सम्पत्ति कुटुम्ब-परिवार- अपन बुझि पड़ै छै, मुदा सासुर पाएर दैतहि सभ बीरान भऽ जाइ छै। तहिना माए-बापक बीच जे आजादी बेटीक रहै छै ओ सासुर ऐलापर एकाएक बन्न भऽ जाइ छै।

बचनू- 'जँ कतौ जाइक मन होइए वा देखैक मन होइए तँ नैहर किअए ने चलि जाइ छी?'

रागिनी- 'जहिना सासुर तहिना नैहरो भऽ गेल। जहिना सासुरमे पुतोहू बनि जीबैत छी तहिना नैहरोमे पाहुन बनि जाइ छी। जना हम्मर किछु एहि घरमे अछिये नहि। जे घर अप्पन नञि रहत ओहि घरमे ककरा कहबै जे हम फल्लाँ ठीन जाएब। जन्म देनिहारि माइयो आने बुझैए। तइ परसँ भाए-भौजाइक जुइत। ई तँ नञिहरक गप कहलौं आ अहिठामक जे होइए से हमहीं बुझै छी। बुरहा ससुर जखन आंगन औताह तँ बुझि पड़त जे जना अस्सी मन पानि पड़ल छनि। बूढ़ि सासुसँ तँ कने हँसियो कऽ गप्प करताह मुदा हमरा देखिये कऽ झड़कबाहि उठि जाइत छनि। जँ कहियो माथपर नुआ नहि देखलनि तँ बुढ़ीकेँ अगुआ कऽ की कहताह की नहि, तेकर कोनो ठेकान नहि। भरि-भरि दिन, पहाड़ी झरना जेकाँ, आँखिसँ नोर झहरैत रहैए। कियो पोछनिहार नहि।'

बचनू- 'गिरहतनी, हमरा बड़ देरी भऽ गेल। महाकान्त भाय बिगड़ताह।'

रागिनी- 'अच्छा, चलि जाएब। कहै छलौं जे सदिखन तरे-तर मन औंढ़ मारैत रहै अए जे लछमी बाइ जेकाँ तलवार उठा परदा-पौसकेँ तोड़ि दी, मुदा साहस नै होइए। केरा भालरि जेकाँ करेज डोलए लगैए। आइ जखन अपन मनक बात अहाँकेँ कहलौं तँ मन कने हल्लुक बुझि पड़ैए।'

बचनू- 'तखन तँ गिरहतनी हमहीं नीक छी।'

रागिनी- 'बहुत नीक। बहुत नीक। एते काल जे अहाँसँ गप केलहुँ से जना बुझि पड़ैए जे जना पाकल घाबक पीज निकललापर जे सुआस पड़ै छै तहिना भऽ रहल

अछि। आब सभ दिन एक घंटा गप्प कएल करब। अहाँ कियो आन छी। घरेक लोक छी की ने।'

एक टकसँ बचनू रागिनीक आँखिपर आँखि दऽ हृदए देखए लगल। तहिना रागिनियो बचनुक हृदए पढ़ैए लागलि।

चुनवाली

नीन्न टुटितहि मखनी मोथीक बिछान समेटि ओसारक उत्तर-पूब कोनमे ठाढ़ कऽ निच्चाँ उतड़ए लागलि आकि सीढ़ीपर पिछड़ि गेलि। पाएर पिछड़ितहि हाथसँ ओसार पकड़ए चाहलक। मुदा जाबे सरिया कऽ ओसार पकड़ै-पकड़ै ताबे ओलतीमे खसि पड़लि। झलफल रहने कियो दोसर उठल नहि। थोड़बे पहिने एकटा छोटकी अछार भेल। घरक चारसँ ठोपे-ठोप पानि चुबतहि। सीढ़ीपरसँ खसितहि मखनीक दहिना ठेहुनक जोड़ छिटकि गेलै। तत्काल छिटकब नहि बुझलक। एतबे बुझलक जे ठेहुन कट दऽ उठलहैं। मनमे एलै जे कियो देखलक तँ नहि तँ हाँइ-हाँइ उठए लागलि। जोशमे उठि तँ गेलि मुदा ठेहुनक कचकबसँ फेर ओसार पकड़ि सीढ़ियेपर बैसि गेलि। बैसितहि मनमे बिचार उठए लागलै- कोना मटकुरियाक बेटाक परबरिस चलतै....ढेरबा बेटी छै बिआह कन्ना करत.... अपना कमाइक कोनो लुरि नहि छैक.... बहुओ धमधुसरिये छै.... अपना खेत-पथार नहि छै.... गामक लोको तेहेन अछि जे ककरो कियो नीक नहि करैत.... हे भगवान कोन बिपत्ति दऽ देलह?

कने काल गुम्म रहि बेटाकेँ जोरसँ सोर पाड़ि कहलक- 'मटकुरिया, रौ मटकुरिया?

दुनू परानियो आ दुनू धियो-पूतो निन्ने भेर। तँ ने मटकुरिया उठल आ ने कियो दोसर। पुनः दोहरा कऽ मखनी जोरसँ बाजलि- 'रौ बौआ, बौआ रौ। हम पिछड़ि कऽ खसि पड़लौं से उठिये ने होइए।'

धड़फड़ा कऽ उठैत मटकुरिया बाजल- 'माए-माए, अबै छी।'

ताधरि फुलियो, कबुतरियो आ बेटोक नीन टुटल। कहि केवाड़ खोलि मटकुरिया दौगल माए लग आबि पुछलक- 'कोना कऽ खसलैं ?'

पाछुसँ स्त्रियो आ बेटो-बेटी पहुँचल। बेटा तँ पाँचे बर्खक मुदा तैयो माए-बापक देखा-देखी करैत दादीकेँ पकड़लक। चारु गोटे उठा मखनीकेँ ओसारपर लऽ गेल। बिछान बिछा सुता देलक। कनी-कनी ठेहुन फुलए लगल। फुलब देखि फुलिया पतिकेँ कहलक- 'अहाँ पहिने डाकडर बजा लाउ। हम ताबे कड़ू तेलसँ ससारि दै छिअनि। बुच्ची घरसँ तेलक शीशी नेने आ।'

मटकुरिया डॉक्टर ऐठाम बिदा भेल। तेलक शीशी आनए कबुतरी घर गेलि। तहि बीच मंगनिया दादीकेँ कहए लगल- 'आँइ गै बुढ़िया, एतने उपर से....।'

बेटाक मुँहपर फुलिया हाथ दऽ आगू बाजब रोकि देलक। मुदा पोताक बातसँ मखनीकेँ एक्को मिसिया दुख नहि भेलि। मुस्की दैत बाजलि- 'बिलाइ खसा देलक।'

शीशीक मुन्ना खोलितहि कवुतरी आएल। दुनू माए-धी तरहत्थीपर तेल लऽ लऽ

दुनू हाथमे मिला, दहिना पाएर-जाँघ सहित- मे ओंसइ लागलि। मखनीक ठेहुनक दर्द बढ़िते जाइत। जाहिसँ दुनू गोटेकेँ ससारब छोड़ि दै लेल कहलक। ताबत डॉक्टरक संग मटकुरियो पहुँचल। मखनीक ठेहुन देखितहि डॉक्टर कहलखिन- 'हिनका ठेहुनक जोड़ छिटकि गेल छन्हि। पलस्तर करबए पड़त। ताबत दर्द कम होइ ले इन्जेक्शन दऽ दै छिअनि। पलस्तरक समान सभ मंगबए पड़त।'

एक्के-दुइये गामक जनिजाति पहुँचए लागलि। जनिजातिक संग धियो-पूता। लोकसँ मटकुरियाक आंगन भरि गेल। पलस्तरक समान मंगा डॉक्टर पलस्तर करैत कहलखिन- 'चिन्ता करैक बात नहि अछि। पनरह दिनमे ठीक भऽ जेतनि।' कहि अपन फीस लऽ चलि गेलाह। मुदा लोकक आबा-जाही लगले। रंग-विरंगक गपसँ अंगना गनगनाइत।

भरि दिन सभ तुर मटकुरिया भुखले रहि गेल। ने भानसपर ध्यान गेलै आ ने ककरो भूखे बुझि पड़लै। घरमे चूड़ा रहए। जे मंगनिया खेलक। बेर झुकैत-झुकैत अंगना खाली भेलै। खाली अपने पाँचो गोटे अंगनामे रहल। सबहक मनो असथिर भेलै। सभ -मटकुरियो, फुलियो आ कबुतरियो- अपना-अपना ढ़ंगसँ सोचए लगल। ओना कहियो-काल, सासुकेँ मन खराब भेने वा कतौ गाम-गमाइत गेने, फुलिये चून बेचए जाइत। सभ काज बुझले तेँ मनमे बेसी चिन्ता नहि। चिन्ता खाली एतबे जे कहुना सासु माने माएक परान बचि जाइन। मुदा खुशी बेसी। सोलह बर्खसँ सासुर बसै छी मुदा अखन धरि घरक गारजन नहि बनलहुँ। लोककेँ देखै छिऐ जे सासुर अबितहि अपन जुइत लगबए लगैत अछि। भगवान हमरो दहिन भेलाह। आब हमहूँ गार्जन बनब। घरक गारजन तँ वएह ने होइत जे कमाइत अछि। जे उपारजने नै करत ओ घरक जुतिये-भाँति की लगौत। अगर जँ लगेबो करत तँ चलतै कोना? छुछ हाथ थोड़े मुँहमे जाइत छैक। काजक अपन रस्ता होइत अछि। जे केनिहारे बुझैत। बिनु केनिहार जँ जुतिये लगौत तँ ओ या तँ दुरि हेतै वा गरे ने लगतै। ओना अखन फुलियाक घरोबला आ सासुओ जीविते, तँ गारजनियो हाथमे आएब कठिन। मुदा तैयो आशा। अखन धरि सिन्नुरो-टिकुली लेल खुशामदे करै छलि, से आब नहि करै पड़तै। तँ खुशी।

कबुतरीक मनमे एहि दुआरे खुशी होइत जे जते लूरि दादीकेँ अछि ओते लूरि गाममे ककरो नहि अछि। मुदा कमाइक तेहेन भुत लगि गेल छै जे जइ दिन मरत तही दिन छोड़तै। सभ लूरि संगे चलि जेतै। तँ नीक भेलै जे अवाह भऽ गेल, आब तँ अंगनामे रहत। जखने अंगनामे रहए लगत तखने एका-एकी सभ लूरि सीखए लगब। मुदा दादीएकेँ की दोख देबै। भरि दिन दस सेरक छिट्टा माथपर नेने बुलैत अछि तँ देह-हाथ दुखेबे करतै। साँझखिन कऽ थाकल-ठहिआएल अबैए असुआकेँ पड़ि रहैए। से आब नञि हेतै। निचेनसँ पावनियो-तिहारक विधि-विधान आ गीतो-नाद सीखब। एत्तेटा भऽ गेलौंहँ, ने अखैन तक एक्कोटा गीत अबैए आ ने विआह-दुरागमनक अड़िपन बनौल होइ अए। कइए दिन मनमे अबैए जे मालतिये जेकाँ हमहूँ अपन गोसाँइ घरक ओसारमे पुरैनिक लत्ती, कदमक गाछ लिखी। से लुरियो रहत तब ने।

साँझू पहरकेँ जते खान जतै छिऐ तते खान समयो भेटैए ते नहिये होइए। किएक तँ बिछानपर पड़िते ओंघा जाइए। जँ पुछबो करै छिऐ तँ अइ गीतक पाँति ओइ गीतमे आ ओइ गीतक भास अइ गीतमे कहए लगैत अछि। जाहिसँ किछु सीखि नहि पबैत छी।

मटुकलालकेँ एहि दुआरे खुशी होइत जे बेटा-पुतोहूक रहैत बूढ़ि माए एते खटए से उचित नहि। मुदा कहबो ककरा करबै। हमरा कोनो मोजर दइए। दूटा धिया-पूता भेल। बेटिओ विआह करै जोकर भऽ गेलि मुदा हमरा बच्चे बुझैए। हम की करु। तँ भगवान जे करै छथिन से नीके करै छथिन। भने आब भारी काज करै जोकर नहि रहलि। जे अपनो बुझत आ मनाही करबै तँ मानियो जाएत। मरैक डर ककरा नै होइ छै। तहूमे बूढ़-बुढ़ानुसकेँ। तँ मने-मन खुश। लोक हमरा तड़िपीबा बुझि बुड़िबक बुझए। तँ की हम बुड़िबक छी। कियो बुझैए तँ बुझऽ। जहिया बाबू मुइलाह तहिया जते भार कपारपर आएल, से कियो आन सम्हारि दइए। की अपने करै छी। पसिखन्ने जाइ छी तँ की लुच्चा-लम्पटक संग बैसि पीबै छी जे चोरी-छिनरपन्नी सीखब। या तँ असकरे बैसि कऽ पीबै छी या बड़का लोक लग बैसि कऽ पीबै छी। बड़का लोकक मुँहमे सदिखन अमृत रहैत छैक। रमानन्द बाबूसँ गियनगर लोक अइ इलाकामे दोसर के अछि। तिनकासँ हमरा दोस्ती अछि। हुनकर ओ बात हम गिरह बान्हि नेने छी जे जहिना कियो जनमैए, बढ़िकेँ जुआन होइए। जुआनसँ बूढ़ भऽ मरि जाइत अछि। ई तँ दुनियाँक नियमे छिऐ। सभकेँ होएत। जे नहि बुझत ओ नहि बुझह। मुदा हम तँ ओएह मानै छी। फेर माए दिशि नजरि घुरलै। मने-मन सोचए लगल जे माइयक पाएर टुटब कोनो अनहोनी थोड़े भेलै। ई तँ भगवानक लीले छिअनि। भगवान कखनो अपना सिर अजस लेताह। कोनो ने कोनो कारण भइये जाइत छैक। तइले हमरा दुखे किए हएत। जहिना एते दिन बीतल तहिना आगुओ बीतत। एते दिन जहिना माएकेँ, बेचि कऽ घुमैत काल, आगूसँ पथिया आनि दै छलिऐ तहिना आब घरोवालीकेँ आनि देबै। कियो हमरा देखा दिअ तँ जे एक्को दिन हमरा काजमे नागा भेल। गोसाँइ डूबै बेर, कतौ रही, कतवो पीबि कऽ बुत्त रही मुदा तँ की अपन काज कहियो छोड़ैत छी।

मटकुरिया परिवारक खानदानी जीविका चूनक। महिला प्रधान रोजगार। किएक तँ चूनक बिक्री अंगने-अंगने होइत। शुद्ध गमैआ व्यवसाय। ने चून बनबैक समान बाहरसँ अनै पड़ैत आ ने बेचैक असुविधा। गामक अधिकांश परिवारमे चूनक खर्च। कियो पान खाइत तँ कियो तमाकुल। दुनूमे चूनक जरुरत। चून बनाएबो कठिन नहि। डोका जरा कऽ बनैत। अन्नेक कोठी जेकाँ डोको जरबैक कोठी होइत। मुदा अन्नक कोठीमे उपर छोट मुँह, अन्न ढ़ारैक लेल बनाओल जाइत, जखैनकि चूनक कोठीक उपरका भाग खुलल रहैत। निच्चाँक मुँह दुनूक एक्के रंग। कच्चो मालक कमी नहिये। किएक तँ गरीब-गुरबा लोक डोकाक मांस खाइत। मांसो पवित्र। किएक तँ डोका माटि खा जीवन-बसर करैत। डोकेक उपरका भागसँ चून बनैत।

चूनक बजारो गामे-घर। बिरले गोटे घरमे चूनक खर्च नहि होइत, नहि तँ सबहक घरमे होइत। पहिने मटकुरियाक दादी-परदादी चून बेचैत छलि, मुइलाक पछाति

माए बेचए लागलि। सात दिनक सप्ताहमे पाँच दिन मखनी भौरी गामे-गामे करैत। एक-एक गाममे एक-एक दिनक पार बनौने। आठ दिन खर्चक हिसाबसँ सभ कियो चून कीनैत। सभ काज अन्दाजेसँ। अन्दाजेसँ चूनो दैत आ अन्दाजेसँ -धान-मडुआ- बेचो लैत। कोनो हरहर-खटखट नहि। किएक तँ मनक उड़ान छोट। ने कोठा-कोठीक इच्छा, ने सुख-भोगक। बान्हल मन तँ मात्र मनुक्ख बनि जीबै टाक इच्छा।

बजारोक प्रतियोगिता नहि। कारोबारमे छीना-झपटी नहि। किएक रहतै। जहिना जातिक शासन तहिना समाजक दंडात्मक रुखि। समाजमे निश्चित जाति निश्चित काजसँ बान्हल। एकक काज दोसर नहि करैत, तँ लक्कड़-झक्कड़ कम। जेना डोम, नौआ, धोबि, बरही कुम्हार इत्यादिक अपन-अपन जीविकाक धंघा। जे कड़ाइसँ पालन होइत। दुनू बिन्दुपर। कराओलो जाइत आ करबो करैत। सीमित क्षेत्रक बीच कारोबार। कियो अतिक्रमण नहि करैत। जँ कहीं-कतौ अतिक्रमण होइत तँ जातिक बीच ओकर फरिछौट होइत। तँ सभ अपन-अपन सीमाक भीतर रहैत। हँ, ई बात जरुर होइत जे सीमाक भीतर भैयारीक बँटबारासँ विभाजित होइत। मुदा मटकुरियाक परिवार एक पुरिखियाह, तँ एहेन प्रश्ने नहि। रोजगारोक लेल तहिना। सभक अपन-अपन सीमित क्षेत्र। एक क्षेत्रमे दोसरक प्रवेश बर्जित। मुदा बेर-बेगरतामे एक-दोसराकेँ भार दऽ समाजक काजमे बाधा उपस्थिति नहि हुअए दैत।

चून बेचि मखनी सिर्फ परिवारे नहि चलबैत। महाजनियो करैत। किएक तँ सोलहो आना श्रमे पूँजी। मेहनत कऽ डोका एकत्रित करैत। डोका जरा कऽ चून बनबैत। आ अन्नसँ चून बदलैत। चूनक कीमतो अलग-अलग। जहिठाम गरीब लोक चुनक कम कीमत दैत तहिठाम सुभ्यस्त किछु बेशिये दैत। पाँचे गोटेक परिवार मखनीक। कते खाएत। तँ फजिलाहा अन्न सवाइपर लगबैत। सेहो बिना लिखा-पढ़ीक। मुँह जवानी। जहिसँ किछु उपरो होइत किछु बुड़ियो जाइत। पाँच गाममे मखनीक कारोबार। अगर जँ एहिसँ आगू कारोबार बढ़बए चाहत तँ सम्हारले ने होइत। किएक तँ डोका जमा करैसँ चून बनबै धरि, दू दिन समए लगि जाइत। आठे दिनपर बिक्रीक बीट घुमैत। तँ पाँच गामसँ बेशी गाम सम्हारब कठिन।

टाँग अवाह होइतहि मखनी चून बेचब छोड़ि देलक। मुदा परिवारक रोजगार बन्न नहि भेलै। आब फुलिया बेचए लागलि। चिन्हार गाम चिन्हार गहिकी। तँ कतौ बाधा नहि। मुदा मखनीक महाजनी बुड़ि गेल। किएक तँ पाँचो गाममे पाँच गोटे ऐठाम अपन धान-मडुआ रखैत छलि, ओहि ठामसँ ओहि गाममे सवाइ लगबैत छलि। अपन आवाजाही बन्न भेने बिसरि गेलि। लेनिहारो बिसरि गेल। मुदा तइ लेल मखनीक मनमे दुख नहि भेलै। खुशिये भेलै। खुशी एहि दुआरे भेलै जे जावत देहमे ताकत छलै ताबत अपनो, परिवारो आ दोसरोकेँ खुऔलौं। जिनगीक सार्थकता अइसँ बेशी की हएत। यएह ने धर्म छी। धर्ममय जिनगी बना बुढ़ाढ़ी धरि जीवि लेब, अइसँ बेशी की चाही। तँ मने-मन खुशी।

समए आगू बढ़ल। कारोबारक रुपो बदलल। कोना नहि बदलैत? समयोक तँ कोनो ठेकान नहि। कोनो साल अधिक बरखा होइत तँ कोनो साल रौदी। अधिक

वर्षा भेने तँ अधिक डोकाक वृद्धि होइत। मुदा रौदीमे कमि जाइत। बिसबासु कारोबारक लेल वस्तुक उपलब्धि अनिवार्य। जे आब नहि भऽ पबैत। मुदा समयो तँ पाछु मुहे नहि आगू मुँहे ससरत। पत्थर-चून बजारमे आबि गेल। पर्याप्त वस्तुक उपलब्धि भऽ गेल। बाजारो बढ़ल। जहिठाम उमरदार लोक तमाकुल-पान सेवन करैत छलाह तहिठाम आब स्कूल-कओलेजक विद्यार्थी सेहो करै लगल। ततबे नहि बाल-श्रमिक सेहो करए लगल। गामे-गाम चौक-चौराहा बनि गेल। जाहिसँ चाह-पान खेनिहारो बढ़ल। ओना तमाकुल-पानक अतिरिक्त पान-पराग, शिखर, रंग-विरंगक गुटका सेहो बढ़ि गेल। तेकर अतिरिक्त सार्वजनिक उत्सब सेहो बढ़ल। परिवारक मांगलिक काज विआह, मूड़न, सराध, सेहो नमहर भेल। जहिसँ पान-तमाकुलक खर्च बढ़ल। तँ चुनोक खर्च कते गुणा बढ़ि गेल।

मखनीक जगह फुलिया लेलक। ओना घरक रोजगार तँ फुलियोकेँ किछु सीखैक जरुरत नहि। सभ बुझले। सासुक रहितहुँ, कहियो-काल फुलियो बेचए जाइत छलि। किएक तँ जहि दिन मखनी नैहर जाइत तहि दिन फुलिये बेचैयो जाइत आ डोका आनि-आनि चूनो बनबैत। मुदा आब चून बनबैक रुपे बदलि गेल। लोको डोकाक चूनक बदला पत्थर-चून खाए लगल। ओना अखनो बुढ़-पुरान सभ पाथरक चूनकेँ घटिया बुझैत। जे तेजी डोकाक चूनमे होइत ओ पाथरक चूनमे नहि। मुदा हारल नटुआ की करत।

चून बेचैक रुपो बदलल। अखन धरि जे अंदाजसँ बिक्री होइत छल ओ आब तौल कऽ हुअए लगल। बेचक जगह पाइ लेलक। ओना अन्नोक चलनि सोलहन्नी समाप्त नहिये भेलहेँ। आब ओतबे अन्न पड़ैत जे आन ठाम रखैक जरुरत फुलियाकेँ नहि होइत। पाइ बौगलीमे रखैत आ अन्न पथियामे। ओना कर्जखौक सेहो कमल। किएक तँ समएक आगू बढ़ने खाइ-पीबैक उपाए सेहो लोककेँ भेल। बोइन सेहो सुधरल। पाइक आमदनी किसानोकेँ हुअए लगल। लोकक पीढ़ियो बदलल। जाहिसँ विचारोमे बदलाव आएल।

समएक आगू बढ़ने कारोबार असान भेल। जाहिसँ मटकुरियाक परिवार सेहो आगू मुँहे ससरल। मुदा मटकुरिया जहिनाक तहिना रहि गेल। पहिने जे मटकुरिया माएक संग डोका अनैत छल ओ आब एक्के ठाम बजारसँ चून कीनि कऽ लऽ अबैत अछि। सुखल चून। सुखल चूनकेँ गील बनबैमे सेहो अधिक फीरिसानी नहिये।

फागुन मास। शिवरातिक तीनि दिन पछाति। धुरझार लगन चलैत। मेला जेकाँ बरिआती चलैत। अंग्रेजीबाजा आ लाउडस्पीकरक अवाजसँ वायुमंडल दलमलित। आइ सबेरे -आन दिन चारि बजे- मटकुरिया पसिखाना विदा भेल। समइयो सोहनगर। झिहिर-झिहिर हवा चलैत। अकासमे जहिना चिड़ै गीत गबैत तहिना हवामे गाछ-बिरीछ नचैत। पसिखाना पहुँचते मटकुरियाकेँ पासी कहलक- 'भैया, आइ निम्मन बसन्ती माल अछि, खजुरिया नहि ताड़क।'

पासीक बात सुनि मटकुरियाक मनमे खुशी उपकल। मने-मन सोचलक जे दू गिलास आरो बेसी चढ़ा देबै, बाजल- 'तब तँ आइ जतरा नीक बनल अछि।'

पासी- 'अहाँ तँ हमर पुरान अपेछित छी भैया, तँ दू गिलास ओहिना मंगनिये पिआएब।'

दू गिलास मंगनी सुनि मटकुरिया सोचलक जे पहिल दिन छिऐ तँ आन दिनसँ कम कोना लेब? यात्रा तँ पहिलुके दिन नीक होइ छै। बेचाराकेँ सगुन कोना दुरि करबै। मुस्की दैत कहलक- 'बड़बढ़ियाँ। अपनो मिला कऽ नेने आबह।'

वसन्ती ताड़ी, पीबिते मटकुरियाकेँ रंग चढ़ए लगल। ताड़ी पीबि मटकुरिया सोझे, पसिखन्नेसँ, पत्नीकेँ माथ परक पथिया आनए दछिनमुँहे बिदा भेल। गामक दछिनवरिया सीमापर ठाढ़ भऽ आगू तकलक। जते दूर नजरि गेलै तहि बीच कतौ पत्नीकेँ अबैत नहि देखलक। कनी-काल पाखरिक गाछ लग ठाढ़ भऽ सोचए लगला जे आगू बढ़ी वा एतै रुकि जाइ। अंग्रेजी बाजा आ लाउडस्पीकरक फिल्मी गीत कानमे पैसि-पैसि मनकेँ डोलबैत। मन पड़लै अपन विआह। बिआह मन पड़िते फुलियाक रुप आगूमे ठाढ़ भऽ गेलै। गुनधुन करैत सोचलक जे ऐठाम ठाढ़ भऽ कऽ समए बिताएब, तहिसँ नीक जे आरो थोड़े बढ़ि जाइ। आगू बढ़ल। किछु दूर आगू बढ़लापर पत्नीकेँ अगिला गाम टपि अबैत देखलक। बाधो कोनो नमहर नहि। फुलियाक नजरि सेहो मटकुरियापर पड़ल। दुनूक डेग तेज भेल। तेज होइक दुनूक दू कारण। मटकुरियाक मनमे जे जते जल्दी लगमे पहुँचब तते जल्दी भार उतड़तै। जखैनकि पसीनासँ नहाएल फुलियाक मनमे शान्ति। शान्ति अबितहि पथिया हल्लुक लगए लगलै। दुनूक मनमे कतेको नव-नव विचार आबए लगलै।

लग अबितहि मटकुरिया धोतीक ढ़ट्ठा सरिऔलक। किएक तँ माथपर भारी एलासँ डाँड़क धोती डाँड़मे बैसि जाइत। ढ़ट्ठा सरिया गमछाक मुरेठा बान्हि दुनू हाथसँ पकड़ि फुलियाक माथ परक पथिया अपना माथपर लेलक। माथपर लैते किछु कहैक मन मटकुरियाकेँ भेल। मुदा किछु बाजल नहि। किएक तँ फेर मनमे एलै जे बेचारी थाकल अछि, तँ मन अगिआइल होएत। हो ने हो किछु करुआएल बात बाजि दिअए। जखैनकि एकाएक माथ परक भार उतड़लासँ फुलियाक मन हल्लुक भेल। मुदा ओहो किछु बाजलि नहि, ओहिना देह कठिआएल। आगू-पाछू दुनू बेकती घर दिशि बिदा भेल। जते आगू बढ़ैत तते फुलियाक मन हल्लुक होइत आ मटकुरियाक मन भारी। पत्नीसँ किछु कहैक विचार मटकुरियामे कमए लगल। जना मुँह खोललासँ भारी बढ़त। मुदा जना-जना आगू बढ़ैत तना-तना फुलियाक देहो-हाथ सोझ होइत आ पतिकेँ किछु कहैक मन सेहो होइत। मुदा किछु बजैत नहि। किएक तँ पति-पत्नीक बीच गप्पक आनंद तखन होइत जखन दुनूक मन सम -ने बेसी सुख आ ने बेसी दुख- होइत। से अखन धरि दुनूक -मटकुरिया आ फुलियाक- बीच नहि भेल। एते काल फुलियाक माथपर पथिया रहने मन पीताएल तँ आब मटकुरियाक हुअए लगल। ने फुलिया पतिकेँ किछु कहैत आ ने मटकुरिया पत्नीकेँ। मुदा बीच रस्ता बाध अबैत-अबैत दुनूक मुँहसँ हँसी निकलल। पथिया नेनहि मटकुरिया पाछु घुमि कऽ तकलक तँ देखलक जे फुलिया मुस्किया रहल अछि। फुलियोक नजरि मटकुरियाकेँ मुस्किआइत देखलक। एक टकसँ एक-दोसरपर आँखि गरौने अपन जिनगी देखए लगल।

डीहक बटबारा

अमानतक दिन। चारि बजे भोरेसँ पूड़ी-जिलेबी, तरकारीक सुगंध गामक हवामे पसरि गेल। सौँसे गामक लोककेँ बुझले, तेँ ककरो सुगंधसँ आश्चर्य नै होए। भोरे श्रीकान्तोक पत्नी आ मुकुन्दोक पत्नी फूल तोड़ि, नहा ब्रह्मस्थान पूजा करए गेलि। हलुआइ दू-चुल्हियापर तरकारियो बनबैत आ जिलेबियो छनैत। कुरसीपर बैसल श्रीकान्त मने-मन ब्रह्मबाबाक कबुला केलक जे जँ हमरा मनोनुकूल नापी भेल तँ तोरा जोड़ा छागर चढ़ेबह। तहिना मुकुन्दो। गामक सुगंधित हवामे सबहक मन उधिआइत। चाह बनबैबला चाह बनबैमे व्यस्त। पान लगबैबला पानमे। दुनू दिशि कट्ठा-कट्ठा भरिक टेंट लागल। दड़ी आ जाजीम बिछाओल। एक भागमे गाँजा पीनिहारक बैसार आ दोसर भागमे दारुक। जहिना बुचाइ कूदि कऽ कखनो हलुआइ लग जा देखैत तँ कखनो दारुबलाक बैसारमे जा दू-गिलास चढ़ा दैत। तहिना सरुपो। सभ कथूक ओरियान काल्हिये दुनू गोटे, दुनू दिशि कऽ नेने, तँ अनतऽ जेबाक जरुरते नहि ककरो, चाह-पानक इत्ता नै। जेकरा जते मन हुअए से तत्ते खाउ-पीबू। जलखैमे पूड़ी-जिलेबी डलना आ कलौमे खस्सीक माँस आ तुलसीफुलक भात। तँ भरि दिनक चिन्ता सबहक मनसँ पड़ाएल। जीविलाह सभ दुनू दिशि टहलि-टहलि खाइत-पीबैत।

श्रीकान्तो आ मुकुन्दो इंजीनियर। दुनू एक्के वंशक। दुनूक परदादा सहोदरे भाए। पाँच कट्ठाक घरारी, जहिमे दुनू गोटेक अधा-अधा हिस्सा। जहियेसँ दुनू गोटे नोकरी शुरु केलनि, तहियेसँ गाम छोड़ि देलनि। एक पुरिखियाह वंश, तेँ परिवारमे दोसर नहि। पैंतीस सालक नोकरीक बीच कहियो, दुनूमेसँ कियो, गाम नहि आएल। जहिसँ पहिलुका बापक बनाओल घर दुनूक खसि पड़लनि। गामक स्त्रीगण सभ ठाठ-कोरो, धरनिकेँ उजाड़ि-उजाड़ि जरा लेलक। ढ़िमका-ढ़िमकीकेँ सरिया गामक छौँड़ा सभ फील्ड बना लेलक। गामक जते खेलवाड़ी छौँड़ा सभ छल ओ सभ अपन-अपन खेलक जगह बाँटि लेलक। एकटा फील्ड कबड्डीक, दोसर गुड़ी-गुड़ीक, तेसर चिक्का-चिक्काक, चारिम गुल्ली-डंटाक आ पाँचम रुमाल चोरक बनि गेल। उकट्टी छौँड़ा सभ एक दोसराक फील्डमे रातिकेँ, झाड़ा फीरि दै। मुदा खेल शुरु करैसँ पहिने दस-बीसटा गारि पढ़ि सभ अपन-अपन फील्ड चिक्कन बना लिअए। ओना दुनू गोटे - श्रीकान्तो आ मुकुन्दो- बाहरे घर बना नेने छथि, मुदा मरै बेरमे दुनूकेँ गाम मन पड़लनि। साले भरिक नोकरी दुनूक बाँचल तेँ तीन मासक छुट्टी लऽ लऽ गाम ऐलाह। गाम अबैसँ पहिने दुनू गोटे, फोनक माध्यमसँ, अबैक दिन निर्धारित कऽ नेने रहथि। किएक तँ परोछा-परोछी नापी करौलासँ आगू झंझटिक डर दुनूक मनमे रहनि।

घरारी नापी होइसँ दस दिन पहिने श्रीकान्त गाम ऐलाह। अपना तँ घरो नहि, मुदा अबैकाल एकटा रौटी, सुतै-बइसैक समानक संग भानसो करैक सभ कुछ नेने ऐलाह। गाम आबि पितिऔत भाइकेँ कहि सभ बेवस्था केलनि। सभ गर लगला बाद भाएकेँ पुछलखिन- 'बौआ, गाममे के सभ मुहपुरखी करैए?'

भाए कहलकनि- 'गाममे तँ कियो राजनीति नहिये करैए मुदा बुचाइ आ सरुप सभ धंधा करैत अछि।'

'की सभ धंधा?'

'जना कियो खेत कीनैए वा बेचैए, ओहि बीचमे पड़ि किछु कमा लै अए। तहिना गाइयो-महीसमे करैए। भोट-भाँटसँ लऽ कऽ कथा-कुटुमैती धरिमे किछु नहि किछु हाथ मारिये लैत अछि।'

भाएक बात सुनि इंजीनियर सहाएब कने काल गुम्म भऽ गेलाह। मने-मन सोचि-विचारि कहलखिन- 'कनी बुचाइकेँ बजौने आबह?'

'बड़वढ़िया' कहि भाए बुचाइकेँ बजबए विदा भेल। मने-मन श्रीकान्त सोचए लगलथि जे गाममे तँ सबहक हालत तेनाहे सन अछि। देखै छिऐ जे जेहने घर-दुआर छै तेहने बगए बानि। दू चारिटा जे ईंटो घर देखै छिऐ सेहो भितघरे जेकाँ। तँ गाममे ओहन घर बना कऽ देखा देबै जे गामक कोन बात, परोपट्टाक लोक देखए आओत। पुरान लोक सबहक कहब छनि जे जेहेन हवा बहै ओहि अनुकूल चली। युग पाइक अछि। जेकरा पाइ रहतै ओ बुधियार। जेकरा पाइ नै रहतै ओ किछु नहि। असकर बिरहसपतियो फूसि। जेकरा पाइ छै वएह नीक घर बनबैत अछि, नीक गाड़ीमे चढ़ैत अछि। ओकरे धिया-पूता नीक स्कूल-कओलेजमे पढ़ैत अछि। ओकरे परिवारक लोक नीक लत्ता-कपड़ा पहिरैत अछि। बेटा-बेटीक विआह नीक परिवारमे होइ छै। आइक जे सुख-सुविधा विज्ञान करौलकहेँ ओकर सुख भोगैत अछि। यएह ने युगक संग चलब थिक। समाजक बीच प्रतिष्ठा बनाएब तँ वामा हाथक काज छी। अधलासँ अधलाह काज कऽ कऽ पाइ कमा लिअ आ समाजकेँ भोज खुआ दिऔ, बस जसे-जस, प्रतिष्ठे-प्रतिष्ठा। हाथमे पाइ अछि, सभ कुछ कऽ कऽ गौँआकेँ देखा देबै। बेटो-बेटीकेँ पढ़ा-लिखा, बिआह-दुरागमन करा कऽ निचेने छी। तखन तँ एकटा काज मात्र पछुआइल अछि, ओ अछि सामाजिक प्रतिष्ठा। सेहो बनाइये लेब।

मने-मन श्रीकान्त विचारिते रहथि आकि बुचाइक संग भाए पहुँचलनि। लगमे अबिते बुचाइ दुनू हाथ जोड़ि बाजल- 'गोड़ लगै छी कक्का। अहाँ तँ गामकेँ बिसरि गेलिऐ। सरकारक एयर कंडीशन मकान भेटले अछि, तँ किए थाल-कादोमे आबि मच्छर कटाएब?'

अपनाकेँ छिपबैत श्रीकान्त बजलाह- 'नै बौआ, से बात नै अछि। जखने नोकरीक जिनगी शुरु केलहुँ तखने दोसराक गुलाम बनि गेलहुँ। जे-जे हुकूम देत से से करै पड़त। तू सभ कम उमेरक छह तँ नञि देखलहक, मुदा हम तँ अंग्रेजक शासन देखने छी की ने ! शासन तरे-तर चलैत छै, जे सभ थोड़े बुझैए। अंग्रेजक पीठिपोहु छल अइठामक राजा-रजबाड़ आ ओकरा सबहक फाँड़ी थिक जमीनदार सभ। ओ सभ

जे एहिठामक लोकक संग बेबहार करैत छल आ करैत अछि से तँ तोहूँ सभ देखते छहक। मुदा अइ सभ गपकेँ छोड़ह। तोरा जे बजौलिअह से सुनह। साले भरि आब नोकरी अछि। नोकरी समाप्त भेला बाद गामेमे रहब। तँ तीन मासक छुट्टी लऽ कऽ एलहुँहें जे घरारीक अमानत करा घर बनाएब। बिना घरे रहब कतऽ।'

बुचाइ- 'हँ, ई तँ जरुरिये अछि। मुदा हमरा किअए बजेलहुँ?'

पासा बदलैत श्रीकान्त- 'मुकुन्द जीकेँ सेहो खबरि दऽ देने छिअनि। ओहो काल्हिसँ परसू धरि एबे करताह। ऐठाम तँ दुइये गोटेक घरारी खाली अछि, तँ दुनू गोटेक रहब जरुरी अछि। तोरा तँ नञि बुझल हेतह, हमर परबाबा आ मुकुन्दक परबाबा सहोदरे भाए छलाह। अढ़ाइ-अढ़ाइ कट्ठाक हिस्सा जमीन दुनू गोरेकेँ अछि। तँ कोनो पेंच लगाबह जे हमरा तीन कट्ठा हुअए।'

श्रीकान्तक पेटक मैल बुचाइ देखि गेल। मुस्कुराइत बाजल- 'ऐँ, अहीले अहाँ एते चिन्तित छी। ई तँ वामा हाथक काज छी। अमीनकेँ मिला लेब, सभ काज भऽ जाएत। किएक तँ अमीनक गुनिया-परकालमे पाँच-दस धुर जमीन नुकाएल रहै छै। मुदा अइले खरचा करए पड़त। हम तँ जोगारे ने बैसाएब, खर्च तँ अहींकेँ करए पड़त।' पाइक गरमी श्रीकान्तकेँ रहबे करनि। मनमे इहो बात रहनि जे भलेहीं मुकुन्दो इंजीनियर छथि, दुनू गोटेक दरमहो एक्के रंग अछि मुदा पाइमे बराबरी कऽ लेता, से कोना हेतै। मुस्की दैत कहलखिन- 'तोहर मेहनत आ हम्मर पाइ। सएह ने। जते खर्च हएत-हएत। मुदा मैदानसँ जीति कऽ अबैक छह।'

श्रीकान्तक बात सुनि बुचाइ मने-मन खुश भेल। मनमे एलै जे नीक मोकीर हाथ लागल। भरिसक राशि घुमलहेँ। ओह, बहुत दिनसँ अखवारो नै पढ़लौं जे कने राशि देखि लैतिऐ। खैर नहियो पढ़लौं तैयो शुभ बुझि पड़ैए। जोशमे बाजल- 'कक्का, रुपैया पूत पहाड़ तोड़ैए। ई तँ मात्र अमानते छी। जे चाहबै, से हेतै। मुदा अहाँ कंजूसी नै करबै।'

कंजूसीक नाम सुनि श्रीकान्त कहलखिन- 'मरदक बात छिऐ। जे बाजि देब ओ बिना पुरौने छोड़ब।' बैगसँ पाँच हजार रुपैया निकालि श्रीकान्त बुचाइकेँ देलखिन। रुपैया जेबीमे राखि बुचाइ प्रणाम कऽ विदा भेल। गामक पेंच-पाँचमे बुचाइ माहिर, मुदा समाजमे अनुचित हुअए, से कखनो नहि सोचए। जहिया कहियो उकडू काज अबै तखन गुरुकक्कासँ पूछि लैत। मने-मन रस्तामे सोचए लगल जे अइबेर हिनका तेहेन सिखान सिखेबनि जे मरै काल तक मन रहतनि। जहिना सरकारी खजानासँ लऽ कऽ ठीकेदार धरिसँ समेटलाहा रुपैया केहेन होइ छै, से सिखताह।

आंगन पहुँचि बुचाइ चारि हजार पत्नीक हाथमे आ एक हजार अपना हाथमे रखलक। जहिना अगहनमे धानक ढ़ेरी देखि, दुनू परानी किसानक मन खुशीसँ गद-गद होइत, तहिना दुनू परानी बुचाइकेँ भेल। मुदा दुनूक खुशीमे अन्तर होइत। किसानक खुशी मेहनतक फल देखि होइत जखैनकि बुचाइक खुशी दलालीक। मुस्की दैत बुचाइ घरवालीकेँ कहलक- 'खिड़कीपर एकटा शीशी अछि, कने नेने आउ?'

मुँह चमकबैत घरवाली बाजलि- 'खाइ-पीबै रातिमे शीशी की करब?'

बुचाइ- ‘शीशियो नेने आउ आ खेनाइयो नेने आउ। दुनू संगे चलतै। जाबे भरि मन नै पीअब तावे मूड नै बनत। बहुत बात सोचैक अछि। अहाँ नै ने हमर बात बुझबै?’

पत्नी- ‘अहाँक बात बुझैक जरुरत हमरा कोन अछि। हमरा तँ अपने मन कोनादन करैत अछि। देह भसिआइए।’

‘अच्छा ठीक अछि, अहूँ दू घोट पीबि लेब।’

भोरे बुचाइ चौकपर पहुँचल। गामक बीचमे चौबट्टी। जहि चौबट्टीपर चारु भरसँ तीस-पैंतीसटा छोट-छोट दोकान। दस-बारहटा दू-चारी घर, बाँकी कठघरा। ओना एक्कोटा नमहर दोकान नहि, मुदा सभ कथुक दोकान। जाहिसँ गामक लोककेँ हाट-बजार जेबाक जरुरत कम पड़ैत। जहिया कहियो कोनो परिवारमे नमहर काज होइत- जेना बिआह, सराध इत्यादि, तखने बजार जेबाक जरुरत पड़ैत। ओना भरि दिन चौकक दोकान खुजल रहैत, मुदा गहिकीक भीड़ साँझे-भिनसर होइत। भरि दिन लोक अपन-अपन काज-उदम करैत आ साँझू पहरकेँ दोकानक काज कऽ लैत। खाली चाहे-पानक बिकरी भिनसरु पहरकेँ बेसी होइत। चौकपर पहुँचि बुचाइ दुनू चाहबलाकेँ एक-एक सए रुपैया दऽ दोकानपर बैसलि सभकेँ चाह पीअबै लेल कहलक। गाँजा पिआकक सेहो तीन ग्रुप चलैत। चाह पीबि पान खा बुचाइ चिलमक ग्रुपमे पहुँचि, दू दम लगा, तीनू ग्रुपमे पचास-पचास रुपैया गाँजा लेल दऽ देलक। सबहक मन खुशी भऽ गेलै। मुस्कुराइत बुचाइ अमीन ऐठाम बिदा भेल। गाममे तीनटा अमीन। रामचन्द्र, खुशीलाल आ किसुनदेव। कहै लेल तँ तीनू अमीन मुदा पढ़ि कऽ अमीन रामचन्द्रे टा भेल। मिडिल पास केलाक बाद रामचन्द्र हाइ स्कूलमे नाम नहि लिखा सकल। आब तँ लगेमे हाइ स्कूल खुजि गेल मुदा ओहि समएमे एक्कोटा हाइ स्कूल परोपट्टामे नहि छल, जाहिसँ रामचन्द्र आगू नहि पढ़ि सकल। बाहर पठा बेटा पढ़बैक ओकाइत रामचन्द्रक पिताकेँ नहि। सर्वे अबैसँ दस-पनरह बर्ख पहिने मुजफ्फुरपुरक एकटा अमीन गाममे आबि अमानतक स्कूल खोललक। छह मासक कोर्स। चारि विषएक- पैमाइस, क्षेत्रमिति, कानून आ चकबन्दीक-पढ़ाइ। ओना समानो सभ- गुनिया, परकाल, मास्टर, स्केल, लेन्स, राइटऐंगिल, प्लेन, टेबुल, कंघी, टाँक, थ्याजो रैटर, जंजीर, फीता रखने। पाँच रुपैया महीना फीस लैत। मधुकान्तक दरबज्जेपर स्कूल खोललक। मधुकान्ते खाइयो लेल दै। जेकरा बदलामे मधुकान्तकेँ सेहो पढ़ा देलक। ओना गामोक आ गामक चारु भरक गामक विद्यार्थी सेहो पढ़लक। कुल मिला कऽ पनरह गोरे पढ़लक। मुदा जमीनक नापी-जोखी कम होइत, तँ रामचन्द्र छोड़ि सभ अमीनी छोड़ि देलक।

सर्वे अबैसँ महीना दिन पहिने बेगूसराएक एक गोटे आबि पाँच-पाँच सौमे अमानतक सर्टिफिकेट बेचए लगल। ओकरेसँ खुशीलालो आ किसुनदेवो सर्टिफिकेट कीनि लेलक।

गामे-गाम सर्वेक काज शुरु भेल। अमीन सबहक चलती आएल। नक्शा बनब शुरु होइतहि दलाली शुरु भेल। पाइ दऽ दऽ लोक अपन-अपन खेतक नक्शा बढ़बै

लगल। लोकक दलाल अमीन आ सरकारक सर्वेयर। खुशीलालो आ किसुनदेवो उठि बैसल। मुदा रामचन्द्र कात रहल। गाए-महीस, गाछ-बिरीछ बेचि-बेचि लोक रुपैया बुकए लगल। रामचन्द्र दबि गेल मुदा खुशीलाल आ किसुनदेव नाम कमा लेलक। जेम्हर निकलैत तेम्हर लोक सभ चाहो-पान करबैत आ अमीन सहाएब, अमीन सहाएब कहि परनामो करैत। दुनू गोटे सर्वेक नांगड़ि पकड़ि किस्तवारसँ लऽ कऽ तसदीक खानापुरी, दफा-३, दफा-६,८,९ धरि दौड़ि-बड़हा करैत रहल। जाहिसँ मोटर साइकिल मेन्टेन करए लगल।

खुशीलाल ऐठाम पहुँचि बुचाइ श्रीकान्त दिशिसँ नापीक अमीन मुकर्रर कऽ लेलक। नापीक फीसक अतिरिक्त पक्ष लेबाक फीस सेहो गछि लेलक।

दोसर दिन मुकुन्द जी सेहो गाम पहुँचलाह। रहैक सभ ओरियान केनहि ऐलाह। गाम अबिते दूटा जन रखि परती छिलवा रौटी ठाढ़ करौलनि। जखन जन जाइ लगलनि तखन पुछलखिन- 'गाममे के सभ नेतागिरी करैए?'

मुकुन्दजीक बात सुनि एक गोटे बुचाइक नाम कहलकनि। बुचाइक नाम सुनि बजा अनैले कहलखिन। दुनू गोटे बिदा भेल। दुनू कोदारि लऽ एक गोटे घरपर गेल आ दोसर गोटे बुचाइ एहिठाम। मुकुन्द जी पत्नीकेँ कहलखिन- 'कने चाह बनाउ?

पत्नी चाह बनबैक ओरियान करै लगली। गैस चुल्हिपर ससपेन चढ़ा बजलीह- 'ककरा लेल तीन महला मकान बनेलहुँ।'

पत्नीक बात सुनि मुकुन्दजीक करेज दहलि गेलनि। करेजकेँ दहलितहि आँखिमे नोर आबि गेलनि। आँखि उठा पत्नी दिशि देखि आँखि निच्चाँ कऽ लेलनि। रुमालसँ नोर पोछि मुकुन्द जी मने-मन सोचए लगलथि जे अपन हारल ककरा कहबै। सपनोमे नञि सपनाइल रही जे पढल-लिखल मनुक्ख एत्ते नीच होइत अछि। कत्ते मेहनतिसँ बेटाकेँ पढ़ेलहुँ, नोकरी दिएलहुँ। नीक घर नीक पढ़ल-लिखल कन्याक संग विआह करेलहुँ। मुदा फल उल्टा भेटल। पढ़ल-लिखल लोक जे अपन सासु-ससुरक संग एहेन बरताव करै, तँ लोक जीविये कऽ की करत? अइसँ नीक मरनाइ। मुदा मृत्युओ तँ ओते असान नहि होइत। तखन तँ जे भाग्य-तकदीरमे लिखल अछि, से भोगब। अगर जँ बुढ़ाढ़ीमे गनजने लिखल रहत तँ कियो बाँटि लेत। ओ तँ विधाताक रेख छी। के बदलि देत? मूड़ी गोतने मुकुन्द घुनघुना कऽ बजैत। पत्नीक आँखि तँ ससपेनपर रहनि मुदा करेज पीपरक पात जेकाँ, जे बिनु हवोक डोलैत रहैत। आँखिसँ समतल भूमिक पानि जेकाँ नोर टघरैत।

चाह बनल। दुनू गोटे आमने-सामने बैसि चाह पीबए लगलथि। एक घोंट कऽ चाह पीबि दुनू गोटे दुनू गोटेक मुँह दिशि देखैत। मुदा कियो किछु बजैत नहि। जेना दुनूक हृदएक भीतर विरड़ो उठैत। दुइये घोंट चाह पीलनि, बाकी सभ सरा कऽ पानि भऽ गेलनि। तही काल बुचाइ पहुँचल। अबिते बुचाइ दुनू हाथ जोड़ि, दुनू गोटेकेँ प्रणाम कऽ बैसल। बुचाइकेँ देखितहि मुकुन्द मनकेँ थीर करैत पत्नीकेँ कहलखिन- 'भरि दिनक थकान देहकेँ खण्ड-खण्ड तोड़ैत अछि। मन कोनादन करैए। कने एटैचीसँ एकटा बोतल नेने आउ। जावे पीब नहि ताबे कोनो बाते ने कएल हएत।'

पतिक बात सुनि पत्नी एटैचीसँ एकटा किलो भरिक ब्राण्डीक बोतल आ दूटा गिलास निकालि कऽ आनि आगूमे रखि देलकनि। तीनू गोटे- मुकुन्द, पत्नी राधा आ बुचाइ- त्रिकोण जेकाँ तीनू दिशिसँ बैसल। बीचमे मोडुआ टेबुल लोहाक। टेबुलपर गिलास बोतल। बोतलक मुन्ना खोलि मुकुन्द दुनू गिलासमे ब्राण्डी देलखिन। एक गिलास अपनो लऽ एक गिलास बुचाइ दिशि बढ़ौलनि। ब्राण्डी देखि बुचाइक मन तँ चटपटाए लगल मुदा अनभुआर लोकक संग पीबैक परहेज करैत बाजल- 'कक्का जी, ई सभ हम नै पीबै छी। गाममे हमरा कतऽ ई चीज भेटत। गरीब-गुरवा लोक छी, जँ कहियो मनो होइए तँ एक दम चीलममे लगा लै छी। नै तँ पीसुआ भाँगक एकटा गोली चढ़ा दै छिऐ।'

जिद्द करैत मुकुन्द कहलखिन- 'ई तँ फलक रस छिऐ। कोनो की मोहुआ दारु आकि पोलीथिन छिऐ जे अपकार करतह।'

मुकुन्दक मनमे रहनि जे शराब पीआ बुचाइसँ सभ बात उगलवा लेब। जाबे गामक तहक बात नै बुझबै ताबे किछु करब कठिन हएत। दुनू गोरे एक-एक गिलास पीलनि। गिलास रखि मुकुन्द सिगरेटक डिब्बा आ सलाइ निकालि, एकटा अपनो हाथमे लेलनि आ एकटा बुचाइयोकेँ देलखिन। दुनू गोटे सिगरेट पीबए लगलाह। सिगरेटक धुँआ मुँहसँ फेकैत मुकुन्द कहलखिन- 'बुचाइ, हम तँ आब बुरहा गेलहुँ, तू सभ नौजवान छह। तोरे सभपर ने गामसँ लऽ कऽ देश तकक दारोमदार छह। शहरमे रहैत-रहैत मन अकछा गेल। साले भरि नोकरियो अछि। तेँ चाहै छी जे जल्दी नोकरी समाप्त हुअए जे गाम आबि अपन सर-समाजक बीच रहब। मुदा गाममे तँ अपना किछु अछि नहि। लऽ दऽ कऽ थोड़े घरारी अछि। जेकरा नपा कऽ घर बनबए चाहै छी। तहिमे तूँ कने मदति कऽ दाए।'

बुचाइ- 'हमरा बुते जे हएत से जरुर कऽ देब। अहाँ तँ अपने तत्ते कमा कऽ टलिया नेने छी जे अनकर कोन जरुरत पड़त?'

मुकुन्द- 'तूँ तँ जनिते छहक जे सभ दिन नीक एयर कंडीशन घरमे रहै छी, नीक गाड़ीमे चढ़ै छी, नीक लोकक बीच आमोद-परमोद करै छी, से कोना हएत?

बुचाइ- 'अहाँ की कोनो खेती-पथारी करब आकि माल-जाल पोसब, जे तइले खेत-पथार चाही। लऽ दऽ कऽ रहैक घर चाही। से तँ घरारी अछिये।

मुकुन्द- 'कहलह तँ ठीके, मुदा रहैले तँ घर बनाबै पड़त। बिजली गाममे नञि छै तइले जेनरेटर बैसबै पड़त, पानिक टंकी नै छै तइले कलक संग-संग मोटर सेहो लगबौ पड़त। गाड़ी रखैले घर आ साफ करैले सेहो जगहक जरुरत हएत। पैखाना, नहाइले सेहो घर चाही, घरक आगूमे दसो धुरक फुलवारी, बइसैले चबुतरा सेहो चाही। चारु भर छहरदेवाली बनबए पड़त। सभले तँ जमीने चाही।'

बुचाइ- 'हँ, से तँ चाहबे करी। मुदा हमरा की कहए चाहै छी?

मुकुन्द- 'तोरा यएह कहै छिअह जे अपना अढ़ाइये कट्ठा घरारी अछि, तइमे सभ कुछ कोना हएत ? कहुनाकेँ दसो धुर बढ़बैक गर लगाबह।'

मुकुन्दक बात सुनि बुचाइक मनमे हँसी उठल। हँसीकेँ दबैत बाजल- 'देखियौ

कक्का, पान-दस धुर जमीन अमीनक हाथमे रहै छै, मुदा ओ तँ तखने हएत जखन पंचो आ अमीनो पक्षमे रहत।'

मुकुन्द- 'तेहीले ने तोरा बजेलियह। हमरा तँ ककरोसँ जान-पहचान नै अछि। मुदा तोरा तँ सभसँ छह, तँ, तूँ हमरा अप्पन बुझि मदति करह।'

मने-मन बुचाइ सोचलक जे ई पनहाइल गाए जेकाँ छथि, तँ सरियाकँ हिनका सिखबैक अछि, चपाड़ा दैत बाजल- 'देखियौ कक्का, गामक लोक गरीब अछि, ओ जे पक्ष लेत से ओहिना किअए लेत? गौँआक लिये जेहने अहाँ तेहने श्रीकान्त कक्का। तखन तँ कियो जे नेत घटाओत से बिना मीठ खेने किअए घटौत?'

मुकुन्द- 'तइले हमहुँ तैयारे छी। जना जे तूँ कहबह से हम देबह।'

बुचाइ- 'अच्छा हम भाँज-भूज लगबैले जाइ छी। मुदा काल्हि खन श्रीकान्त कक्का सेहो कहने रहथि। ओना हम हुनका कहि देने रहियनि जे अमानतक दिन हमहूँ रहब। तँ थोड़े दिक्कत हमरा जरूर अछि। मुदा तइयो दिन-देखार तँ हम अहाँक भेँट नहि करब, साँझमे जरूर करब। जना जे हेतै से सभ बात अहाँकँ कहैत रहब आ अहूँ ओहि हिसाबसँ अपन गर अँटबैत रहब। ओना गाममे अखन सरूपक संग बेसी लोक छै, तँ अहाँकँ ओकरासँ भेँट करा दै छी। ओ जँ तैयार भऽ जाएत तँ कियो ओकरा रोकि नहि सकतै।'

'बड़बढ़िया' कहि मुकुन्द बैगसँ दस हजार रूपैया निकालि बुचाइकँ दऽ देलखिन।

रूपैया गनि बुचाइ बाजल- 'अइसँ की हएत? हम ने गामक पेंच-पाँच बुझै छिऐ। काजो तँ उकड़ूए अछि।'

'एते ताबत राखह। जना-जना काज आगू बढ़ैत जाएत तना-तना कहैत जइहह।'

'बड़बढ़िया' कहि बुचाइ प्रणाम कऽ बिदा भेल।

मने-मन मुकुन्द सोचए लगलाह जे भलेहीं श्रीकान्तो इंजीनियरे छथि मुदा जते पाइ हम कमेलहुँ तते हुनकर नन्नो ने देखने हेतनि। भऽ जाए पाइयेक भिड़ंत। मने-मन सोचबो करैत आ खुशियो होइत।

मुकुन्द ऐठामसँ निकललाक बाद रस्तामे बुचाइ विचारै लगल। आरौ बहिं, आइ धरि एहेन-एहेन बुढ़बा चोट्टा नञि देखने छलौं। जिनगी भरि पाइये हँसोथति रहल मुदा सबुर नै भेलै। अच्छा, अइ बेर दुनू सिखताह। जइ गामक लोक आइ धरि सहि-मरि अपन बाप-दादाक गाम आ घरारी धेने रहल, समाजक बेर-बिपत्तिमे संगे प्रेमसँ रहल ओहि गाममे जँ एहेन-एहेन चोट्टा आबि कऽ रहत, तँ कए दिन गामकँ सुख-चैनसँ रहए देत। सभकँ टीकमे टीक ओझरा नाश करत की नहि?'

दोसर दिन, सबेरे सात बजे बुचाइ सरूप ऐठाम पहुँचल। दुनूकँ बच्चेसँ दोस्ती, तँ धियो-पूता भेलोपर दुनूक बीच रउए-रउ चलैत। सरूपकँ दरबज्जापर नहि देखि बुचाइ सोर पाडैए लगल- 'दोस छँ रौ, रौ दोस।'

सरुप अंगनाक दछिनबरिया ओसारपर बैसि दारुक बोतलक मुन्ना खोलैत। बुचाइक अवाज सुनि, कहलक- 'दोस रौ, आ-आ। अंगने आ।'

घरक कोनचर लग अबितहि बुचाइ सरुपक घरवालीकँ देखि बाजल- 'दोस रौ,

दोसतिनीक थुथुन बड़ लटकल देखै छियौ। रौतुका झगड़ा अखैन तक फड़िएलौहेँ नञि रौ। हम तँ रौतुका झगड़ा रातियेमे उठा-पटक कऽ फड़िया लै छी आ तू अखैन तक रखनहि छँ।'

बुचाइक बात सुनि सरुप कहलक- 'धुर-बूड़ि, सभ दिन एक्के रंग रहि गेलेँ। कहियो तोरा बजैक ठेकान नै हेतौ।' कहि पत्नीकेँ कहलक- 'एकटा गिलास नेने आउ? एकटा गिलास आनि पत्नी सरुपक आगूमे रखलक। दुनू गोटे एक-एक गिलास दारु पीलक। बोतलकेँ डोला कऽ देखि सरुप फेर दुनू गिलासमे ढ़ारलक। तहि बीच बुचाइ बाजल- 'एक गिलास दोसतिनोकेँ दहुन?'

बुचाइक बात सुनि सरुपक पत्नी कला बाजलि- 'हम नै गाइयक गोत पीबै छी।'

बुचाइ- 'कनी पी कऽ देखियौ जे केहेन ताव चढ़ैए।'

सरुप- 'भोरे-भोर दोस किमहर एलेँ?'

जेबीसँ पाँच हजार रुपैयाक गड्डी निकालि बुचाइ सरुपक आगूमे रखैत बाजल- 'ले, ई तोहर हिस्सा छियौ। गाममे दूटा मोकीर फँसलौहेँ। तँ सरिया कऽ दुनूकेँ सिखबैक छौ। एकटाकेँ हम संग देबै आ दोसरकेँ तूँ देही। जहिना धिया-पूता दूटा मुसरीकेँ नांगड़ि पकड़ि लड़बैत अछि तहिना दुनू गोटे दुनूकेँ लड़ा।'

सरुपक आगूमे रुपैया देखि कलाक मुँहसँ हँसी निकलल। हँसी देखि बुचाइ बाजल- 'एकटा बात बुझै छिऐ दोसतिनी, लछमी दुइये टा होइत अछि। एकटा घरवाली आ दोसर रुपैया। दोस, तोहर भाग बड़ जोरगर छौ। किएक तँ दुनू तोरा लगेमे छौ।'

बुचाइक बात सुनि कला पाछु दिशि मुँह घुमा लेलक। कलाकेँ पाछु मुँहे घुरल देखि बुचाइ कहलक- 'मुँह घुमौने नै हएत दोसतिनी। अहीमे सँ रुपैया लिअ आ दोकानसँ अंडा नेने आउ। भुजल चूड़ा आ अंडाक कोफ्ता खुआउ।'

एकटा पचसटकही लऽ कला अंडा आनै दोकान बिदा भेलि। खाली अंगना देखि बुचाइ सरुपकेँ फुसफुसा कऽ कहए लगल- 'दोस, दूटा जुएलहा चोर गाम एलौहेँ। दुनू जेहने 'चोर' तेहने 'लोभी'। दुनू अपन-अपन घरारी नपाओत। दुनूकेँ अढ़ाइ-अढ़ाइ कट्ठा जमीन छै। जे खतिआनी छिऐ। किएक तँ दुनू एक्के वंशक छी। एक पुरखियाह अछि तँ दोसर-तेसर नै छै। दुनू चाहैए जे हमरा तीन कट्ठा हुअए तँ हमरा तीन कट्ठा हुअए। दुनूकेँ पाइयक गरमी छै, तँ एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखबै चाहैए। गामक लोक तँ दुनूक नजरिमे, बोन झाँखुर छी। से थोड़े हुअए देबै। पाइयो खा जेबै आ सुपत-सुपत बँटबरो करा देबै।'

कने काल गुम्म रहि सरुप बाजल- 'आँइ रौ दोस, अपने सभ कोन नीक लोक छँ रौ। भरि दिन झूठ-फूसि बजै छी, ताड़ी-दारु पीबै छी, तखैन नीक कना भेलौ रौ।'

बुचाइ- 'धुर बूड़ि, तोरा निशाँ चढ़ि गेलउ, तँ नै बुझै छीही। तोँही कह जे गाममे कोनो जातिक लोक किए ने हुअए, मुदा जखन मरैए तँ कठिआरी जाइ छिऐ की नै ?

गरीबसँ गरीब लोक किए ने हुअए, कियो बिना कफने जराओल गेलहें ? अपना हाथमे जँ पाइ नहियो रहल तँ दू-चारि गोरेसँ मांगि-चांगि पुरा दै छिऐ। तेसर सालक गप मन छौ की नै। देखने रही की ने जे मखनाक गाए बाढ़िमे भसल जाइत रहै तँ भरि छाती पानिमे सँ पकड़ि अनलौं। मोतिया बेटीक बिआह कोन पेंचपर करा देलिऐ से बिसरि गेलही। डोम खंजनमाक घरमे जे आगि लगल रहै तँ देखने रही की नञि जे अपन घैलची परक घैल लऽ कऽ सभसँ पहिने आगि मिझबैले गेल रहिऐ। हमरा देखलक तखन पाछुसँ सभ गेल। जइकेँ चलैत माए कते दिन तक गरिअबैत रहल जे तोहूँ छुवा गेलेँ आ घइलो छुबा गेल। आँइ रौ, गाइरियो-फज्झति सुनि कऽ जे सेवा करै छी उ धरम नै भेल रौ।'

मूड़ी डोलबैत सरुप- 'हँ, से तँ ठीके कहै छँ।'

बुचाइ- 'हम श्रीकान्त कक्काक पछ लऽ कऽ रहब आ तूँ मुकुन्द कक्काक संग दहुन। जहिना इलेक्शनमे परचार करैक, ऑफिस चलबैक, चाह-पानक खर्च, लाउडस्पीकर आ सवारीक, बूथपर दसटा कार्यकर्ता रखैक, एजेंटक, नेता सबहक सुआगतक लेल मेहराओ बनबैक खर्च नेतासँ लै छिऐ तहिना अखैनसँ जाबे तक नापी हेतै ताबे तकक खरचा दुनू गोटेसँ दुनू गोटे लेब। हेतै तँ उचिते मुदा ठकसँ ठकब कोनो पाप थोड़े छी।'

सरुप- 'कना-कना पाइ लेबही से तँ प्लानिंग कऽ लेमे की ने?'

बुचाइ- 'घबड़ाइ छँ किए, इलेक्शनोसँ बेसी लेबै। अमीनक घूस, पंचक घूस, चौक-चौराहाक चाह-पान, गाँजा-भाँग, ताड़ी-दारुक, लठैतक, कते कहबौ। जना-जना काज अबैत जेतै तना-तना टनैत जेबै। अखैन जे आएलहें ओ सगुन छी। साँझमे जखन खूब अन्हार तेसरि साँझ भऽ जेतै तखन चलिहेँ। तोरा-दुनू गोरेकेँ मुँह-मिलानी करा देबउ। चौकपर दूटा चाहक दोकान छेबे करै, एकटा पर साँझ-भिनसर तूँ बैसिहेँ आ एकटा पर हम बैसब। तूँ मुकुन्द जी दिशिसँ बजिहेँ जे हुनका तीन कट्ठा घरारी छनि आ दोसरपर हम बैसि बाजब। मुदा एकटा बात मन रखिहेँ जे जखैन श्रीकान्त कक्का चौकपर आबथि, तखन अपने दिशिसँ चाह-पान खुआ, हुनके बात बजिहेँ आ जखन मुकुन्द कक्का औताह तँ हमहूँ बाजब। जइसँ हुनका सभकेँ हेतनि जे सौँसे गौँआ हमरे दिशि अछि। अखैन तँ गौँआ सभकेँ चाहे-पान, गाँजा, ताड़ी पइर लगतै मुदा नापी दिन पूड़ी-जिलेबी जलखै आ माँस-भात भोजन करा देबै।'

सरुप- 'बड़बढ़ियाँ प्लानिंग छौ।'

बुचाइ- 'हम श्रीकान्त कक्का दिशिसँ खुशीलाल अमीनकेँ ठीक केलहुँहेँ, तूँ मुकुन्द कक्का दिशिसँ किसुनदेव अमीनकेँ ठीक करिहेँ। दुनू अमीन तँ दुनू पार्टीक हएत की ने मुदा मध्यस्त अमीन तँ सेहो चाही। तइले रामचन्द्र भायकेँ पकड़ि लेब। तहिना गामक लोक तँ दुनू दिशिसँ बँटाएल रहत की ने मुदा एक्कोटा तँ तेहल्ला पंच चाही। तइले गुरुकक्काकेँ पकड़ि लेब। जखने गुरुकक्का पंच आ रामचन्द्र भाय अमीन रहताह तखने एक्को तिल जमीन इमहर-ओमहर थोड़े हएत।'

दोसर दिन दुनू गोटे -बुचाइयो आ सरुपो- गुरु कक्का लग पहुँचल। गुरुकक्का

दलानेपर। दुनू गोटे प्रणाम कऽ बैसल। दुनू गोटेकेँ देखि गुरु कक्का पुछलखिन- 'की बात छिऐ हौ बुचाइ? दुनू भजारकेँ संगे देखै छिअह?'

बुचाइ- 'अहीं लग तँ एलौहेँ कक्का। श्रीकान्तो काका आ मुकुन्दो काका घरारी नपौताह। तेहीमे अपनो रहबै।'

गुरुकाका- 'की करताह ओ सभ घरारी नपा कऽ। केहेन बढ़िया तँ धिया-पूता सभ खेलाइए।'

सरुप- 'रिटायर केला बाद गामेमे रहताह। नोकरियो लगिचाइले छनि। तँ अखने नपा कऽ घरमे हाथ लगौता।'

गुरुकक्का- 'सुनै छी जे दुनू गोटे शहरेमे घर बनौने छथि, तखन गाममे बना कऽ की करताह। हुनका सभकेँ गाममे थोड़े वास हेतनि। जिनगी भरि तँ बड़का-बड़का होटल देखलखिन, नीक रोडपर नीक सवारीमे चललथि, दामी-दामी वेश्यालय देखलनि, से सभ गाममे थोड़े भेटतनि। अन्हेरे गाममे आबिकेँ किए थाल-कादोमे चलता आ मच्छर कटौताह।'

गुरुकाकाक बात सुनि लपकि कऽ बुचाइ बाजए लगल- 'से नै बुझलिऐ कक्का, दुनू गोटे भारी चोट खा चोटाएल छथि। तँ गाम दिशि झुकलाह।'

'से की?' - ओ अकचकाइत गुरुकक्का पुछलनि।

बुचाइ कहए लगल- 'तेसर सालक घटना छिऐ। श्रीकान्त काकाक पत्नी ड्राइवरकेँ संग केने बजार गेली। बजारसँ समान कीनि जखन घुमली तँ दोसर गाड़ी सेहो पछुअबैत रहनि। जखन फाँक-पाँतरमे गाड़ी पहुँचलनि तँ पछिला गाड़ी आगू आबि रोकि देलकनि। गाड़ीसँ चारि गोटे उतरि हिनका गाड़ीमे बैसि ड्राइवरकेँ दोसर रस्तासँ गाड़ी बढ़बैले कहलक। बेचारा की करैत। बढ़ल। थोड़े दूर गेलापर गाड़ी रोकि, काकीकेँ उतारि ड्राइवरकेँ कहलक- 'मालिककेँ जा कऽ कहिअनु जे पाँच लाख रुपैया नेने आबथि आ पत्नीकेँ लऽ जाथि। दू घंटाक समए दैत छिअह।' ड्राइवर बिदा भेल। इमहर काकीकेँ चारि-पाँच ठूसी मुँहमे लगा देलकनि। जहिसँ अगिला चारि टा दाँतो टुटि गेलनि। ठोह फाड़ि कऽ कानए लगली। कनिते काल मोबाइल दऽ कहलकनि जे पतिकेँ कहिअनु जे जल्दी रुपैया लऽ कऽ आउ नञि तँ हम नहि बँचब। तावे ड्राइवरो पहुँचि कऽ कहलकनि। अपना हाथमे दुइये लाख रुपैया, जे हालक आमदनी रहनि, बाकी रुपैया सभ बैंकमे। वएह दुनू लाख रुपैया लऽ कऽ गेला आ पाएर-दाढ़ी पकड़ि कऽ पत्नीकेँ छोड़ा अनलनि।'

बुचाइक बात सुनि ठहाका मारि हँसि गुरुकाका- 'मुकुन्द किअए औताह?'

मुस्की दैत बुचाइ- 'हुनकर तँ आरो अजीव बात छनि। एक दिन एकटा ठीकेदारक पार्टी चललै। जते बड़का-बड़का हाकिम आ ठीकेदार सभ छल, सभ रहए। मुकुन्द अपन पुरना गाड़ी छोड़ि नवका गाड़ी, जे बेटाकेँ सासुरमे देने रहनि, लऽ कऽ गेला। जखन पार्टीसँ घुमि कऽ ऐला तँ पुतोहू कहलकनि- 'पुतोहूक गाड़ीपर चढ़ैत केहेन लागल?' अइ बातक चोट हुनका खुब लगलनि। बेटा-पुतोहूसँ मोह टूटि गेलनि। तँ गामेमे रहताह।

बुचाइक बात सुनि गुरुकक्का गुम्म भऽ गेलाह। कने काल गुम्म रहि, मने-मन बिचारि कहलखिन- 'गाम तँ गामे छी। शुद्ध मिथिला। भारत। जे स्वर्गोसँ नीक अछि। मुदा सभ गामक अपन-अपन चरित्र आ प्रतिष्ठा छैक। जे चरित्र आ प्रतिष्ठा गामक कर्मठ, तियागी लोकनि बनौने छथि। अपन कठिन मेहनति आ कर्तव्यसँ सजौने छथि। ओकरा जीवित राखब तँ अखुनके लोकक कान्हपर भार अछि की ने ? नोकरीक जिनगीमे किछु कियो केलनि तइसँ समाजकेँ कोन मतलब। अपनाले केलनि। समाजक एक अंग होइक नाते हुनको सभक कान्हपर किछु भार छलनि जे अखन धरि नहि कऽ सकलाह। मुदा तैयो जँ समाजमे आबि, समाज रुपी फुलवारीमे फूल लगबए चाहताह तँ बढ़िया बात। से तँ लक्षणसँ नहि बुझि पड़ैत अछि। समाजमे रहैक लेल समाजक चरित्रक अनुकूल अपन चरित्र बनौताह, तखने ने समाजमे अँटाबेश हेतनि। ई तँ नहि जे गदहा गेल स्वर्ग तँ छान-पगहा लगले गेलै।'

गुरुकाकाक बात सुनि बुचाइयो आ सरुपो पुछलकनि- 'कक्का, गामक विषएमे हम सभ किछु ने बुझैत छी, से कने बुझा दिअ?'

गुरुकाका- "अखन काजक बेर अछि तँ बहुत बात तँ नहि कहि सकबह, मुदा जखन बुझैक जिज्ञासा छह तँ दूटा जरुर कहबह। देखहक, गामक पढ़ल-लिखल वा बिनु पढ़ल-लिखल लोक, पेट भरैक लेल नोकरी करैक लेल बाहर जाइ छथि, नीक बात। मुदा गामकेँ सोलहन्नी नहि छोड़ि देथि। अखन देखै छी जे अमेरिका, इंग्लैडसँ लोक तीन दिनमे गाम आबि सकै छथि। तँ सालमे कमसँ कम एक्को बेर, नञि तँ हुनकरो गाम छिअनि, कतेको बेर आबि सकै छथि। जाहिसँ गामक लोक आ खेत-पथारक संग संबंध बनल रहतनि। मुदा से नहि कऽ गामकेँ सोलहन्नी छोड़ि, अनतै घर बना रहए लगै छथि। जे गामक दुर्भाग्य छी। जेकर फल होइत अछि गामक ज्ञान निर्यात भऽ जाइत अछि। जाहिसँ सुतल गाम सुतले रहि जाइत अछि। संगे गामक बेबहार, कला-संस्कृति सभ टुटि जाइत अछि। रिटायर केला बाद वा जिनगीक अंतिम अवस्थामे, जँ कियो गाम आबि रहए चाहता तँ हुनका गाम केहेन लगतनि। डेग-डेगपर टक्कर आ बात-बातमे विवाद हेबे करतनि। दोसर बात सुनह। अपना गाममे वैदिक जी भेल छथि। जिनके पोता शुभकान्त छिअनि। वेदक प्रकाण्ड विद्वान वैदिक जी। नाम तँ छलनि गंगाधर मुदा वैदिक जी नामसँ विख्यात भेलाह। अपनो राजमे आ आनो-आनो राजमे जखन पंडितक बीच शास्त्रार्थ होइ तँ हुनकर जबाव देनिहार कियो ने ठहरैत। अनेको तगमा आ प्रशस्ति पत्र भेटलनि। अखनो परोपट्टाक लोक हुनके नामपर अपना गामक नाम वैदिक जीक गाम बुझैत अछि। हुनके चलाओल अपना गामक पानि छी। पहिने पानिक छुआछुत अपनो गाममे छल, मुदा ओ सभकेँ बैसार कऽ कऽ बुझा देलखिन जे दुनियाँमे जते मनुक्ख अछि, सभ मनुक्ख छी, तँ मनुक्ख-मनुक्खक बीच छुआछुत नै हेबाक चाही। थोपड़ी बजा सभ हुनकर विचारक समर्थन कऽ देलक। ओहि दिनसँ पानिक छुआछुत गामसँ मेटा गेल तहिना दोसर भेल जोगिनदर। भिखारीदासक पक्का चेला। अजीब कला हुनकोमे छलनि। जहिना नचैमे अगिया-बेताल, तहिना गीत गबैमे। जे पार्ट लऽ कऽ स्टेजपर अबैत, धऽ कऽ झहरा

दैत। एहेन बिपटा अखन धरि कोनो नाचमे नञि देखलिऐहेँ। ओकरो परसादे गाममे भिखारीदासक नाच कतेको बेर भेल। जखन भिखारीदासक पार्टी छपरासँ पूब मुँहे असाम, बंगाल, नेपाल बिदा होए तँ अपने गाममे रुकै। खाली खेनाइ आ इजोतक खर्च गौँआक होइ। तहिना जब तीन-चारि मासमे घुमै तँ फेर अँटकै। तहिना भेल महावीर। बेचारा बड़ गरीब छल। नोकरी करैले कलकत्ता गेल। मुदा नोकरी नहि कऽ रिक्शा चलबए लगल। अजीब संस्कार ओकरोमे छलै। रिक्शो चलबै आ गीतो-कविता बनबै। पहिने तँ लिखल-पढ़ल नै होइ। मुदा अ-आसँ सीखब शुरु केलक। किछुए दिनक बाद लिखबो आ पढ़बो सीखि लेलक। रिक्शापर जखन चलै तँ अपन बनाओल गीत गाबए। एक दिन एकटा साहित्य प्रेमी रिक्शापर चढ़ल रहथि आ महावीर रिक्शो चलबै आ गीतो गाबै। उतड़ै काल कवि पूछि देलखिन। सभ बात महावीर कहलकनि। ओ एकटा कवि गोष्ठीमे आमंत्रित कऽ देलखिन। ओहि गोष्ठीमे पहुँचि महावीर तीनटा कविता आ दूटा गीत गौलक। तहि दिनसँ कवि गोष्ठीमे आमंत्रित हुअए लगल। बंगाल सरकार दस हजारक पुरस्कार आ प्रशस्तिपत्रसँ सम्मानित केलकनि। तहिना भेल कारी खलीफा। जेकरा इलाकाक लोक खलीफा मानैत। बड़का-बड़का दंगलमे पहुँचि ओ आन-आन जिलाक कतेको खलीफाकेँ पटकलक। ओकरा चलैत गाममे कियो ककरो बहू-बेटीकेँ खराब नजरिसँ नहि देखैत। एक बेर एकटा घटना जमीनदारक सिपाही संग घटलै। एक सौ लाठी सिपाहीकेँ समाजक बीचमे मारलक। तेही दिनसँ जमीनदार दू बीघा खेत ओहिना दऽ देलकै। एहेन-एहेन पंडित, कलाकारक बनाओल गाम छी, तेकरा हम सभ, अपना जीवैत कोना दुइर कऽ देबै। आइ जँ गाम दुइर हएत तँ अगिला पीढ़ी ककरा गारि पढ़तै। तँ जँ दुनू गोटे मनुक्ख बनि गाममे रहए चाहताह तँ बड़बढ़ियाँ, नहि तँ गाममे रहने कियो समाज तँ नहि बनि जाइत।'

अमानत भेल। कोनो बेसी झमेल रहबे नै करै। पाँच कट्ठा कऽ दू भाग केनाइ। बँटवारा करैत रामचन्द्र अमीन कहलखिन- 'जिनका संदेह हुअए ओ चाहे कड़ीसँ, वा फीतासँ, वा लग्गीसँ वा डेगसँ भजारि लिअ।'

भैयारी

मैट्रिक परीक्षा दऽ दीनानाथ आगू पढ़ैक आशासँ, संगियो-साथी आ शिक्षको ऐठाम जा-जा विचार-विमर्श करैत। बिनु पढ़ल-लिखल परिवारक रहने, कॉलेजक पढ़ाइक तौर-तरीका नहि बुझैत। ओना ओ हाइ स्कूलमे थर्ड करैत मुदा क्लासमे सभसँ नीक विद्यार्थी। सभ विषए नीक जेकाँ परीक्षामे लिखने, तैँ फेल करैक चिन्ता मनमे एक्को मिसिया रहबे ने करै।

मूर्ख रहितो माए-बाप बेटाकेँ पढ़बैमे जी-जान अरोपने। ओना घरक दशा नीक नहि मुदा पढ़बैक लीलसा दुनूक हृदएमे कूट-कूट कऽ भरल। जखन दीनानाथ मैट्रिक परीक्षाक दिअए दरभंगा सेन्टर जाइक तैयारी करए लगल, तखन माए अपन नाकक छक, जे डेढ़ आना-छअ पाइ भरि रहए, बेचि कऽ देलकै। अगर जँ माए-बापक मन बेटा-बेटीकेँ पढ़बैक रहत आ थोड़बो मेहनतिसँ ओ पढ़त तँ लाख समस्योक बावजूद ओ पढ़बे करत। तेहिमे सँ एक दीनानाथो। काल्हि एगारह बजिया गाड़ीसँ परीक्षा दिअए जाएत तँ आइये साँझमे पिता रामखेलावन पत्नी सुमित्राकेँ कहलक- 'काल्हि एगारह बजे बौआ गाड़ी पकड़त तँ अखने ककरोसँ आध सेर दूध आनि कऽ पौड़ि दिऔ। दहीक जतरा नीक होइ छै।'

माइयोक मनमे जँचलै। आध सेर दूध पौड़ैक विचार माए केलक आ मने-मन ब्रह्म-बाबाकेँ कबुला केलक जे अहाँ हमरा बेटाकेँ पास करा देब तँ कुमारि भोजन कराएब। संगे हाँइ-हाँइ कऽ चिकनी माटि लोढ़ीसँ फोड़ि अछिनजल पानिमे सानि, दिआरी बना, साफ पुरना कपड़ाक टेमी बना, दिआरीमे करु तेल दऽ साँझ दिअए ब्रह्म स्थान बिदा भेलि। रस्तामे मने-मन ब्रह्म-बाबाकेँ कहैत जे हे ब्रह्मबाबा कहुना हमरा बेटाकेँ पास कऽ दिहक। तोरेपर असरा अछि।

स्कूलमे सभसँ नीक विद्यार्थी दीनानाथ, मुदा नीक रहितहुँ क्लासमे थर्ड करैत। एकर कारण रहए जे हाइ स्कूल सेक्रेट्रीक मातहत चलैत। जाहिसँ स्कूलक सर्वेसर्वा सेक्रेट्रिये। इज्जतोक दुआरे आ फीसोक चलैत स्कूलमे फस्ट सेक्रेट्रिएक लगुआ-भगुआ करैत। जँ कहीं सेक्रेट्रीक समांग नञि रहैत तखन हेडमास्टरक समांग फस्ट करैत। मुदा एहि बैचमे सेक्रेट्रियोक सवांग आ हेडमास्टरोक सवांग। तँ सेक्रेट्रीक समांग फस्ट करैत आ हेडमास्टरक समांग सेकेण्ड आ दीनानाथ थर्ड। जे फस्ट करैत ओकरा पूरा फीस आ सेकेण्ड-थर्डकेँ आधा फीस माफ होइत। ओना आन शिक्षक सभकेँ एहि बातक क्षोभ होइन मुदा कैयो की सकैत छथि। किएक तँ आन शिक्षक सबहक गति कोठीक नोकरसँ नीक नञि रहनि, सात घंटी पढ़ौनाइ आ डेढ़ सए रुपैया महीना पौनाइ मात्र रहनि। मुदा तैयो ओ सभ इमानदारीसँ काज करैत। असेसमेंटक चलनि

सेहो रहए। बीस नम्बरक हिसाबसँ सभ विषएक असेसमेंट होइत। सिर्फ समाजे-अध्ययनक हिसाब अलग रहए। असेसमेंटक नम्बर परीक्षाक नम्बरमे जोड़ि कऽ रिजल्ट होइत। जे असेसमेंटक नम्बर सेक्रेट्री आ हेडमास्टरक हाथक खेल रहए। परीक्षाक तीन मासक उपरान्त रिजल्ट निकलै।

मास दिन परीक्षाक बीति गेल। दू मास रिजल्ट निकलैमे बाकी। माघक अंतिम समए। सरस्वती पूजा पाँच दिन पहिने भऽ गेल। शीतलहरी चलैत। जाहिसँ मिथिलांचल साइबेरिया बनि गेल। दिन-राति एक्के रंग। बरखाक बून्न जेकाँ ओस टप-टप खसैत। सुरुजक दरसन दू माससँ कहियो ने भेल। दिन-राति कखन होए ओ लोक अन्हारेसँ बुझैत। सभ अपन-अपन जान बँचवै पाछू लागल।

खेती-पथारीक काज सबहक बन्न। रब्बी-राइ ठंढ़सँ कठुआएल। बढ़बे ने करैत। बोराक झोली ओढ़ोलाक बादो माल-जाल थर-थर कपैत। जहिना महीसक बच्चा तहिना गाइयक बच्चा कठुआ-कठुआ मरैत। बकरीक तँ फौतिये आबि गेल। गाछ सभ परहक घोरन सुड़डाह भऽ गेल। चिड़ै-चुनमुनीसँ लऽ कऽ नढ़िया, खिखिर, साँप मरि-मरि जहाँ-तहाँ महकैत।

माघक पूर्णिमासँ दू दिन पहिने रामखेलावनकेँ लकबा लपकि लेलक। सौँसे देहक अधा भाग सुन्न भऽ गेलै। क्रियाहीन। बिठुओ कटलापर किछु नहि बुझैत। चिड़ैक लोल जेकाँ टेढ़ मुँह भऽ गेलै। ओना उमेरो कोनो बेसी नहि, चालीस बर्खसँ भीतरे। रौतुका समए। शीतलहरीक चलैत अन्हारो बेसी। ओना इजोरिया पख रहए। मुदा भादबक अन्हार जेकाँ अन्हार। पिताक दशा देखि दीनानाथक मन घबड़ा गेलै। तहिना माइयोक। मुदा तैयो मनकेँ थीर करैत दीनानाथ डॉक्टर ऐठाम विदा भेल। किछु दूर गेलापर पएर तेना कठुआ गेलै जे चलिये ने होइ। मनमे भेलै जे बाबूसँ पहिने अपने मरि जाएब। घरोपर घुरि कऽ नञि गेल हएत। बीच पाँतरमे दीनानाथ असकरे। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलै। मनमे एलै, आब की करब? मुदा फेर मनमे एलै जे हाथसँ ठेहुन रगड़लापर पएर हल्लुक हएत। सएह करए लगल। जाँघ हल्लुक भेलै। हल्लुक होइते डॉक्टर ऐठाम चलल।

डॉक्टर ऐठाम पहुँचिते रोगीक भीड़ देखि दीनानाथ फेर घबड़ा गेल। मनमे एलै, जे सौँसे दुनियाँक रोगी एतै जमा भऽ गेल अछि। असकरे डॉक्टर सहाएब छथि आ दूटा कम्पाउण्डर छनि, कोना सभकेँ देखथिन। मुदा रोगो एकरंगाहे, तँ बेसी मत्था-पच्ची डॉक्टरकेँ करै नै पड़नि। धाँइ-धाँइ इलाज करैत जाथि। मुदा मेले जेकाँ रोगी एबो करै। थोड़े काल ठाढ़ भऽ कऽ देखि दीनानाथ सिरसिराइते डॉक्टर लगमे जा बाजल- 'डॉक्टर सहाएब, कनी हमरा अइठीन चलियौ। हमर बाबू एते बीमार भऽ गेल छथि जे अबै जोकर नञि छथि।'

दीनानाथक बात सुनि डॉक्टर कहलखिन- 'बौआ, ऐठाम तँ देखिते छी, कोना एते रोगी छोड़ि कऽ जाएब? जे ऐठाम पहुँचि गेल अछि ओकरा छोड़िकेँ जाएब उचित हएत।'

'समए रहैत जँ हमरा ऐठाम नै जाएब तँ बाबू मरि जेताह।'

'अहाँ घबड़ाउ नै तत्खनात दूटा गोली दै छी। हुनका खुआ देबनि आ एतै नेने अबिअनु।'

दीनानाथक मनमे पिताक मृत्यु नचए लगल। मन मसोसि दुनू गोलि लऽ बिदा भेल। मुदा घर दिशि बढ़ैक डेगे ने उठए। एक तँ ठंढ़, दोसर मनमे निराशा आ तेसर शीतलहरीसँ रातिओ अन्हार। मुदा तैयो जिबठ बान्हि कऽ बिदा भेल। कच्ची रस्ता रहने जहाँ-तहाँ मेगर आ तइ परसँ कते ठाम टुटलो। जइसँ कए बेर खसबो कएल मुदा तैयो हूबा कऽ उठि-उठि आगू बढ़िते रहल। घरपर अबिते दुनू गोली पिताकँ खुऔलक। तहि बीच माए गोइठाक घूर कऽ सौँसे देह सेदैत। अपना खाट नहि। एते रातिमे ककरा कहतै। मुदा पितिऔत भाइक खाट मन पड़लै? मन परिते पितिऔत भाय लग जा कहलक- 'भैया खाटो दिअ आ संगे चलबो करु। एहेन समएमे अनका ककरा कहबै। के जाएत ?'

दीनानाथक बात सुनिते पितिऔत भाय धड़फड़ा कऽ उठि खाट नेनहि बढ़ल। खाटपर एक पाँज पुआर बिछा सलगी बिछौलक। दुनू पाइसमे बरहा बान्हि खाट तैयार केलक। खाट तैयार होइते दुनू गोरे रामखेलावनकँ उठा ओहिपर सुतौलक। बरहामे बाँस घोसिया दुनू गोरे कान्हपर उठा बिदा भेल। पाछु-पाछु सुमित्रो बिदा भेलि। थोड़े काल तँ दीनानाथ किछु नहि बुझलक मुदा थोड़े कालक बाद कन्हा भकभकाए लगलै। कान्ह परक छाल ओदरि गेलै। जइसँ बाँस कान्हपर रखले ने होए। लगले-लगले कान्ह बदलै लगल। मुदा जिबट बान्हि डॉक्टर ऐठाम पहुँचि गेल।

डॉक्टर एहिठाम पहुँचते डॉक्टर सहाएब देखलखिन। बीमारी देखारे रहए। धाँए-धाँए पाँचटा इन्जेक्शन लगा देलखिन। इन्जेक्शन लगा डॉक्टर दीनानाथकँ कहलखिन- 'हिनका खाटेपर रहए दिअनु। बेसी चिन्ता नै करु। तखन तँ नमहर बीमारी पकड़नहि छनि। किछु दिन तँ लगबे करत।'

रामखेलावनकँ नीन आबि गेलै। खाटक निच्चाँमे तीनू गोटे -दीनानाथ, पितिऔत भाय आ सुमित्रा- बैसल। सुमित्रा मने-मन सोचैत जे समए-साल तेहने खराब भऽ गेल अछि जे बेटा-पुतोहू ककरा देखै छै। जाबे पति जीबैत रहै छै ताबे स्त्रीगण गिरथाइन बनल रहैत अछि। पुरुखकँ परोछ होइतहि दुनियाँ अन्हार भऽ जाइ छैक। बिना पुरुखक स्त्रीगण ओहने भऽ जाइत अछि जेहने सुखाएल गाछ। कहलो गेल छै जे साँइक राज अप्पन राज, बेटा-पुतोहूक राज मुँहतक्की। मुदा की करब ? अपन कोन साध। ई तँ भगवानेक डाँग मारल छिअनि। हे माए भगवती, कहुना हिनका नीक बना दिअनु। जँ से नञि करबनि तँ पहिने हमरे लऽ चलू।

दोसर दिन डॉक्टर रामखेलावनकँ देखि कहलखिन- 'हिनका घरेपर लऽ जइअनु। ऐठामसँ नीक सेवा घरपर हेतनि। बीमारी आब आगू मुँहे नहि बढ़तनि मुदा इलाज बेसी दिन करबै पड़त। हमर कम्पाउण्डर सभ दिन जा-जा सुइयो देतनि आ देखबो करतनि। तै बीच जँ कोनो उपद्रव बुझि पड़त तँ अपनो आबि कऽ कहब।'

कहि दूटा सुइया फेर डॉक्टर सहाएब लगा देलखिन। दवाइक पुरजा बना देलखिन। एकटा सूइया आ तीन रंगक गोली सभ दिन दैले कहि देलखिन। गप-सप्प

सभ कियो करिते छलाह आकि तहि बीच रामखेलावन पत्नीकेँ कहलक- 'किछु खाइक मन होइए।'

खाइक नाम सुनिते दीनानाथक मुँहसँ हँसी निकलल। लगले दोकानसँ दूध आ बिस्कुट आनि कऽ देलक। दूध-बिस्कुट खुआ दुनू भाँइ खाट उठा बिदा भेल।

घरपर अबिते टोल-परोससँ लऽ कऽ गाम भरिक लोक देखए आबए लगल। शीतलहरी रहबे करै मुदा तैयो लोक अबैक ढ़बाहि लगल। दू घंटा धरि लोक अबैत रहल। दीनानाथ माएकेँ कहलक- 'माए, बड़ भूख लगल अछि। पहिने भानस कर। भुखे पेटमे बगहा लगैए।'

दीनानाथक बात सुनि माए भानस करए बिदा भेलि। भूख तँ अपनो लागल मुदा कहती ककरा। बेर-बिपतिमे तँ एहिना होइते छैक। दीनानाथक बात पितिआइन सेहो सुनलक। बेचारी पितिआइन सोचलक जे सभ भुखाइल अछि। बेरो उनहि गेलै। आब जे भानस करए लगत तँ साँझे पड़ि जेतैक। तहूँमे सभ भुखे लहालोट होइए। से नञि तँ घरमे जे चूड़ा अछि ओ दऽ दै छिऐ जइसँ तत्खनात तँ काज चलि जेतै। सएह केलक।

दीनानाथ आ सुमित्रा चूड़ा भिजा कऽ खाइते छल आकि माम -सुमित्राक भाए- आएल। भाएकेँ देखितहि सुमित्राक आँखिमे नोर आबि गेल। बिना पएर धोनहि भाए मकशूदन बहिनोइ लग पहुँचि देखए लगलथि। बहिनोइक दशा देखि दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलनि। नोर पोछि बेचारे सोचै लगलाह जे हम तँ सियान छी तहूमे पुरुख छी। जँ हमहीं कानबै तँ बहीन आ भागिनक दशा की हेतै। धैर्य बान्हि बहीनकेँ कहलक- 'दाइ, ई दुनियाँ एहिना चलै छै। रोग-व्याधि सह-सह करैत अछि। जइ ठीन गर लगि जाइ छै पकड़ि लैत अछि। अपना सभ सेबे करबनि की ने मुदा.......। रुपैयाक लेल दवाइ-दारुमे कोताही नञि होनि। आइ भोरे पता लागल। पता लगिते दौगल एलहुँ। अपने गाए बिआएल अछि। काल्हि गाइयो आ जहाँ धरि हएत तहाँ धरि रुपैयो आनि कऽ दऽ देबौ। अखन हम जाइ छी, काल्हि आएब।'

चारि दिनक बाद रामखेलावनक मुँह सोझ भऽ गेल। उठि कऽ ठाढ़ सेहो हुअए लगल। मुदा एकटा पाएर नीक नहि भेल। कनी-कनी झखाइते डेग उठबैत।

सभ दिन भोरे आबिकेँ कम्पाउण्डर सूइयो दैत आ चला-चला देखबो करैत।

दू मासक बाद दीनानाथक रिजल्ट निकलल। फस्ट डिबीजन भेलै। नम्बरो नीक। छह सौ तीन नम्बर। हेडमास्टरक समांगकेँ सेहो फस्ट डिबीजन भेलै। मुदा नम्बर कम। पाँच सौ पैंतालिस आएल छलै। सेक्रेट्रीक समांगकेँ सेकेण्ड डिवीजन भेलै। मुदा नम्बर बढ़िया, पाँच सए चौंतीस। आगू पढ़ैक आशा दीनानाथ तोड़ि लेलक। किएक तँ घरमे कियो दोसर करताइत नहि। एक तँ पिताक बीमारी, दोसर घरक खर्च जुटौनाइ, तै परसँ छोट भाए अठमामे पढ़ैत। मुदा दीनानाथकेँ अपन पढ़ाइ छोड़ैक ओते दुख नै भेलै जते परिवार चलौनाइसँ लऽ कऽ पिताक सेवा करैक सुख भेलै। जे बेटा बाप-माइक सेवा नै करत ओ बेटे की? अपन पढ़ैक आशा दीनानाथ छोट भाए कुसुमलालपर केन्द्रित कऽ देलक।

अधिक काल मकशूदन बहीनेक ऐठाम रहए लगलाह। गाइयोक सेवा आ खेतो-पथारक काज सम्हारए लगलथि। अपना ऐठामसँ अन्नो-पानि आनि-आनि दिअ लगलखिन। अपना घर जेकाँ भार उठा लेलक। अपन दशा देखि रामखेलावन मकशूदनकेँ कहलखिन- 'हम तँ अबाहे भऽ गेलौं। जाबे दाना-पानी लिखल अछि ताबे जीबै छी। मरैक कोनो ठीक नहि अछि तँ अपना जीबैत कतौ दीनानाथक बिआह करा दियौ। बेटा-बेटीक बिआह-दुरागमन कराएब तँ माए-बापक धरम छिऐ। मुदा हम तँ कोनो काजक नै रहलौं। कमसँ कम देखियो तँ लेबै।'

बहनोइक बात सुनि मकशूदन गुम्म भऽ गेला। मने-मन सोचए लगला जे समए-साल तेहने खराब भऽ गेल अछि जे नीक मनुख घरमे आनब कठिन भऽ गेल अछि। सभ खेल रुपैआपर चलि रहल अछि। मनुखक कोनो मोले ने रहलै। एहेन स्थितिमे नीक कन्याँ कोना भेटत ? तखन एकटा उपाए जरुर अछि जे रुपैया-पैसाक भाँजमे नहि पड़ि, गुनगर कन्याँक भाँज लगाबी। जइसँ घरक कल्याण हेतै। पाहुन जखन हमरा भार देलनि तँ हम दान-दहेज नहि आनि नीक कन्याँ आनि देबनि। बहिनोइकेँ कहलखिन- 'पाहुन, रुपैआक पाछू लोक भसिआइत अछि। अगर अहाँ हमरा भार दै छी तँ हम रुपैआक भाँजमे नहि पड़ि नीक मनुक्ख आनि कऽ देब। से की विचार?'

मकशूदनक बात सुनि बहीन धाँइ दऽ बाजलि- 'भैया, रुपैया मनुक्खक हाथक मैल छिऐ। मुदा मनुक्ख तपस्यासँ बनैत अछि। तँ हमरा नीक पुतोहू हुअए। रुपैआक भुख हमरा नै अछि।'

बहीनक बात सुनि मकशूदनक मनमे सबुर भेलनि। बजलाह- 'बहीन, जहिना तोरा सबहक पुतोहू तहिना तँ हमरो हएत की ने। के एहेन अभागल हएत जे अपन घर अबाद होइत नै देखत?'

अपन पढ़ाइक आशा तोड़ि दीनानाथ मने-मन अपना पएरपर ठाढ़ होइक बाट ताकए लगल। संकल्प केलक जे जहिना नीक रिजल्ट पबैक लेल विद्यार्थी जी-तोड़ मेहनति करैत अछि तहिना हमहूँ परिवारकेँ उठबैक लेल जमि कऽ मेहनति करब।

बिऔहती लड़कीक भाँज मकशूदन लगबए लगला। मुदा मनमे एलनि जे हम तँ वर पक्ष छी तँ लड़की ऐठाम पहिने कोना जाएब ? कने काल गुनधुन करैत सोचलनि जे बेटा-बेटीक बिआह परिवारक पैघ काज होइत अछि तँ एहेन-एहेन छोट-छीन बेवहारपर नजरि नहिये देब उचित हएत। तहूमे तँ हम लड़काक बाप नहि माम छी। पाहुन जखन भार देलनि तँ नहियो करब उचित नै हएत।

अपना गामक बगलेक गाममे लड़कीक भाँज मकशूदनकेँ लगलनि। परिवार तँ साधारणे मुदा लड़की काजुल। काजमे तपल। किएक तँ माए सदिखन ओकरा अपने संग राखि खेत-पथारक, घर-आंगनक काजसँ लऽ कऽ अरिपन लिखब, दुआरिमे पूरनि, फूलक गाछ, कदमक फुलाइल गाछक संग-संग पावनि-तिहारमे गीत गौनाइ सभ सिखबैत। बड़द कीनैक बहानासँ मकशूदन भेजा विदा भेला। पहिने दू-चारि गोटेक ऐठाम पहुँचि बड़दक दाम करैत कन्यागतक दुआरपर पहुँचला। कन्यागत दुआरपर

नहि। मुदा लड़की बाल्टीमे पानि भरि अंगना अबैत। लड़कीकेँ देखि मकशूदन पुछल- 'बुच्ची, घरवारी कतए छथि?'

बाल्टी रखि सुशीला बाजलि- 'बाड़ीमे मिरचाइ कमाइ छथि। अपने चौकीपर बैसियौ। बजौने अबै छिअनि।'

बाल्टी अंगनामे रखि सुशीला बाड़ीसँ पिताकेँ बजौने आएलि। पड़ोसी होइ दुआरे दुनू गोटे दुनू गोटेकेँ चेहरासँ चिन्हैत मुदा मुँहा-मुँही गप नै भेने अनचिन्हार। कन्यागत पूछल- 'किनकासँ काज अछि?'

मुस्कुराइत मकशूदन- 'अखन दुइये गोरे छी, तँ मनक बात कहै छी। हमरो घर बीरपुरे छी। हमरा भागिन अछि। काल्हि खन पता चलल जे अहाँकेँ बिऔहती बच्चिया अछि तँ ओइठाम कुटमैती कऽ लिअ।'

कुटुमैतीक नाम सुनि कन्यागत गुम्म भऽ गेलाह। कनी-काल गुम्म रहि कहलखिन- 'हम गिरहस्त छी। सेहो नमहर नै छोट। अइठीनक गिरहतक की हालत अछि से अहाँ जनिते छी। तँ अइबेर बेटीक बिआह नै सम्हरत।'

कन्यागतक सुखल मुँह देखि मकशूदन बजलाह- 'मनमे जे दहेजक भूत पकड़ने अछि ओ हटा लिअ। अहाँकेँ जहिना सम्हरत तहिना बिआह निमाहि लेब।'

मकशूदनक विचार सुनि कन्यागतक मुँह हरिआए लगलनि। दरबज्जे परसँ बेटीकेँ सोर पाड़ि कहलक- 'बुच्ची, सरबत बनौने आबह?'

बड़का लोटामे सरबत आ गिलास नेने सुशीला दरबज्जापर आबि चौकीपर रखए लागलि। तहि बीच पिता बजलाह- 'बुच्ची, इहो कियो आन नहि छथि। पड़ोसिये छिआह। बीरपुरे रहै छथि। दहुन सरबत।'

दुनू गोटे सरबत पीलनि। सरबत पीबि पिता कहलखिन- 'बुच्ची, चाहो बनौने आबह।'

सुशीला चाह बनबए गेलि। दरबज्जापर दुनू गोरे गप-सप्प करए लगलाह।

मकशूदन- 'जेहने अहाँक कन्याँ छथि तेहने हमर भागिन। अजीब जोड़ा बिधाता बनाकेँ पठौने छथि। काल्हिये अहूँ लड़काकेँ देखि लियौ। संयोग नीक अछि तँ शुभ काजमे विलंब नहि करु।'

मकशूदनक विचारसँ जते उत्साहित कन्यागतकेँ हेबाक चाहियनि तते नहि होइत। किएक तँ मनमे घुरिआइत जे कहुना छी तँ बेटीक बिआह छी। फुसलेने काज थोड़े चलत। मुदा कन्याक माए दलानक भीतक भुरकी देने अढ़ेसँ गप्पो सुनैत आ दुनू गोटेकेँ देखबो करैत। मने-मन उत्साहितो होइत जे फँसल शिकार छोड़ब मुरुखपना छी। माए-बापक सराध आ बेटीक बिआहमे ककरा नै करजा होइ छै। जानिये कऽ तँ हम सभ गरीब छी। गरीबकेँ जनमसँ लऽ कऽ मरै धरि करजा रहिते छै। तैले एते सोचै विचारैक कोन काज। करजो हाथे बेटीक बिआह कइये लेब। फस्ट डिवीजनसँ मैट्रिक पास लड़का अछि। एहेन पढ़ल-लिखल लड़का थोड़े भेटत। कहबियो छै जे पढ़ल-लिखल लोक जँ हरो जोतत तँ मुरुखसँ सोझ सिराओर हेतै। आइक युगमे मूर्खो बड़क बाप पचास हजार रुपैया गनबैत अछि। खुशीसँ मनमे होइ जे छड़पि कऽ

दरवज्जापर जा कहिअनि जे अगर अहाँ आइये बिआह करए चाही तँ हम तैयार छी। मुदा स्त्रीगणक मर्यादा रोकि दैत। तँ बेचारी अढ़ेमे अहुरिया कटैत। मुदा पतिक मन बदलल। ओ मकशूदनकेँ कहलक- 'देखू, हम भैयारीमे असकरे छी मुदा गृहिणी तँ छथि। हुनकासँ एक बेर पूछि लै छिअनि। किएक तँ हम घरक बाहरक काजक गारजन छी ने, घरक भीतरी काजक गारजन तँ वएह छथि। जँ कहीं बेटी बिआहक दुआरे किछु ओरिया कऽ रखने होथि तँ कइये लेब।'

कन्यागत भोला उठि कऽ आंगन गेला। आंगन पहुँचते पत्नी झपटि कऽ कहए लगलनि- 'दुआरपर उपकरि कऽ लड़काबला एलाहेँ तँ अहाँ अगधाइ छी। जखैन लड़काक भाँजमे घुमैत-घुमैत तरबा खियाएत आ बेमाइसँ खूनक टगहार चलत तखन बुझबै। तीन-तीन साल बेटीबला घुमैए तखन जा कऽ कतौ गर लगै छै। जा कऽ कहि दिअनु जे अखैन हमर हालत नीक नञि अछि मुदा जँ अहाँ तैयार छी तँ हमहूँ तैयार छी। वर देखैक दिन कौल्हुके दऽ दिअनु।

पत्नीक बातसँ उत्साहित भऽ भोला आबि कऽ बजलाह- 'पत्नीक विचार सोलहो आना छनि। मुदा कहबे केलहुँ जे अखैन हमर हालत बढ़ियाँ नै अछि।'

मकशूदन- 'काल्हि अहाँ लड़का देखि लियौ। जँ पसिन्न हएत तँ जहिना कुटमैती करए चाहब तहिना कऽ लेब। असलमे हमरा लोकक जरुरत अछि, नै की रुपैआ-पैसाक।'

आठे दिनक दिनमे बिआह भऽ गेल। भोलाक बहिनो आ साउसो नीक जेकाँ मदति केलकनि। अपना घरसँ सिर्फ एकटा सोनाक सुक्की -नअटा चौवन्नीक छड़- भोलाकेँ निकलल।'

पनरह दिनक उपरान्त दीनानाथ पुबरिया ओसारपर बैसि, पितासँ छीपि कऽ माएकेँ कहलक- 'माए, घरक दशा जे अछि से तोहूँ देखते छीही। जेना घर चलैए तेना कते दिन चलत। साले-साल खेत बिकाइत। जइसँ किछुए सालक बाद सभ सठि जाएत। छोड़ैबला काज एक्कोटा नञि अछि। जहिना कुसुमलालक पढ़ैक खर्च, तहिना बाबूक दवाइ आ पथ्यक। मुदा आमदनी तँ कोनो दोसर अछि नहि। लऽ दऽ कऽ खेती। सेहो डेढ़ बीघा। तहूमे ने पानिक जोगार अपना अछि आ ने खेती करैक लूरि। एते दिन तँ बाबू कहुना-कहुना कऽ करैत छलाह, आब तँ सेहो नै हएत। हमहूँ जँ कतौ नोकरी करए जाएब सेहो नै बनत, किएक तँ बाबूक देखभाल सेहो करैक अछि। तखन तँ एक्केटा उपाए अछि जे घरेपर रहि आमदनीक कोनो काज ठाढ़ करी।'

बेटाक बात सुनि माए गुम्म भऽ गेलीह। जइ घरमे आमदनी कम रहत आ खरचा बेसी हएत ओ घर कोना चलत। एते बात मनमे अबिते माइक आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलनि। आँचरसँ नोर पोछि बाजलि- 'बौआ, हम तँ स्त्रीगणे छी। घर-अंगनामे रहैवाली। तूँ जँ बच्चो छह तँ पुरुखे छह। जखैन भगवाने बेपाट भेल छथुन तखन तँ किछु करै पड़तह।'

दुनू गोटेक -माइयो आ बेटोक- मुँह निच्चाँ मुँहे खसल। ने बेटाक नजरि माए दिशि उठैत आ ने माइक नजरि बेटा दिशि। जहिना मरुभूमिमे पियासल लोकक दशा

होइत, तहिना दुनूक दशा होइत। केबाड़ लग ठाढ़ सुशीला दुनूकेँ देखैत। जोरसँ कियो अहि दुआरे नहि बजैत जे रोगाइल पिता वा पति जँ सुनताह तँ सोगसँ आरो दुख बढ़ि जेतनि। केबाड़ लगसँ घुसकि ओसारपर आबि सुशीला बाजलि- 'माए चिन्ता केलासँ दुख थोड़े भगतनि। दुखकेँ भगबैले किछु उपाय करै पड़तनि। छोटका बौआ बच्चे छथि, बाबू रोगाइले छथि मुदा अपना तीनू गोरे तँ खटैबला छी। खटलासँ सभ कुछ होइ छै।'

सुशीलाक बात सुनि सासु बजलीह- 'कनियाँ, कहलिऐ तँ बड़बढ़िया मुदा ओहिना तँ पानि नै डेंगाएब।'

सासुक बात सुनि पुतोहु बाजलि- 'हमर एकटा पित्ती धानक कुट्टी करै छथि। जहिना अपन परिवार अछि तहूसँ लचड़ल हुनकर परिवार छलनि। तइ परसँ चारि-चारिटा बेटिओ छलनि। मुदा जइ दिनसँ धानक कुट्टी करए लगलथि तइ दिनसँ दिने-दुनियाँ घुरि गेलनि। चारु बेटिओक बिआह केलनि, बेटोकेँ पढ़ौलनि। ईंटाक घरो बनौलनि आ पाँच बीघा खेतो कीनि लेलनि। अखन हुनकर हाथ पकड़ैबला गाममे कियो नै अछि।'

पत्नीक बात सुनि दीनानाथक भक्क खुजल। भक्क खुजिते दीनानाथ खुशीसँ उछलि अंगनामे कूदल। दरबज्जापर आबि कागज-कलम निकालि हिसाब जौड़ए लगल। डेढ़ सेर धानमे एक सेर चाउर होइत अछि। ओना धानक बोरा अस्सिये किलोक होइत अछि जखैनकि चाउरक सौ किलोक। चारि सए रुपैये बोरा धान बिकैत अछि तँ पान सौ रुपैये क्वीन्टल भेल। एक क्वीन्टल धानक सड़सठि किलो चाउर भेल। दू-चारि किलो खुद्दियो हएत जेकर रोटी पका कऽ खाएब। एक किलो चाउरक दाम साढ़े दस रुपैयासँ एगारह रुपैया होइत। अइ हिसाबसँ एक क्वीन्टल धानक चाउरक लगभग सात सौ रुपैया भेल। पान सएक पूँजीसँ सात सएक आमदनी भेल। तइ परसँ तीस किलो गुड़ो। जेकर दाम साठि रुपैया भेल। खर्चमे खर्च सिर्फ जरना, कुटाइ आ गाड़ीक भाड़ा। बाकी सभ मेहनतिक फल भेल। अगर जँ एक बोराक कुट्टी सभ दिनक हिसाबसँ करब तँ पाँच हजारक महीना आमदनी जरुर हएत।

हिसाब जोड़ैत-जोड़ैत दीनानाथक मनमे शंका उठल जे हिसाबेमे तँ नै गलती भऽ गेल। कागज-कलम छोड़ि उठि कऽ टहलै लगल। मने-मन हिसाबो जोड़ैत। मनमे कखनो हिसाब सही बुझि पड़ैत तँ कखनो शंका होइत। आंगन जा पानि पीलक। दू-चारि बेर माथ हसोथलक। फेर आबि कऽ हिसाब जोड़ए लगल। मुदा हिसाब ओहिना कऽ ओहिना होइ। मनमे बिसवास जगलै। जाहिसँ काजक प्रति आकर्षण सेहो भेलै। फेर आंगन जा माएकेँ पुछलक- 'एक बोरा धान उसनैमे कते समए लगतौ?'

माए बाजलि- 'एक बोरा धान तँ दसे टीन भेल। दुचुल्हियापर पाँच खेप भेल आ चरिचुल्हियापर अढ़ाइये खेप भेल। एक्के घंटामे उसनि लेब।'

माइक बात सुनि दीनानाथ तँइ केलक जे हमहूँ यएह रोजगार करब। पूँजीक लेल पत्नीक सोना सुक्कीमे सँ पाँचटा निकालि आ सबा भरि बेचि, धान कीनि कुट्टी शुरु केलक। जाहिसँ परिवारमे खुशहाली आबि गेलै।

कुशुमलाल बी.ए. पास कऽ मधुबनी कोर्टमे किरानीक नोकरी शुरु केलक। कोर्टेक बड़ाबाबूक बेटीसँ बिआह सेहो केलक। मधुबनियेमे डेरा राखि दुनू परानी रहए लगल। तीन-चारि बर्ख तँ संयमित जीवन बितौलक। सिर्फ वेतनेपर गुजर करैत। मुदा तेकर बाद पाइ कमाइक लूरि सीखि लेलक। जाहिसँ खाइ-पीबैक संग-संग आउरो लूरि भऽ गेलै। घरोवाली पढ़ल-लिखल। जहिना कमाइ तहिना खर्च। शहरक हवामे उधियाए लगल। सिनेमा देखैक, शराब पीबैक, नीक-नीक वस्तु कीनैक आदति बढ़ैत गेलै। एक दिन पत्नी कहलकै- 'गाममे जे खेत अछि ओ अनेरे किअए छोड़ने छी। ओहिसँ की लाभ होइए। ओकरा बेचि कऽ अहीठाम जमीन कीनि अपन घर बना लिअ।'

स्त्रीक बात कुसुमलालकेँ जँचल। रवि दिन छुट्टी रहने गाम आबि भाए दीनानाथकेँ कहलक- 'भैया, हम अपन हिस्सा खेत बेचि लेब। मधुबनियेमे दू कट्ठा खेत ठीक केलहुँहेँ। ओ कीनि ओतै घर बनाएब। भाड़ाक घरमे तते भाड़ा लगैए जे एक्को पाइ बचबे ने करैए जे अहूँ सभकेँ देब।'

कुसुमलालक बात सुनि दीनानाथ कहलक- 'बौआ, अखन बाबू-माए जीविते छथुन, तँ हम की कहबह? हुनके कहुन।'

दीनानाथक जबाब सुनि कुसुमलाल पितासँ कहलक। रोगाइल रामखेलावन खिसिया कऽ कहलक- 'डेढ़ बीधा खेत छौ। दस कट्ठा हमरा दुनू परानीक भेल, दस कट्ठा दीनानाथक भेलै आ दस कट्ठा तोहर भेलौ। अपन हिस्सा बेचि कऽ लऽ जो।'

खेत कीनै-बेचैक दलाल गामे-गाम रहिते अछि। कुसुमलाल जा कऽ एकटा दलालकेँ कहलक। पाँच हजार रुपैये कट्ठाक हिसाबसँ दलाल दाम लगा देलक। कुसुमलाल राजी भऽ गेल। मुदा बेना नै लेलक। तरे-तर दीनानाथो भाँज लगबैत। साँझू पहर जखन कुसुमलाल मधुबनी बिदा भेल तखन दीनानाथ कहलकै- 'बौआ, जते दाम तोरा आन कियो देतह तते हमहीं देबह। बाप-दादाक अरजल सम्पति छी, आन कियो जे आबि कऽ घरारीपर भट्टा रोपत ओ केहेन हएत ?

मुदा दीनानाथक बात कुसुमलाल मानि गेल। पचास हजारमे जमीन लिखि देलक। मधुबनियेमे कुसुमलाल घर बना लेलक। अपना गामक लोकसँ ओते संबंध नहि रहलै जते सासुरक लोकसँ। सासुरक दू-चारि गोटे सभ दिन अबिते-जाइत रहैत। आदरो-सत्कार नीक होए।

बीस बर्ख बाद दीनानाथक बेटा मेडिकल कम्पीटीशनमे कम्पीट केलक। बेटी आइ.एस.सी. मे पढ़िते। पढ़ैमे दुनू भाए-बहीन उपरा-उपरी। तँ परिवारक सभकेँ आशा रहै जे बेटिओ मेडिकल कम्पीट करबे करत। माए-बापक सेवा आ बेटा-बेटीक पढ़ाइ देखि दुनू परानी दीनानाथक मन खुशीसँ गद-गद। परिवारोक दशा बदलि गेल। मुदा तैयो दीनानाथ धानक कुट्टी बन्न नञि केलक। आरो बढ़ा लेलक। मनमे इहो होइ जे धनकुटिया मिल गरा ली मुदा समांगक दुआरे नहि गड़बैत। टाएरगाड़ी कीनि लेलक। जाहिसँ खेतिओ करै आ भड़ो कमाइ।

कुसुमलालकेँ सेहो दूटा बेटा। दुनू पब्लिक स्कूलमे पढ़ैत। जेठका अठमामे आ छोटका छठामे। मधुबनियेमे डेरा रहितहुँ दुनू होस्टलेमे रहैत। तइ परसँ सभ विषएक ट्यूशन सेहो पढ़ैत। तँ नीक खर्च होइ।

शराब पीबैत-पीबैत कुसुमलालक लीभर गलि गेलै। किछु दिन मधुबनियेमे इलाज करौलक मुदा ठीक नहि भेने दरभंगाक अस्पतालमे भर्ती भेल। चारि मास दरभंगोमे रहल मुदा ओतहु लीभर ठीक नै भेलै। तखन पटना गेल। पटनोमे ठीक नै भेलै, संगहि शरीर दिनानुदिन खसिते गेलै। अंतमे दिल्लीक एम्समे भर्ती भेल। ओतहु ठीक नञि भेलै। शरीर एते कमजोर भऽ गेलै जे अपनेसँ उठियो-बैसि नञि होइ। हारि-थाकि कऽ मधुबनीक डेरापर आबि गेल। मुदा एते दिनक बीमारीक बीच दीनानाथकेँ जानकारीयो ने देलक। सारे-सरहोजिक संग घुमैत रहल।

ओछाइनपर पड़ल-पड़ल सौँसे देहमे धाव भऽ गेलै। ढाकीक-ढाकी माछी देहपर सोहरए लगलै। कतबो कपड़ा ओढ़बै तैयो माछी घुसि-घुसि असाइ दऽ दै। दिन-राति दर्दसँ कुहरैत। सदिखन घरवालीक मन तामसे लह-लह करैत। गरिएबो करैत। दुनू बेटामे सँ एक्कोटा लगमे रहैले तैयार नहि। जेठका बेटा कहए- 'पप्पा जी, महकता है।'

जखन कखनो लगमे अबैत तँ नाक मूनि कऽ अबैत। छोटका बेटा सेहो तहिना। सदिखन बजैत-'पप्पा जी, अब भूत बनेगा। लगमे रहेंगे तो हमको भी पकड़ लेगा।'

जइ ऑफिसमे कुसुमलाल काज करैत ओहि ऑफिसक एकटा स्टाफ दीनानाथकेँ फोनसँ कहलक- 'कुसुमलाल अंतिम दिन गनि रहल अछि तँ आबि कऽ मुँह देखि लियौ।'

फोन सुनि दीनानाथ सन्न भऽ गेल। जेना दुनियाँक सभ कुछ आँखिक सोझासँ निपत्ता भऽ गेलै। सुन-मशान दुनियाँ लगै लगलै। मनमे एलै, कियो ककरो नहि। दुनू आँखिसँ नोर टधरए लगलै। नोर पोछि सोचए लगल जे कियो झुठे ने तँ फोन केलक। फेर मनमे एलै जे एहेन समाचार झूठ किअए हएत? अनेरे कियो पैसा खर्च कऽ फोन किअए करत? एहेन अवस्थामे कुसुमलाल पहुँच गेल मुदा आइ धरि किछु कहबो ने केलक। खैर, जे होए। मुदा हमरो तँ किछु धर्म अछि। अपना कर्तव्यसँ कियो मनुख एहि दुनियाँमे जीबैत अछि। अखन तँ अबेर भऽ गेल। काल्हि भोरुके गाड़ीसँ मधुबनी जाएब। एते विचारि माएकेँ कहलक- 'माए, एक गोटे मधुबनीसँ फोन केने छेलाह जे कुसुमलाल बहुत दुखित छथि तँ आबि कऽ देखिअनु।'

दीनानाथक मुँहक बात सुनिते माएक देहमे आगि लगि गेलनि। जरैत मने बाजलि- 'कुसुमा हमर बेटा थोड़े छी जे मुँह देखबै। उ तँ ओही दिन मरि गेल जइ दिन हमरा दुनू परानी बाप-माएकेँ छोड़ि चलि गेल। जँ अइ धरतीपर धरमक कोनो स्थान हेतै तँ ओइमे हमरो कतौ जगह भेटत। जँ कोनो शास्त्र-पुराणमे पतिब्रता स्त्रीक चरचा हेतै तँ हमरो हएत। आइ बीस बर्खसँ अइ हाथ-पाएरक बले बीमार पतिकेँ जीबित राखि अपन चूड़ी आ सिनुरक मान रखने छी।'

माइक बात सुनि दीनानाथ मने-मन सोचलक जे कुसुमलाल अगर हमरा कमा कऽ

नहियो देलक तँ हमर की बिगड़ल। माइयो-पिताक दर्शन भोरे-भोर होइते अछि, बालो-बच्चा आनंदेसँ अछि। तखन तँ एक-वंशक छी जा कऽ देखि लिऐ।

दोसर दिन भोरुके गाड़ीसँ मधुबनी पहुँचि ओ कुसुमलालक डेरापर पहुँचल। बाहरेक कोठरीमे कुसुमलाल। चद्दरिसँ सौंसे देह झाँपल। मुँह उघारितहि कुसुमलाल बाजल- 'भ-इ-अ-अ।' कहि सदाक लेल आँखि मूनि लेलक।

दीनानाथ- 'बौआ कुसुम, वौआ.....बौआ..... बउआ।'

बहीन

'आब अधिक दिन माए नहि खेपतीह। ओना उमेरो नब्बे बर्खक धत-पत हेबे करतनि। तहूँमे बर्ख पनरह-बीसेकसँ कहियो बोखार के कहए जे उकासियो नहि भेलनि अछि। एक तँ ओहिना पाकल उमेर तहिपर सँ देहक रोगो पछुआएल, तेँ भरिसक एहिबेरि उठि कऽ ठाढ़ हेबाक कम भरोस। किएक तँ एक ने एक उपद्रव बढ़िते जाइत छन्हि। अन्नो-पानि अरुचिये जेकाँ भेलि जाइ छनि।'' -भखरल स्वरमे राधेश्याम पत्नीकेँ कहलखिन।

पतिक बात सुनि, कने काल गुम्म रहि, रागिनी बाजलि- ''ककरो औरुदा तँ कियो नहिये दऽ सकैत अछि। तहन तँ जाधरि जीबैत छथि ताधरि हम-अहाँ सेबे करबनि की ने?''

'हँ, से तँ सएह कऽ सकैत छियनि। मुदा जिनगीक कठिन परीक्षाक घड़ी आबि गेल अछि। एते दिन जे केलहुँ, ओकर ओते महत्व नहि जते आबक अछि। किएक तँ कखनो पानि मंगतीह वा किछु कहती, तहिमे जँ कनियो देरी हएत आ कियो सुनि लेत तँ अनेरे बाजत जे फल्लांक माए पानि दुआरे किकिहारि कटैत रहैत छथिन। मुदा बेटा-पुतोहू तेहन जे छै घुरि कऽ एको-बेरि तकितो नहि छन्हि। ककरो मुँहमे ताला लगेबै। देखिते छियै जे गाममे कोना लोक झुठ बाजि-बाजि झगड़ो लगबैत आ कलंको जोड़ैत अछि। तेँ चैबीसो घंटा ककरो नहि ककरो लगमे रहए पड़त। जँ से नहि करब तँ अंतिम समएमे कलंकक मोटरी कपारपर लेब।''

''कहलहुँ तँ ठीके, मुदा बच्चा सबहक हिसाबे कोन, तहन तँ दू परानी बचलहुँ। बेरा-बेरी दुनू गोटे रहब। अन्तुका काज अहूँ छोड़ि दिऔ। किएक तँ अंगनेक काज बढ़ि गेल। बहीनो सभकेँ जनतब दइये दिअनु।''

''अपनो मनमे सएह अछि। जँ तीनू बहीनि आबि जाएत तँ काजो बँटा कऽ हल्लुक भऽ जाएत। ओना अंगनासँ दुआरि धरि काजो बढ़बे करत। जखने सर-संबंधी, दोस्त-महिम बुझताह तँ जिज्ञासा करए अएबे करताह। जखन दरबज्जापर औताह तँ सुआगत बात करै पड़त''।

मूड़ी डोलबैत रागिनी बजलीह- ''हँ, से तँ हेबे करत।''

''एखन निचेन छी आ काजो करैऐक अछि। तेँ अखने तीनू बहीनियो आ ममोकेँ जानकारी दइये दैत छिअनि।'' आन कुटुम्बकेँ एखन जानकारी देब जरुरी नहि छै। मोबाइलमे मामाक नम्बर लगौलक। रिंग भेलै।

''हेलो, मामा। हम राधेश्याम।''

''हँ, राधेश्याम। की हाल-चाल?''

"माए, बड़ जोर दुखित पड़ि गेलीह।"

"एखन हम एकटा जरुरी काजमे बँझल छी। साँझ धरि आबि रहल छी।" मोबाइल बन्न कऽ राधेश्याम जेठ बहीनि गौरीक नम्बर लगौलक।

"हेलो, बहीनि। माए दुखित पड़ि गेलखुन।"

"एखन हम स्कूलेमे छी आ अपनहुँ कओलेजेमे छथि। छुट्टीक दरखास्त दइये दैत छिअए। साँझ धरि पहुँच जाएब।"

मोबाइल बन्न कऽ छोटकी बहीनिक नम्वर लगौलक।

"सुनीता। हम राधेश्याम।"

"भैया, माए नीके अछि की ने?"

"एखन की नीक आ कि अधलाह। तीनि दिनसँ ओछाइन धेने अछि। तेँ किछु कहब कठिन।"

"हम अखने छुट्टीक दरखास्त दऽ आबि रहल छी।"

"बड़बढ़िया" कहि मझिली बहीनि रीताक नम्बर लगौलक।

"हेलो, रीता। हम राधेश्याम। माए, बड़ जोर दुखित छथुन।"

'भैया, हम तँ अपने तते फिरीसान छी जे खाइक छुट्टी नहि भेटैत अछि। काल्हियेसँ दुनू बच्चाक प्रतियोगिता परीक्षा छियै'

बिना स्विच ऑफ केनहि राधेश्याम मोबाइल राखि अकास दिशि देखए लगल। ठोर पटपटबैत- 'बच्चाक परीक्षा......, मृत्यु सज्जापर माए....! केकरा प्राथमिकता देल जाए? एक दिशि, जे बच्चा एखन धरि जिनगीमे पएरो नहि रखलक, सौंसे जिनगी पड़ल छैक। दोसर दिशि कष्टमय जिनगीमे पड़ल बृद्ध माए। खैर, सभकेँ अपन-अपन जिनगी होइ छैक आ अपना-अपना ढ़ंगसँ सभ जीबए चाहैत अछि। हम चारि भाए बहीनि छी तेँ ने दोसरपर ओंगठल छी। मुदा जे असकरे अछि, ओ कोना माए-बापक पार-घाट लगबैत अछि। किछु सोचितहि छल कि नव उत्साह मनमे जगल। नव उत्साह जगितहि नजरि पाछु मुँहे ससरल। चारु भाए-बहीनिमे माए सभसँ बेसी ओकरे मानैत छलि आ ओकर सेबो केलक। कारणो छलैक जे बच्चेसँ ओ रोगा गेल छलि। मुदा आश्चर्यक बात तँ ई जे जेकरा माए सभसँ बेसी सेवा केलक वएह सभसँ पहिने बिसरि रहलि अछि।

गोसाँइ डूबैत-डूबैत मामो आ दुनू बहीनि-बहिनोइ पहुँच गेलखिन।

अबितहि डॉ. सुधीर -छोट बहिनोइ- आला लगा सासु माएकेँ देखि कहलखिन- "भैया, माए बँचतीह नहि। मुदा मरबो दस दिनक बादे करतीह। तेँ एखन ओते घबड़ेबाक बात नहि अछि। अखन हम जाइ छी, मुदा बहीनि डॉ. सुनिता रहतीह। ओना हमहूँ दू-दिन तीन-दिनपर अबैत रहब।"

डॉ. सुधीरक बात सुनि सभकेँ क्षणिक संतोष भेलनि। मामा कहलखिन- "भागिन, ओना हम ककरो छींटा-कस्सी नहि करैत छिअनि मुदा अपन अनुभवक हिसाबे कहैत छिअह जे भरि दिन तँ स्त्रीगण सभ मुस्तैज रहथुन मुदा रातिमे नहि। ओना हमरो

गाम बहुत दूर नहिये अछि। एखन तँ धड़फड़ाइले चलि एलहुँ। तँ एखन जाइ छी। काल्हिसँ साँझू पहरकँ एबह आ भोर कऽ चलि जेबह। भरि राति दुनू माम-भगिन गप-सप्प करैत ओगरि लेब।''

दुनू बहिनोइयो आ मामो चलि गेलखिन।

''आइ सातम दिन माएकँ अन्न छोड़ब भऽ गेलनि। दू-चारि चम्मच पानि आ दू-चारि चम्मच दूध, मात्र अधार रहि गेल छनि।'' -आंगनसँ दरवज्जापर आबि रागिनी पतिकँ कहलखिन।

पत्नीक बात सुनि राधेश्याम मने-मन सोचए लगलाह। मनमे उठलनि चारु भाए-बहीनिक पारिवारिक जिनगी। कतेक आशासँ दुनू गोटे माए-पिता हमरा चारु भाए-बहीनिकँ पोसि-पालि, पढ़ा-लिखा, विआह-दुरागमन करा परिवार ठाढ़ कऽ देलनि। जहिना गौरी जेठ बहीनि एम.ए. पास अछि। तहिना एम.ए. पास बहिनोइयो छथि। हाई स्कूलमे बहीन नोकरी करैत अछि तँ कौलेजमे बहिनोइ। परिवारक प्रतिष्ठा, समाजोमे बढ़वे केलनि जे कमलनि नहि। तहिना छोटकियो बहीनि अछि। बहीनो डॉक्टर आ बहिनोइयो डॉक्टर। तहिना तँ पिताजी मझिलियो बहीनिकँ केलनि। दुनू परानी इंजीनियर। बम्बइमे दुनू गोटे नोकरी करैत अछि।

जहिना तीनू बहीनि पढ़ल-लिखल अछि तहिना बहिनोइयो छथि। अजीव नजरि पितोजीक छलनि। मनुष्यक पारखी। तँ ने बहीनिक विआह समतुल्य बहिनोइक संग केलनि। एक माए-बापक तीनू बेटी, पढ़ल-लिखल, एक परिवारमे पालल-पोसल गेलि, मुदा तीनूक विचारमे एते अंतर कोना अबि गेलै। एहि प्रश्नक जबाव राधेश्यामकँ बुझैमे अयबै नहि करनि। मन घोर-घोर होइत। एक दिशि माइक अंतिम अवस्थापर नजरि तँ दोसर दिशि मझिली बहीनिक व्यवहारपर।

विचारक दुनियाँमे राधेश्याम औनाए लगलाह। प्रश्नक जबाब भेटिबे ने करनि। अपन परिवारपर सँ नजरि हटा बहीनि सभक परिवार दिशि नजरि दौड़ौलनि।

गौरीक ससुर उमाकान्त हाई स्कूलक शिक्षक रहथिन। अपने बी.ए. पास मुदा पत्नी साफे पढ़ल-लिखल नहि। नाओ-गाँव लिखल नहि अबनि। ओना पिता पंडित रहथिन। मुदा बेटी कऽ परिवार चलबैक लूरिकँ बेसी महत्व देथिन। जाहिसँ कुशल गृहिणी तँ बनि जाएत, मुदा ने चिट्ठी-पुरजी पढ़ल होइछै आ ने लिखल। ओना जरुरतो नहि रहै। किऐक तँ ने पति-पत्नीक बीच चिट्ठी-पुरजीक जरुरत आ ने कुटुम्ब-परिवारक संग। मुदा दुनू परानी उमाकान्त आ सरिताक बीच असीम स्नेह। मास्टर सहाएबकँ अपन बाल-बच्चासँ लऽ कऽ विद्यालयक बच्चा सभकँ पढ़बै-लिखबैक मात्र चिन्ता। जहि पाछू भरि दिन लगलो रहथि। जखन कि पत्नी सरिता परिवारक सभ काज सम्हारैत। एखनुका जेकाँ लोकक जिनगियो फल्लर नहि, समटल रहै। गौरीक परिवारपर सँ नजरि हटा राधेश्याम छोटकी बहीनि डॉ. सुनिताक परिवारपर देलनि। जहिना बहीनि डॉक्टरी पढ़ने तहिना बहिनोइयो। जोड़ो बढ़ियाँ। सुनिताक ससुर बैद्य रहथिन। जड़ी-बुट्टीक नीक जानकार। जहिना जड़ी-बुट्टीक जानकार तहिना रोगो चिन्हैक। जहिसँ समाजमे प्रतिष्ठो नीक आ जिनगियो नीक जेकाँ चलनि। तँ अपन

चिकित्साक वंशकेँ जीवित रखैक दुआरे बेटाकेँ डॉक्टरी पढ़ौलनि। पत्नियो तेहने। अंगनाक काज सम्हारि, बाध-बोनसँ जड़िओ-बुट्टी अनैत आ खरलमे कुटबो करैत रहथि। दवाइ बैद्यजी अपने बनाबथि किऐक तँ मात्राक बोध गृहिणीकेँ नहि रहनि। छोटकी बहीनिक परिवारपर सँ नजरि हटा मझिली बहीनिक परिवारपर देलनि। रीताक ससुर मलेटरिक इंजीनियरिंग विभागमे हेल्परक नोकरी करैत। अपनहि विचारसँ मलेटरिऐक बेटीसँ विआहो -लभ-मैरिज- केने। मलेटरिक नोकरी, तँ पाइयो आ रुआबो। हाथमे सदिखन हथियार तँ मनो सनकल। मुदा बेटा-बेटीकेँ नीक जेकाँ पढ़ौलनि। जहिना रीता इंजीनियरिंग पढ़ने तहिना घरोबला। दुनू बम्बइक कारखानामे नोकरी करैत। कमाइयो नीक खरचो नीक, तहिना मनक उड़ानो नीक। एकाएक राधेश्यामक मनमे उठल जे आब तँ माइयक अंतिमे समए छी तँ एक बेरि रीताकेँ फेरि फोन कऽ कऽ जानकारी दऽ दिअए। मोवाइल उठा रीताक नम्वर लगौलनि। रिंग भेल बाजलि- “हेलो, हम राधेश्याम।”

“हेलो, भैया। अखन हम स्टाफ सबहक संग काजमे व्यस्त छी।”

रीताक जबाव सुनि राधेश्याम सन्न रहि गेलाह। रातिक दस बजैत। इजोरियाक सप्तमी अन्हार-इजोतक बीच घमासान लड़ाइ छिड़ल। किछु पहिने जहि चन्द्रमाक ज्योति अन्हारपर शासन करैत, वएह चन्द्रमा पछड़ि रहल अछि। तेज गतिसँ अन्हार आगू बढ़ि रहल अछि। तहि बीच छोटकी बहीन डॉ. सुनीता आंगनसँ आबि भाय राधेश्यामकेँ कहलक- “भैया, हम तँ भगवान नहि छी, मुदा माइयक दशा जहि तेजीसँ बिगड़ि रहल छनि, तहिसँ अनुमान करैत छी जे काल्हि साँझ धरि परान छुटि जेतनि।”

एक दिशि माइक अंतिम दशा आ दोसर दिशि रीताक बिचारक बीच राधेश्यामक धैर्यक सीमा डगमग करए लगलनि। विचित्र स्थिति। जिनगीक तीनिबट्टीपर वौआए लगलाह। तीनिबट्टीक तीनू रस्ता तीनि दिस जाइत। एक रास्ता देवमंदिर दिशि जाइत तँ दोसर दानवक काल-कोठरी दिशि। बीचक रास्तापर राधेश्याम ठाढ़। एकाएक निर्णय करैत राधेश्याम बहीनि सुनिताकेँ कहलखिन- “कने गौरियो कऽ बजाबह।”

आंगन जा सुनिता गौरीकेँ बजौने आएलि। दुनू बहीनिक बीच राधेश्याम बजलाह- “बहीनि, जहिना हमर बहीन रीता तहिना तँ तोड़ो सबहक छिअह। तँ, तोहूँ सभ एक बेरि फोन लगा माइक जानकारी दऽ दहक। हम निर्णय कऽ लेलहुँ जे जहिना एहि दशामे माइक रहनहुँ, ओकरा अपन धिया-पूतासँ अधिक नहि सुझैत छैक तहिना हमहूँ ओकरा भरोसे नहि जीबैत छी। तँ जँ माए के जीवितमे नहि आओत तँ मुइलाक बाद नहो-केश कटबैक जानकारी नहि देबइ। हमरा-ओकरा बीच ओतबे काल धरि संबंध अछि जते काल माइक प्राण बँचल छैक। कहलो गेल छैक ‘भाए-बहीनि महीसिक सींग, जखने जनमल तखने भिन्न।’ मन तँ होइत अछि जे भने ओ एखन स्टाफ सभक बीच अछि, तँ एखने सभ बात कहि दियै। मुदा कहनहुँ तँ किछु भेटत नहि, तँ छोड़ि दैत छियै।”

जहिना अकासमे उड़ैत चिड़ैकेँ बंश रहितहुँ परिवार नहि होइ छै तहिना जँ मनुक्खोक होइ तँ अनेरे भगवान किऐक बुद्धि-विवेक दइ छथिन। किऐक नहि मनुक्खोकेँ चिड़ैइये-चुनमुनी आ कि चरिटंगा जानवरेक जिनगी जीबए देलखिन।' बजैत-बजैत राधेश्यामोक आ दुनू बहीनियोक करेज फाटए लगलनि। आँखिसँ नोर टघरए लगलनि। भाए-बहीनिक टूटैत संबंधसँ सभ अचंभित हुअए लगलथि। सबहक हृदयमे रीता नचए लगलनि। बच्चासँ विआह धरिक रीताक जिनगी सबहक आँखिमे सटि गेलनि। एक दिशि रीता बम्बइक घोड़दौड़ जिनगीक प्रतियोगितामे आगू बढ़ए चाहैत छलि तँ दोसर दिशि देवालमे टांगल फोटो जेँका सबहक हृदयमे चुहुट कऽ पकड़ने। जहिना बाँसक झोंझसँ बाँस काटि निकालैमे कड़चीक ओझरी लगैत तहिना धिया-पूताक ओझरीमे रीता।

'तीनू ननदि-भौजाइ गौरि, सुनिता आ रागिनी माए लग बैसि मने-मन सोचए लगलीह। कियो-ककरो टोकैत नहि। तीनू गुमसुम। सिर्फ आँखि नाचि-नाचि एक-दोसरपर जाइत। मुदा मन श्वेतबान रामेश्वरम् जेँका। एक दिशि जिनगी रुपी भूमि स्थल जेँका विशाल भूभाग देखैत तँ दोसर दिशि मृत्यु रुपी अथाह समुद्र। यएह थिक जिनगी आ जिनगीक खेल। जहि पाछु पड़ि लोक आत्माकेँ बलि चढ़वैत। तहि बीच माए बाजलि- 'रीता.....।' रीताक नाम सुनि तीनूक हृदयमे ऐहेन धक्का लगलनि जहिसँ तीनू तिलमिला गेलीह।

रातिक एगारह बजैत। गामक सभ सुति रहल। इजोरियो डुबैपर। झल-अन्हार। दलानक आगूमे, कुरसीपर बैसि राधेश्याम आँखि मूनि अपन वंशक संबंधमे सोचैत रहथि। मनमे अएलनि जे आइ सप्तमीक चान डुबि रहल अछि, अन्हार पसरि रहल अछि, मुदा कि कल्हुका चान आइसँ कम ज्योतिक होएत? की अगिला ज्योति पैछला अन्हारक अनुभव नहि करत? सभ दिनसँ अन्हार-इजोतक बीच संघर्ष होइत आएल अछि आ होइत रहत। फेरि मनमे उठलनि जे आजुक राति हमरा लेल ओहन राति अछि जे भरिसक माइक जिनगीक अंतिम राति हएत। जनिका संग हजारो राति बीतल ओहिपर विराम लगि रहल अछि। विचारक दुनियाँमे उगैत-डूबैत राधेश्याम। तहिकाल शबाना पोतीक संग पहुँचलीह। दलान-आंगनक बीच रास्तापर दुनू गोटे चुपचाप ठाढ़ि। दुनू डेराएल। राधेश्याम आँखि मुनने तँ नहि देखैत। परोपट्टामे हिन्दु-मुसलमानक बीच तना-तनी। जहि डरसँ शबाना दिनकेँ नहि आबि अन्हारमे आएलि। किऐक तँ सरोजनीक स्नेह खींचि कऽ लऽ अनलकै। रेहना शबानाकेँ कहलक- "दादी, अइठीन किअए ठाढ़ छीही, अंगना चल ने?"

रेहनाक अवाज सुनितहि राधेश्याम आँखि तकलनि तँ दुनू गोटेकेँ ठाढ़ देखलनि। पुछलथि- "के?"

शबाना बाजलि- "बेटा, राधे।"

"मौसी।"

"हँ"

एत्ती राति कऽ किऐक अलेहँ?"

“बौआ, से तू नै बुझै छहक जे गाम-गाममे केहेन आगि लागि रहल छैक। पाँचम दिन सुनलौं जे बहीनि बड़ जोड़ अस्सक छथि। जखने सुनलहुँ तखने मन भेल जे जाइ। मुदा की करितौं? मन छटपटाइ छलए। बेटाकेँ पुछलियै तँ कहलक जे से तू नै देखै छीही रस्ता-बाटमे इज्जत-आवरुक लुटि भऽ रहल अछि। मार-काट भऽ रहल अछि। ऐहन स्थितिमे कोना जेमए। मुदा मन नै मानलक। जिनगी भरि दुनू बहीनि संगे रहलौं, आइ बेचारी मरि रहल अछि तँ मुँहो नै देखब? जी-जाँति पोतीकेँ संग केने एलौं।”

कुरसीपर सँ उठि राधेश्याम शबानाक बाँहि पकड़ि आंगन दिशि बढ़ैत बहीनिकेँ कहलखिन- “मौसी एलखुन। पाएर धोइले पानि दहुन।”

राधेश्यामक बात सुनि दुनू बहीनियो -गौरी आ सुनिता- आ रागिनियो घरसँ निकलि आंगन आइलि। गौरी बजलीह- “मौसी, शबाना मौसी!”

शबाना बजलीह- “हँ।”

दुनू गोटे -शबानो आ रेहनो- पएर धोए सोझे बहीन सरोजनी लग पहुँच दुनू पएर पकड़ि कानए लगलीह। कनैत देखि सरोजनी पुछलखिन- “कनै किअए छँ। हम कि कोनो आइये मरब? एत्ती रातिकेँ किअए एलैहें?”

शबाना बाजलि- “बहीनि, रस्ता-पेरा बन्न अछि। दू बर्खसँ भौरियो-बट्टा -घुमि-घुमि बेचनाइ- बन्न भऽ गेल। जखैनसँ अहाँ दऽ सुनलौं, तखैनसँ मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेल तँ दिन-देखार नै आबि चोरा कऽ अखैन ऐलौंहेँ।”

सरोजनी बहुत कठीनसँ बाजलि- “धिया-पूता नीके छौ कीने?”

शबाना कहलकनि- “शरीरसँ तँ सब नीके अछि, मुदा कारबार बन्न भऽ गेल अछि।”

“गामो दिशि गेल छलेँ?”

“नै। कन्ना जाएब....। तेसर सालक बाढ़िमे अहूँक गाम कटि कऽ कमला पेटमे चलि गेल आ हमरो गाम कोसीमे। आब सुने छी जे हमरो गाम भरनापर बसल हैं आ अहूँक गाम कमलाक पछबरिया छहरक पछबरिया बाधमे। घनश्यामपुर तक तँ रस्ता छइहो मुदा ओइसँ आगू रस्ते सबपर मोइन फोड़ि देने अछि। पौरुकाँ जे जाइत रही तँ लगमा लगमे डूबए लगलौं।’

सरोजनी गौरीकेँ इशारासँ कहलक- “दाइ, बड़ राति भेलइ। मौसीकेँ खाइले दहक।”

शबाना बाजलि- “बहीनि, पहिने हम कना खाएब? पहिने बौआ राधेश्यामकेँ खुआ दियौ। खा कऽ सुति रहत। हम भरि राति बहीनसँ गप-सप्प करब। बहुत दिनक गप्प पछुआइल अछि।”

शबानाक बात सुनि राधेश्याम मने-मन सोचए लगल जे दुनियाँमे बहीनिक कमी नहि अछि। लोक अनेरे अप्पन आ बीरान बुझैत अछि। ई सभ मनक खेल छिअए। हँसी-खुशीसँ जीवन बितबैमे जे संग रहए, ओइह अप्पन। शवानाकेँ कहलक- “मौसी, माए तँ ने सिर्फ हमरे माए छी आ ने अहींक बहीनि। सबहक अप्पन-अप्पन छिअए, तँ

कियो अप्पन करत की ने?''

पूबरिये घरक ओसारपर राधेश्याम सुतल। बाकी सभ पूबरिया घरमे बैसि गप-सप्प करए लगलीह। गौरी पुछलनि- ''मौसी, अहाँ दुनू बहीनि तँ दू गामक छिअए। दुनू गोरेमे चीन्हा-परिचए कहिया भेलि?''

शबाना बाजनि- 'जइहेसँ ज्ञान-परान भेलि, तेहियेसँ अछि। हमरा बाप आ तोरा नाना कऽ दोसतिआरै रहनि। कोस भरि पूब हमर गाम झगडुआ अछि आ कोस भरि पछिम बहीनिक। अखन तँ दुनू गाम उपटि कऽ दोसर ठीन बसल अछि। मुदा पहिने बड़ सुन्दर दुनू गाम छलै।

गौरी बाजलि- ''मौसी, हम तँ बच्चेमे, बहुत दिन पहिने गेल रही। तइ दिनमे तँ बड़ सुन्दर गाम रहए।''

शबाना बजलीह- ''हँ, से तँ रहबे करए। मुदा आब देखवहक तँ बिसबासे ने हेतह जे यएह गाम छिअए। हँ, तँ कहै छेलिहह, काकाकेँ बहुत खेत-पथार रहनि। चारि जोड़ा बड़द खुट्टापर, चारि-पाँचटा महीसियो रहनि। मुदा हमरा बापकेँ खेत-पथार नै रहए। गामेमे खादी-भंडार रहए। सौँसे गामक लोक चरखो चलबै आ कपड़ो बीनै। सभसँ नीक कारीगर रहए हमर बाप। घरक सभ कियो सुतो काटी आ कपड़ो बनबी। सलगा, चद्देरि, गमछी आ धोती बीनैमे हमरा बापक हाथ पकड़िनिहार कियो नहि। बहीनिक गामक सभ हमरे बापसँ कपड़ा कीनए। सौँसे गामसँ अपेछा रहए। पाँचे-सात वर्खक रही तहियेसँ बहीनिक ऐठाम अइठीन जेबो करियै आ खेबो करियै।''

शबानाक बात सुनि गौरीकेँ अचरज लगलै। मने-मन सोचए लगली जे एक तँ गरीब तहूमे मुसलमान। तहि बीच दोस्ती। मुस्की दैत रागिनी बाजलि- ''कोन पुरना खिस्सा मौसी जोति देलखिन। ई कहथु जे दुनू बहीनिक बिआह एक्के दिन भेलनि?''

शबाना बाजलि- 'धूर्र कनियाँ! अहाँ की बजै छी। हमरासँ बहीनि दू-तीन बरख जेठ छथि। बहीनिक विआहसँ दू वर्ख पाछु कऽ हमर विआह भेल। कक्का हमरा बापकेँ कहलखिन जे पूबरिया आ दछिनबरिया इलाका कोशिकन्हा भऽ गेल तँ आब कथा-कुटुमैती उत्तरेभर करब नीक हएत।'

कन्ने गुम रहि, शबाना बाजलि- ''बेटी, कपारक दोख भेल। आब अपनो बुझै छी जे नैहरक काजक जे महौत छेलै से अइ काज -भौरीक- नै अछि। मुदा की करितियै?

अइठीम उ काज अछिये नहि। ने खादी-भंडार छै आ ने कारोवार अछि।''

मुस्की दइत रागिनी बाजलि- ''मौसी, अपना विआहमे तँ हम कनियेटा रही। सभ गप मनो ने अछि। हिनका तँ मन हेतनि, विआहमे झगड़ा किअए भेल रहए?''

कने काल गुम रहि शबाना ठाहाका मारि हँसि, बाजलि- ''अहाँक बावू बड़ मखौलिया रहथि। हँसी-चौलमे ककरो नइ जीतए देथिन। घरदेखीमे एलथि। हम दुनू बहीनि खूब छकौलिएनि। पीढ़ी तरमे खपटा, झुटका बैसैले आ रुइयाँ तरि कऽ खाइले सेहो देलिएनि। खा कऽ जहाँ उठलाह कि एक डोल करिक्का रंग कपारपर उझलि देलिएनि। मुदा हुनका लिए धनि सन। तहिना बरिआतीमे ओहो छकौलकनि। सबहक

धोतीमे चारि-पाँच दिनक सड़लाहा खैर लगा देलकनि। पहिने तँ बरिआती सभ अपनमे रक्का-टोकी केलक। मुदा जखन भाँज लगलै जे घरवारी सभकेँ सड़लाहा खइर लगा देलक। तखन बरिआतियो सभ टूटल। मुदा कहे-कही भऽ कऽ रहि गेलइ। मारि-पीटि नहि भैल।'' कहि हँसै लागलि। सभ हँसल।

राधेश्याम ओसारपर सुतल रहथि। मुदा एक्को बेरि आँखि बन्न नहि भेलनि। किऐक तँ मनमे शंका होइत जे अनचोकेमे ने माए मरि जाए। खिस्से-पिहानीमे राति कटि गेल।

भोर होइतहि शबाना राधेश्यामकेँ कहलक- ''बौआ, अपन मन अछि जे आब बहीनिकेँ एक काठी चढ़ाइये कऽ जाएब। मुदा गामे-गाम जे आगि लगल देखै छिअए तइसँ डर होइए।''

राधेश्याम- ''मौसी, एहिठाम कियो किछु नहि बिगाड़ि सकैत छओ। जहिया तक तोरा रहैक मन होउ, निर्भीकसँ रह।''

शबाना बाजलि- ''बौआ, मन होइए जे बहीनिक सभ नुआ-बिस्तर हम खीचि दिअए। फेरि ई दिन कहिया भेटत''

राधेश्याम- ''दुनू बहीनिक बीच हम की कहबौ। जे मन फुड़ौ से कर।''

इम्हर आब राधेश्यामक माए सरोजनीक टनगर बोलो मद्धिम भेल जा रहल छलनि।

घरदेखिया

नीन्न टुटितहि लुखियाक नजरि दिन भरिक काजपर पड़लनि। काज देखि मनमे अबूह लागए लगलनि। असकता गेलीह। मुदा तैयो हूबा कऽ कऽ उठए चाहलनि आकि आँखि पुबरिया घरक छप्परपर गेलनि। बिहाड़िमे मठौठ परक खढ़ उड़िया गेल छलैक। हड्डी जेकाँ बाती झक-झक करैत। मनमे अएलनि जे "की कहत बड़तुहार?" कहत जे मसोमातक घर छिऐ तँ मठौठ उजड़ल छैक। खौंझ उठलनि। ठोर पटपटबैत- "जेहने नाशी डकूबा बिहाड़ि तेहने झड़कलहा कारकौआ। जुट बान्हि-बान्हि आओत आ लोलसँ खढ़ उजाड़ि-उजाड़ि छिड़िऔत।" नजरि निच्चाँ होइतहि दछिनबरिया टाटपर पड़लनि। बरसातमे टाटक आलन गलि कऽ झड़ि गेल छलैक। मात्र कड़ची-बत्ती टा झक-झक करैत। जाहिसँ ओहिना दछिनबरिया बँसबिट्टी देखि पड़ैत। बेपर्द आंगन। मन खिन्न हुअए लगलनि। मनमे अएलनि जे पुरना साड़ी टाटमे टांगि देबै। मुदा बड़तुहारक आँखिमे की कोनो गेजर भेल रहतै जे नहि देखत। तहूमे साड़ीसँ कते अन्हराएत। ओहिना सभ किछु देखत। आरो मन निच्चा खसैत जाइत। बाप रे की कहत बड़तुहार? नागेसर दिओरपर तामस उठै लगलनि। कोन जरुरी छलनि जे कौल्हुके दिन दऽ देलखिन। घर-अंगना चिक्कन कऽ लैतहुँ तहन अबैक दिन दैतऽथिन। कोनो की हमर बेटा बाढ़िमे दहाइल जाइत छलए। पाँच दिन आगुएक दिन भेने की होइतै? तामस बढ़लनि। तहि बीच आँखि टाट परसँ निच्चा उतड़लनि। नजरि पड़लनि अंगनाक पनिबटपर। झक-झक करैत झुटका। उबड़-खाबड़ सौँसे आंगन। तहूमे जे झुटका सरिआममे अछि ओ तँ नहि मुदा जे अलगल अछि ओ तँ चुभ-चुभ गरैत अछि। सौँसे अंगना सरिअबैमे कमसँ कम, दस छिट्टा माटि लागत। दस छिट्टा माटि उघि, ढ़ेपा फोड़ि, सरिया कऽ पटबैमे तँ भरि दिन लगि जाएत। तखन आन काज कोना हएत ? काजक तरमे दबाए लगलीह। तामस आरो लहरै लगलनि। अबूहो लगनि। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल भारसँ दबैत जाएत। दुइये माए-पूत की सभ करब ? तहूमे आइ अइ छौड़ाकेँ कोना किछु करैले कहबै। ओकरे देखैले ने घरदेखिया आओत। छौँड़ाकेँ तँ अपने मारिते रास काज हेतै। कानी छटौत। अंगा-घोती खीचत। आइरन करबैले गंजपर जाएत। गमकौआ साबुनसँ नहाएत। तेल लेत। बाबरी सीटत। तेहेन ठाम कोदारि-खुरपी चलबैले कोना कहबै। लोहे छिऐ जँ किनसाइत लागिये जाए। तखन तँ आरो पहपटि हएत। कथकिया जे हाथ-पाएरमे पट्टी बान्हल देखतै तँ की कहत? मनक तामस निच्चाँ मुँहे ससरए लगलनि। तामस उतड़ितहि नजरि घरदेखियाक खेनाइ-पीनाइपर पहुँचलनि। आन काज तँ रहियो-सहि कऽ भऽ सकैत अछि मुदा दूध तँ एक दिन पहिने पौड़ल जाएत। जँ से नहि पौड़ब

तँ दही कोना हएत। शुभ काजमे जँ दहिये नहि होएत तँ काजक कोन भरोस। एक तँ महीसबला सभ तेहेन अछि जे दूधसँ बेसी पानिये मिला दैत छैक। नबका मटकुरियो ने अछि, जे पानियो सोखि लइतैक। मनमे खौंझ उठए लगलनि। मुदा नजरि चाउर-दालि दिशि बढितहि तामस दबलनि। बेटाक घरदेखिया आओत, हुनका कोना खेसारी दालि आ मोटका चाउरक भात खाइले देबनि। लोको दुसत आ अपनो मन की कहत। कियो किछु कहऽ वा नहि मुदा कुल-खानदानक तँ नाक नहि ने कटा लेब। जँ इज्जतिए नहि तँ जिनगिये की? मन पड़लनि घैलमे राखल कनकजीर चाउर। कनकजीर चाउरक भात आ नवका कुटुम मनमे अबितहि लुखियाक हृदए पघिलल केरा जेकाँ पलड़ए लगलनि। मने-मन भातक प्रेमी दालिक मिलान करए लगलीह। मेही भातमे मेही दालिक मिलान नीक हएत। मुदा खेरही-मसुरी दालि तँ भोज-काजमे नहि होइत। होइत तँ बदाम-राहड़िक। मुदा राहड़ि तँ घरमे अछि नहि। बोडमरना बाढ़ियो तेना दू सालसँ अबैत अछि जे एक्को डाँट राहड़ि नहि होइत अछि। तत्-मत् करैत फेर मन झुझुआ गेलनि। बिना आमिले राहड़िक दालि केहेन हएत? आमक मास रहैत तँ चारि फाँक कँचके आम दऽ दितिऐ। सेहो नहि अछि। फेर मन आगू बढ़लनि, पहिल-पहिल समैध-समधीन बनब आ एगारहो टा तरकारी खाइले नहि देबनि से केहेन हएत। गुन-धुन करए लागलीह। गुन-धुन करितहि बर-बरी-अदौरी मन पड़लनि। एक्के दिनमे कोना ओरियान हएत? घाटिये-बेसन बनबैमे तँ तीन दिन लागत। तखन कोना होएत? फेर तामस पजरए लगलनि। मन फेर खौंझा गेलनि। बजै लागलीह-“ई सभटा आगि लगौल नगेसराक छी। जाबे ओकरा छितनीसँ चानि नहि तोड़ब ताबे ओकरा बुद्धि नहि हेतै। तमसाइले नागेसरक आंगन दिशि बजैत बढ़लीह। पुरुख छी आकि पुरुखक झड़। जहि पुरुखकेँ काजक हिसाबे नहि जोड़ए आओत ओहो कोनो पुरुखे छी। ओहिसँ नीक तँ मौगी।

नागेसर नदी दिशि गेल छलाह। नागेसरकेँ नहि देखि लुखिया डेढ़िये पर अनधुन बजए लागलि। मुदा नागेसरक पत्नी भुरकुरिया चुप-चाप सुनैत। किछु बजैत नहि। किएक तँ मने-मन सोचैत जे दिओर-भौजाइ बीचक बात छी, तहि बीच हम किएक मुँह लगबी। बजैत-बजैत लुखियाक पेटक बात सठलनि। बात सठितहि तामसो उतड़लनि। बोलीक गरमीकेँ कमैत देखि भुरकुरिया बाजलि- “अंगना चलथु दीदी। बीड़ी पीबि लेथु, तखन जइहथि।”

घरसँ बीड़ी-सलाइ निकालि दुनू गोटे ओसारपर बैसि गप-सप्प करए लागलि। सलाइ खरड़ैत भुरकुरिया बाजलि- “दीदी, आब पीहुओकेँ जुआन होइमे देरी नञि लगतनि। कंठ फुटि गेलै।”

भुरकुरियाक बात सुनि लुखिया हरा गेलीह। जुआन बेटाक सुख मनमे नचए लगलनि। लुखियाकेँ आनन्दित होइत देखि पुनः भुरकुरिया बाजलि- “भइयोसँ बेसी भीहिगर जवान पीहुआ हेतनि।”

खुशीसँ लुखियाक हृदए बमकि गेलनि, बजलीह- “कनियाँ, खाइ-पीबैमे छौँड़ाकेँ की कोनो कोताही करै छिऐ। एक तँ भगवान नउऐं-कउऐं कऽ एकटा बेटा देलनि। तेकरो

जँ सुख नै होए तँ एते खटबे ककराले करै छी। बापक मन तँ परुँके बिआह करैके रहै मुदा तइ बीच अपने चलि गेल। आब साल लगलै तँ अइ बेर जेना-तेना बिआह कइये देबै।'

कहि आंगन दिशि बिदा भेलीह। अंगनासँ निकलितहि मन नागेसरपर गेलनि। सोचए लागलीह, नागेसर बेचाराक कोन दोख छैक। ओहो की कोनो अधलाह केलक। हुनको मनमे ने होइत हेतनि जे झब दे पुतोहु घर आबनि। एखन तँ वएह ने बाप बनि ठाढ़ छथिन। मुदा काज अगुताइल केलनि। गरीब छी, तेकर माने ई नहि ने जे इज्जति नहि अछि। इज्जति कऽ तँ बचा कऽ राखै पड़ैत छैक। नव कुटुमैती भऽ रहल अछि। नव कुटुम्ब दुआरपर औताह। हुनका जँ पाँच कौर खाइयो ले नहि देबनि से केहेन हएत। स्वागत की कोनो धोतिये-टाका टा सँ होइत छैक? आकि दूटा बोल आ दू कौर अन्नोसँ होइत छैक। जेहेन पाहुन रहताह तेहने ने बेबहारो करए पड़त। फेर मनमे तामस उठए लगलनि। एहेन पुरुखे की जिनका धियो-पूतोक बिआह करैक लूरि नहि होइन। तहि बीच मन पड़लनि चाह-पान। चाहो-पानक ओरियान तँ करए पड़त। एहन नहि ने हुअए जे एक दिशि करी आ दोसर दिशि छुटि जाए। चाहे-पानटा किअए, बीड़ीओ-तमाकुलक ओरियान करए पड़त ने। ई की कोनो शहर-बजार छिऐ जे लोक एक्के- आधे टा अम्मल रखैत अछि। ई तँ गाम छिऐक, एहिठाम तँ एक-एक आदमी पनरह-पनरहटा अमल डेबैत अछि। अपनहि विचारमे लुखिया ओझरा गेलीह। किछु फुड़बे ने करनि। बुकौर लगै लगलनि। आँखिमे नोर ढ़बढ़बा गेलनि। मनमे उठए लगलनि जे घर तँ पुरुखेक होइत छैक। एते बात मनमे अबितहि लुखिया बाटपर आबि नागेसरक बाट देखए लगलीह। नदी दिशिसँ अबैत नागेसरपर नजरि पड़लनि। नजरि पड़ितहि बजलीह- "काल्हि घरदेखिया औताह आ अहाँ निचेनसँ टहलान मारै छी।"

नागेसर- "अच्छा चलू। बैसि कऽ सभ विचारि लैत छी।"

दुनू गोटे आंगन दिस बढ़ल। ओचाओन खरड़ैत पीहुआकेँ देखि नागेसर कहलखिन- "एखन तू ऐँठार चिक्कन करै छेँ की जा कऽ बाबरी छँटा अयमे? काजक अंगना छियौ तँ पहिने बाहरक काज समेटि लेमे की घरे-अंगनाक काज करै छेँ। जो, जल्दी जो।"

खरड़ा राखि पीहुआ बिदा भेल। लुखियाक नजरि बदललनि। जहिना चश्माक शीशाक रंग दुनियाँक रंगकेँ बदलि दै छै, तहिना लुखियाक नजरि नागेसरक बदलल रुपकेँ देखलक। बदलल रुप देखितहि सिनेह उमड़ि पड़लनि। सिनेहसँ बजलीह- 'एते लगक दिन किअए देलिऐ? चारि दिन आगूक दितियनि। भरिये दिनमे सभ काज सम्हारल हएत?"

लुखियाक समस्याकेँ हल्लुक बनबैत नागेसर कहलखिन- "आइ पहिल दिन घरदेखिया घर-बर देखए औत आकि खाइन-पीउन करै ले? पसिन्न हेतनि तँ खेता-पीताह, नहि तँ अपना घरक रस्ता धरताह। एखन तँ ओ बटोही बनि कऽ औताह। तँ हमरो ओते सुआगतक ओरियान करैक जरुरत नहि अछि। जखन पीहुआ पसिन

हेतनि, बिआह करब गछताह, तखन ने किछु, आकि समधीन बनैले बड़ अगुताइल छी? होइए जे कखैन समैधिक संग होरी खेलाइ?''

समधिक संग होरी खेलाएब सुनि लुखियाक मन उड़िऐ लगलनि। बजलीह- ''हम की कोनो समैधिये भरोसे फगुआ रखने छी, दिअर कोन दिनले रहत?''

लुखियाक मनसँ चिन्ता पड़ा गेलनि। मुस्की दैत बजलीह-'' बाटो-बटोही जँ दुआरपर औताह तँ एक लोटा पानियो नहि देबनि?''

नागेसर- ''से तँ देबे करबनि। यएह इज्जति तँ हमरा सभक बाप-दादाक देल अमोल धरोहर छी।''

खुशीसँ भसिआइत लुखिया कहलनि- ''पुरुषक थाह हम नहि पाएब।''

नागेसर- ''कनी कालमे बजार जाएब। जे सभ जरुरीक बस्तु अछि से सभ कीनि आनब। तइले एते माथा-पच्ची करैक कोन जरुरी। अतिथिक सुआगत मात्र नीक-निकुति खुऔनहि होइत ? आकि प्रेम-पूर्वक तुकपर खुऔने होइत। बैसैक लेल चद्दरि साफ केलहुँ ? सिरमो खोल खीचि लेब।''

''सिरमामे खोल कहाँ अछि ? ओहिना पुरना साड़ीक बनौने छी। ओहूले दूटा खोल किनने आएब।''

''बड़बढ़ियाँ।''

दोसर साँझ आंगनमे बैसि नागेसर पीहुआकेँ पुछलक- ''तोरा जे नाम पुछथुन्ह तँ की कहबुहुन?''

पीहुआ- ''से की हमरा नाम नइ बुझल अछि। बउओक, माइयोक आ गामोक नाम बुझल अछि।''

''ओते नै पुछै छियौ। अपने टा नाम बाज ?''

''पीहुआ''

''धुर बुड़िबक। पीहुआ नहि पुहुपलाल कहिहनु।''

''से हमर नाम पुहुपलाल कहाँ छी। पहिने सभ कहैत रहए आब तँ सभ पीहुए कहैत अछि। एहिना ने लोकक नाम बदली होइत रहै छै।''

मुँह बिजकबैत लुखिया कहलक- ''हँसी-चौलमे लोक तोरा पीहुआ कहै छौ आकि जनमौटी नाआँ छियौ।''

छठियार राति, दाइ-माइ पुहुपलाल नामकरण केलखिन। जखन ओ आठ-दस बर्खक भेल, तखन जाड़क मास बाधमे फानी लगबै लगल। गहींर खेत सभमे सिल्लियो आ पीहुओ आबि-आबि धान चभैत। जकरा ओ फानी लगा-लगा फँसबैत। अपनो खाइत आ बेचबो करैत। कछु दिनक बाद स्त्रीगण सभ पीहुआबला कहै लगलैक। फेर किछु दिनक पछाति भौजाइ सभ पीहुआ कहए लगलैक। मुदा तेकर एक्को मिसिया दुख ने पीहुएकेँ होइत आ ने पीहुआ माये-बापकेँ। तँ पुहुपलाल बदलि पीहुआ भऽ गेल।

मने-मन नागेसर बिचारलनि जे ई पीहुआ एना नहि सुधरत। अखन सिखाइयो देबै तैयो बजै कालमे बाजिये देत। से नहि तँ दोसर गरे काज लिअए पड़त। लुखियाकेँ

कहलखिन- ''मोटरी खोलि सभ समान मिला लिअ।''

दुनू दिओर-भौजाइ सभ समान मिलबए लगल। धोती देखि दुनूक बीच मतभेद भऽ गेलनि। कन्यागतक विदाइक लेल एक्के जोड़ धोती नागेसर कीनि कऽ अनने छलाह। किएक तँ बुझलनि जे बेटीबला धोती नहि पहिरैत अछि। मुदा से बात लुखिया बिसरि गेल छलीह। तँ बजलीह- ''दू गोटे औताह, तखन एक जोड़ धोतीसँ की हएत? कमसँ कम तँ जोड़ो कऽ कँ करबनि। जकरा बेसी रहै छैक ओ पाँचो टूक कपड़ा बिदाइ करैत अछि।''

सामंजस्य करैत नागेसर- ''हमरो सासुरक धोती रखले अछि। काज पड़त तँ दऽ देबनि।''

''गुलाबिये रंगमे रंगल अछि। एकरो गुलाबियेमे रंगि लेब। रंगो कीनि कऽ नेनहि आएल छी।''

दोसर दिन, सवेरे सात बजे कन्यागत दुनू बापुत पहुँचलाह। कन्यागतकँ अबैसँ पहिनहि नागेसर एकचारीमे बिछान बिछा, तैयार केने छलाह। नबका खोलक सिरमो सिरा दिशि देने छलाह। कन्यागतकँ अबितहि नागेसर ठेंगा-छत्ता रखि पएर धोएले लोटा बढ़ौलकनि। चाह-पान आनए लुखिया पछुआरे बाटे लफड़ल चौक दिशि बिदा भेलि। जाधरि दुनू बापुत डोमन हाथ-पाएर धोए कुशल-क्षेम करैत, बिछानपर बैसलाह ताधरि लुखियो चौक परसँ चाह-पान कीनि अनलक। नागेसरक दुनू आँखि दुनू दिस। तँ देखि लेलनि जे चाह आबि गेल। पीहुआकँ कहलनि- ''बौआ, चाह नेने आबह?'

पीहुआ- ''पानो।''

''पहिने चाह लाबह। पछाति पान अनिहह।''

पीहुआक बोली डोमन सुनि लेलनि। तँ नाम-गाम पुछैक जरुरते नहि रहलनि। दोहारा नमगर देह। मने-मन डोमन लड़िका पसन्द कऽ लेलनि। आँखिक इशारासँ डोमन बुचनकँ पुछलखिन। आँखिएक इशारासँ बुचन सेहो स्वीकृति दऽ देलकनि। दुनू बापूतक मुँहमे हँसी नाचि गेलनि। मुदा लगले डोमनक मनमे एकटा शंका पैसि गेलनि। शंका ई जे मरदा-मरदी परिवार नहि अछि तँ हो ने हो कोनो छोट-छीन बाधा ने बीचमे आबि भंगठा दिअए। चाह पीबि पान खा डोमन नागेसरकँ कहलखिन- ''समैध, जाधरि भानस होइत अछि ताधरि बाध दिशिसँ घुमि अबैले चलू। हँ, एकटा बात तँ कहबे ने केलौं, तीमन-तरकारी बेसी नै करब। सात-आठ दिनसँ लगातार माछ खेलहुँ, पेट गड़बड़ भऽ गेल अछि। गाममे रहितहुँ तँ मड़बज्झू भात आ केरा चाहे भांटाक सन्ना संगे खइतहुँ। मुदा से तँ ऐठाम नहि हएत। तँ दालि-भात एकटा तरकारी-सजमनि चाहे झिंगुनीक- बना लेब। तहूमे बेसी मसल्ला नै देबैक।''

बीड़ी-सलाइ गोलगलाक जेबीमे रखि नागेसर लुखियाकँ कहए आंगन गेलाह। ओना टाटक अढ़सँ लुखियो सुनि लेने छलीह। तँ जबाब दैले मन उबिआइत रहनि। अवसर पाबि लुखिया बजलीह- ''एते रास जे तीमन-तरकारीक ओरिआन केने छी से की हएत। अपने नै खेताह तँ आंगनवालीले मोटरी बान्हि देबनि।''

अपिआरीमे फँसैत माँछ जेकाँ लड़िकाक माएकेँ फँसैत देखि डोमन बजलाह- ''तइले की हेतैक, हिनको मोटरी बान्हि कन्हापर नेने जेबनि।''

आँखि दाबि नागेसर लुखियाक बोली रोकै चाहलनि। मुदा लुखिया मुँहक बात बरतुहार दिशि नहि बढ़ि नागेसरे दिशि खसलनि- ''बड़ बुधियार छथि। बुझब जे बेटाक बिआह केलहुँ तँ गामो-घर आ समधियो नीक भेटलाह। तँ जेना-तेना कुटमैती कइये लेब।''

लुखियाक बात सुनि नागेसरक मन हल्लुक भेलनि। लुखिया अपन भार दऽ बाधा हटौलक। नहि तँ बेर-बेर बाता-बाती होइत। समए पाबि डोमन जोरसँ बजलाह- ''समधीने लग नुड़िआइल रहब आकि चलबो करब?''

लुखियाक मन भीतरसँ चप-चप होइत। बजैक लेल लुस-फुस करैत। डोमनक बात सुनि बजलीह- ''हिनके टा समधीन लगड़गर छन्हि, आनकेँ कि किछु छैक ?''

मुस्की दैत नागेसर आंगनसँ निकलि बाध दिशि बिदा भेलाह। आँखि उठा-उठा डोमन गाम-घर देखैत जाइत। टोलसँ निकलि पछिम मुँहे एक पेड़िया धेलनि। गाछी टपि हाथक इशारासँ पच्छिम मुँहे देखबैत नागेसर कहलकनि- ''पछबारि भाग जे चतरलाहा गाछ देखै छिऐक ओएह गामक सीमा छी।''

दुनू बापुत देखि डोमन पुछलखिन- ''उत्तरबरिया सीमा ?''

ओँगरीसँ देखबैत नागेसर- ''ओ ढ़िमका जे देखै छिऐ, सएह छी।''

''दछिनबरिया।''

''तीन चारिटा जे छोटका गाछ एक ठाम देखै छिऐ ओ सीमेपर अछि। पीरारक गाछ छिऐक।''

बाधकेँ हियासि डोमन आँखिक इशारासँ बुचनकेँ देखलखिन। दुनू गोटे मने-मन अन्दाजलनि जे दू सए बीघासँ उपरेक बाध अछि। तहि बीच नागेसर बजलाह- ''बुझलहुँ, बाबूक अमलदारीमे तँ सम्मिलिते छल मुदा हमरा दुनू भाँइमे बँटबारा भऽ गेल। उत्तरसँ हमर छी आ दछिनसँ भातिजक।''

डोमन- ''खोपड़ी कतऽ बनौने छी?''

नागेसरकेँ पैछला घटना मन पड़लनि। ओँगरीसँ देखबैत कहए लगलखिन- ''ओहि बँसबाड़ि आ गाछीक बीच एकटा खाधि छैक। जहिमे बिसनारिक गाछ सभ छैक। भदवारिमे पानि भरि जाइत छैक। बाँसोक पात आ गाछो सबहक पात ओहिमे खसि-खसि सड़ैत अछि। बिसनारियोक गाछ सभ सरि जाइत छैक। जाहिसँ कारी खट-खट पानि भऽ जाइत छैक। ढ़ाकीक-ढ़ाकी मच्छर फड़ि जाइत अछि। ओहि खाधिमे भैयाकेँ कालाज्वरक मच्छर काटि लेलकनि। कतबो दवाइ-बिरो भेलनि, मुदा नहि ठहरलखिन।''

डोमन पुछलखिन- ''अहाँ सभकेँ सरकारी अस्पतालमे दवाइ नहि दइए?''

नागेसर कहलखिन- ''से जँ दैतैक तँ एत्ते लोक मरबै करैत। बीस आदमीसँ उपरे हमरा गाममे कालाजारसँ मरलहेँ। अस्पतालमे किछु छैक थोड़े, ओहिना ईंटाक घर टा ठाढ़ अछि। दवाइकेँ के कहए जे कुरसियो-टेबुल बेचि नेने अछि।''

बजैत-बजैत नागेसरक आँखि नोरा गेल। गमछासँ आँखि पोछि आगू बढ़ि गेला। तीनू गोटे खोपड़ी लग पहुँचलाह। बाधक बीचमे कट्ठा दुइएक परती, परतियेपर दुनू फरीकक खोपड़ियो आ पाँचटा अनेरुआ गाछो, दूटा साहोरक, दू-टा पितोझिया आ एकटा बज्र-केराइक। साहोरक गाछ सभसँ पुरान मुदा देखैमे सभसँ छोट। बज्र-केराइ सभसँ कम दिनक मुदा सभसँ नमहर। पितोझिया गाछक निच्चामे तीनू गोटे दुबिपर बैसि गप-सप्प करए लगलाह।

डोमन पुछलखिन- ''रखबाड़ि -राखी- कोना गिरहत सभ दैत अछि?''

नागेसर बजलाह- ''बीधामे पाँच धुर धानो आ गहूमो।''

''रब्बी, राइ माने दलिहन-तेलहन?''

''अंदाजेसँ देलक। अपनो सभ उखाड़ि दै छिऐ। जाहिसँ बोइनो भेल आ राखियो।''

दुनू बापूत डोमन मने-मन हिसाब जोड़ए लगलाह। अगर कट्ठामे एक क्वीन्टल उपजत तँ पच्चीस किलो बीघामे भेल। जँ से नहि पचासो किलोक कट्ठा हएत, तैयो साढ़े बारह किलो बीघा भेल। सए बीघासँ उपरेक बाध अछि। तहिसँ या तँ पच्चीस क्वीन्टल, नहि तँ साढ़े बारह क्वीन्टल राखी -धान- सालमे जरुर होइतै हेतनि। तेकर बाद गहूम भेल, मडुआ भेल, आरो-आरो दलिहन-तेलहन भेल। दुइये माइ-पूत कते खाएत? हमरो बेटीकेँ अन्नक दुख नहि हेतै। मुस्की दैत डोमन बेटा दिशि तकलक। बेटो बाप दिशि ताकि आँखियेसँ गप-सप्प कऽ लेलक। कनी काल चुप रहि डोमन नागेसरकेँ पुछलखिन- ''कथी-कथीक खेती बाधमे होइत अछि?''

नागेसर बजलाह- ''पान साल पहिने तक तँ अन्ने टाक खेती होइत छल। टो-टा कऽ सेरसो-तोड़ीक खेती। मुदा आब खेती बदलि रहल अछि।''

मुस्की दैत पुन: आगू बजलाह- ''की कहब, बुझू तँ राजा छी। दू सए बीघाकेँ अपन बपौती सम्पति बुझैत छी। दुनू सए बीघाक मालिक छी। एक बेर टाँहि दैत छलिऐक तँ जुआन-जुआन घसवहिनी सभ नाङरि सुटुका कऽ पड़ा जाइत छलि। मुदा आब से नहि करैत छी। खसल-पड़ल खेत, आड़ि पड़क घास कटैले ककरो मनाही नहि करैत छिऐ......।''

किछु मन पाड़ि फेर बजलाह- ''हँ तँ कहै छलौं जे जहि दिनसँ लोक बोरिंग गरौलक आ कोशियो नहरि एलैक तहि दिनसँ तँ बुझि पड़ैत अछि जे घरसँ बाध धरि लछमी सदिकाल नचितहि रहैत छथि। ककरो देखबै धानक बीआ पाड़ैत अछि तँ कियो रोपएले बीआ उखाड़ैत अछि। कियो कमठौन करैत अछि तँ कियो धान कटैत अछि, तँ कियो बोझ उघैत अछि। कियो दाउन करैत अछि, तँ कियो धान ओसबैत अछि, तँ कियो अगौँ रखैत अछि। कियो धान उसनियो करैत अछि तँ कियो पथार सुखबैत अछि। कियो मिलपर धान कुटबैत अछि तँ कियो चाउर फटकैत अछि। कते कहब।''

डोमन बजलाह- ''आनो-आनो चीजक खेती हुअए लागल होएत?''

नागेसर बजलाह- ‘‘ऐँह की कहब ! पचासो किस्मक तँ धानेक खेती हुअए लगल अछि। ओते धानक की नामो मन अछि। धानक संग-संग खाद-पानि दऽ कऽ गहूम, दलिहनक खेती सेहो होअए लगल अछि। एते दिन तँ सरिसोए-तोड़क खेती होइत छल। आब सूर्यमुखीक खेती सेहो होइत अछि। राशि-राशिक तीमन-तरकारी सेहो हुअए लगल अछि। बीघा दसेकमे पनरह-बीस गोटे नवका आमक कलम सेहो लगौलक अछि। ऐँह, की कहब, आन्ध्राक आम, मद्रासी आम सभ सेहो लोक लगौलकहें। अजीब-अजीब आमो सभ अछि। अइ बेर रोपू तँ पौरुकेँ सँ फड़ए लगत। जेहने देखैमे लहटगर लागत तेहने खाइयोमे।’’

डोमन पुछलखिन- ‘‘आमक ओगरबाहि कोना दैत अछि ?’’

नागेसर कहलखिन- ‘‘तीन आममे एक आम सरही आ चारि आममे एक आम कलमी। से जहि दिन तोड़ल जाएत तइ दिनक कहलौं, तहि बीच खसल-पड़ल आमक हिसाब नहि। तेहेन आम सभ अछि जे टुकलेसँ धिया-पूता खाए लगैत अछि। खटहो आमकेँ चून लगा कऽ मीठ बना लैत अछि। धियो-पूतो तते बुधियार भऽ गेल अछि जे अंगनेसँ चून नेने जाएत आ आममे लगा कऽ खाएत।’’

डोमन पुछलखिन- ‘‘आरो की सभ आमदनी बाधसँ अछि?’’

नागेसर बजलाह- ‘‘सभटा की मनो अछि। (ओंगरीसँ देखबैत) दछिनबारि भाग बीघा बीसेक गहींर खेत छल। चौरी। गोटे साल नहि, ने तँ पहिने सभ साल धान दहाइये जाइत छलैक। मुदा आब, जहियासँ पानिक सुविधा भेल, सभ गिरहत अपन-अपन खेतकेँ आरो खुनि कऽ पोखरि जेकाँ बना-बना माछ पोसए लगलहें। आन्ध्र प्रदेशक एकटा माछ छै ‘इलिस’। ऐँह, की कहब, (मुँह चटपटबैत) अपना सभ कहै छिऐ रौह, मुदा ओइ इलिस आगूमे किछु नहि। जहिना बढ़ैमे तहिना सुआद। हमरा की कोनो रोक अछि, हमहीं ओगड़ै छिऐ ने, जहिया मन भेल तहिया बन्सीमे दूटा मारि लेलहुँ। आ सभ खेलहुँ। सभसँ मुश्किल आब बनौनाइ भऽ गेल। काजेसँ ने छुट्टी। के ओते मेठैन कऽ कऽ खाएत। आब सुर्ज माथपर आबि गेल। चलू। भानसो भऽ गेल हएत। गरमे-गरम खाइमे नीक होइ छै।’’

तीनू गोटे बाधसँ घर दिसक रास्ता धेलनि। थोड़े आगू बढ़ल तँ बँसवारिमे एकटा चिड़ै बजैत सुनलनि। बाजबो अजीब ढ़ंगक। मुस्की दैत नागेसर डोमनकेँ पुछलखिन- ‘‘कहू तँ ई चिड़ै की बजैत अछि?’’

कने अकानि कऽ डोमन बजलाह- ‘‘ई तँ पान-बीड़ी सिगरेट बजैत अछि।’’

बात सुनि नागेसर ठहाका दऽ हँसल। कने काल हँसि बजलाह- ‘‘ई चिड़ै अहाँ गाम सभ दिशि नहि अछि। जहिया कोशीक बाढ़ि अबैत छलैक तहियेसँ ई चिड़ै हमरा गाममे अछि। ई बजैत अछि- बढ़मा, बिसुन, महेश।’’

विचारक भिन्नताक कारणे डोमन पुनः चिड़ैक बोली अकानए लगल। बुचन सेहो अकानए लगल। अपना बातमे मजबूती अनैक लेल नागेसर सेहो अकानए लगल। दुनू चुप। दुनू अपन-अपन दुविधामे। डोमन बुचनकेँ पुछलक- ‘‘बौआ, तूँ तँ इसकुलो देखने छहक, तोंही कहह?’’

मामूली सवालमे हारि मानब ककरा पसिन्न होइत। डोमनक मन विचारकेँ मथैत।

डोमनक बात सुनि बुचन बाजल- "बाबू, हमरा बुझि पड़ैत अछि जे 'तुलसी, सूर, कबीर' कहैत अछि।"

तीनूक तीन मत, तेँ विवादक प्रश्ने नहि, तीनू अपन-अपन रमझौआमे ओझड़ाएल। तेँ तीनू चुपचाप आगू-पाछू घर दिशि बिदा भेलाह।

घरपर अबितहि डोमन बजलाह- "लोटा नेने आउ। कनी डोल-डाल दिशिसँ भऽ अबैत छी।"

नागेसर आंगनसँ दू लोटा पानि आनि कऽ देलकनि। लोटामे पानि देखि बुचन बाजल- "बाबू, आगूमे कल-तल नै छैक?"

डोमन बजलाह- "एखन तूँ बच्चा छह, नहि बुझल छह?" कहि आगू मुँहे गाछी दिशि बिदाह भेलाह। गाछी पहुँचि एकटा सरही आमक गाछक निच्चाँमे दुनू बापूत बैसि विचार-विमर्श करए लगलाह।

बुचन- "बाबू, कुटुमैती करै जोकर परिवार अछि। समलाइके मे बिआह-सादी, दुश्मनी आ दोस्ती छजैत छैक। लड़िकाक बाप नहि छैक तँ की हेतै। गाम-घरमे लोक मइटुगरकेँ अधलाह बुझैत छैक।"

डोमन बुचनक बातो सुनैत आ मूड़ियो डोलबैत मुदा मने-मन परिवारक आमदनी आ ओहि आमदनीकेँ समटैक लूरि सोचैत रहथि। जहि हिसाबसँ आमदनीक जड़ि देखि रहल छी ओहि हिसाबसँ सम्हारैक लुरि नहि छैक। जँ दुनू एक सतहपर आबि जाए तँ परिवारकेँ आगू मुँहे ससरैमे बेसी समए नहि लगत। एतेटा बाध छैक। अलेल घास सभ दिन रहतै। बाध ओगड़ैमे की लगैत छैक? एक-दू बेर अइ भागसँ ओइ भाग घुमब मात्र छैक। अगर जँ अपनो काज ठाढ़ कऽ लिअए तँ बैसारियो नहि रहतैक आ आमदनियो बढ़ि जएतैक। हमरा बेटीकेँ एहि घर अएलासँ एकटा काजुल आ बुधियार समांग बढ़ि जेतै। जानकीकेँ सभ हिसाब-कनमा, अधपेइ, पौवा, असेरा, सेर, अढ़ैया, पसेरी, धार आ मन सँ लऽ कऽ बोरा-क्वीनटल धरि, जोड़ैक लूरि छै। तहिना कोड़ी -बीस वस्तु, सोरे- सोलह, सोरहा -सोलह सोरे, दर्जन बारह, ग्रुस-बारह दर्जन, जोड़ा -धानक आँटी, दस, गाही पाँच, गंडा चारि, जोड़ा दू, पल्ला- एक सभ बुझैत अछि। मनमे खुशी एलै। बाजल- "बौआ, ओना जानकी गिरहस्तीक काज सम्हारि दूटा गाइयोक सेवा कऽ लेत। मुदा तहिसँ दूधे टाक आमदनी बढ़त। जरुरत छैक खेतिओ बढ़बैक। तेँ नीक हएत जे एकटा गाए आ एकटा बड़द दऽ दिऐक। एकटा बड़द आ एकटा हरबाह भेने दू समांग अपन भऽ जेतै। जहिसँ बीघा दू बीघा खेतियो कऽ सकैत अछि।"

बुचन- "अपना खेत जे नहि छैक?"

बुचनक बात सुनि डोमन हँसए लगलाह। हँसैत बजलाह- "बौआ, समए एहन आबि गेल अछि जे खेतोबला सभ खेती छोड़ि नोकरियेक पाछु बौआ रहल अछि। जहिसँ खेती केनिहारक अभाव भऽ रहल छैक। गिरहस्तीक हाल बिगड़ि गेल छैक। जबकि जरुरत छैक खेतमे मेहनतिक। जे सभ किसान नहि बुझि रहलाह अछि।"

बुचन- “कोना बुझत?”

डोमन गंभीर होइत बजलाह- “बौआ खेतीमे बड़ बुद्धिक काज छै मुदा खेती दिन-दिन मूर्खेक हाथमे पड़ल जाइ छै, से सोचलहकहैँ?”

तर्क-वितर्क कऽ दुनू बापुत तँइ कऽ लेलक जे कुटमैती करबे करब। मुदा एकटा जटिल प्रश्न आबि कऽ आगूमे ठाढ़ भऽ गेलनि। ओ ई जे बिआह उट-पटाँग ढ़ंगसँ नहि होइ? रस्तासँ पाइक उपयोग होइ। गुन-धुन करैत दुनू बापूत घर दिशि बिदा भेलाह।

जाधरि डोमन पैखाना दिशिसँ अबैत ताधरि लुखिया चारि-पाँच बेर दौड़ि-दौड़ि आंगनसँ बान्हपर जा-जा देखलनि। मनमे उड़ी-बीड़ी जेना लगल रहनि। जे कुटमैतीमे कोनो तरहक गड़बड़-सड़बड़ नहि हुअए। नहि तँ लोक पीकी मारत। कहत जे मौगीक मुख्तिआरी छी ने। बिनु मरदक मौगी बेलगामक होइते अछि। कहलो गेल छै- “राँड़ मौगी साँढ़।” फेर मनमे उठलनि जे किछु होउ बिआह तँ हमरे बेटाक होएत। तँ ककरो ऑंगरी बतबैक रस्ता नहि रहए देबैक। जहिना बड़तुहार कहताह तहिना हमहूँ करब। जँ दुनू गोटेक मिलान रहत तँ किअए कोइ आँखि उठाओत। एते बात मनमे अबितहि बड़तुहारकेँ लुखिया अबैत देखलनि। बान्ह परसँ दौड़ले आंगन आबि हाँइ-हाँइ कऽ थारी साँठए लगलीह।

हाथ-पाएर धोइतहि नागेसर डोमनकेँ कहलकनि- “पहिने भोजने कऽ लिअ।”

आगू-आगू लोटा नेने नागेसर आ पाछु-पाछु दुनू बापुत डोमन आंगन ऐलाह। पीढ़ीपर बैसितहि नागेसर थारी आनि आगूमे देलकनि। आँखि घुमा कऽ देखि डोमन बजलाह- “समैध, समधीनियोकेँ अढ़मे बजा लिअनु। विआहक सभ गप पक्का-पक्की कइये लेब। बैसारपर जखने गप उठाएब आकि चारु दिससँ लोक आबि अन्टक-सन्ट गप चालि देत।”

आँखिक इशारासँ नागेसर भौजाइकेँ सोर पाड़ि बैसैले कहलक। तहि बीच डोमन कहलखिन- “समैध, समधीनकेँ पुछिअनु जे कोना बेटाक बिआह करतीह?”

नागेसरकेँ अगुआ लुखिया बजलीह- “अहाँ सभ मरदा-मरदी गप करु। हमरा कोनो चीजक लोभ नहि अछि। नीक मनुक्ख घर आबए, बस एतबे लोभ अछि।”

मने-मन नागेसर सोचैत जे हमर कतबो मोजर अछि, तइसँ की? कोनो की हमरा बेटा-बेटीक विआह हएत? तँ हम अनेरे मुँह दुरि किअए करब। बाजल- “समैध, अहाँ अपने मुँहसँ बजियौक जे कोना करब?”

भात-दालि सनैत डोमन बजलाह- “समैध, जहिना अहाँक भातिजक बिआह हएत तहिना तँ हमरो बेटीक हएत.....। लुखियाकेँ खुश करै दुआरे पुन: आगू बजलाह- “हमर बेटी साक्षात् लछमी छी। साल भरि की दसोसाल घुमि कऽ लड़की ताकब तँ ओहन नहि भेटत। तहूमे आब? आब तँ लोक मनुक्ख थोड़े घर अनैत अछि, अनैत अछि रुपैआ।”

नागेसर टाटक अढ़मे बैसलि भौज दिशि तकैत बाजल- “खर्च-बर्च करै लेल किछु तँ चाहबे करी....।”

नागेसरक बातकेँ कटैत लुखिया बजलीह- “नै ! हम ककरो बेटीकेँ पाइ लऽ कऽ अपना घर नै आनब।”

नागेसर भौजक गप्प सुनि चुप भऽ गेल।

मुस्की दैत लुखिया बजलीह- “जखन दुआरपर आबि बेटा मंगलनि तँ हम दऽ देलियनि। आब हमरा की अछि। दू कौर अन्न आ दू बीत कपड़ा टा चाही। घर तँ आब ओकरे सबहक -बेटे-पुतोहुक- हेतै।”

डोमन बजलाह- “समैध, पाँच गोटे जे बरिआती चलब, हुनकर सुआगत हम नीक जेकाँ करबनि। बड़-कनियाँकेँ, जे नव घर ठाढ़ करैक वस्तु अछि से तँ देबे करब। तेकर अतिरिक्ति एकटा बड़द आ एकटा लगहरि गाए सेहो देब।”

सबहक मुँहसँ हँसी निकलल। बिआहक दिन तँइ भऽ गेल। मुस्की दैत लुखिया बजलीह- “आब की हम कहबनि जे समधीनो हमरे दऽ दोथु।”

ठहाका दैत डोमन उत्तर देलकनि- “बाह-बाह, तब तँ दुनू रोटी चाउरेक।”

चारि बजे सुति-उठि चाह पीबि, पान खा डोमन नागेसरकेँ कहलखिन- “समैध, सभ बात तँ तइये भऽ गेल। आब चलब।”

दुनू जोड़ धोती नागेसर आंगनसँ आनि आगूमे रखि देलकनि। धोती देखि डोमन बजलाह- “समैध, कतबो गरीब छी तँ की मुदा इज्जति बचा कऽ रखने छी। बेटीक दुआरपर कोना धोती पहिरब?”

टाटक भुरकी देने लुखिया देखैत रहथि। डोमनक बात सुनि दोगसँ बाजलीह- “समैधकेँ कहिअनु जे जखन बेटी आओत तखन ने बेटीक घर हेतनि, ताबे तँ हमर छी कीने। हम दैत छिअनि।”

ठहाका दैत डोमन बजलाह- “जखन हमर बेटी एहि घर आओत तखन ने ओ समधीन हेतीह आकि अखने?”

तहि बीच पीहुआ, सभकेँ गोड़ लगलक। एक्कैस रुपैआ डोमन पीहुआ हाथमे देलखिन।

थोड़े दूर अरिआति नागेसर घुमैत बाजल- “समैध, आब बढ़िऔक। नवम् दिनक दिन भेल। अहाँ काजमे लगि जाउ आ हमहूँ लगि जाइ छी।”

डोमन दुनू बापुत बिदा भेलाह। आगू बेटीक बिआहक ओरिआओन रहनि किन्तु मनपर नचैत रहनि लुखियाक गप्प- ‘ककरो बेटीकेँ पाइ लऽ कऽ अपन घर नै आनब।’ देह सिहरि गेलनि बेटा दिश तकलनि। ओहो आब विआह जोगर भऽ गेल रहए।

पछताबा

इंजीनियरिंगक रिजल्ट निकलितहि रघुनाथ संगी-साथीक संग नोकरी करए अमेरिका जेबाक तैयारी कऽ नेने छल। सासुरसँ गाम आबि पिताकेँ कहलनि- ''बाबू, आइये रौतुका गाड़ी पकड़ि चलि जाएब। परसू दस बजे, सुभाषचन्द्र एयरपोर्टसँ जहाज फ्लाइ करत।''

जहिना पाकल आम तोड़ै लेल कियो गाछपर चढ़ैत अछि आ आम तोड़ैसँ पहिनहि खसि पड़ैत अछि, तहिना शिवनाथोकेँ भेलनि। अचंभित होइत कहलखिन- ''किए? तोरा जोकर काज अपना ऐठाम नहि छै?''

पिताक बात सुनि कनेकाल गुम्म भऽ रघुनाथ बाजल- ''ओहिठाम अधिक दरमाहा दैत अछि। संगहि अपना ऐठामक रुपैआसँ ओतुका रुपैइयो महग छैक।''

अमेरिकाक संबंधमे शिवनाथ किछु नहि जनैत खाली एतबे जनैत जे ओहो एकटा देश छी। किछु काल गुम्म रहि कहलखिन- ''तइसँ की? हम ओहि वंशक छी जे देशक गुलामी मेटबए लेल गोली खाए स्वतंत्र देशक उपहार-भार देलनि। तोरा सन-सन पढ़ल-लिखल जँ देशसँ चलि जाएत तँ तोहर सनक काज के करत, कोना हएत?''

पिताक बातकेँ अनसून करैत गोर लागि, बैग लऽ ओ चुपचाप विदा भऽ गेल। शिवनाथ दुनू परानीक नजरि ताधरि रघुनाथक पीठपर रहलनि जाधरि ओ गाछीक अढ़ नहि भऽ गेल। अढ़ होइतहि दुनूक मन एहि रुपे चूर-चूर भऽ गेलनि जहिना अएनापर पाथरक लोढ़ी खसलासँ होइत अछि। अखन धरि दुनूक मनमे पैघ-पैघ अरमान पैघ-पैघ सपना छलनि जे एकाएक फुटल बैलूनक हवा जेकाँ वायुमंडलमे मिलि गेलनि। बाढ़िक पानिमे डूबल खेतमे जहिना पानि सुखितहि नव-नव पौधाक अंकुर उगए लगैत अछि तहिना शिवनाथोक मनमे नव-नव विचार उगए लगलनि। अखन दुनियाँ भलेहीं गामे-घरक रुपमे किएक नहि बुझि पड़ैत हुअए मुदा बापो बेटाक दूरी हजारो कोस हटि रहल अछि। की हम सभ फेर गुलामीक रस्ता पकड़ि रहल छी आकि आजादीक रस्ता धऽ चलि रहल छी। एक दिशि मातृभूमिक लेल पिताक तियाग आ दोसर दिसि बेटाक भटकल रस्ता अछि। भलहीं बेटाक आशा हुअए मुदा एहनो लोक तँ छथि जनिका बेटा नहि छन्हि। मन पड़लनि पिताक ओ बात जे मृत्युसँ चौबीस घंटा पहिने मृत्यु-सय्यापर कहने रहथिन - ''बाउ, हमर खून वीरक खून छी जे भारतमाताकेँ चढ़ौलिएनि। भलेहीं अखन लड़ाइक दौड़ अछि मुदा ओ खून स्वतंत्रता लइएकेँ छोड़त। तोँ सभ स्वतंत्र देशक स्वतंत्र मनुष्य हेबह। तँ अपन देशकेँ परिवार बुझि सभकेँ भाए-बहीनि जेकाँ इमानदारीसँ सेवा करैत रहिहऽ। जाहिसँ हमर आत्मा अनबरत

प्रसन्न रहत। सेवाक मतलब खाली एतबे नहि होइत जे देशक सीमाक रक्षा करैत अछि बल्कि ईहो होइत जे माथपर ईंटा उघि सड़क बनबैत आ हर-कोदारिसँ अन्न उपजबैत अछि।''

पिताक बात मन पड़ितहि शिवनाथक हृदय तरल पानिसँ ठोस पाथर बनए लगलनि। नव-नव विचार मनमे जागए लगलनि। पत्नीक खसल मन देखि कहलखिन- ''अहाँ, एते सोगाएल किए छी?''

आँचरक खूँटसँ दुनू आँखिक नोर पोछि रुक्मिणी कपैत अबाजमे बजलीह- ''की सपना मनमे रहए आकि देखि रहल छी। जँ से बुझितिऐक तँ एत्ते देहकँ किए धौजनि करितहुँ। नढ़िया-कुकुड़ जेकाँ अनेर छोड़ि दैतिऐक।''

पत्नीक व्यथा सुनि शिवनाथक हृदय पसीज गेलनि। मुदा अपन व्यथाकेँ मनमे दबैत मुस्कुराइत कहलखिन- ''अखन धरिक जे जिनगी रहल ओ कर्तव्यनिष्ठ रहल। अपन कर्तव्य इमानदारीसँ निमाहलहुँ। सभकेँ अपना-अपना आशापर अपन जिनगी ठाढ़ कऽ जीबाक चाही। जहिना बरखाक एक-एक बुन्न रस्ता धए चलैत-चलैत अथाह समुद्रमे पहुँच जाइत अछि तहिना अपनो सभ अपन काजकेँ परिवारसँ आगू बढ़ा समाज रुपी समुद्रमे फेटि दी। बेटा अछि तँ बेटापर अपन भार देमए चाहैत छलहुँ मुदा जनिका अपना बेटा नहि छन्हि ओ ककरापर अपन भार देथिन। तँ अपनो सभ वएह बुझू! बाबूजी एते अरजि कऽ दऽ गेलथि जे इज्जतक संग हँसैत-खेलैत जिनगी जीबैत रहब।''

सन् १९४२क असहयोग आन्दोलनसँ सुनगति-सुनगति सौंसे देश पजरि गेल। जइमे मिथिलांचलोक योगदान ककरोसँ कम नहि अछि। दसकोसी लोकक मन एत्ते उत्साहित भऽ गेलनि जे चान-सूर्जमे आजादीक झंडा फहराइत देखथि। सुतली रातिमे ओछाइनपर सँ चहा कऽ उठि नारा लगबैत सड़कपर आबि जाइत छलाह। जे मिथिला याज्ञवल्क्य, गौतम, नारद सन-सन ऋषि पैदा केलक ओ पंचानन झा आ पुरन मंडल सन वीर अभिमन्यु सेहो पैदा केने अछि। दसकोसीक वीर सिपाही माथमे कफन बान्हि, लाठीमे झंडा फहरा झंझारपुर सर्कल, रेलवे स्टेशन आ पोस्ट आफिसमे आगि लगबैक संग-संग रेल-लाइन तौड़ै लेल सर्कलक मैदानमे एकत्रित भेलाह। अंग्रेज पलटनक केन्द्र सर्कल छलैक। आन्दोलनकारीकेँ एकत्रित होइत देखि ओहो सभ अपन बन्दूकमे गोली भरि-भरि तैयार भऽ गेल। आन्दोलनकारी भारत माताक नारा जगबैत आगू बढ़ल। अनधुन गोली पलटन सभ चलौलक। एक नहि अनेक गोली पंचानन आ पुरनक छातीमे लगलनि। दुनू गोटे नारा लगबैत दम तोड़ि देलनि। सिर्फ दुइये टा गोटेकेँ गोली नहि लागल छलनि, अनेको गोटे गोलीसँ घाएल भेलाह। ओहि घाएलमे शिवनाथक पिता देवनाथो छलाह। दहिना जाँघमे गोली लागल छलनि। गोली तँ जांघक माँस, चमराकेँ कटैत हड्डी तोड़ैत निकलि गेलनि। मुदा घाइल भऽ ओहो खसि पड़लाह। पितिऔत भाए हुनकर लटकल जांघक माँसकेँ तौनीसँ बान्हि, पीठपर उठा घरपर अनलकनि। चिकित्साक समुचित व्यवस्था नहि, ताहिपर गामे-गाम सिपाही दमन शुरु केलक। गामक-गाम आगि लगौलक। मर्द-औरतकेँ पकड़ि-पकड़ि बन्दूकक

कुन्दा आ पएरक बूटसँ मारि-मारि बेहोश केलकनि। ओछाइनपर पड़ल देवनाथक हृदयमे आगि धधकैत रहनि मुदा किछु करैक तँ शक्ति नहि रहि गेलनि। जीवन-मृत्युक बीच लटकल रहथि। तीसम दिन प्राण छूटि गेलनि।

दस बर्खक शिवनाथ १५ अगस्त १९४७ ई. कँ आजादीक समए पनरह बर्खक भऽ गेल। पतिक मुइने शिवनाथक माए राधाक मन टुटलनि नहि बल्कि आगिमे तपल सोना जेकाँ आरो चमकए लगलनि। पाकल आमक आंठी जेकाँ करेज आरो सक्कत भऽ गेलनि। गुलामीसँ मिझाइल दीपकँ आजादीक नव तेल-बत्ती भेटलैक, जाहिसँ नव-ज्योति प्रज्वलित भेल। अखन धरिक अव्यवस्थित परिवारकँ दुनू माए-बेटा मिलि सुढ़िअबए लगलथि, व्यवस्थित बनबए लगलथि। अढ़ाइ बीघा खेतकँ अपन दुनियाँ आ कर्मक्षेत्र बुझि दुनू माए-बेटा जी-जानसँ मेहनत करए लगलथि, जहिपर परिवार नीक नहाँति ठाढ़ भऽ गेलनि। ओना शिवनाथक बिआह बच्चेमे भऽ गेल छलैक मुदा दुरागमन पछुआएल रहैक। परिवारक बढ़ैत काज देखि बेटाक दुरागमन माए करा लेलनि।

देश आजाद होइतहि गामे-गाम स्कूल बनए लगल। ओना पढ़लो-लिखल लोक कम छलाह मुदा जतबे छलाह ओ ओहि रुपे विद्या-दानमे भीड़ि गेलाह, जाहिसँ सभ गाममे तँ नहि मुदा अधिकांश गाममे लोअर प्राइमरी स्कूल ठाढ़ भऽ गेल। कतौ-कतौ मिड़लो स्कूल आ हाइयो स्कूल बनल। कतौ-कतौ कओलेजो ठाढ़ भऽ गेल। अखन धरि जे स्कूल ठाढ़ भेल ओ सामाजिके स्तरपर, सरकारी स्तरपर बहुत कम बनल। स्कूल खोलैक पाछू लोकक मनमे धर्मस्थानक बुझब छलैक। गुरुओजी ओहने रहथि जे मात्र भोजनपर सेवा करैत रहथि। शनीचरा मात्र जीविकाक आधार छलनि। पाइ लऽ कऽ पढ़ाएब पाप बुझल जाइत छलैक। ओना मिड़ल स्कूल, हाइ स्कूल आ कओलेजमे महिनवारी फीस लगैत छल, जे संस्थागत सहयोग छल। स्कूल-कओलेज खुजने विद्याक ज्योति प्रज्वलित भेल मुदा अंडी तेलमे जरैत डिबियाक इजोत जेकाँ, जखनकि जरुरी अछि हजार वोल्ट बौलक इजोत जेकाँ। ओना ठाम-ठीम संस्कृत विद्यालय सेहो अछि, मुदा.....।

दुरागमनक तीन साल बाद शिवनाथकँ बेटा भेलनि। रघुनाथक जन्म होइतहि राधाक हृदय खुशीसँ सूप सन भऽ गेलनि। मनमे नचए लगलनि बाँसक ओ बीट जाहिमे दिनानुदिन बेसी बाँसोक जन्म होइत आ नमगर, मोटगर सुन्दर-सुडौलौ होइत। मनक खुशीसँ दुनियाँ फुलवारी सदृश्य बुझि पड़ए लगलनि। बाधक-बाध धानक फूल, गाछीक-गाछी आमक मंजर, जामुन, लताम इत्यादिक फूलसँ सजल ई दुनियाँ सोहनगर लगए लगलनि। मुदा जहिना आसिन मास अकाशकँ करिया मेघ झँपने रहैत अछि आ कतौ-कतौ मेघक फाटसँ सूर्यक इजोत निकलैत अछि आ सेहो गाछे-बिरीछपर अटकि जाइत अछि, तहिना। धरती-जमीन ओहिनाक ओहिना अन्हार रहि जाइत अछि।

छबे मासक रघुनाथकँ राधा अपन मुँह चमका-चमका दा-दा-दा सिखबए लगलीह। दादामे देवनाथक ओ रुप देखैत छलीह जे माथपर वीरक मुरेठा बान्हि, हरोथिया लाठीमे लाल झंडा टांगि, हँसैत गोली खेने रहथि।

चारि बर्ख टपितहि शिवनाथ रघुनाथक नाओ गामक स्कूलमे लिखा देलखिन साले-साल टपैत रघुनाथ गामक स्कूल टपि गेल। मिड़ल स्कूल टपि साइंस राखि रघुनाथ केजरीवाल हाइ स्कूल झंझारपुरमे नाओ लिखौलक। जहिना विज्ञान विषए पढ़ैमे नीक लगै तहिना अंग्रेजिओ। जाहिसँ ठाकुर बाबू आ लत्ती बाबू बेसी मानथिन। चारि बर्खक बाद प्रथम श्रेणीमे मेट्रिक पास केलक। बाढ़ि-रौदिक द्वारे उपजो-बाड़ी नीक नहि होइ जाहिसँ परिवारो लड़खड़ाइते चलैत। बाहर जा कऽ आगू पढ़ब असंभव जेकाँ रहैक। मुदा संजोग नीक रहलैक जे जनतो कओलेजमे साइंसक पढ़ाइ शुरु भेलैक। रघुनाथो कओलेजमे नाओ लिखौलक।

रघुनाथकेँ कओलेजमे नाओ लिखेलाक सालभरि उत्तर राधा -दादी- मरि गेलीह। पिताक श्राद्ध तँ शिवनाथ केनहि नहि रहथि मुदा माएक श्राद्ध नीक जेकाँ केलनि। जाहिसँ पाँच कट्ठा खेतो बिका गेलनि। ताहि लेल मन मलिन नहि भेलनि। किएक तँ भोजमे खूब जस भेलनि। दू सालक बाद रघुनाथ फस्ट डिविजनसँ आइ.एस.सी. पास केलक। सत्तरि प्रतिशतसँ उपरे नम्बर रहैक। आइ.एस.सी.क रिजल्ट सुनि शिवनाथकेँ बेटाक पढ़बैक उत्साह बढ़लनि। खेत बेचब अधलाह नहि बुझेलनि। मनमे अएलनि जे रघुनाथ पढ़ि कऽ नोकरी करत आकि खेती करत। तखन खेतक जरुरते की रहतैक। संगहि हमहूँ समाजकेँ एकटा सक्षम मनुष्य देबैक।

इंजीनियरिंग, डॉक्टरी पढ़बैमे केहेन खर्च होइत छैक से तँ नीक जेकाँ बुझथि नहि। मनमे होइन जे पाँच-दस कट्ठा जमीन बेचि बेटाकेँ पढ़ा देबैक। मनमे उत्साह रहबे करनि तँ महग बुझि घरारियेमे सँ दू कट्ठा बेचि इंजीनियरिंग कओलेजमे बेटाक नाओ लिखा देलनि। नाओ लिखौलाक डेढ़ बर्ख बीतैत-बीतैत अदहा जमीन बिका गेलनि। आगूक अढ़ाइ बर्ख बाकी देखि चिन्ता घेरए लगलनि। मन मानि गेलनि जे सभ खेत बेचनहुँ पार नहि लागत। सोचैत-बिचारैत तँइ केलनि जे पढ़ैक खर्चपर रघुनाथक बिआह करा देबै। बिआह भेनहुँ ओकरा पढ़ैमे बाधा थोड़े हेतैक, पाँच बर्खक बादे दुरागमन कराएब। समस्याक समाधान होइत देखि मनमे खुशी अएलनि। फेर मोनमे उठलनि जे समयो बदलि रहल अछि। पहिने माए-बाप बेटा-बेटीक बिआहकेँ अपन कर्तव्य बुझैत छलाह तँ पुछब जरुरी नहि बुझैत छलाह। मुदा आब पूछब जरुरी भऽ गेल अछि। परिस्थिति देखि रघुनाथो बिआह करब मानि लेलक मुदा शर्त एकटा लगौलकनि जे लड़की रंग-रुपमे सुन्दर हुअए। जँ गुणवानक शर्त रहितनि तहन तँ ओझरा जएतथि। मुदा से नहि भेलनि। बिआहक चर्चा शिवनाथ चला देलखिन।

इंजीनियर वर तँ कथकियाक ढबाहि लागि गेलनि। मुदा कोनो गाम अधलाह बुझि पड़नि तँ कोनो परिवारक कुल-गोत्र। कतहु लड़की दब तँ कतौ उमरगर लड़की भाँज लगनि। होइत-हबाइत एकठाम कथा पटि गेलनि। गाम तँ नीक नहि मुदा लड़कीयो गोर आ पढ़ैक खर्चो गछि लेलकनि। विआह भऽ गेलैक। विआहक बाद दुनू समधि बिचारि लेलनि जे सालो भरि जे भार-दौरक फेरीमे पड़ब से नीक नहि। तँ भार-दौरक बेबहार छोड़िए दियौक। दुनू गोटे सएह केलनि।

इंजीनियरिंगक अंतिम परीक्षा दऽ रघुनाथ सभ सामान लऽ सासुर आबि गेल। ओना दुरागमन बाकिये मुदा सासुर तँ सासुरे छी, तँ चलि आएल। रिजल्ट निकलैमे तीन मास लागत। काजो तँ अखन किछु नहिए अछि, तँ निश्चिन्तसँ सासुरमे रहैक विचार रघुनाथ कऽ लेलक। दसे दिनक बाद विदेशमे इंजीनियरक भेकेन्सी खूब भेलैक। सभसँ बेसी अमेरिकामे भेलैक। नव टेकनोलौजी अएने नव युगक आगमन भेल। नव मशीन नव इंजीनियरकेँ जन्म देलक। मुदा पुरना तकनीको आ इंजीनियरो, अछैते औरदे, फाँसीपर लटकए लगलाह। जहिना गामक-गाम हैजासँ मरैत अछि तहिना इंजीनियरक जमात पटपटाए लगलाह। मुदा दवाइक करखन्ने नहि जे दवाइ बनाओत।

परीक्षाक पेपर रघुनाथक नीक भेल तँ फेल करैक अन्देशे नहि रहैक। हाइये स्कूलसँ अमेरिकाक उन्नतिक, सुख-मौजक संबंधमे किताबो-पत्रिकामे पढ़ने आ लोकोक मुँहे सुनने रहए। तँ मनमे गुदगुदी लगैत रहै। ई भिन्न बात जे आठ मासमे अस्सीटा बैंक अमेरिकामे दिवालिया भेल।

रघुनाथ फस्ट डिवीजनसँ पास केलक। एक तँ फस्ट डिवीजन रिजल्ट, ताहिपर अमेरिकाक नौकरी। खुशीसँ रघुनाथक मन उड़िया गेलै। आवेदन केलाक आठे दिन पछाति चिट्ठी भेटलैक। स्त्रीक गहना बेचि ओ दुनू परानीक टिकट बनबौलक। ससुर पढ़ै धरिक खर्चा गछने रहनि तँ टिकटक खर्च देसँ इन्कार केलकनि।

मिशिगन राज्यक राजधानीक शहर लानसिंग। ठंढ़ इलाका। ने अपना सभ जेकाँ छह ऋतुक मौसम बनैत आ ने ओकर हास-परिहास होइत। ने रंग-बिरंगक गाछ-बिरीछ अपना सभ जेकाँ होइत। लानसिंगक सत्तरह तल्लाक छोट-छोट तीन कोठरीक आंगन। जहिमे ने सभ दिन सूर्यक रोशनी अबैत अछि आ ने भोरे कौआ आबि ओसारपर बैसि सारि-सरहोजिक समाचार सुनबैत अछि। रहैत-रहैत दुनू परानी रघुनाथकेँ पनरह बर्ख बीति गेलनि। जवानीक सभ सपना मने-मन गुमसड़ि रहल छलनि।

रघुनाथकेँ अमेरिका गेने शिवनाथक जिनगीक गाछ मौलायल नहि, चतरि कऽ पाखरिक गाछ जेकाँ_झमटगर भऽ गेलनि। दुनू बेकतियोक विचार सुधरलनि। वंशगत संबंध क्षीण होइत-होइत सुखि गेलनि, सामाजिक संबंध मोटा कऽ जुआएल गाछक सील जेकाँ बनि गेलनि। जहिना कोनो समांगकेँ मुइलापर परिवारक लोक आस्ते-आस्ते बिसरि जाइत अछि, तहिना रघुनाथोकेँ दुनू प्राणी शिवनाथ सोलहन्नी बिसरि गेलाह। साल भरिक छाया आ सैएक-सए बरिसक बरखी करैक खगते नहि रहलनि। वंश अंत हएत सदः आँखिसँ शिवनाथ देखैत छलाह। स्वतंत्र देशक गुलाम बुद्धि । कोना नहि बिसरितथि? ने कहियो एक्कोटा पत्र लिखि मन राखए चाहलनि आ ने कोनो मनोरथ मनमे संयोगि कऽ रखने रहथि। पढ़ल-लिखल तँ शिवनाथ नहि मुदा 'हरिवंश पुराण'क कथा, गप-सप्पक क्रममे बेसी काल दोसराक मुँहे सुनैत छलाह।

स्वतंत्रताक उपरान्त विकासपुरक लोकोक विचार सुधरलनि। कोना नहि सुधरितनि? बूढ़-बच्चा छोड़ि गामक सभ लाठी-झंडा लऽ झंझारपुर सर्कल आगि लगबए जे गेल रहथि। आँखिसँ सभ किछु देखने रहथि। ओना हजार बीघा रकबाक गाम

विकासपुर, जाहिमे साढ़े चारि सए परिवार हँसी-खुशीसँ कताक पुस्तसँ एकठाम रहैत आएल छलाह। स्वतंत्राक पूर्व मलिकाना -जमीनदारक- गाम रहए। मालगुजारीक लेन-देनमे सबहक जमीन निलाम भऽ जमीनदारक हाथमे चलि गेल छलैक। कियो अपन खेतक दखल तँ हुनका नहि देलकनि मुदा बटेदार बनि उपजा बाँटि-बाँटि दिअए लगलनि। जागल गामक लोक देखि जतबे-तेतबे दाम लए मालिक खेत घुमा देलकनि। अपन खेतकेँ स्थायी पूँजी बुझि श्रमक पूँजी जोड़ि जिनगीकेँ ठाढ़ करए लगलथि। बाढ़ि-रौदीक प्रकोप सालो-साल होइतहि रहैत छलैक मुदा विचार आ कर्म बदलने ओहो अभिशाप नहि वरदान बनि गेलैक। बाढ़ि देखि माथपर हाथ लऽ नहि बैसि, ओकर प्रतिकार करैक रस्ता अपनौलनि। तहिना रौदियोक प्रति केलनि। जाहिसँ बाढ़ि-रौदीसँ बचैक उपाए कऽ लेलनि। सबहक एहन धारणा बनि गेलनि। जे बाढ़िक उपद्रव मात्र साओनसँ कातिक चारि मास होइत अछि बाकी बारह मासक सालमे आठ मास तँ बचैत अछि। जे आठ मास जमि कऽ मेहनत कएल जाए तँ बारहो मास हँसी-खुशीसँ गुजर चलि सकैत अछि। ततबे नहि, पानियो तँ आगि नहि छी जे सभ किछुकेँ जरा देत। पानियो तँ उत्पादित पूँजी छी, तँ जरुरत अछि ओकर उपयोग करैक। तहिना रौदियोक संबंधमे धारणा बनौने रहथि। खेतमे रंग-बिरंगक अन्न, फल, तरकारी अछि। ने सभ अन्नेक लेल एक रंग पानिक जरुरत होइत अछि आ ने फले-तरकारीक लेल। अधिक वर्षा भेने अधिक पनिसहू फसल होइत अछि आ कम वर्षा भेने कम पनिसहू हएत। ताहिपर थोड़ेक सुविधा सरकारो देलक। नब्बे प्रतिशत अनुदानमे बोरिंग आ पचास प्रतिशत अनुदानमे पम्पसेट देलक। जाहिसँ पर्याप्त बोरिंग-पम्पसेट गाममे भऽ गेलैक। किसानक हाथमे पानि चलि आएल। समाजक किसानक कान्हमे कान्ह मिला शिवनाथो चलए लगलाह। कम खेत रहितहुँ हुनका अन्न-पानि उगरिये जाइत छन्हि।

छह बजे भोरे रघुनाथ धीपल-सराएल पानि मिला अधा-छिधा नहा, कपड़ा पहीरि, चाह-बिस्कुट खा ड्यूटी चलि जाथि। असकरे श्यामा डेरामे रहि जाइत छलीह। ने अंग्रेजी भाषाक बोध छन्हि जे दोकानो-दौरीक काज कऽ सकितथि आ दोसरोसँ गप-सप्प करैत समए बितबितथि। ओना बगलेक फ्लेटमे आरो-ओरो भारतीय -इंडियन- सभ रहैत अछि। मुदा ओहो कियो केरलक तँ कियो मद्रासक छथि। भाषाक दूरी देखि श्यामा मने-मन सोचए लगलीह जे मनुष्यसँ नीक पशु होइत अछि जे अपन स्वभावसँ एक-दोसरासँ मेलो रखैत अछि। मनुक्ख तँ मनुक्खे छी जे बोलेसँ राजा बनि जाइत अछि। जहिना पिजराक सुग्गा अकासमे उड़ैत सुग्गा देखि कनैत अछि तहिना कोठरीमे बैसलि श्यामा मने-मन कुही होइत छलीह। मनमे होइत छलनि कोन जनमक पाप कएल अछि जे एहन गति भऽ गेल अछि। नैहरसँ सासुर धरिक सभ किछु हेरा गेल।

भिनसरे डेरासँ निकलि रघुनाथ कार्यालय पहुँचि जाइत छथि। कार्यालयेमे खाइ-पीबैक व्यवस्था सेहो छैक। मशीनेक संग-संग रघुनाथ बारह घंटा बितबैत छथि। बुद्धिसँ लऽ कऽ हाथ धरि मशीनेक संग भरि दिन रहैत-रहैत मशीन बनि गेलनि। संवेदनशून्य मनुष्य। जाहिमे दया, श्रद्धा, प्रेमक कतौ जगह नहि। मुदा आइ रघुनाथकेँ कार्यालय पहुँचतहि मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेलनि। काजक दिसि एको-मिसिया ध्याने

नहि जाइत छलनि। छुट्टीक दरखास्त दऽ कार्यालयसँ डेरा बिदा भेलाह। डेरा आबि, देहक कपड़ा आ जुत्ता बिनु खोलनहि पलंगपर, चारु नाल चीत भऽ ओँघरा गेला। जहिना जेठ मासक तबल धरतीपर बिहरिया बरखाक बुन्न खसितहि गरमी-सरदीक बीच घनघोर लड़ाइ शुरु भऽ जाइत अछि तहिना रघुनाथक मनमे वैचारिक संघर्ष हुअए लगलनि। एहन जोर वैचारिक बिहारि मनमे उठि गेलनि जे बुद्धि चहकए लगलनि। चहकैत बुद्धिसँ अनायास निकलए लगलनि- "हमरासँ सइओ गुना ओ नीक छथि जे अपना माथपर पानिक घैल उठा मातृभूमिक फुलवारीक फूलक गाछ सींचि रहल छथि। अपन माए-बाप, समाजक संग जिनगी बिता रहल छथि। आइ जे दुनियाँक रुप-रेखा बनि गेल अछि ओ किछु गनल-गूथल लोकक बनि गेल अछि। जिनगीक अंतिम पड़ावमे पहुँचि आइ बुझि रहल छी जे ने हमरा अपन परिवार चिन्हैक बुद्धि भेल आ ने गाम-समाजक। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर चुबि गालपर होइत पलंगपर खसए लगलनि।

शिवनाथ हँसैत ओछाइनपर सँ उठि पत्नीकेँ सोर केलखिन- "कत्तऽ छी, कने एम्हर आउ?"

मुस्की दैत लग आबि रुक्मिणी बजलीह- "भोरे-भोरे की रखने छी जे सोर पाड़लहुँ।"

"मनमे आबि रहल अछि जे अपन दुनू प्राणीक श्राद्ध कइये लइतहुँ। जँ हम पहिने मरि जाएब तँ अहाँक श्राद्ध हएत की नहि। नहि जँ पहिने अहीं मरि जाएब तँ हमर श्राद्ध हएत की नहि।"

'अखन हम थोड़े मरैबाली भेलहुँहेँ, जे मरब।"

"अपन बिआह बिसरि गेलिऐक? जखन अहाँ छह बर्खक रही आ हम सात बर्खक रही तहिये ने बिआह भेल रहए। मन अछि आकि नहि जे खरहीसँ नापि कऽ जोड़ा लगौल गेल रहए।"

किछु काल गुम्म रहि रुक्मिणी बजलीह- "अपन बिआह-दुरागमन आ माए-बाप जँ लोक बिसरि जाएत तँ ओहो कोनो लोके छी।"

मुस्की दैत शिवनाथ कहलखिन- "हमरा आँखिमे अहाँ वएह छी जे दुरागमन दिन झाँपल पालकीमे बैसि नैहरसँ सासुर आएल रही। अहीं कहू जे हमरा किए ने अहाँक चूड़ीक खनखनीक अबाजमे स्वर लहरी आ माथक सेन्नुरमे जिनगीक मधुर फल देखि पड़त। पचहत्तरि पार कऽ अस्सीक बर्खक बीच दुनू गोटे पहुँच चुकल छी तँ खुशी अछि। आँखिक सोझमे देखैत छी जे विआहक पाँचे दिनक बाद चूड़ियो फूटि जाइत छैक आ माथो धुआ जाइत छैक। ताहि ठाम हम-अहाँ भाग्यशाली छी की नहि?"

पतिक बात सुनि रुक्मिणी मुस्कुराइत पतिक आँखिमे अपन आँखि गाड़ि पाछुसँ आगू धरिक जिनगी देखए लगलीह।

डाक्टर हमन्त

सभ दिन चारि बजे उठैबला डॉक्टर हेमन्त आइ छअ बजे उठल। अबेरे कऽ नीन टुटलनि। एना किअए भेलनि? एना अइ दुआरे भेलनि जे आन दिन परिवारसँ लऽ कऽ अस्पताल धरिक चिन्ता दबने रहैत छलनि। तँ कहियो भरि-भरि राति जगले रहि जाथि तँ कहियो-कहियो लगले-लगले निन्न टुटि जाइन। कोनो-कोनो राति अनहोनी-अनहोनी सपना देखि चहा-चहा कऽ उठैत तँ कोनो-कोनो राति पत्नीसँ झगड़ैत रहि जाइत। छअ बजे नीन टुटिते हेमन्त घड़ी देखलनि। मुदा अबेरो कऽ निन्न टुटने मनमे एक्को मिसिया चिन्ता नहि। मन हल्लुक, एकदम फुहराम। जना मनमे चिन्ताक दरस नहि। आन दिन ओछाइनेपर ढ़ेरो चिन्ता घेरि लेनि। अनेको समस्या, अनेको उलझन मनकेँ गछारि देनि। केसक की हाल अछि, बेटाकेँ नोकरी हएत की नहि। क्लीनिकमे कप्पाउण्डरक चलैत रोगी पतरा रहल अछि। चोट्टा सभ दारु पीबि-पीबि अन्ट-सन्ट करैत रहैत अछि आ पाइयेक भाँजमे पड़ल रहैत अछि। जाहिसँ मुँह-दुबर रोगी सबहक कुभेला होइ छै। अस्पतालोसँ बेर-बेर सूचना भेटैत अछि जे ड्यूटीमे लापरवाही करै छिऐ। बातो सत्य छै मुदा की करब? केस छोड़ि देब तँ पिताक अरजल सम्पत्ति बहि जाएत। क्लीनिकमे कम्पाउण्डर सभकेँ जँ किछु कहबै तँ क्लीनिके बन्न भऽ जाएत। जइसँ जेहो आमदनी अछि सेहो चलि जाएत। पुरान कम्पाउण्डर सभ अछि। सभ दिन छोट भाए जेकाँ मानैत एलिऐ तेकरा किछु कहबै सेहो उचित नहि। मुदा हमही टा तँ डॉक्टर नहि छी, बहुतो छथि। रोगीकेँ की, जैठाम नीक सुविधा हेतइ तइ ठाम जाएत। ओझड़ाएल जिनगी हेमन्तक। तँ सोझ-साझ बिचार मनमे अबिते नहि। मुदा आइ अबेर कऽ उठनहुँ मनमे कोनो ओझरी नहि। किएक तँ काल्हिये कोर्टमे लिखि कऽ दऽ देलखिन जे हमरा पिताक सम्पतिसँ कोनो मतलब नहि अछि, तँ केससँ अलग कएल जाए। दोसर बेटोकेँ नोकरी भऽ गेलनि जे ज्वाइन करै काल्हिये माए आ स्त्रीक संग गेल। पिताक देल सम्पतिक लड़ाइमे अपनो बीस बर्खक कमाइ गेल रहनि। मुदा प्राप्तिक नामपर जान बचा लड़ाइसँ अलग भेलाह। हेमन्तक मनमे उठलनि जे जहिना पिताक सम्पतिमे किछु नहि प्राप्त भेल तहिना तँ रमेशोकेँ हमरा अरजल सम्पतिमे नहि हेतै। मुदा हमरा आ रमेशमे अन्तर अछि। हम तीन भाइ छी, जहिक बीच विवाद भेल मुदा रमेश तँ असकरे अछि। ओना हेमन्तक मनक चिन्ता काल्हिये समाप्त भऽ गेल रहनि मुदा काजक व्यस्तता मनकेँ असथिर हुअए नहि देलकनि। एक्के बेर आठ बजे रातिमे असथिर भेलाह। तेकर बाद पर-पखाना करैत, हाथ-पाएर धोइत, खाइत नअ बजि गेलनि।

भरि दिनक झमारल तँ ओछाइनपर पहुँचते नीन अबए लगलनि। रेडियो खोलि समाचार सुनए चाहलनि, सेहो नहि भेलनि। रेडियो बजिते अपने सुति रहलाह।

नीन टुटिते डॉक्टर हेमन्तकेँ चाहक तृष्णा एलनि। मुदा घरमे कियो नहि। असकरे। नोकर अइ दुआरे नहि रखने जे काल्हि धरि पत्नी, बेटा-पुतोहू सभ रहनि। जे सभ घरक काज सम्हारैत। ओना चाहक सभ समचा घरेमे मुदा बनौनिहारे नहि। बिछान परसँ उठि नित्य-कर्म केलनि। मनमे एलनि जे चाह पीब। मुदा चाह आओत कतऽ सँ। से नञि तँ पहिने दाढ़िये बना लै छी आ क्लीनिक जाए लगब तँ रस्तेमे चाह पीबि लेब। मुदा भोरे-भोर चाहक दोकानपर तँ ओ जाइत, जकरा घर-परिवार नञि रहै छै। हमरा तँ सभ कुछ अछि। ओह, से नञि तँ अपने चाह बना लेब। चाह बना, कुरसीपर बैसि चाह पीबए लगलाह। फाटक परसँ आवाज आएल- 'डॉक्टर सहाएब, डॉक्टर सहाएब।'

टेबुलपर कप रखि, फाटक दिशि बढ़ैत डॉ. हेमन्त कहलखिन- 'हँ, अबै छी।'

फाटकक बाहर डाकिया कन्हामे झोरा लटकौने हाथमे दूटा लिफाफ आ रसीद नेने ठाढ़। डाकियाकेँ देखि मुस्की दैत हेमन्त पुछलखिन- 'भोरे-भोर कोन शुभ-सन्देश अनलहुँहेँ?'

मुदा डाकिया किछु बाजल नहि। खाँखी शर्टक उपरका जेबीसँ पेन निकालि, रसीदो आ पेनो बढ़ा देलकनि। दुनू रसीदपर हस्ताक्षर कऽ दुनू लिफाफ नेने फेर कुरसीपर बैसि चाहक चुस्की लेलक। एकटा लिफाफकेँ टेबुलपर रखि, दोसरकेँ खोलि पढ़ए लगलाह। सरकारी पत्रमे लिखल- 'पत्र देखितहि डेरा छोड़ि दिअ। बाढ़िसँ बहुत अधिक जान-मालक नोकसान भेल अछि, तँ आइये लछमीपुर पहुँच जएबाक अछि। तहिमे जँ कोनो तरहक आनाकानी करब तँ पुलिसक हाथे पठाओल जाएब। एक कॉपी पुलिसोक थानामे भेज देल गेल अछि।'

पत्र पढ़ितहि हेमन्तकेँ ठकमूड़ी लगि गेलनि। मने-मन सोचए लगलाह जे घरमे असकरे छी। कोना छोड़ि कऽ जाएब। समए-साल तेहेन भऽ गेल अछि जे दिनो-देखार डकैती होइत अछि। कतौ डकैती तँ कतौ चोइर, कतौ अपहरण तँ कतौ हत्या सदिखन होइते रहैए। एहना स्थितिमे घर छोड़ब उचित हएत। मुदा जखन नोकरी करै छी तँ आदेश मानै पड़त। जँ से नहि मानब तँ जहिना बीस बर्खक कमाइ कोट-कचहरीक ईंटा गनैमे गेल तहिना जे पाँच बरख नोकरी बचल अछि ओहो ससपेंड, डिस्चार्जमे जाएत। कहियो जिनगीमे चैन नहि। घोर-घोर मन होइत जाइत। चाहो सरा कऽ पानि भऽ गेल। गुन-धुन करैत दोसर पत्र खोललनि। पत्रमे लिखल- 'डॉक्टर हेमन्त। काल्हि चारि बजे, पछबरिया पोखरिक पछबरिया महारमे जे पीपरक गाछ अछि, ओहि गाछ लग पहुँचि हमरा आदमीकेँ दू लाख रुपैया दऽ देबै। नञि तँ परसू एहि दुनियाकेँ नहि देखि सकब।'

पत्र पढ़िते केराक भालरि जेकाँ हेमन्तक करेज डोलए लगलनि। सौँसे देहसँ पसीना निकलै लगलनि। थरथराइत हाथसँ पत्र खसि पड़लनि। मनक बिचार विवेक दिशि बढ़ए लगलनि। जहिना कियो सघन बनमे पहुँचि जाइत आ एक दिशि बाघ-

सिंहक गर्जन सुनैत तँ दोसर दिशि सुरुजक रोशनी कम भेने अन्हार बढ़ैत जाइत, तहिना हेमन्तकेँ हुअए लगलनि। खाली मन छटपटा गेलनि। की करब, की नै करब, बुझबे ने करथि। जहिना भोथहा कोदारिसँ सक्कत माटि नहि खुनाइत तहिना हेमन्तोक विचार समस्याकेँ समाधान नहि कऽ पबैत। रस्तेमे विलीन भऽ जाइत। कियो दोसर नहि! जे मनक बात सुनैत, जाहिसँ मन हल्लुक होइतनि। तहि काल एकटा अस्पतालक कम्पाउण्डर रिक्शासँ आबि गेटपर पहुँचि बाजल- 'डॉक्टर सहाएब....।

कम्पाउण्डरक अवाज सुनि धरफड़ा कऽ उठि हेमन्त गेट दिशि बढ़लाह। गेटपर रिक्शा लागल। रिक्शापर दूटा कार्टून लादल। कम्पाउण्डरो आ रिक्शोबला रिक्शासँ हटि, बीड़ी पिबैत। डॉक्टर हेमन्तपर नजरि पड़ितहि कम्पाउण्डर हाथक बीड़ी फेकि, आगू बढ़ि प्रणाम करैत कहलकनि- 'लगले तैयार भऽ चलू, नञि तँ पुलिस आबि कऽ बेइज्जत करत। बेइज्जत तँ हमरो करैत मुदा पुलिस अबैसँ पहिने हम कार्टून रिक्शापर चढ़बैत रही। तैँ किछु ने कहलक। रस्तामे अबै छलौं तँ मोहनबाबूकेँ गरिअबैत सुनलियनि। तैँ देरी नञि करु। नबे बजे गाड़ी अछि। सवा आठ बजैए। अपना दुनू गोटे एक टीममे छी।'

जहिना जूड़िशीतलमे मुइलो नढ़ियापर लाठी पटकैत तहिना कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तकेँ होइन। मिरमिराइत स्वरमे बजलाह- 'दिनेश, हमरा तँ रातिये सँ तते मन खराब अछि जे किछु नीके ने लगैए। एक्को मिसिया देहमे लज्जतिये ने अछि। होइए जे तिलमिला कऽ खसि पड़ब।'

कम्पाउण्डर- 'दवाइ खा लिअ। थोड़बे कालमे ठीक भऽ जाएब।'

हेमन्त- 'देहक दुख रहैत तखन ने, मनक दुख अछि। ओ कोना दवाइसँ छुटत।'

हेमन्तक मन आगू-पाछू करैत देखि कम्पाउण्डर कहलकनि- 'एक तँ ओहिना मन खराब अछि......।'

कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तक मन आरो मौला गेलनि। मनमे अनेको प्रश्न उठए लगलनि। देरी हएत तँ जबाबो देमए पड़त। मुदा घरो छोड़ब तँ नीक नहि हएत। जखने घर छोड़ब तखने उचक्का सभ सभटा लुटि-ढ़गेरि कऽ लऽ जाएत। अपने नै रहने क्लीनिको नहिये चलत। अखन जँ रमेशोकेँ अबैले कहबै, सेहो कोना हएत? काल्हिये तँ ओहो ज्वाइन केलकहें। अगर जँ ओकरा माइयेकेँ अबैले कहबनि तँ ओहो जपाले। किएक तँ रोज देखै छिऐ अपहरणक घटना। हड़बड़बैत कम्पाउण्डर कहलकनि- 'अहाँ दुआरे हमहूँ नै मारि खाएब। हम जाइ छी।'

अधमड़ू भेल हेमन्त- 'दू मिनट रुकह। कपड़ा बदलै छी।'

हाँइ-हाँइ कऽ हेमन्त कपड़ा बदलि, बैगमे लुंगी, गमछा, शर्ट, पेन्ट, गंजी रखि बिदा भेलाह। रिक्शापर चढ़िते रहथि आकि पुलिसक गाड़ी पहुँच गेल। तते हड़बड़ा कऽ बिदा भेल रहथि जे मोबाइल, घड़ी, दाढ़ी बनबैक वस्तु छुटिये गेलनि। पुलिसक गाड़ी देखि जे हड़बड़ा कऽ रिक्शापर चढ़ैत रहथि आकि चश्मा गिरि पड़लनि। जेकर एकटा शीशो आ फ्रेमो टूटि गेलनि। पुलिसक गाड़ीकेँ घुमैत देखि मनमे शान्ति एलनि।

रिक्शापर चढ़ि थोड़े आगू बढ़ला आकि डॉक्टर सुनीलकेँ बच्चा सबहक संग बजारसँ डेरा जाइत देखलखिन। सुनील बाबूकेँ देखि कम्पाउण्डरसँ पुछलखिन- 'सुनीलबाबू सभकेँ ड्यूटी नहि भेटिलनि अछि, की?'

कने काल चुप रहि कम्पाउण्डर कहलकनि- 'नीक-नहाँति तँ नञि बुझल अछि मुदा बुझि पड़ैए जे, जे सभ अस्पतालमे बेसी समए दइ छथिन हुनका सभकेँ छोड़ि देल गेलनि अछि।'

कम्पाउण्डरक बात सुनि डॉ. हेमन्तकेँ अपनापर ग्लानि भेलनि। मन पड़लनि सुनील बाबूक परिवार आ जिनगी। सुनील बाबू सेहो डॉक्टर। दू भाँइक भैयारी। पितो जीविते। चारि बहीन। जे सभ सासुर बसैत। बहीन सबहक सासुर देहातेमे। जइ ठाम पढ़ै-लिखैक नीक बेबस्था नहि। ओना अपनो सुनीलबाबू गामेमे रहि पढ़ने रहथि। डॉक्टरी पास केलापर गाम छोड़लनि। भाँइयो दरभंगेक हाइ स्कूलमे शिक्षक। परिवारो नमहर। किएक तँ माए-बापक संग दुनू भाइक पत्नी आ बच्चा। तइ परसँ चारु बहीनिक पढ़ै-लिखैबला बच्चा सभ। सुनीलबाबूक जिनगी आन डॉक्टरसँ भिन्न। मात्र दू घंटा अपन क्लीनिक चलबैत। आठ घंटा समए अस्पतालमे दैथि। अपना क्लीनिकमे चारिटा कम्पाउण्डर आ जाँच करैक सभ यंत्र रखने। जाँच करैक पाइमे सभ कम्पाउण्डरकेँ परसेनटेज दैथि। जाहिसँ काजो अधिक होइत। कम्पाउण्डरोकेँ नीक कमाइ भऽ जाइत तँ इमानदारीसँ श्रम करैत। ओना सभ काज कम्पाउण्डरे कऽ लैत मुदा हिसाब-बाड़ी आ जाँचक चेक अपनेसँ करैत। जाहिसँ अस्पतालोक जाँच करौनिहार दोहरा कऽ अबैत। आ आन-आन प्राइवेट खानगी जाँच घरक काज सेहो पतराएल। ततबे नहि डॉ. सुनीलक चरचा सीतामढ़ी, दरभंगा, सुपौल आ समस्तीपुर जिलाक गाम-गामक लोकक बीच होइत। जहिना धारक पानि शान्त आ अनबरत चलैत रहैत, तहिना सुनीलक परिवार। कोनो तरहक हड़-हड़ खट-खट परिवारमे कहियो नै होइत। डॉक्टर सुनीलक परिवारक संबंधमे सोचैत-सोचैत डॉक्टर हेमन्त अपनो परिवारक संबंधमे सोचए लगलाह। मन पड़लनि पिता। जे बंगालसँ डॉक्टरी पढ़ि गामेमे प्रैक्टीश शुरु केलनि। किएक तँ सरकारी अस्पताल गनल-गूथल। मुदा रोगीक कमी नहि। कमी इलाज आ इलाज कर्ताक। नमहर इलाका। दोसर डॉक्टर नहि। गाम-घरमे ओझा-गुनी, झाँड़-फूँक, जड़ी-बुट्टीसँ इलाज चलैत। ओना हेमन्तक पिता डॉक्टर दयाकान्त सभ रोगक जानकार, मुदा तीनिये तरहक रोगक टूटल हाथ-पाएरक पलस्तर, साँपक बीख उताड़ब आ बतहपन्नीक इलाजसँ पलखति नहि। तँ ओझो-गुनीक चलती पूर्ववते। कमाइयो नीक। जाहिसँ दू महला मकानो आ पचास बीघा खेतो किनलनि। तीनू बेटोकेँ खूब पढ़ौलनि। जेठका वकील, मझिला डॉक्टर आ छोटका प्रोफेसर। जाधरि दयाकान्त जीबैत रहलखिन ताधरि गामो आ इलक्कोमे सुसभ्य आ पढ़ल लिखल परिबारमे गिनती होइन। तीनू भाँइयोक बीच अगाध स्नेह। जेठ-छोटक विचार सबहक मनमे। जाहिसँ माइयो-बाप खुशी। ओना माए पढ़ल-लिखल नहि मुदा परम्परासँ सभ बुझैत। जखैनकि पिता आधुनिक शिक्षा पाबि आधुनिक नजरिसँ सोचैत। तीनू भाँइक मेहनति देखि पिताकेँ ई खुशी होइत जे परिवारक गाड़ी आगू मुँहे

नीक जेकाँ ससरत। बेटा सबहक बिआह इलाकाक नीक-नीक परिवारमे पढ़ल-लिखल लड़कीक संग केलनि। दहेजो नीक भेटलनि।

दयाकान्त मरि गेलखिन मुदा स्त्री जीविते। तीनू भाँइ अपन-अपन जिनगीमे ओझराएल। अपन-अपन परिवारक संग रहैत, घरपर खाली माइये टा। तीनू भाँइक परिवारक गारजनी स्त्रीक हाथमे। एक-दोसरसँ आगू बढ़ैक सदिखन प्रयास करैत। जाहिसँ गामक संपतिपर नजरि जाइ लगलनि। गामक सम्पति अधिकसँ अधिक हाथ लगए एहि भाँजमे बौद्धिक व्यायाम नीक-नहाँति करैत। मुकदमा बाजी शुरु भेल। एकटा कोठरी आ दू बीघा खेत माएकेँ कोटसँ भेटलनि। बाकी घरो आ खेतो जब्त भऽ गेल। एक सए चौवालीस लगि गेलै। पुलिसक ड्यूटी भऽ गेलै। बीस बर्खक बाद डॉक्टर हेमन्त लिखि कऽ कोर्टमे दऽ देलखिन जे हमरा एहि सम्पतिसँ कोनो मतलब नहि।

दरभंगा प्लेटफार्मपर डॉ. हेमन्त देखलनि जे दर्जनो डॉक्टर जा रहल छी। दरजनो कम्पाउण्डरो छै। मुदा सबहक मुँह लटकल। एक्को मिसिया मुँहमे हँसी नहि। जहिना ठनका ठनकलापर सभ अपने-अपने माथपर हाथ रखि साहोर-साहोर करैत तहिना बाढ़िक इलाकाक ड्यूटीसँ सबहक मनपर भारी बोझ, जाहिसँ सभ मने-मन कबुला-पाती करैत। हे भगबान, हे भगवान करैत। कियो-ककरो टोकथि नहि। आँखि उठा कऽ देखि फेर निच्चा कऽ लेथि।

निरमली जाइवाली गाड़ी पहुँचल। गाड़ी पहुँचिते सभ हड़बड़ करैत, अपनो आ समानो सभ उठा-उठा गाड़ीमे चढ़ौलनि। हेमन्तो चढ़लाह। कम्पाउण्डरकेँ बीड़ीक तृष्णा लगलै। ओ दुनू कार्टून समान चढ़ा उतरि कऽ पानक दोकान दिशि बढ़ल। तहि काल पनरह-बीसटा तरकारीबाली आबि, डिब्बामे कियो छिट्टा चढ़बैत तँ कियो मोटा। तेसर यात्री सभ, तरकारीवालीक काँइ-कच्चर सुनि-सुनि आगू बढ़ि जाइत। कम्पाउण्डरो हाँइ-हाँइ कऽ चारि दम बीड़ी पीबि, दौगल आबि बोगीक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। तरकारीवाली सबहक झुण्ड देखि कम्पाउण्डरकेँ मनमे हुअए लगलै जे हमरा चढ़िये ने हएत। चुपचाप निच्चाँमे ठाढ़। गाड़ीक भीतर बैसल एकटा पसिन्जर उठि कऽ आबि एकटा मोटाकेँ निच्चाँ धकेल देलक। जइ तरकारीवालीक मोटा खसल रहै ओ ओहि आदमीक गट्टा पकड़ि निच्चा उतारल। निच्चा उतरितहि घोरन जेकाँ सभ तरकारीवाली लुधकि गेल। गारियो खूब पढ़लक आ मारबो केलक। बोगीक मुँह खाली देखि कम्पाउण्डर चढ़ि गेल। गाड़ीकेँ पुक्की दैतहि सभ हाँइ-हाँइ कऽ चढ़ए लगल मुदा झगड़ा नै छुटलै। गारि-गरौबलि होइते रहल। जते हल्ला सैँसे गाड़ीमे, लोकक बजलासँ होइ ओते खाली ओहि एक्के डिब्बामे होइ। अकछि कऽ डॉक्टर हेमन्त सीट परसँ उठि समान रखैबला उपरकापर जा कऽ बैगकेँ सिरमामे रखि सुति रहलाह। ओंघराइते अपना जिनगीपर नजरि गेलनि। मने-मन सोचै लगलाह जे पिताजी तँ हमरे सबहक सुखले ने ओते सम्पति अरजलनि। मुदा की हमरा सभकेँ ओहि सम्पतिसँ सुख होइ अए ? अपनो कमाइ तँ कम नहि अछि। मुदा चौबीस घंटाक दिन-रातिमे चैनसँ कते समए बीतैत अछि ? जहिना खाइ काल फोन अबै अए तहिना सुतै काल। की यएह

छी सुखसँ जिनगी बिताएब ? मुदा एहि प्रश्नक उत्तर सोचमे ऐबे ने करनि। फेर मन उनटि कऽ जिनगीक पाछु मुँहे घुरलनि। मनमे एलनि जे, जे माए धाकड़ सन-सन तीन बेटाक छी, बेचारीकेँ कियो एक लोटा पानि देनिहार नहि। किएक नहि बेचारीक मनमे उठैत हेतनि जे एहि बेटासँ बिनु बेटे नीक ? हमरो ऐना नै हएत, तेकर कोन गारंटी।

गाड़ी घोघरडिहा पहुँचल। यात्री सभ उतड़बो करए आ बजबो करए जे किसनीपट्टीसँ आगू लाइन डूबि गेल छै, तँ गाड़ी आगू नै बढ़त। कम्पाउण्डर उठि कऽ हेमन्तक पाएर डोलबैत बाजल- 'डॉक्टर सहाएब, नीन छिऐ।'

'नै'

'सभ उतरि रहल अछि। गाड़ी आगू निरमली नञि बढ़त। उतरि जाउ?'

कम्पाउण्डरक बात सुनि हेमन्तक मनमे अस्सी मन पानि पड़ि गेलनि। मुदा उपाए की? अधमड़ू जेकाँ उतरलथि। प्लेटफार्मपर रिक्शाबला, टमटमबला हल्ला करैत जे कोसीक पछबरिया बान्हपर जाएब।'

एकटा रिक्शाबलाकेँ हाथक इशारासँ कम्पाउण्डर सोर पाड़ि पूछलक- 'हम सभ लछमीपुर जाएब। तोरा बुझल छह?'

रिक्शाबला- 'हमरो घर लछमियेपुर छी। बाढ़िक दुआरे ऐठाम रिक्शा चलबै छी।'

कम्पाउण्डर- 'अइ ठीनसँ कना-कना रस्ता हेतै? '

रिक्शाबला- 'अइ ठीनसँ हम बान्हपर दऽ आएब। ओइ ठीनसँ नौ भेटत, जे लछमीपुर पहुँचा देत। अइ ठीनसँ हम नेने जाएब आ अपने भाइयक नौपर चढ़ा देब।'

कम्पाउण्डर- 'बड़बढ़िया, कार्टून चढ़ाबह।'

सभ कियो रिक्शापर चढ़ि बिदा भेल। पुबरिया गुमती लग, जहिठाम चाउरक बड़का मिलक खंडहर अछि, पहुँचि रिक्शावलाकेँ हेमन्त पुछलखिन- 'लछमीपुर केहेन गाम अछि?'

रिक्शाबला- 'बड़ सुन्दर गाम अछि। सन्मुख कोसीसँ मील भरि पछिमे अछि। गामक सभ मेहनती। बाढ़िक समएमे हम सभ रिक्शा चलबै छी आ जखैन पाइन सटकि जाइ छै तखैन जा कऽ खेती करै छी। गाइयो-महीस पोसने छी। कते गोरे नौ चलबैए आ कते गोरे मछबारि करैए। हमरा गामक लोक पंजाब, डिल्ली नञि जाइए। आन-आन गाममे तँ पंजाब, डिल्लीक धरोहि लागि जाइ छै। से हमरा गाममे नञिए। माछक नाम सुनिते कम्पाउण्डर पुछलक- 'तब तँ माछ खूब सस्ता हेतह?'

'हँ, कोनो की जीरा रहै छै। सभ अनेरुआ। एहेन सुअदगर माछ शहर-बजारमे थोड़े भेटत। शहर-बजारक माछ तँ सड़ल-सुड़ल पानिक डबरा महक रहैए।'

कोसीक पछबरिया बान्हपर पहुँचते रिक्शाबला अपन भाइयक घाटपर रिक्शा लऽ गेल। भाइयक रिक्शा देखितहि भागेसर नाव परसँ बान्हपर आएल। दुनू भाँइ दुनू कार्टून नावपर रखलक। अधा नावपर तख्ता बिछौने आ अधा ओहिना। तख्तापर पटेरक पटिया बिछाओल। नावपर बैसि हेमन्त पूब मुँहे तकलनि तँ बुझि पड़लनि जे

समुद्रमे जा रहल छी। सौंसे देह सर्द भऽ गेलनि। मनमे डर पैसि गेलनि जे कोना अइ पाइनमे जाएब। मन पड़लनि दरभंगाक पीच परक कार। मुदा एक्सिडेंट तँ ओतौ होइ छै। ओतौ लोक मरैत अछि। फेर मनमे एलनि जे महेन्द्रूक नाव जेकाँ नावमे इंजनो नै छै। जँ कहीं बीचमे लग्गी छुटि-टुटि जेतै तँ भसिये जाएब। कतऽ जाएब कतऽ नहि। अनायास मनमे एलनि जे अखन धरि कम्पाउण्डरकेँ नोकर जेकाँ बुझै छेलिऐ ओ उचित नहि। ई तँ छोट भाइक तुल्य अछि। नव विचार मनमे उठितहि कम्पाउण्डरकेँ कहलखिन- 'बौआ, धन्य अछि ऐठामक लोक। जे सचमुच देवीक पूजो करैत अछि आ लड़बो करैत अछि। किएक ने जिबठगर हएत।'

नौ खुगलै, मांगि सोझ कऽ नञिया नाविक कमलेसरीक गीत उठौलक। नञियाक लग्गी उठबैत आ पाइनमे रखैत देखि हेमन्त मने-मन सोचए लगलाह जे एहन मेहनति केनिहारकेँ कोन जरुरत दवाइ आ व्यायामक छैक। मन पड़लनि रामेश्वरम। समुद्रक झलकैत पानि। जहिमे लहरि सेहो उठैत। तहिना तँ ओहूठाम पानिक लहरि अछि। फेर मन पड़लनि जेसलमेरक बाउल। एहिना उज्जर धप-धप कतौसँ कतौ बाउल। कमलेसरीक गीत समाप्त होइतहि नाविक कोसीक गीत उठौलक। अजीब साजो। जहिना नावमे खट-खटक अवाज तहिना लग्गीक। लग्गीक पानि देहोपर खसै मुदा तँ की ओकर पसीना निकलब रुकलै।

डॉ. हेमन्तक मन फेर उनटलनि। मिलबै लगलाह समुद्रक लहरि आ कोसीक धाराक। समुद्र रुपी समाजमे सेहो समुद्र जेकाँ लहरियो उठैत अछि आ धारक बेग जेकाँ सेहो रहैत अछि। कहियो काल समुद्रक लहरि जेकाँ सेहो लहरि समाजमे उठैत अछि मुदा ओ धीरे-धीरे असथिर भऽ जाइत अछि। मुदा कोसीक धार जेकाँ जे बेग चलैत ओ पैघसँ पैघ पहाड़केँ तोड़ि धारो बना दैत आ समतल खेतो। पुरानसँ पुरान गामक अधला परम्पराकेँ तोड़ि नवमे बदलि दैत। जहिना मौसम बदललापर गाछक पुरान पात झड़ि नव पातसँ पुनः लदि जाइत, तहिना। असीम विचारमे डूबल हेमन्तक मुँह अनायास नाविककेँ पुछलक- 'कते दूर अहाँक गाम अछि?'

नञिया- 'छअ कोस।'

'कते समए जाइमे लागत ?'

'भट्ठा दिस जाएब। तँ जलदिये पहुँच जएब।'

जल्दीक नाम सुनि हेमन्तक मनमे आशा जगल। मुदा ओ आशा लगलेमे जाए लगलनि। किएक तँ सौंसे पाइनिये देखथि, गाम-घरक कतौ पता नहि। चिन्तित भऽ चुपचाप भऽ गेलाह। अपना सुइढ़मे नञिया गीत गबैत। मनमे कोनो विकारे नहि। मुदा हेमन्तकेँ कखनो गीत नीको लगनि आ कखनो झड़कबाहियो उठनि। तहि काल एकटा मुरदा भसल जाइत। सबहक नजरि ओहि मुरदापर पड़ल। मुरदा देखि हेमन्तक नजरि अस्पतालक मुरदापर गेलनि। मुदा दुनूक दू कारण। एकक जिनगीक अंत रोगसँ तँ दोसराक बाढ़िसँ। नब-नब समस्या उठि-उठि हेमन्तक मनकेँ घोर-मट्ठा कऽ देलकनि। मनक सभ विचार हराइ लगलनि। तहि बीच एकटा किलो चारिएक रौह माछ कुदि कऽ नावमे खसल। माछ देखि हेमन्तोक आ कम्पाउण्डरोक मन चट-पट

करए लगलनि। लग्गीकेँ मांगिपर राखि भागेसर माछकेँ पकड़ि, पानि उपछैबला टीनमे रखलक। माछकेँ टीनमे रखि नञिया बाजल- 'अहाँ सबहक जतरा बनि गेल।'

नञियाक शुभ बात सुनि हेमन्तक मन फेर ओझरा गेलनि। मनमे उठए लगलनि जे यात्रा ककरा कहबै। घरसँ बिदा भेलहुँ, तकरा कहियै आकि कार्यस्थल तक पहुँचैकेँ कहियै आकि काज सम्पन्न कऽ घर पहुँचलापर, तकरा। तहूसँ आगू जे काजक बीचोमे नव काज उत्पन्न भऽ जाइत। फेर नञियाकेँ पुछलखिन- 'आब कते दूर अछि?'

हाथ उठा आंगुरसँ दछिन दिस देखबैत कहलकनि- 'वएह हमर गाम छी। गोटे-गोटे जमुनीक गाछ देखै छिऐ। अधा कोस करीब हएत।'

अधा कोस सुनि कम्पाउण्डर चहकि कऽ बाजल- 'डॉक्टर सहाएब, पाँच बजैए। अधा घंटा आरो लागत। साढ़े पाँच बजे तक पहुँचि जाएब।'

भने सबेरे-सकाल पहुँचि जाएब। मुदा अकासमे चिड़ै सभ नहि उड़ैत। किएक तँ चिड़ै ओहि ठाम उड़ैत जहि ठाम रहैक ठौर होइत। मुदा से तँ नहि। सौँसे बाढ़िये पसरल। मुदा तैयो गोटे-गोटे मछखौका चिड़ै जरुर उड़ैत। लछमीपुर दिशि अबैत नावकेँ देखि गामक धियो-पूतो, स्त्रीगणो आ गोटे-गोटे पुरुखो घाटपर ठाढ़ भऽ एक दोसरसँ कहैत।

'चाउर-आँटाबला छिऐ।'

'नुओ-बसतर हेतै।'

'तिरपालो हेतै।'

'बड़का हाकीम सभ छिऐ।'

घाटपर आबि नाव रुकल। मुदा पेंट-शर्ट पहिरने डॉक्टर आ कम्पाउण्डरकेँ देखि जनिजाति सभ मुँह झापए लागलि। मरद सभ सहमि गेल। धीया-पूता डरा गेल। नावकेँ बान्हि नञिया सुलोचनाकेँ कहलक- 'गै सुलोचना डाकडर सैब सभ छथिन। बक्सामे दवाइ छिऐ। हम दवाइ उताड़ै छी तूँ टीन उतार। टीनमे एकटा नमहर माछ छौ। खूब नीक जेकाँ माछकेँ तरि डाकडर सहैबकेँ खुआ दहुन।'

माछ उतारि सुलोचना अंगना लऽ गेल। टीन रखि बाड़ीक कलपर आबि हाथ धोए, आँचरसँ हाथ पोछि, इसकूलक ओछाइन झाड़ि बिछबै लागलि। बिछान बिछा, दौड़ि कऽ आंगनसँ बड़का जाजीम आ दूटा सिरमा आनि लगौलक। हेमन्तो आ दिनेशो आगूमे ठाढ़। मुदा ओते लोकक बीच हेमन्तोक आ दिनेशोक नजरि सुलोचनेक देह आ काजपर नचैत। बिछान बिछा सुलोचना हेमन्तकेँ कहलकनि- 'डॉक्टर सहाएब, बिछान बिछा देलहुँ, आब आराम करु।'

दिनेश चुप्पे। मुदा हेमन्त बजलाह- 'बुच्ची, देह भारी लगैए। ओना नावपर आरामेसँ एलहुँ। मुदा तैयो देह भरिआएल लगैए। पहिने नहाएब।'

'बड़बढ़िया' कहि सुलोचना आंगन बाल्टी-लोटा आनए गेलि। आंगनसँ बाल्टी-लोटा नेने कलपर पहुँचल। दुनूकेँ माटिसँ माँजि, बाल्टीमे लोटा रखि, पाइन भरि, हेमन्तकेँ कहलक- 'डॉक्टर सहाएब, नहा लिअ।'

चहारदेबालीसँ घेरल टंकीपर नहाइबला डॉक्टर हेमन्त खुला धरती-अकासक बीच नहाइले जएताह। तेँ किछु सोचै-बिचारैक प्रश्न मनमे उठि गेलनि। मुदा बहुत सोचैक जरुरत नहि पड़लनि। अपना-अपना उमरबला सभकेँ डोरीबला पेंट तइ परसँ ककरो लुंगी तँ ककरो चारि हत्थी तौनी पहिरने देखलखिन। ओहो सएह केलनि। मुदा बारह बर्खक सुलोचना कल परसँ हटल नहि। मातृत्वक दुआरिपर पहुँचल सुलोचनामे फुलक टूस्सी जरुर अबि गेल छलै। मुदा हेमन्तोक मनमे डॉक्टरक विचार। ओना डॉक्टर हेमन्त शरीरक सभ अंगक गुण-धर्म बुझैत मुदा एहनो तँ वस्तु अछि जे गर्म हवाक रुपमे रहैत। जहिमे आनन्द आ सृजनक गुण होइत। सुलोचनोमे फूलक कोढ़ीक जे सुगंधक वाल्यावस्थामे प्रस्फुटित होइत, महमही हवामे। एक लोटा माथपर पानि ढ़ारलाक बाद हेमन्तक मनमे आएल जे अखन हम दुनियाक ओहि धरतीपर छी जहि ठाम जीवन-मरण संगे रहैत अछि। मुदा तहिठाम एहेन सौम्य, सुशील अल्हड़ बाला कते खुशीसँ चहचहा रहल अछि।

तीन साल पहिलुका बात छिऐ। जहि बाढ़िमे कतेक गाम, कतेको मनुष्य आ कतेको सम्पति नष्ट भेल छल। तँ की? जे बचल अछि ओ ओहि गामकेँ छोड़ि देत। कथमपि नहि। मुदा बाढ़ि अनहोनी नै रहै। बरेजक फाटक खोलल गेलै। फाटको खोलैक मजबुरी रहै। किएक तँ बरेजक उत्तर तते पानिक आमदनी भऽ गेलै जे दुर्दशाक अंतिम शिखरपर पहुँच सकैत छलै। मुदा सुदूर गाममे जानकारीक साधन नहि। ने बँचैक उपए। कोसीक दुनू बान्हक बीच समुद्र जेकाँ पानि पसरि गेलै। थाहसँ अथाह धरि। कुनौलीसँ दछिन, कोसी धारक कातमे एकटा गाम। ओहि गामक सुलोचना। जेकर सभ कुछ मनुखसँ घर धरि दहा गेलै। मुदा सुलोचना जे बँचल से पढ़ैले कुनौली गेल छलि। स्कूलसँ घर जाइ काल बाढ़िक दृश्य देखलक। दृश्य देखि बान्हेपर बपहारि कटए लागलि। तहि काल लछमीपुरक चारि गोटे, बजारसँ समान खरीद नाव लग अबैत रहए। सुलोचनाकेँ कनैत देखि जीयालाल पुछलकै- 'बुच्ची, किअए कनै छेँ?'

कनैत सुलोचना- 'बाबा, हम पढ़ैले गेल छेलौँ। तै बीच हमर गामे दहा गेल। आब हम कतऽ रहब?'

जीयालाल- -'हमरा संगे चल। जहिना बारहटा पोता-पोतीकेँ पोसै छी तहिना तोरो पोसबौ।'

जीयालालक विचार सुनि सुलोचनाक हृदएमे जीवैक आशा जगल। कानब रुकि गेलै। मुदा कखनो-काल हिचकी होइते। नावपर सभ समान रखि चारु गोटे बान्हपर आबि चीलम पीबैक सुर-सार करए लगल। एक भागमे सुलोचनो किताब नेने बैसलि। बटुआ खोलि रघुनी चीलम, कंकड़क डिब्वा आ सलाइ निकालि बीचमे रखलक, एक गोटे चीलमक ठेकी निकालि, चीलमो आ ठेकियोकेँ साफ करए लगल। दोसर गोटे डिब्बासँ कंकड़ निकालि तरहत्थीपर औँठासँ मलए लगल। चीलम साफ भेलै। ओहिमे ठेकी दऽ कंकड़बला हाथमे देलक। कंकड़बला चीलममे कंकड़ बोझि दुनू हाथसँ चीलमक पैछला भाग पकड़ि मुहमे भिरौलक। मुँहमे भिरबितहि रघुनी सलाइ खरड़ि

कंकड़मे लगबै लगल। दू-चारि बेर मुँहक इंजनसँ प्रेशर दैते चीलम सुनगि गेल। चीलमकेँ सुनगितहि तते जोरसँ दम मारलक जे धुआँक संग-संग धधरो उठि गेलै। मुदा चीलमक दुषित हवासँ धधरा मिझा गेल। बेरा-बेरी चारु चीलम पीबि मस्त भऽ नाव दिशि बिदा भेलि। साँझू पहरकेँ जहिना गाए-महीस बाधसँ घर दिशि अबैत। जकरा पाछु-पाछु छोट-छोट नेरु पड़डू झुमैत, लुदुर-लुदुर मगन भऽ चलैत, तहिना सुलोचना लछमीपुरबला सबहक संगे पाछु-पाछु नावपर पहुँचल। नावपर चढ़िते लग्गा चलौनिहार कोसी महरानीक दुहाइ देलक। सुलोचनो बाजलि- 'जय।'

नाव खुगल। लछमीपुरक चारु गोटेक मन सुलोचनाक जिनगीपर। मुदा सुलोचनाक परिवारक बिछोह दुखसँ सुख दिशि जाए लगल। जे सुलोचना गाम आ परिवारक कतौ अता-पता नञि देखलक, ओहि सुलोचनाक मनमे उठए लगल जे गाम-घर भलेहीं दहा गेल मुदा माए-बाप जरुर जीवैत हएत। किएक तँ मनुक्ख निर्जीव नहि सजीव होइत। बुद्धि-विवेक होइत। तँ ओ दुनू गोटे जरुर कतौ जीबैत हएत। जे आइ नै काल्हि जरुर मिलबे करत। तँ मनमे जिनगी भरिक दुख नहि, किछु दिनक दुख अछि। जे कहुना नहि कहुना कटिये जाएत। नाव लछमीपुर पहुँचल। जीयालालक बारहोटा पोता-पोती दौड़ि कऽ नाव लग आइल। पोता-पोतीकेँ देखि जीयालाल कहलक- 'बाउ, तोरा सभले एकटा बहीन नेने ऐलियह। सुलोचना पोता-पोती सबहक पहुन भऽ गेलि। दोसर दिन जीयालाल एकटा घर बना, सुलोचनाकेँ गामक बच्चा सभकेँ पढ़बैले कहलक। गामक बच्चा सभकेँ सुलोचना पढ़बै लागलि। वएह सुलोचना।

हेमन्तो दिनेशो नहाएल। नहाकेँ जाबे हेमन्त कपड़ा बदलि, केश सरिया, तैयार भेलाह ताबे सुलोचनो आ जीयालालक जेठकी पोती कमलियो चूड़ा भूजि, माछ तड़ि लेलक। दूटा थारीमे चूड़ाक भुजा आ तड़ल माछ साँठि दुनू बहीन दुनू थारी नेने हेमन्त लग पहुँचि आगूमे रखि देलक। बड़का फुलही थारी तइमे चूड़ाक उपरमे माछक नमहर-नमहर तड़ल कुट्टिया पसारल। थारी रखि कमली पाइन आनए गेलि। सुलोचना आगूमे बैसि गेलि। दुनू गोटे खाइत-खाइत दसो माछक कुट्टिया आ थारियो भरि चूड़ा खा लेलनि। शुद्ध आ मस्त भोजन। पानि पीबि ढ़कार करैत दिनेश बाजल- 'डॉक्टर सहाएब, आइ धरि हम एते नञि खेने छलौं।'

हेमन्त- 'से तँ हमरो बुझि पड़ैए।'

सुलोचना- 'डॉक्टर सहाएब, चाहो पीबै?'

हेमन्त- 'पीबै तँ जरुर मुदा दू घंटाक बाद। ताबे किछु काज करब। ओना साँझ पड़ि गेल मुदा जाबे फरिच छै ताबे दसो-पाँचटा रोगी जरुर देखि लेब।'

सुलोचना- 'अच्छा, अहाँ तैयार होउ, हम रोगीसभकेँ बजौने अबै छी।'

कम्पाउण्डर कार्टून खोलि, दवाइ निकालि पसारि देलक। रोगी आबए लगल। रोगी देखि-देखि हेमन्त कम्पाउण्डरकेँ कहैत जाथिन आ कम्पाउण्डर दबाइ दैत जाए। अस्पताल जेकाँ तँ सभ रंगक रोगी नहि। किएक तँ बाढ़िक इलाका तेँ गनल-गूथल रोग। दवाइयो तेहने। तीनिये दिनमे सौंसे गामक रोगीकेँ देखि डॉक्टर हेमन्त निचेन

भऽ गेलाह। मुदा सात दिनक डयूटी। तहूमे कठिन रास्ता। मुदा पाइन टूटए लगलै। पाँचम दिन जाइत-जाइत रास्ता सूखि गेल। मुदा थाल-खिचार रहबे करै।

आठम दिन भोरे हेमन्त सुलोचनाकेँ कहलखिन- 'बुच्ची, आइ हम चलि जाएब।'

सुलोचना- 'ई तँ मिथिला छिऐ डॉक्टर सहाएब, बिना किछु खेने-पीने कना जाएब?'

कहि सुलोचना चाह बनबै गेलि। एकटा दोस्तसँ भेँट करए कम्पाउण्डर गेल। असकरे हेमन्त। मने-मन सोचै लगलथि जे सात दिनक समए जिनगीक सभसँ कठिन आ आनन्दक रहल। ई कहियो नै बिसरि सकै छी। बिसरैबला अछियो नहि। आइ धरि एहेन जिनगीक कल्पनो नञि केने छलहुँ, जे बीतल। एहेन मनुक्खक सेवो करैक मौका पहिल बेर भेटल। मौके नहि भेटल, बहुत किछु देखैक, भोगैक आ सीखैक सेहो भेटल। आइ धरि हम रोगीक, सचमुच जकरा जरुरत छै, सेवा नञि केने छलहुँ, खाली पाइ कमेने छलहुँ। गाम-घरमे जकरा पाइ छै वएह ने दरभंगा इलाज करबै जाइत अछि। जकरा पाइ नञि छै ओ तँ गामेमे छड़पटा कऽ मरैत अछि।

तहि बीच सुलोचना चाह नेने आइलि। कप बढ़बैत बाजलि- 'मन बड़ खसल देखै छी, डॉक्टर सहाएब।'

हेमन्त- 'नहि! कहाँ। एकटा बात मनमे आबि गेल तँ किछु सोचै लगलहुँ।'

सुलोचना- 'अइ ठीन केहेन लगै अए डॉक्टर सहाएब?'

सुलोचनाक प्रश्नक उत्तर नहि दऽ हेमन्त चुप्प रहलाह।

हेमन्तकेँ चुप देखि सुलोचना बाजलि- 'हम तँ बच्चा छी डॉक्टर सहाएब तेँ बहुत नै बुझै छी। मुदा तइयो एकटा बात कहै छी। जहिना चीनी मीठ होइत अछि आ मिरचाइ कड़ू। दुनूमे कीड़ा फड़ै छै आ ओहिमे जीवन-यापन करैत अछि। मुदा चीनीक कीड़ाकेँ जँ मिरचाइमे दऽ देल जाए तँ एको क्षण नञि जीवित रहत। उचितो भेलै। मुदा की मिरचाइक कीड़ा चीनीमे देलाक बाद जीवित रहत? एकदम नञि रहत। तहिना गाम आ बाजारक जिनगी होइत।'

सुलोचनाक बात सुनि डॉक्टर हेमन्त मने-मन सोचए लगलथि जे बात ठीके कहलक। अहिना तँ मनुक्खोमे अछि। मुदा ओ हएत कना। जाबे समाजिक जीबनमे समरसता नञि आओत ताबे एहिना होइत रहत।

दस बजे भोजन कऽ दुनू गोटे -हेमन्त आ दिनेश- लुंगी, गंजी पहीरि सभ कपड़ो आ जूत्तोकेँ बैगमे रखि, पाएरे बिदा भेलाह। हेमन्तक बैग सुलोचना आ दिनेशक बैग कमली लऽ पाछु-पाछु चललि। किछु दूर गेलापर हेमन्त कहलखिन- 'बुच्ची, आब तों सभ घुरि जा।'

हेमन्तक बात सुनि सुलोचनाक आँखि नोरा गेल। डॉक्टर हेमन्तकेँ बैग पकड़बैत बाजलि- 'अंतिम प्रणाम, डॉक्टर सहाएब।'

एकाएक हेमन्तक हृदएसँ प्रेमक अश्रुधारा प्रवाहित हुअए लगलनि। मुँहसँ प्रणामक उत्तर नञि निकललनि। मूड़ी निच्चाँ केने आगू बढ़ि गेलाह। मुदा किछुए दूर आगू बढ़लापर बुझि पड़लनि जे चारिटा तीर -सुलोचना आ कमलीक आँखि- पाछुसँ बेधि

रहल अछि। पाछु उनटिकेँ तकलनि तँ देखलखिन जे दुनू गोरे ठाढ़े अछि। मन भेलनि जे हाथक इशारासँ जाइले कहि दिअए मुदा अपना रुपपर नजरि पड़ि गेलनि। खाली पाएर जाँघ तक समटल उलटा कऽ मोड़ल- लुंगी, देहमे सेन्डो गंजी, माथक केश फहराइत। तइ परसँ थालक छिटका घुट्ठीसँ लऽ कऽ माथ धरि पड़ल। हाथक इशारासँ सुलोचनाकेँ सोर पाड़लखिन। दुनू -सुलोचनो आ कमलियो- हँसैत आगू बढ़ल। लगमे देखि हेमन्तोक हृदएमे हँसी उपकल। मुस्की दैत हेमन्त- 'बुच्ची, हम अपन दरभंगाक पता कहि दइ छिअह। अबिहह।'

सुलोचना- 'हम तँ शहर-बजारमे हराइये जाएब डॉक्टर सहाएब। अहाँ जाबे हमरा गाममे छेलौं ताबे बुझि पड़ैत छल जे दरभंगा अस्पताल गाममे अछि।'

कहि पाएर छुबि घुरि गेल।

बान्हपर आबि दुनू गोरे थाल-कादो धोए, पेन्ट-शर्ट पहीरि स्टेशन दिशि बढ़लाह। गाड़ी पकड़ि दरभंगा पहुँचि गेलथि।

बाबी

दुर्गापूजा शुरु होइसँ एक दिन पहिने घर छछाड़ै आ दियारी बनबैले सिरखरियावाली बुढ़िया गाछीक मटि-खोभसँ मनही छिट्टामे चिक्कनि माटि नेने अंगना अबैत छलीह। रस्ते कातक चौमासक टाटपर बाबी करैला तोड़ैत रहथि आकि सिरखरियावालीक नजरि पड़लै। नजरि पड़ितहि ओ एक हाथे छिट्टा पकड़ने आ दोसर हाथे चाइनिक घाम आंगुरसँ काछि कऽ फेकि बाबीकेँ कहलनि-"बाबी, छठिक कते दिन छै?"

बाबीक नजरि जुआइल आ सड़ल करैलापर छलनि। किएक तँ अजोह करैला तीतो बेसी आ सुअदगरो कम होइ छै। ततबे नहि, पकैयोक डर। सड़ल करैला एहि दुआरे लत्तीकेँ बिहिया-बिहिया तकैत जे जँ ओकरा तोड़ि नहि लेब तँ दोसरोकेँ सड़ाओत। सिरखरियावालीक अवाज सुनि बाबी रस्ता दिशि देखि पुनः करैला ताकए लगलीह। किएक तँ माथपर भारी देखि गप-सप्प करब उचित नहि बुझलनि। एक तँ भरल छिट्टा माटि तइपर खुरपी गाड़ल देखलखिन। मने-मन सोचलनि जे छठिक एखन मासोसँ बेसिये हेतै तखन एहेन कोन हलतलबी बेगरता भऽ गेलै। जँ महीना, परव तीथि जोड़ि कऽ कहए लगब तँ अनेरे देरी हेतै। जते देरी लगतै तते भारियो लगतै। तँ बाबी आँखि उठा कऽ देखि, बिना किछु कहनहि, नजरि निच्चाँ कऽ लेलनि। मुदा ओहो रगड़ी। मनमे होइ जे एखन नहि बुझि लेब तँ फेर बिसरि जाएब। जँ बिसरि जाएब तँ किछु नहि किछु छुटिये जाएत। एखन तँ मटि खोभामे मन पड़ल जे पौरुका दशमियेक मेलामे तीनटा कोनियाँ, एकटा सूप आ एकटा छिट्टा कीनि नेने रही। जाहिसँ छठि पावनि केलहुँ। बाबीक नजरि निच्चाँ केने देखि सिरखरियावाली दोहरा कऽ बाजलि- 'गरीब-दुखियाक बात आब थोड़े बाबी सुनै छथिन, जे सुनतिहीन।'

सिरखरियावालीक बात बाबीक करेजकेँ छुबि देलकनि। मुदा क्रोध नहि भेलनि सिनेह उमड़ि गेलनि। एकाएक बाबी अपन बोली बदलि लेलनि। चौवन्निया मुस्की दैत कहलखिन- 'कनियाँ, मनमे आएल जे चारिटा करैला तोरो तरकारी ले दिअह। तँ हाँइ-हाँइ करैला ताकए लगलहुँ। कनिये ठाढ़े रहह?'

सिरखरियावाली- 'जे पुछलियनि से कहबे ने करै छथि आ करैला दऽ कऽ फुसलबै छथि।'

विचित्र अन्तर्द्वन्द बाबीक मनकेँ घोर-मट्ठा करए लगलनि। एक दिशि माथपर भारी देखथिन आ दोसर दिशि आइसँ छठि धरि जोड़ैक समए। तहूसँ उकड़ू बुझि पड़ैन जे सोझ मासक सवाल नहि अछि। दू मास बीचक बात छी। सेहो एहेन मास जे लुंगिया मिरचाइक घौंदा जेकाँ पावनिक घौंदा अछि। जाधरि सभ सोझरा कऽ नहि कहबै ताधरि अपनो मन नहि मानत आ ओहो नहि बूझत। ताल-मेल बैसबैत कहलखिन-

'कनियाँ, एखन जाउ। हमहूँ तीमनक ओरियानमे लगल छी आ अहूँक माथपर भारी अछि।'

सिरखरियावालीक मनमे होइ जे छठि सन पाबनि, जे हिसाबसँ ओरियान नहि करैत जाएब तँ कैकटा चीज छुटिये जाएत। आन पावनि जेकाँ तँ छठि हल्लुक नहि अछि। बड़ ओरियान बड़ खर्च। बाजलि- 'दसमी मेलामे जे कोनियाँ, सूप छिट्टा कीनि नेने रहै छी, तँ बुझै छिऐ जे एते काज अगुआएल रहैए।'

बाबी- 'कनियाँ, एकटा काज करु। छिट्टाकेँ निच्चाँमे राखि दियौ जे अहूँक देह हल्लुक भऽ जाएत आ हमरो हिसाब जोड़ि-जोड़ि बुझबैमे नीक हएत।'

सिरखरयावाली बाजलि- 'बाबी, भारी उठबैत-उठबैत तँ माथ सुन्न भऽ गेल अछि। ई माटि कते भारिये अछि।'

बाबी- 'कनियाँ, बहुत हिसाब जोड़ि कऽ बुझबए पड़त।'

सिरखरियावाली- 'ओते अखन नै कहथु। खाली छठिये टा कहि देथु। गोटे दिन निचेनसँ आबि कऽ सभ बुझि लेब।'

आंगुरपर बाबी हिसाबो जोड़ैत आ ठोर पटपटा कऽ बजबो करथि- 'आइ आसिनक अमवसिये छी। आइये भगवतीकेँ हकारो पड़तनि आ बघा-सँपहाक निमित्ते खाइयोले देल जेतै। काल्हि कलशस्थापनसँ दुर्गा पूजा शुरु हएत, जे नओ-दस दिन धरि चलत। दसमी तिथिकेँ यात्रा हएत। तेकर पाँचे दिन उत्तर कोजगरा हएत। कोजगरा परातसँ कातिक चढ़त। कातिक अमावश्याकेँ दियाबाती.... लक्ष्मी पूजा.... कालीपूजा। परात भेने गोधन पूजा, दोसर दिन भरदुतिता आ चित्रगुप्तो पूजा। भरदुतिया परातसँ छठिक विधि शुरु भऽ जाएत। पहिल दिन माछ-मडुआ बारल जाएत.... दोसर दिन नहा कऽ खाएल जाएत.... तेसर दिन खरना.... चारिम दिन छठिक साँझुका अर्घ। पाँचम दिन भिनसुरका अर्घ भेलापर उसरि जाएत। आंगुरपर गनैत-गनैत बाबी बजलीह- 'कनियाँ, सवा मास करीब छठिक अछि।'

सिरखरियावाली- 'सवा मास कते भेलै बाबी?'

'दू बीसमे तीन दिन कम।'

'हम तँ सभ बेर दशमिये मेलामे कोनियाँ, सूप, छिट्टा कीनि लै छी। तकरा कै दिन छै?'

'सात पूजाकेँ भगवतीकेँ आँखि डिम्भा पड़लापर मेला शुरु भऽ जाइत छै। जेकरा आठ दिन छै। मुदा एकटा बात पूछै छिअह जे एते अगता किअए कीनै छह? ताबे अइ पाइसँ दोसर-दोसर काज करबह से नै। जखन पावनि लगिचा जेतै तखन कीनि लेबह?'

'पहिने किनलासँ दू-पाइ सस्तो होइए आ एकटा चीजोसँ निचेन भऽ जाइ छी। एक बेर एहिना नञि किनलौं तँ भेबे ने कएल। आब की करितौं तँ पुरने कोनियो-सूपो आ छिट्टोकेँ चिक्कनसँ धो देलिऐ आ ओहीसँ पावनि कऽ लेलौं।'

सिरखरियावालीक बात सुनि बाबी व्यवहार दिशि बढ़लीह। मने-मन बुदबुदेलीह- छठि पावनिक महात्म्य बहुत बेसी अछि। खास कऽ किसानक लेल। एक दिशि

पूर्वजक मिठाइ-पकवान तँ दोसर दिशि डोमक बनाओल कोनिया, सूप, छिट्टा। तेसर दिशि कुम्हारक बनाओल कूड -बिनु मोड़ल कान, पनिभरा घैलमेमे मोड़ल कान होइत, जहिमे चौमुखी दीप जरैत। ढ़कना, सरबा। तँ चारिम दिस अपन उपजाओल फल-फलहरी, तीमन-तरकारीक वस्तुक संग मसल्लोक वस्तु। बहुतो अछि। तइपर सँ डुमैत सूर्यक पहिल अर्घ। मने-मन बिचारि बाबी चुप्पे रहलीह। मनमे भेलनि जे ई तँ ओहि इलाकाक छी जहि इलाकाक स्त्रीगण रौद-बसातकेँ गुदानिते ने अछि। खेतक काज करैमे भुते। भगवानोकेँ हारि मनबैवाली। बाँबीक मनमे होइन जे चुप भऽ गेलहुँ तँ बेचारी चलि जाएत।

मुदा ले बलैया, ई तँ काग-भुसुण्डी जेकाँ डूबि गेल। भानसकेँ अबेर होइत जाइत देखि बाबीकेँ अकच्छ लगनि। जखैनकि हेजाक मरीज जेकाँ। सिरखरिया बालीकेँ पियास बढ़ले जाइत। अचता-पचता कऽ बाबी पुछलखिन- 'कनियाँ, बेटी सबहक हालत की छह?'

बेटी नाम सुनितहि सिरखरियावाली किछु मन पाड़ि बाजलि-'बाबी, हिनकासँ लाथ कोन। तीनूक हालत हमरासँ नीक छै। भगवान गरदनि कट्टी केलनि तँ ने, ने तँ की हमही एहिना रहितौं।'

बाबी- 'भगवान ककरो अधला थोड़े करै छथिन जे तोरा केलखुन?'

सिरखरियाबाली- (मूड़ि डोलबैत) 'तँ केलनि नै। हमरा पँच-पँच बरीसपर बच्चा देलनि। पाँच बरिसपर देलनि से नीके केलनि जे जखैन एकटा छँटि जाइत छल तखन दोसर होइत छल। मुदा अगता तीनू बेटिये जे देलनि से गरदनि कट्टी नै केलनि। जँ अगता तीनू बेटा रहैत, नञि तँ मेलो-पाँच कऽ, तँ अखैन ई भारी काज अपने करितौं की पुतोहु करितए। पचता बेटा भेल, जे अखैन लिधुरिये अछि।

बाबी- 'जेठकी बेटीक सासुर कतऽ छह ?'

सिरखरियाबाली- 'उत्तर भर। खुटौना टीशन लग। बेचारीकेँ खेत तँ कम्मे छै मुदा सभ तुर मेहनतिया अछि। एक जोड़ा बड़द रखने अछि। दूटा महीस लधैर खुट्टापर छै आ तीनटा पोसियो लगौने अछि। अन्नो-पानि तते उपजा लै अए जे साल-माल लगिये जाइ छै।'

बाबी- 'नाति-नातिन छह की ने?

सिरखरियावाली- 'हँ, तीन टा अछि। तीनू लिधुरिये अछि। तंग-तंग बेटी रहैए। तीनूक नेकरम करैत-करैत तबाह रहैए। तइपरसँ घर-गिरहस्तीक काज।'

बाबी- 'दोसर बेटीक सासुर कत्तऽ छह ?'

सिरखरियावाली- 'पूब भर। कोशी कात। '

बाबी- 'कोशी कात किअए केलह?'

सिरखरियावाली- 'बाबी जानि कऽ कहाँ केलिऐ। गाम तँ नीके रहए मुदा कत्तऽ सँ ने कत्तऽ सँ कोशी चलि एलै। कोशियो एलै तँ अन्न-पानिक कोनो दुख नै होइ छै। मुदा अपना सभ जेकाँ चिष्टा नहि। गाममे महीस बेसी छै, जइ सँ रस्ता-पेरा हेँक-हेँक भेल रहै छै।

बाबी- 'छोटकी?'

सिरखरियावाली- 'पछिम भर, पाही। ई हम्मर रानी बेटी छी। जते दिन ऐठाम रहैए रंग-बिरंगक तीमन-तरकारी खुआबैए। भानस करैक एहेन लूरि दुनूमे ककरो नै छै। जहिना भानस-भात करैमे, तहिना बोली वाणी। गीतो-नाद जे गबैए, से होइत रहतनि जे सुनिते रही। तहिना चिष्टो चर्या ओढ़बो-पहिरब।'

बाबी- 'बड़ बेर उठलै। आब तोहूँ जा।'

सिरखरियावाली- 'आइ हमरा गंजन लिखल अछि। विचारने छलौं जे माटि आनि कऽ धान काटि आनब। गरमा धान से नहिये भेल। काल्हि फेर घरे-अंगना नीपैमे लगि जाएब।'

गामक सभ बाबीकेँ मेह बुझैत। छथियो। जँ ककरो मन खराब वा कोनो आफत-असमानी होइत तँ बाबी सभसँ पहिने आबि सेवा-टहलमे लगि जाइत। तहिना जँ कहियो बाबीक मन खराब होइत तँ गामक लोक जी-जानसँ लगि जाइत। किएक तँ सबहक मनमे ई अंदेशा बनल जे बाबीक मुइने गामक बहुत विधि-व्यवहार समाप्त भऽ जाएत। ओना बाबी पढ़ल- लिखल नहि, चिट्ठिओ पुरजी नहि पढ़ल होइत छनि। जरुरतो नहि। किएक तँ सालो भरिक पावनि आ ओकर विधि, संग-संग मांगलिक काज उपनयन, विआह इत्यादि विधि कंठस्थ। कोन गीत कोन अवसरपर गाओल जाएत, सभ जीभपर राखल। तहिना पूजाक आराधनासँ लऽ कऽ आरती धरिक।

सभ कुछ रहितहुँ बाबीक मनमे एकटा कचोट समरथाइयेसँ लगल रहि गेलनि। ओ ई जे एकटा बेटा भेलाक बाद दोसर सन्ताने नहि भेलनि। अपन इच्छा रहनि जे एकटा बेटा, एकटा बेटी हुअए। मुदा बेटा तँ भेलनि बेटी नहि। जे कचोट सभकेँ कहबो करथिन। कहथिन जे सृष्टिक विकास लेल पुरुष नारी दुनूक जरुरत अछि। नहि तँ विकास रुकि जाएत। ने एकछाहा पुरुषेसँ काज चलत आ ने एकछाहा नारियेसँ।

भरदुतियाक परात बाबी माछ-मड़ुआ बाड़लनि। काल्हि नहा कऽ खेतीह। परसू खरना करतीह। खरना दिनले बाबी सतरिया धानक अरबा चाउर सभ साल रखैत छथि। किएक तँ पनरहे घरक टोलक खरनासँ लऽ कऽ घाटपर हाथ उठबै धरिक काज बाबीएक जिम्मा। मुदा खरना दिन गज-पट भऽ जाइत छनि। किएक तँ कियो मेहीका धानक अरबा चाउर आ गुड़ दैत छनि तँ कियो मोटका धानक अरबा चाउर आ गुड़। अरबा तँ अरबे छी। मोटका-मेहीकाक भेद नहि। तँ बाबीकेँ खीर रन्हैमे पहपटि भऽ जाइत छनि। फुटा-फुटा कऽ कोना करतीह। तँ सबहक अरबा चाउरकेँ खाइले रखि लै छथि आ अपन सतरिया चाउरक खरना करै छथि। खाली खरने नहि करै छथि, मनमे इहो रहै छनि जे परिवारक हिसाबसँ एत्ते खीर घुमा दिअए जे घरमे चुल्हि नै चढ़ै।

षष्ठी। आइ सौझुका अर्घ होएत। तड़गरे बाबी सुति उठि कऽ पावनिक ओरियानमे लगि गेलीह। बहुत चीज भेबो कएल आ बहुत बाकियो अछि। मुदा भरि दिन तँ ओरिअबैक समए अछि। तहि बीच डेढ़ियापर सँ बाबी, बाबी सुनलनि।

मुदा टाटक अढ़ रहने बोली नहि चीन्हि सकलीह। मनमे भेलनि जे आइ पावनि छी तँ कियो किछु पुछैले आएल होएत। ओसारेपर सँ कहलखिन- 'के छिअहुँ। अंगने आउ।'

पथियामे दूटा नारियल, पान छीमी केरा, दूटा टाभ नेबो, दूटा दारीम, दूटा ओल, दूटा अडुआ, दूटा टौकुना, दूटा सजमनि, एक मुट्ठी गाछ लागल हरदी, एक मुट्ठी आदी नेने रहमतक माए आंगन पहुँचि बाबीक आगूमे रखि बाजलि- 'बाबी, अपनो डाली ले आ हिनकोले नेने एलिएनिहेँ।'

पथियासँ सभ वस्तु निकालि ओसारपर रखि निङहारि-निङहारि बाबी देखए लगलीह। बच्चेमे रहमत बीमार पड़ल, ओकरे कबुला माए केने रहथि। तँ पान सालसँ ओहो छठि पावनि करैत। जे बात बाबियोकेँ बुझल। ओना बाबी अपने आंगनमे भुसबा, ठकुआ बनबैत। मुदा तेकर दाम रहमतक माए दऽ दन्हि। पथिया लऽ रहमतक माए बिदा हुअए लगली की बाबी कहलखिन- 'कनियाँ, कनी ठाढ़ रहू। रौतुका खरनाक नेवैद्य नेने जाउ।'

घरसँ केरा पातपर खीर आनि रहमतक माएकेँ दऽ देलखिन। हाथमे नेवैद्य अबितहि रहमतक माएक मन खुशीसँ नाचि उठल। बेटाकेँ निरोग जिनगी जीबैक आशा सेहो भऽ गेलनि। मने-मन दिनकरकेँ गोड़ लागि बिदा भेलि। अंगनासँ निकलितहि छलि की एक पाँज कुसियारक टोनी नेने परीछन पहुँचि गेल। एक टोनी बाबीकेँ आ एक टोनी रहमतक माएकेँ दैत सुरसुराइले निकलि गेल। किएक तँ अंगनेमे सभले टोनी बना नेने छल। बाबीकेँ कुसियारक टोनी दैत रहमतक माए कहलकनि- 'हमरा आइ हाट छी बाबी, तँ कनी देरीसँ घाटपर आएब।'

बाबी- 'हम तँ छीहे कनियाँ, तइले तोरा किअए चिन्ता होइ छह। दिनकर-दीनानाथ ककरो अधलाह करै छथिन जे तोरा करथुन। अपन भरि निअम-निष्ठा रखैक चाही।'

रहमतक माए चलि गेल। बाबी फुटा-फुटा सभ वस्तु रखए लगलीह। तहि काल दछिनबरिया अंगनामे हल्ला सुनलखिन। ओसारपर सँ उठि डेढ़ियापर ऐली की सुनलखिन जे खुशिया बेटा केराक घौड़सँ एकटा छीमी तोड़ि कऽ खा गेलै तइले माए चारि-पाँच खोरना मरलकै। बेटाकेँ कनैत देखि खुशिया घरवालीपर बिगड़ए लगल। तेकरे हल्ला। अपने डेढ़ियापरसँ बाबी कहलखिन- 'पावनिक दिन छिऐ। तखन तूँ सभ भोरे-भोर हल्ला करै छह। दुधमुँहा बच्चा जँ एक छीमी केरा तोड़ि कऽ खाइये गेलै तइले एते हल्ला किअए करै छह।'

बाबीक बात सुनि दुनू बेकती खुशिया तँ चुप भेल मुदा छौँड़ा हिचुकि-हिचुकि कनिते रहल। तहि बीच सोनरेवाली आबि बाबीकेँ कहलकनि- 'बाबी, नीक की अधला तँ हिनके कहबनि की ने। देखथुन जे पाइक दुआरे ने छिट्टा भेल ने कोनियाँ।'

सोनरेवालीक बात सुनि बाबी गुम्म भऽ गेलीह। कने काल गुम्म रहि कहलखिन- 'नै पान तँ पानक डंटियोसँ काज चलैत अछि। जकरा छै ओ सोना-चानीक कोनियाँमे हाथ उठबैए आ जकरा नञि छै ओ तँ बाँसेक सुपतीसँ काज चलबैए। तइले मन

किअए ओछ केने छह। सभकेँ की सभ कुछ होइते छै। जेकरा जते विभव होइए ओ ओते लऽ कऽ पावनि करैए। तैँ की दिनकर ककरो कुभेला करै छथिन।'

तहि बीच दीपवाली पाँच बर्खक बेटाकेँ हाथ पकड़ने घिसिअबैत पहुँचि कहलकनि- 'बाबी, देखथुन जे ई छौँड़ा तेहेन अगिलह अछि जे हाथीकेँ पटकि देलकै। ई तँ गुण भेल जे एक्केटा टाँग टुटलै, नै तँ टुकड़ी-टुकड़ी भऽ जाइत।'

मुस्की दैत बाबी कहलखिन- 'देखहक कनियाँ, ई सभ दिखाबटी छिऐ। मनुक्खक मनमे श्रद्धा हेबाक चाही।अइले बच्चाकेँ किअए दमसबै छहक। छोड़ि दहक।'

सूर्य उगले सभ घाटपर पहुँचि डाली पसारलक। नवयुवती सभ गीत गाबए लगलीह। हाथ उठौनिहारि पानिमे दुनू हाथ जोड़ि ठाढ़ भेलीह। एक्के तालमे ढ़ोलिया ढ़ोल बजबए लगल। पोखरिक चारु महार दीपसँ जगमगा गेल। परदेशियो सभ छठि पावनि करए गाम आएल। एक गोटेकेँ नाच कबुला रहै ओ नाच करबै लगल। ताबे दूटा छौँड़ा दारु पीबि फटाका फोड़ए लगल। दुनू बेमत। एक गोटेक फटाकामे कम अवाज भेलै की दोसर पिहकारी मारि देलक। अपन डूमैत प्रतिष्ठाकेँ जाइत देखि ओ पिहकारी देनिहारक कालर पकड़लक। दुनू अपन-अपन परदेशिया भाषामे गारि-गरौबलि शुरु केलक। गारि-गरौबलिसँ मारि फँसि गेलै। दुनू दुनूकेँ खूब मारलक।

दोसर दिन भिनसुरका अर्घ। खुब अन्हरगरे सभ घाटपर पहुँचल। हाथ उठौनिहारि पानिमे पैसिलीह। चौमुखी दीपसँ सौँसे प्रकाश पसरि गेल। सूर्योदय होइतहि दीपक ज्योति मलिन हुअए लगल। हाथ उठै लगल।

बच्चा-बुच्चीक संग रहमतक माए पोखरिक मोहारपर आँचर नेने दुनू हाथ जोड़ि बाबीपर आँखि गड़ौने। तहि काल मुसबा गिलासमे दूध नेने पहुँचल। किनछरिमे पैसि एक ठोप, दू ठोप दूध सभ कोनियाँमे दिअए लगल।

हाथ उठा बाबी पानिसँ निकलि, साड़ी बदलि, छठिक कथा कहए लगलखिन। कथा कहि अकुड़ी छीटि पावनिक विसर्जन केलनि।

अखन धरि जे ढ़ोलिया एक तालमे ढ़ोल बजबैत छल ओ समदाउनिक ताल धेलक। नटुओ समदाउन गाबए लगल।

सभ अपन-अपन कोनियाँ समेटि छिट्टामे रखि, ढ़ोलियाकेँ एकटा ठकुआ एक छीमी केरा दऽ दऽ बिदा भेल।

कामिनी

अन्हरगरे भैयाकाका लोटा नेनहि मैदान दिशिसँ आबि रस्ते परसँ बोली देलखिन.......।

हमहूँ मैट्रिकक परीक्षा दैले जाइक ओरियान करैत रही। ओना हमर नीन बड़ मोट अछि मुदा खाइये बेरिमे माएकेँ कहि देने रहिऐ जे कने तड़गरे उठा दिहेँ नञि तऽ गाड़ी छुटि जाएत। किऐक तँ साढ़े पाँचे बजे गाड़ीक समए अछि। आध घंटा स्टेशन जाइयोमे लगैत अछि। तँ, पौने पाँच बजे घरसँ बिदा होएब तखने गाड़ी पकड़ाएत। जँ ई गाड़ी छुटि जाएत तँ भरि दिन रस्तेमे रहब। निरमलीसँ जयनगरक लेल एक्केटा डायरेक्ट गाड़ी अछि। नहि तँ सभ गाड़ी सकरीमे बदलए पड़ैत अछि। तहूमे बसबला सभ तेहेन चालाकी केने अछि जे एक्कोटा गाड़ीक मेलि नहि रहए देने अछि। तीनि-चारि घंटा सकरीक प्लेटफार्मपर बैसू तखन दरभंगा दिशिसँ गाड़ी आओत। तहूमे तेहेन लोक कोंचल रहत जे चढ़बो मुश्किल। तँ ई गाड़ी पकड़ब जरुरी अछि। ततबे नहि, अपन स्कूलक विद्यार्थियो सभ यएह गाड़ी पकड़त। अनभुआर इलाका तँ असगर-दुसगर जाएबो ठीक नहि। सुनै छी जे ओहि इलाकामे उचक्को बेसी अछि। जँ कहीं कोनो समान उड़ौलक तँ आरो पहपटिमे पड़ि जाएब। भैया कक्काक बोली सुनि चिन्हैमे देरी नञि भेल। किऐक तँ हुनकर अबाज तेहेन मेही छनि जे आन ककरोक बोलीसँ नहि मिलैत। बोली अकानि हम दरबज्जेक कोठरीसँ कहलियनि- 'कक्का, आउ-आउ। हमहूँ जगले छी। पँचबजिया गाड़ी पकड़ैक अछि तँ समान सभ सरिअबै छी।'

रस्ता परसँ ससरि काका दरवज्जाक आगूमे आबि कहलनि- 'कने हाथ मटिया लै छी। तखन निचेनसँ बैसबो करब आ गप्पो करब।'

कहि पूब मुँहे कल दिशि बढ़लाह। हमहूँ हाँइ-हाँइ समान सरिअबए लगलौं। कलपर सँ आबि काका ओसारक चौकी तरमे लोटा रखि अपने चौकीपर बैसलाह। चौकीपर बैसितहि गोलगोलाक जेबीसँ बिलेती तमाकुलक पात निकालि तोड़ैत बजलाह- 'भाय सहाएब कहाँ छथुन?'

'ओ काल्हिये बेरु पहर नेवानी गेला, से अखन धरि कहाँ ऐलाहहेँ।'

हमर बात सुनि, भैयाकाका चुनौटीसँ चून निकालि तरहत्थीपर लैत बजलाह- 'अखन जाइ छी, हएत तँ ओइ बेरिमे फेरि आएब।'

काकाक वापस होएब हमरा नीक नहि लागल। किऐक तँ लगले ऐलाह आ चोट्टे घुरि जेताह। तँ बैसै दुआरे बजलहुँ- 'अहाँ तँ कक्का गाममे दगबिज्जो कऽ देलिऐक। एत्ते खर्च कऽ कऽ कियो कन्यादान नहि केने छलाह। अहाँ रेकर्ड बना लेलिऐक।'

अपन प्रशंसा सुनि भैयाकाका मुस्कुराइत बजलाह- ‘ बौआ, युग बदलि रहल अछि। तँ सोचलहुँ जे नीक पढ़ल-लिखल वरक संग बेटीक विआह करब। हमरो बेटी तँ बड़ पढ़ल-लिखल नहिये अछि। मुदा रामायण, महाभारत तँ धुरझार पढ़ि लैत अछि। चिट्ठियो-पुरजी लिखिये-पढ़ि लैत अछि। घर-आश्रम जोकर तँ ओहो पढ़नहि अछि। ओकरा की कोनो नोकरी-चाकरी करैक छैक, जे स्कूल-कओलेजक सर्टिफिकेट चाहिऐक। अपना सभ गिरहस्त परिवारमे छी तँ बेटीकेँ बेसी पढ़ाएब नीक नहि।’

‘किए?’

अपना सबहक परिवारमे गोंत-गोबरसँ लऽ कऽ थाल-कादो धरिक काज अछि। ओ तँ घरेक लोक करत। तइमे देखबहक जे जे स्त्रीगण पढ़ल-लिखल अछि ओ ओहि काजक भीड़ि नहि जाए चाहतह। आब तोंही कहह जे तखन गिरहस्ती चलतै कोना?’

काकाक तर्कक जबाब हमरा नहि फुड़ल। मुदा चुप्पो रहब उचित नहि बुझि कहलिएनि- ‘जखन युग बदलि रहल अछि तखन तँ सभकेँ शिक्षित होएब जरुरी अछि की ने?’ सभ पढ़त सभ नोकरी करत। नीक तलब उठाओत। जहिसँ घरक उन्नति आरो तेजीसँ होएत। तहूमे महिला आरक्षण भेने नोकरियोमे बेसी दिक्कत नहिये होएत।’

भैयाकाका- ‘कहलह तँ बड़ सुन्दर बात मुदा एकटा बात कहह जे दुनू गोटे, मर्द-औरत, एक्के इस्कूल वा ऑफिसमे नोकरी करत तखन ने एकठाम डेरा रखि परिवार चलौत। मुदा जखन पुरुष दोसर राज्य वा दोसर जिला वा दस कोस हटि कऽ नोकरी करत तखन कोना चलतै। परिवार तँ पुरुष-नारीक योगसँ चलैत अछि की ने? परिवारमे अनेको ऐहेन काज अछि जे दुनूक मेलसँ होएत। मनुष्य तँ गाछ-बिरीछ नहि ने छी जे फलक आँठी कतौ फेकि देबै तँ गाछ जनमि जाएत। आब तँ तोहूँ कोनो बच्चा नहिये छह जे नै बुझबहक। मनुष्यक बच्चा नअ मास -२७०- दिन माइक पेटमे रहैत अछि। चारि-पाँच मासक उपरान्त माइक देहमे बच्चाक चलैत कते रंगक रोग-व्याधिक प्रवेश भऽ जाइत छैक। किऐक तँ माइक संग-संग बच्चोक विकासक लेल अनुकूल भोजन, आराम आ सेवाक आवश्यकता होइत। तखन माए असकरे की करत? नोकरी करत आ कि पालन करत? एहि लेल तँ दोसरेक मदतिक जरुरत होइत।’

‘आन-आन देशमे तँ मर्द-औरत सभ नोकरी करैत अछि आ ठाठसँ जिनगी बितबैत अछि।’

भैयाकाका- ‘आन देशक माने ई बुझै छहक जे, जत्ते दोसर देश अछि सबहक रीति-नीति जीवन शैली एक्के रंग छैक? नहि। एकदम नहि। किछु देशक एक रंगाहो अछि। मुदा फराक-फराक सेहो अछि। हँ, किछु ऐहन अछि जहिठाम मनुष्य सार्वजनिक सम्पति बुझल जाइत छैक। ओहि देशक व्यवस्थो दोसर रंगक अछि। सभ तरहक सुविधा सबहक लेल अछि। तहि ठामक लेल ठीक अछि। मुदा अपना ऐठाम अपना देशमे तँ से नहि अछि। तँ एहिठामक लेल ओते नीक नहि अछि जते अधलाह।’

अपनाकेँ निरुत्तर होइत देखि बातकेँ विराम दैक विचार मनमे उठए लगल। तहि बीच आंगनसँ माए आबि गेलीह। माएकेँ देखितहि हम अपन समान सरिअबै कोठरी दिशि बढ़ि गेलहुँ।

भैयाकाकाकेँ देखि माए कहलकनि- 'बौआ अहाँ तँ गाममे सभकेँ उन्नैस कऽ देलिऐ। आइ धरि गाममे बेटी विआहमे एते खर्च कियो ने केने छलाह।'

अपन बहादुरी सुनि मुस्कुराइत भैयाकाका कहलखिन- 'भौजी कामिनीकेँ असिरवाद दियौ जे नीक जेकाँ सासुर बसए।'

माए- 'भगवान हमरो औरुदा ओकरे देथुन जे हँसी-खुशीसँ परिवार बनाबए। पाहुन-परक तँ सभ चलि गेल हेताह?'

भैयाकाका- 'हँ भौजी। काल्हि सत्यनारायण भगवानक पूजा कऽ हमहूँ निचेन भऽ गेलहुँ। पाहुनमे-पाहुन आब एक्केटा सरहोजि टा रहि गेल अछि। ओहो जाइ ले छड़पटाइए। मुदा ओकरा पाँच दिन आरो रखए चाहै छी।'

माए- 'जहिना एकटा बेटीक विआहक काजकेँ खेलौना जेकाँ गुड़केलहुँ, तहिना दोसर ई सरहोजिकेँ आब गुड़कबैत रहू।'

सरहोजि दिशि इशारा होइत देखि कक्का बुझि गेलखिन। मकैक लावा जेकाँ बत्तीसो दाँत छिटकबैत बजलाह- 'धरमागती पूछी तँ भौजी एते भारी काज- जे ने खाइक पलखति होइत छल आ ने पानि पीबैक। तीनि राति एक्को बेरि आँखि नहि मुनलौं। मुदा सरहोजिकेँ धन्यवाद दिअ जे घिरनी जेकाँ दिन-राति नचैत रहलि। ओते फ्रीसानी रहए तइओ कखनो मुँह मलिन नहि। सदिखन मुहसँ लबे छिटकैत। तँ सोचै छी जे पाँच दिन पहुनाइ करा दिऐ।'

माए- 'बच्चा कइए टा छैक?'

'एक्कोटा नहि। तीनियें सालसँ सासुर बसैए। उमेरो बीस-बाइस बर्खसँ बेसी नहिये हेतै।'

'आब तँ लोककेँ बिआहे साल बच्चा होइ छै आ अहाँ कहै छी जे तीन सालसँ सासुर बसए अए।'

'ऐँह, हमरा तँ अपने पान सालक बाद भेल आ अहाँ तीनियें सालमे हदिआइ छी। अच्छा एकटा बात हमहीं पूछै छी जे भैया ने हमरासँ साल भरि जेठ छथि मुदा अहाँ तँ साल छौ मास छोटे होएब। अहों कोन-कोन गहबर आ ओझा-गुनी लग गेल रही।'

अपनाकेँ हारैत देखि बात बदलैत माए बाजलि- 'सभ मिला कऽ कते खर्च भेल?'

भैयाकाका- 'धरमागती पूछी तँ भौजी हमहूँ कंजुसाइ केलिऐ। मुदा तैयो पाँच लाखसँ उपरे खर्च भेल। तीन लाख तँ नगदे गनि कऽ देने छलिऐक। तइपर सँ डेढ़ लाखक समान, गहना, बरतन, लकड़ीक समान, कपड़ा देलिऐ। पचास हजारसँ उपरे बरिआतीक सुआगतमे लागल। तइपरसँ झूठ-फूसमे सेहो खर्च भेल।'

'एते खर्च केलिऐ तखन किए कहै छिऐ जे हमहूँ कंजुसाइ केलिऐ?'

'देखिओ भौजी, हमरा दस बीघा खेत अछि। तेकर बादो कते रंगक सम्पति

अछि। गाछ-बाँस, घर-दुआर, माल-जाल। अइ सभकेँ छोड़ि दै छी। खाली खेतेक हिसाब करै छी। अपना गाममे दस हजार रुपैये कट्ठासँ लऽ कऽ साठि हजार रुपैये कट्ठा जमीन अछि। ओना सहरगंजा जोड़बै तँ पेंतीस हजार रुपैये कट्ठा भेल। मुदा हम्मर एक्कोटा खेत ओहन नहि अछि जेकर दाम चालीस हजार रुपैये कट्ठासँ कम अछि। बेसियोक अछि। मुदा चालिसे हजारक हिसाबसँ जोड़ै छी तँ आठ लाख रुपैये बीघा भेल। दस बीघाक दाम अस्सी लाख भेल। तीनि भाए-बहीन अछि। हमरा लिये तँ जेहने बेटा तेहने बेटी। अनका जेकाँ तँ मनमे दुजा-भाव नै अछि। आब अहीं कहू जे कोन बेसी खर्च केलिऐ।'

बातक गंभीरताकेँ अंकैत माए बाजलि- 'अहाँ विचारे बेटीक विआहमे कते खर्च बाप कऽ करैक चाहिऐक?'

भैयाकाका- 'देखियौ भौजी, जे बात अहाँ पुछलहुँ ओकर जबाब सोझ-साझ नहि अछि। किऐक तँ जते रंगक लोक आ परिवार अछि तते रंगक जिनगी छैक। मुदा अनका जे होउ, हमरा मनमे ई अछि जे बेटा-बेटी एक-रंग जिनगी जीबए। मुदा समस्यो गंभीर अछि। धाँइ दे किछु कहि देने नहि हेतै।'

'एते लोक सोचै छै?'

'से जँ नहि सोचै छै तँ ने एना होइ छै। जँ अपने कोनो बात नहि बुझिऐ तँ दोसरसँ पूछैयोमे नहि हिचकिचेबाक चाही।'

कामिनीक विआह लालाबाबू संग भेल। जेहने हिरिष्ट पुष्ट शरीर कामिनीक तेहने लालबाबूक। दुनूक रंगमे कने अन्तर। जहिठाम लालबाबू लाल गोर तहि ठाम कामिनी पिंडश्याम। ने अधिक कारी आ ने अधिक गोर, जाहिसँ दाइ-माएक अनुमान जे किछु दिनक उपरान्त दुनूक रंग मिलि जाएत, अर्थात् एकरंग भऽ जाएत।

विआहक तीन मास बाद लालबाबूक बहाली कओलेजक डिमोंसट्रेटरक पदपर भेल। नोकरी पबितहि सासुरेक दहेजबला रुपैयासँ दरभंगामे डेढ़कट्ठा जमीन कीनि घर बना लेलक। गामसँ शहर दिशि बढ़ल। जाहिसँ जिनगीमे बदलाब हुअए लगल। एक दिशि बजारु आधुनिकता जोर पकड़ए लगलै तँ दोसर दिशि ग्रामीण जिनगीक रुप टूटए लगलै। रंग-विरंगक भोग-विलाशक वस्तुसँ घर सजबए लगल। पाइक अभावे ने बुझि पड़ैत। किऐक तँ भैयारीमे असकरे। तँ गामक सभ सम्पति बेचि-बेचि आनए आ मौज करए। मिथिला कन्या कामिनी। तँ पतिक काजमे हस्तक्षेप नहि करै चाहैत। पति-पत्नीक बीच ओहने संबंध जेहेन अधिकांशक।

शिक्षाक स्तर खसल। अजाति सभ सरस्वतीक मंदिरमे प्रवेश केलक। जहिठाम प्राइवेट टयूशन पढ़ाएब अधलाह काज बुझल जाइत छल, से प्रतिष्ठित भऽ गेल। परिणाम भेल जे टयूशनकेँ अधलाह आ पाप बुझनिहार शिक्षक स्वयं मूर्खक प्रतीक बनि गेलाह। अवसरक लाभ अज्ञानीकेँ बेसी भेलै। पाइ-कौड़ीबला लालबाबू कोना नै अवसरक लाभ उठबैत। बीसे हजारमे एम.एस.सी. फिजिक्सक सर्टिफिकेट कीनि लेलक। विश्वविद्यालयोमे कानून पास केने जे नवशिक्षकक बहालीमे कओलेजक डिमोसट्रेटरकेँ प्राथमिकता देल जाएत। लालोबाबू फिजिक्सक प्रोफेसर बनि गेल। हाइ

स्कूल वा सरकारी ऑफिस जेकाँ प्रोफेसरकेँ ड्यूटियो नहि। सालमे कओलेज छह मास बन्ने रहैत बाकी समएमे कहियो ड्यूटी होएत कहियो नहि होएत। तइपर सँ अपन सी.एल. आ मेडिकल पछुआइले।

पाँच बर्ख बीतैत-बीतैत लालबाबूक माए-बाप मरि गेल। मरने लाभे। घरारी धरि बेचि कऽ बैंकमे लालबाबू जमा कऽ लेलक। मुदा एकटा बात जरुर केलक, ओ ई जे घरारीक रुपैआ सँ पाँचटा आलमारी आ जते किताबसँ आलमारी भरत, ओते किताब जरुर कीनि लेलक। एक तँ पाइक गर्मी दोसर किताबक गर्मी, अध्ययनक गर्मी नहि देखलाहा गर्मी- सँ लालबाबूक मति ऐहेन बदलि गेल जेहेन ठंढ़ा पानि आ ठंढ़ा दूधसँ चाह बनैत। अखन धरि छह बर्खमे दूटा सन्तान सेहो भेल। अपन दुनियाँक बीच कामिनी नचैत तँ लालबाबूक जिनगी कोना देखैत? दोसर उचितो नहि किऐक तँ हर युवा आदमीकेँ अपन जिनगीक बाटपर नजरि राखक चाहिऐक।

साँझू पहर लालबाबू होटलसँ सीधे आबि कोठरीमे कपड़ा बदलए लगल। देहक सभ कपड़ा उताड़ि लेलक। उपरसँ लऽ कऽ भीतर धरि शरीरमे आगिक ताव जेकाँ लहकैत। पंखाक बटन दबलक। मुदा भगवानक मूर्तिक आगूक जे कोठरीक दिवारक खोलियामे रखने छल, से बौल जरौने बिना अपन कोठरीक बौल कोना जरबैत। तँ पहिने ओ बौल जरौलक। मुदा मूर्तिक आगू बौल जरौला बाद अपन कोठरीक बौल जरौनाइ बिसरि गेल। पियाससँ कंठ सुखैत। मुदा टंकीपर जाइक डेगे ने उठैत। लटपटाइत। कहुनाकेँ कुरसीपर बैसल आकि टेबुल तरक जगपर नजरि पड़लै। दिनुके पानि। जग उठा पानि पीलक। जग रखि कुरसीपर अंगोठि मने-मन अकासक चिड़ै हियासय लगल। उड़ैत मृगनयनीपर नजरि गेलै। कओलेजक छात्रा मृगनयनीकेँ किछु देर देखि पत्नी कामिनीपर नजरि देलक। मनमे उठलै दू बेटीक जिनगी। फेर मन देखलकैक चहकैत मृगनयनी। निर्णय केलक जे अपना घर मृगनयनीकेँ जरुर आनब। रसे-रसे मन शान्त हुअए लगलै।

दोसर दिन कोर्ट होइत लालबाबू मृगनयनीक संग घर पहुँचल। मृगनयनीकेँ देखि कामिनी घबड़ाएल नहि। मन पड़लै दादी मुँहक सुनल खिस्सा। तँ पुरुखक लेल दूटा पत्नी होएब कोनो अधलाह नहि। अपन दुनियाँमे मस्त। काजक कोनो घटती नहि, कनी-मनी बढ़तिये। तँ जुआनीक आनन्द कामिनीमे।

विआहक आठ बर्ख वाद जे लालबाबू डिमोसट्रेटरसँ प्रोफेसर बनल, ओ आइ स्त्रीक खिलौना बनि गेल। ऐहन-ऐहन लोकक कते आशा। आठ बजे साँझ। बजारसँ दुनू परानी मृगनयनी आ लालबाबू मोटर साइकिलसँ उतड़ि कोठरीमे पहुँचल। अगल-बगलक कुरसीपर बैसि ब्राण्डीक बोतल निकालि टेबुलपर रखलक। मुदा टेबुल कहऽ चाहै जे 'भाय सोझा-सोझी बेइज्जत नञि करह, हम किताब रखै बला छी, नञि कि बोतल। मुदा बेचाराक विचार, मिथिलाक कन्या जेकाँ, तँ सभ कुछ सहि लैत। जहिना राज-दरबारमे मिथिलाक राजा जनककेँ जननिहार पंडित सहि लैत।

असेरी गिलाससँ दुनू बेकती एक-एक गिलास ब्राण्डी चढ़ा अपन दुनियाँमे विचरण करए लगल। प्रश्न उठल कामिनीक।

मृगनयनी- 'हम्मर एकटा विचार सुनू।'

'बाजू।'

'पत्नीक सभ सुख जँ एक पत्नीसँ पूर्ति हुअए तखन दोसर रखबाक की जरुरी?'

'कोनो नहि।'

'तखन सौतीन कामिनीकेँ रखि की फएदा?

कने गुम्म भऽ लालबाबू सोचै लगल। मन पड़लै कामिनी। निस्सकलंक, स्वच्छ, कोमल-कोमल पंखुड़ी गंध युक्त कामिनी।

दोहरा कऽ मृगनयनी बाजलि- 'बस, यएह पुरुखक कलेजा छी। कामिनीकेँ रस्तासँ हटाएब हम्मर जिम्मा भेल।'

मृगनयनीक रुप देखि विधातो अपन गल्तीपर सोचितथि। जे नारी-पुरुषक बीच जेहेन थलथलाह पुल बनोलिऐ तेहेन नारी-नारीक बीच किअए ने बनोलिऐ। मृगनयनी आ लालबाबूक दुनू गोटेक बीचक बात कामिनीओ सुनैत। जहिना मृगनयनीक करेजमे कामिनीक प्रति आगि धधकैत तहिना मृगनयनियोक प्रति कामिनीक करेजमे आगि पजरि गेल। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत ओ घरसँ निकलि जाएब नीक बुझलक। किऐक तँ तीन जिनगीक प्रश्न आगूमे आबि ठाढ़ भऽ गेलै। तहूमे दूटा ओहन जिनगी जे दुनियाँमे अखन पएरे रखलक अछि। चुपचाप कामिनी अपन रहैबला कोठरी आबि दुनू बेटीकेँ एक टक देखि, छह बर्खक रीताकेँ पएरे आ तीन बर्खक सीताकेँ कोरामे नेने घरसँ निकलि गेल। मनमे आगि लगल, तँ कोनो सुधि-बुधि नहि।

स्टेशन आबि कामिनी ट्रेन-गाड़ीक पता लगौलक। चारि घंटाक बाद गाड़ी। दुनू बच्चाक संग ओ प्लेटफार्मपर गाड़ीक प्रतीक्षामे बैसि रहलि। मनमे अनेको रंगक प्रश्न उठै लगलैक। मुदा सभ प्रश्नकेँ मनसँ हटबैत एहि प्रश्नपर अँटकल जे, जे माए-बाप जन्म देलक ओ जरुर गरा लगौत। जँ नहि लगौत तँ बड़ी टा दुनियाँ छैक, बुझल जेतैक। तँ सभसँ पहिने माए-बाप लग जाएब। डेढ़ बजे रातिमे गाड़ी पकड़ि, दुनू बच्चाक संग भोरमे अपना नैहरक स्टेशन उतड़ल। भुखे तीनू लहालोट होइत। मुदा ऐठामक नारीमे तँ सभसँ पैघ ई गुण होइत जे धरती जेकाँ सभ दुखकेँ सहि लैत। मुदा दुनू बेटीक मुँह देखि चिन्ताक समुद्रमे डूबए लगल। की ककरोसँ भीख मांगि बच्चाकेँ खुआबी? कथमपि नहि। की बच्चाक जिनगीकेँ एतै अन्त हुअए दिऐ? अपन साध कोन। मुदा नाना ऐठाम तक पहुँचत कोना? जी जाँति कऽ एकटा मुरही-कचड़ीक दोकानपर कामिनी पहुँचि मुरही बेचइवाली बुढ़ियाकेँ कहलक- 'दीदी, हमर नैहर दुखपुर छी। ओतै जाइ छी। दुनू बच्चा रातिमे खेलक नहि, तँ भुखे लहालोट होइए। दू रुपैआक मुरही-कचड़ी उधार दिअ। काल्हि पाइ दऽ देब।' बिना किछु सोचनहि-विचारने बुढ़िया बाजलि- 'बुच्ची, तोरा पाइ नञि छह, तँ की हेतै। हमरो एहेन-एहेन चारि गो पोता-पोती अछि। हम बच्चाक भुख बुझै छिऐ।' कहि दुनू बच्चाकेँ मुरही-कचड़ी देलक। तीनू खा कऽ विदा भेलि।

कामिनीक नैहर पहुँचैत-पहुँचैत सूर्य एक बाँस उपर चढ़ि गेल। दुखपुरक दछिनवरिया सीमापर एकटा पाखरिक गाछ। पाखरिक गाछसँ आगू बढ़ैक साहसे ने कामिनीकेँ होए। गाछक निच्चाँमे बैसि ठोह फाड़ि कानए लगल। दुखपुरक सइओ ढ़ेरबा बचिया घास छिलैत बाधमे। कामिनीक कानब सुनि सभ पथिया-खुरपी नेनहि पहुँच गेलि। दुनू बच्चाकेँ दू गोटे कोरामे लऽ कामिनीकेँ संग केने घरपर आइलि।